राष्ट्रीय संस्करण

दैनिक जागरण

वर्ष 3 अंक 83

मूल्य ₹6.00, नई दिल्ली, रविवार, 1 सितंबर 2019

www.jagran.com

पृष्ठ 16

घसियाली पिच पर हनुमा विहारी ने संभाला मोर्चा

>> 14

सरोकार

केले के तने से बना पैड 121 बार कर सकेंगी इस्तेमाल

नई दिल्ली : इस ईको फ्रेंडली सैनेटरी पैड को 121 बार या दो साल तक इस्तेमाल किया जा सकता है। इसकी कीमत भी महज 199 रुपये है। जबकि सब्सिडीयुक्त सामान्य पैड पर दो साल में ग्रामीण महिलाओं को करीब 1800 रुपये खर्च करने पड़ते हैं। (पेज-10)

रविवार विशेष

एक-एक ईंट मांगकर खड़े कर दिए चार शहीद स्मारक

कुरुक्षेत्र : कहानी कुरुक्षेत्र, हरियाणा के साधारण किसान संजीव राणा की, जिन्होंने शहीदों की याद में शहीद स्मारक बनाने के लिए 'एक ईंट शहीद के नाम' अभियान शुरू किया। संजीव की मुहिम से प्रेरित होकर राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने उन्हें बुलाया और एक ईंट भेंट की। (पेज-10)

न्यूज गैलरी

राज-नीति ▶ पृष्ठ 3

महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री पर 100 करोड़ का जुर्माना लगा

मुंबई : महाराष्ट्र में धुले जिले की सत्र अदालत ने राज्य के पूर्व मंत्रियों सुरेश जैन, गुलाबराव देवकर और 46 अन्य को करोड़ों रुपये के 'घरकुल' आवासीय घोटाले में दोषी ठहराया है। सुरेश जैन पर सात साल की सजा के साथ-साथ 100 करोड़ रुपये का जुर्माना भी लगाया गया है।

नेशनल न्यूज ▶ पृष्ठ 6

धुले की केमिकल फैक्ट्री में धमाके, 13 की मौत

मुंबई : महाराष्ट्र के धुले जिले में शनिवार की सुबह एक केमिकल फैक्ट्री में रखे गैस सिलेंडरों में हुए धमाकों में छह महिलाओं समेत 13 कर्मचारियों की मौत हो गई और 64 अन्य घायल हो गये। मुख्यमंत्री देवेंद्र फड़नवीस ने मृतक आश्रितों को पांच-पांच लाख रुपये की मुआवजा राशि देने की घोषणा की है।

बिजनेस ▶ पृष्ठ 12

चालू वित्त वर्ष में 6.5 फीसद ग्रोथ रेट का अनुमान : देबरॉय

नई दिल्ली : चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही यानी अप्रैल-जून अवधि में जीडीपी की ग्रोथ रेट भले ही घटकर पांच फीसद पर आ गई हो, लेकिन आने वाली तिमाहियों में इसके सुधरने की पूरी उम्मीद है। प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद (पीएमईएसी) के चेयरमैन बिबेक देबरॉय ने कहा है कि चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही की अपेक्षा दूसरी छमाही में ग्रोथ रेट अधिक रहेगी।

अंतरराष्ट्रीय ▶ पृष्ठ 13

वीजा चाहने वालों पर और कड़ी नजर रखेगा अमेरिका

वाशिंगटन : ट्रंप प्रशासन ने अमेरिकी वीजा, ग्रीन कार्ड और नागरिकता चाहने वाले विदेशी नागरिकों पर नजर रखने के लिए सोशल मीडिया पर फर्जी अकाउंट्स खोलने का फैसला लिया है। इसके जरिये अधिकारी अब सोशल मीडिया पर ऐसे लोगों के अकाउंट्स की निगरानी कर सकेंगे। अमेरिका के गृह सुरक्षा विभाग की ओर से गत जुलाई में निजता संबंधी मामलों की समीक्षा की गई थी।

असम में 19 लाख लोग नागरिकता सूची से बाहर

मैराथन कवायद ▶ सुप्रीम कोर्ट की निगरानी में तैयार हुई राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर की अंतिम सूची जारी, नाम देखने के लिए उमड़ी भीड़

राज्य में हाई अलर्ट, कई जगहों पर धारा 144 लागू, कहीं कोई अप्रिय घटना नहीं

गुवाहाटी, प्रेट्र : असम की बहुप्रतीक्षित 'राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर' (एनआरसी) की अंतिम सूची शनिवार सुबह दस बजे जारी कर दी गई। इसमें राज्य के 19,06,657 लोगों के नाम शामिल नहीं हैं। 1970 के बाद से असम में बड़े पैमाने पर बांग्लादेशी घुसपैठियों के आने के चलते इस रजिस्टर को अपडेट करने की मांग उठ रही थी। 2013 में सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद सूची को अपडेट करने का काम शुरू हुआ और 31 अगस्त, 2019 को अंतिम सूची जारी कर दी गई। इस काम के लिए करीब 52 हजार अधिकारियों ने छह करोड़ से ज्यादा दस्तावेजों की पड़ताल की। पूर्व में जारी सूची में 40 लाख लोग एनआरसी से बाहर हो गए थे।

शनिवार सुबह जैसे ही एनआरसी सूची जारी होने की सूचना मिली, राज्य के हजारों लोग एनआरसी सेवा केंद्रों पर लगी सूचियों में अपने नाम तलाशने उमड़ पड़े। कई लोग सूची में अपना नाम देखकर खुश थे तो कुछ ऐसे भी थे जिनके चेहरे पर सूची में नाम नहीं होने की निराशा साफ झलक रही थी। सूची से बाहर रह गए 19 लाख लोगों के भविष्य पर अभी तलवार लटकी हुई है। उन्हें अपनी नागरिकता प्रमाणित करने और सूची में नाम जुड़वाने के लिए 120 दिन का समय दिया जाएगा। सूची जारी होने के बाद असंतोष भड़कने की आशंका को देखते हुए राज्य में जबर्दस्त सुरक्षा बंदोबस्त किए गए हैं। गुवाहाटी व दिसपुर समेत कई हिस्सों में धारा 144 लगाई गई है। राज्य पुलिस के अलावा केंद्रीय अर्धसैनिक बलों के 20,000 से ज्यादा जवानों को यहां तैनात किया गया है। फिलहाल कहीं से किसी अप्रिय घटना की खबर नहीं है।

असम में एनआरसी की अंतिम सूची जारी होने के बाद मोरीगांव के एक केंद्र पर नाम देखती महिलाएं। प्रेट्र

अभी हिरासत में नहीं लिया जाएगा : असम सरकार ने फिलहाल अंतिम सूची से बाहर रह गए लोगों को राहत दी है। राज्य सरकार का कहना है कि ऐसे किसी भी व्यक्ति को फिलहाल हिरासत में नहीं लिया जाएगा। जो लोग एनआरसी की सूची में शामिल होने से वंचित रह गए हैं, उन्हें ट्रिब्यूनलों द्वारा विदेशी नागरिक घोषित किए जाने तक किसी भी हालत में हिरासत में नहीं लिया जाएगा।

हालात पर केंद्र की नजर : एनआरसी की अंतिम सूची जारी होने के बाद केंद्र सरकार राज्य के हालात पर करीबी से नजर रख रही है। मंत्रालय के सूत्रों का कहना है कि हालात संभालने के लिए सभी जरूरी व्यवस्था की गई है। कानून एवं व्यवस्था को लेकर केंद्र सरकार और राज्य सरकार एक-दूसरे के लगातार संपर्क में हैं ताकि किसी तरह की गड़बड़ी न होने पाए।

कोई खुश नहीं : अपडेट एनआरसी को लेकर रोचक बात यह है कि राज्य में कांग्रेस, भाजपा जैसे राजनीतिक दल व अन्य तमाम संगठन अंतिम सूची से असंतुष्ट हैं। कुछ का मानना है कि इसमें कई असली नागरिकों के नाम बाहर रह गए हैं, जबकि घुसपैठियों के नाम शामिल कर लिए गए हैं। 1985 के असम समझौते पर हस्ताक्षर करने वाले संगठनों में से एक ऑल असम स्टूडेंट्स यूनियन (आसू) ने सुप्रीम कोर्ट जाने की बात कही है। संगठन का कहना है कि सूची से बाहर रह गए लोगों की संख्या बहुत कम है। आसू के राजनीतिक संगठन राज्य सरकार में शामिल असम गण परिषद (अगप) ने भी सूची को अपर्याप्त बताया है और सुधार की जरूरत बताई है।

उम्मीदें अभी बाकी हैं : अंतिम सूची में जिनका नाम नहीं है उन्हें 120 दिन का वक्त दिया गया है। ऐसे लोग विभिन्न फॉरेनर्स ट्रिब्यूनल में जाकर अपनी नागरिकता का प्रमाण दे सकते हैं। ट्रिब्यूनल के फैसले से असंतुष्ट रहने पर हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट जाने का भी विकल्प रहेगा।

अंतिम सूची से भाजपा नाराज पेज>>5

आंकड़ों पर एक नजर

- **3,30,27,661** लोगों ने किया था सूची में नाम शामिल करने का आवेदन
- **3,11,21,004** को किया शामिल
- **19,06,657** लोग रह गए बाहर

अंतिम ड्राफ्ट से अंतिम सूची तक का सफर

- 30 जुलाई, 2018 को एनआरसी ने अंतिम ड्राफ्ट जारी किया था। उसमें 40 लाख से ज्यादा लोगों के नाम शामिल नहीं थे
- जून, 2019 तक और छानबीन करने के बाद 1,02,462 लोगों के नाम और बाहर किए गए
- इस तरह कुल मिलाकर 41,10,169 बाहर अंतिम ड्राफ्ट से बाहर किए थे
- 31 अगस्त, 2019 को जारी अंतिम सूची में 19,06,657 नाम बाहर किए गए
- यानी अंतिम ड्राफ्ट की तुलना में अंतिम सूची बनने तक 22,03,512 नाम शामिल कर लिए गए

बाहर हो गए कुछ बड़े नाम

- एआइयूडीएफ के विधायक अनंत कुमार मालो का नाम सूची में नहीं है
- दो बार विधायक रहे अताउर रहमान मजारभूयां का नाम भी सूची से बाहर
- कारगिल युद्ध का हिस्सा रहे पूर्व सैन्य अधिकारी सनाउल्ला भी सूची में नहीं

क्या है अपडेट एनआरसी?

असम में एनआरसी की व्यवस्था 1951 से है। इसमें वहां के सभी नागरिकों का रिकॉर्ड दर्ज किया गया है। अब इसे अपडेट किया गया है।

क्यों है अपडेट एनआरसी?

राज्य में बड़ी संख्या में बांग्लादेशी घुसपैठियों को चिह्नित करने के उद्देश्य से इसे अपडेट किया गया है। माना जाता है कि 1970 के बाद से यहां लाखों बांग्लादेशी आए हैं।

क्या कहते हैं विरोधी?

विरोधी इसे राजनीतिक पहल मान रहे हैं। कई लोग इसे मुस्लिमों के खिलाफ उठाया गया कदम साबित करने में लगे हैं। उनका तर्क है कि इससे अफरा-तफरी मचेगी।

एटमी युद्ध का राग छोड़ पाकिस्तान ने की भारत से बातचीत की पेशकश

- पाक विदेश मंत्री कुरैशी ने कहा-कश्मीर मुद्दे पर युद्ध कोई विकल्प नहीं
- बोले-परमाणु हथियार वाले पड़ोसी देश परमाणु युद्ध का खतरा नहीं उठा सकते

इस्लामाबाद, प्रेट्र : पाकिस्तानी प्रधानमंत्री इमरान खान के भारत को परमाणु हमले की दोबारा धमकी देने के एक ही दिन बाद बदहाल पाकिस्तान की हेकड़ी निकल गई है। पैंतरा बदलते हुए पड़ोसी मुल्क के विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी ने भारत से बातचीत करने की पेशकश की है। उन्होंने कहा कि कश्मीर मुद्दे पर युद्ध कोई विकल्प नहीं है। पाकिस्तान भारत के साथ सशर्त बातचीत के लिए तैयार है।

कुरैशी ने शनिवार को बीबीसी उर्दू में प्रकाशित एक इंटरव्यू में कहा कि पाकिस्तान ने कभी भी आक्रामक नीति नहीं अपनाई और हमेशा शांति को तवज्जो दी है। उन्होंने कहा कि परमाणु हथियार संपन्न दोनों पड़ोसी देश युद्ध का खतरा नहीं उठा सकते हैं। कश्मीर मुद्दे से निपटने के लिए युद्ध कोई विकल्प नहीं है।

उल्लेखनीय है कि गुरुवार को न्यूयार्क टाइम्स के एक आलेख में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने धमकी देते हुए कहा था कि अगर विश्व ने कश्मीर पर भारत के फैसले को रोकने के लिए कुछ नहीं किया तो दोनों परमाणु हथियार वाले देश युद्ध की राह पर आ जाएंगे। तब खान ने भारत पर आरोप लगाया था कि उनके शांति बहाल करने के लिए बातचीत के सभी प्रयास ठुकरा दिए गए हैं। इसके बाद ही विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा कि भारत आतंकवाद और हिंसा मुक्त माहौल में पाकिस्तान के साथ सभी अहम मुद्दों पर द्विपक्षीय बातचीत करना चाहता है। ध्यान रहे कि भारत और पाकिस्तान के बीच उस समय तनाव बढ़ गया जब पाकिस्तानी आतंकी संगठन जैश-ए-मुहम्मद ने विगत 14 फरवरी को जम्मू-कश्मीर के पुलवामा में आत्मघाती हमला करके सीआरपीएफ के 40 जवानों की हत्या कर दी।

शाह महमूद कुरैशी। फाइल

इसके बाद भारतीय वायुसेना ने 26 फरवरी को गुलाम कश्मीर समेत पाकिस्तान के बालाकोट स्थित जैश आतंकियों के प्रशिक्षण शिविरों पर जबरदस्त हवाई हमले किए। इसके बाद विगत पांच अगस्त को भारत सरकार द्वारा जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने के बाद बौखलाया पाकिस्तान पूरी दुनिया में कश्मीर मुद्दे को उछालने की कोशिश कर रहा है, लेकिन उसे कहीं भी कोई कामयाबी नहीं मिल रही है।

लंदन में बलूचों ने किया पाकिस्तान के खिलाफ प्रदर्शन पेज>>13

सिख युवती से जबरन निकाह के मामले में पाक पर बढ़ा दबाव, 10 और लोग हिरासत में

- पुलिस ने युवती के घर पहुंचने का दावा किया, उसके भाई ने नकारा
- पीड़िता ने जान का खतरा बताते हुए घर लौटने से किया इन्कार

लाहौर, एजेंसियां : सिख युवती से जबरन निकाह मामले में पाकिस्तान भारत और सिख समुदाय के जबर्दस्त दबाव में है। लिहाजा पाकिस्तान सरकार और पुलिस पूरी तरह सक्रिय हो गई है। शनिवार को पुलिस ने इस मामले में 10 और लोगों को हिरासत में ले लिया, ये लोग सिख युवती से निकाह करने वाले मुस्लिम युवक मुहम्मद हसन के रिश्तेदार और दोस्त हैं। इससे पहले पुलिस ने हसन के दोस्त अर्सलान को भी गिरफ्तार किया था। इस मामले में सिख समुदाय की नाराजगी भरी प्रतिक्रिया ने पाकिस्तान सरकार पर दबाव बढ़ा दिया है।

दरअसल, ननकाना साहिब के एक गुरुद्वारे में ग्रंथी ने आरोप लगाया था कि उनकी पुत्री जगजीत कौर का कुछ लोगों ने बंदूक की दम पर अपहरण कर लिया है और उसका जबरन निकाह कराया गया है। जिसके बाद एक वीडियो सामने आया जिसमें लड़की ने दावा किया कि उसने अपनी मर्जी से धर्म परिवर्तन करके हसन से निकाह किया है। इसके बाद पाकिस्तान में सिख समुदाय आक्रोशित हो गया। इसकी प्रतिक्रिया भारत में भी देखने को मिली और उन्होंने भारत सरकार के समक्ष इस मामले को उठाया। जिसके बाद भारतीय विदेश मंत्रालय ने पाकिस्तान सरकार से अपनी चिंताएं साझा कीं। यह घटनाक्रम ऐसे समय हुआ है जब लाहौर में शनिवार से तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सिख सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है।

इस क्रम में शनिवार को ननकाना साहिब पुलिस ने दावा किया कि जगजीत कौर अपने माता-पिता के पास पहुंच गई है। लेकिन जगजीत के भाई सुरेंद्र सिंह ने पुलिस के दावे को खारिज करते हुए कहा कि उनकी बहन अभी तक घर नहीं लौटी है। उन्होंने प्रधानमंत्री इमरान खान और पंजाब प्रांत के गवर्नर मुहम्मद सरवर से उनके साथ न्याय करने के लिए कहा। इस बीच, मुहम्मद सरवर ने आश्रय स्थल जाकर जगजीत कौर से मुलाकात की और उससे घर लौटने की अपील की। जगजीत को अदालत के आदेश पर शुक्रवार को आश्रय स्थल में भेज दिया गया था। सरवर ने जगजीत से कहा कि उसके निकाह से ननकाना साहिब में सिख और मुस्लिमों के बीच तनाव हो गया है। लेकिन जगजीत ने जान को खतरा बताते हुए घर लौटने से इन्कार कर दिया।

वहीं, जगजीत के परिवार वालों ने मांग की है कि पुलिस उसे घर लेकर आए, भले ही उसने मर्जी से या जबरन धर्मांतरण कर लिया हो। इस मांग के समर्थन में सिख समुदाय ने शनिवार को जमकर धरना प्रदर्शन भी किया। आक्रोशित सिख समुदाय से बातचीत करने के लिए पाकिस्तानी पंजाब सरकार ने एक उच्चस्तरीय समिति भी गठित की है। समिति ने जगजीत के परिवार वालों को समझाने की कोशिश की कि उसने अपनी मर्जी से निकाह किया है, लेकिन वे नहीं माने और अपनी मांग पर अड़े रहे।

सिख लड़की के जबरिया निकाह से बेनकाब हुआ पाकिस्तान पेज>>6

सुनंदा मामले में थरूर पर तय हों आरोप : पुलिस

- कांग्रेस सांसद की बढ़ेंगी मुश्किलें, गवाह ने कहा-दोनों में हुआ था झगड़ा
- विशेष अदालत ने 17 अक्टूबर तक के लिए स्थगित की सुनवाई

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

वर्ष 2014 में हुई सुनंदा पुष्कर की मौत के मामले में कांग्रेस सांसद शशि थरूर की मुश्किलें बढ़ती जा रही हैं। शनिवार को जिरह के दौरान अभियोजन पक्ष ने राउज एवेन्यू कोर्ट से अपील की कि थरूर पर हत्या, दहेज उत्पीड़न या फिर आत्महत्या के लिए उकसाने का आरोप तय किया जाए।

मामले में गवाह और थरूर दंपती की सहायिका के बयान को पढ़ते हुए वरिष्ठ लोक अभियोजक अतुल कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि दंपती के बीच एक लड़की और ब्लैकबेरी मैसेज को लेकर झगड़ा हुआ था। मौत से पहले सुनंदा आइपीएल के मुद्दे को लेकर प्रेस कांफ्रेंस करना चाहती थीं और उन्होंने कहा था कि वह थरूर को नहीं छोड़ेंगी। गवाह ने बताया है कि सुनंदा के मरने से एक साल पहले तक दंपती के बीच बहुत झगड़ा होता था। सुनंदा व्यथित थीं और मानती थीं कि उनकी शादीशुदा जिंदगी से विश्वासघात हुआ है। थरूर के पाकिस्तानी पत्रकार मेहर तरार के साथ रिश्ते ने पुष्कर के मानसिक तनाव को और बढ़ा दिया था। अभियोजक ने पुष्कर की दोस्त और पत्रकार नलिनी सिंह के बयान पर ध्यान आकर्षित कराते हुए कहा कि उन्होंने कहा था कि दंपती के बीच तनावपूर्ण व खराब रिश्ता था। पोस्टमार्टम के अनुसार उनकी मौत जहर से हुई थी और पैर, हाथ और बांह की कलाई समेत उनके शरीर पर चोट के कई निशान थे। जिरह के दौरान थरूर के अधिवक्ता विकास पाहवा ने इन दलीलों का विरोध करते हुए कहा कि अभियोजक के लगाए आरोप बेबुनियाद व निरर्थक हैं। दोनों पक्षों को सुनने के बाद विशेष न्यायाधीश अजय कुमार कुहार ने सुनवाई को 17 अक्टूबर के लिए स्थगित कर दिया। आरोप पत्र के अनुसार इस अपराध के लिए कम से कम दस साल की सजा का प्रावधान है।

कांग्रेस सांसद शशि थरूर। फाइल

क्या है मामला : सुनंदा पुष्कर 17 जनवरी 2014 को दक्षिण दिल्ली स्थित एक पांच सितारा होटल के कमरे में मृत पाई गई थीं। दिल्ली पुलिस ने उनकी मौत के मामले में अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ हत्या का केस दर्ज किया था। हालांकि पिछले साल 14 मई को आरोप पत्र आत्महत्या के लिए उकसाने के आरोप के तहत शशि थरूर के खिलाफ मामला दायर किया गया था। थरूर इस मामले में जमानत पर हैं।

आज से सलीके से सड़क पर गाड़ी निकालिए

नई दिल्ली : रविवार से सड़क पर अपनी मोटरसाइकिल या कार लेकर निकलने वालों का अपेक्षाकृत सख्त नियमों से सामना होने वाला है। मोटर व्हीकल एक्ट में संशोधन संबंधी कई प्रावधान रविवार से ही लागू हो रहे हैं। ऐसे में मोटर ड्राइविंग में मामूली सी असावधानी अब जेब पर बहुत भारी पड़ने वाली है। खासतौर पर बच्चों को टू-व्हीलर चलाते देख खुश होने वाले पैरेंट्स को नए नियम बहुत भारी पड़ने वाले हैं। इमरजेंसी वाहनों को रास्ता नहीं देने की स्थिति में 10 हजार रुपये का जुर्माना देना होगा। आयोग्य होने के बावजूद वाहन चलाने पर 10 हजार का जुर्माना देय होगा। ओवर स्पीडिंग के लिए दो हजार तक का फाइन भरना होगा। (पेज-12)

गंगा की सेहत पर भारी पड़ रहे हैं 'व्यावसायिक हित'

हरिकिशन शर्मा, नई दिल्ली

सरकार ने गंगा नदी की अविरल धारा के लिए पिछले साल 'ई-फ्लो' निर्धारित कर नियम बना दिए थे, लेकिन ऊपरी गंगा बेसिन में स्थित कई हाइड्रोपावर कंपनियां इनका पालन नहीं कर रही हैं। केंद्रीय जल आयोग (सीडब्ल्यूसी) की निगरानी और एक विशेषज्ञ दल की रिपोर्ट से पता चला है कि ये कंपनियां अपने 'व्यावसायिक हितों' के चलते गंगा में जरूरी मात्रा में पानी नहीं छोड़ रही हैं। हाल यह है कि कई परियोजनाएं तो 'ई-फ्लो' की निगरानी के लिए समय पर आंकड़े तक भी नहीं भेज रही हैं।

सूत्रों के मुताबिक सीडब्ल्यूसी ने इस साल अप्रैल से जून के दौरान ऊपरी गंगा नदी बेसिन में 'ई-फ्लो' की निगरानी की तो पता चला कि चार परियोजनाओं ने अधिकांश समय पर 'ई-फ्लो' के अनिवार्य नियमों का पालन नहीं किया। नियमों का पालन न करने वाली परियोजनाओं में मानेरीभाली फेज-2, विष्णुप्रयाग एचईपी और श्रीनगर एचईपी शामिल हैं। मानेरीभाली फेज-1 और पशुलोक बैराज आंशिक रूप से 'ई-फ्लो' नियमों का पालन कर रहे हैं।

'ई-फ्लो' के तहत जिन मौजूदा परियोजनाओं में मानकों का पालन करते हुए जल छोड़ने की संरचना नहीं है, उन्हें तीन साल का समय दिया जाएगा ताकि वे संरचना में जरूरी बदलाव कर सकें। सभी मौजूदा परियोजनाओं की संरचना में निर्धारित 'ई-फ्लो' के हिसाब से पानी छोड़ने की सुविधा है और उनकी संरचना में किसी भी तरह का बदलाव करने की आवश्यकता नहीं है। इसके बावजूद कई परियोजनाएं 'ई-फ्लो' नियमों के अनुसार पानी नहीं छोड़ रही हैं। सीडब्ल्यूसी की रिपोर्ट में यह भी सामने आया है कि टिहरी, भीमगौड़ा बैराज और कानपुर बैराज से निर्धारित फॉरमेट में 'ई-फ्लो' का डाटा नहीं मिल रहा है। अप्रैल से जून की अवधि में टिहरी और भीमगौड़ा परियोजनाओं से 'ई-फ्लो' के आंकड़े घंटे के आधार पर नहीं मिले।

अविरल धारा

- निर्धारित 'ई-फ्लो' की व्यवस्था के बावजूद पानी नहीं छोड़ रहीं कई हाइड्रोपावर कंपनियां
- जल आयोग की रिपोर्ट ने खोली पोल, नहीं हो रहा नियमों का पालन

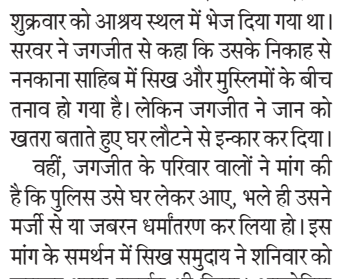

हाइड्रोपावर कंपनियों से गंगा में इस तरह जाता है पानी। फाइल

क्या हैं 'ई-फ्लो' नियम

'ई-फ्लो' नियमों के मुताबिक ऊपरी गंगा नदी बेसिन में देवप्रयाग से लेकर हरिद्वार तक नवंबर से मार्च के दौरान औसत मासिक प्रवाह का कम से कम 20 फीसद, अक्टूबर से अप्रैल-मई के दौरान 25 फीसद और जून से सितंबर तक 30 फीसद प्रवाह सुनिश्चित किया जाना है। वहीं हरिद्वार से उन्नाव के बीच गंगा में पड़ने वाले चार बैराज- भीमगौड़ा, बिजनौर, नरौरा और कानपुर के लिए अक्टूबर से मई और जून से सितंबर की अवधि के लिए अलग-अलग 'ई-फ्लो' तय किए गए। मसलन, हरिद्वार के निकट भीमगौड़ा बैराज से आगे अक्टूबर से मई के दौरान कम से कम 36 क्यूमेक (घनमीटर प्रति सेकेंड) और जून से सितंबर के दौरान 57 क्यूमेक जल गंगा नदी की धारा में बनाए रखना होगा। इसी तरह बिजनौर, नरौरा और कानपुर में अक्टूबर से मई के दौरान कम से कम 24 क्यूमेक और जून से सितंबर के दौरान 48 क्यूमेक जल गंगा नदी में बनाए रखना होगा।

नए संकेत

आरएसएस प्रमुख भागवत और जमीयत उलेमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना अरशद मदनी के बीच अहम मुलाकात हुई है। बैठक के बाद भागवत ने कहा-संघ के हिंदुत्व का मतलब सभी धर्मों से है

भाईचारे के लिए साथ काम कर सकते हैं संघ और जमीयत

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

बेहद महत्वपूर्ण घटनाक्रम में मुस्लिम संगठन जमीयत उलेमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना अरशद मदनी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर संघचालक मोहन भागवत से मुलाकात की है। यह मुलाकात शुक्रवार को नई दिल्ली के झंडेवालान स्थित संघ कार्यालय केशव कुंज में हुई। डेढ़ घंटे चली बैठक के बारे में संघ अभी कुछ बोलने को तैयार नहीं है, लेकिन जमीयत की ओर से बताया गया कि मुलाकात में देश के मौजूदा हालात पर चिंता जताते हुए आपसी भाईचारा बढ़ाने के लिए साथ आकर काम करने की जरूरत पर जोर दिया गया।

इस तरह की बैठक की पटकथा दो सालों से लिखी जा रही थी। आपसी भाईचारा को बढ़ावा देने में जुटा राष्ट्रीय जनमंच इसके लिए प्रयासरत था। अब आगे संघ और जमीयत में नियमित संवाद के लिए समन्वय की जिम्मेदारी अखिल भारतीय सह संपर्क प्रमुख रामलाल को दी गई है, जो बैठक में भी मौजूद थे। बताया जा रहा है कि मुलाकात के दौरान मदनी ने कहा कि देश में भय का माहौल गर्माता जा रहा है। भीड़ की हिंसा और तत्काल तीन तलाक को लेकर अल्पसंख्यक वर्ग में चिंता का माहौल है। एक बड़े समुदाय में भय पैदा कर देश का विकास नहीं हो सकता है। इसे दूर करने की जरूरत है। इस पर मोहन भागवत ने कहा कि संघ शुरू से मानता रहा है कि उसके हिंदुत्व का मतलब हिंदू, मुस्लिम सभी धर्मों से है। वह शांति और आपसी भाईचारे का हिमायती है, जिस पर मदनी ने बंद कमरों से बाहर निकलकर दोनों के मिलकर काम करने का आग्रह किया है। गौरतलब है कि करीब दो साल पहले भी मोहन भागवत ने दिल्ली में वरिष्ठ मुस्लिम बुद्धिजीवियों से मुलाकात की थी। पिछले वर्ष विज्ञान भवन में आयोजित तीन दिवसीय 'भविष्य का भारत' व्याख्यानमाला में भागवत ने लोगों से खासकर मुस्लिम समुदाय से संघ को समझने के लिए करीब आने का आग्रह किया था। इस शीर्ष मुलाकात के राजनीतिक मायने निकाले जा रहे हैं। यह इसलिए भी कि नवंबर माह में सुप्रीम कोर्ट से राममंदिर निर्माण पर फैसला आने का अनुमान है। वहीं, जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 व 35 ए हटाने को लेकर देश के बाहर-भीतर सियासत गर्माई हुई है।

जमीयत उलेमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना अरशद मदनी ने मोहन भागवत से मुलाकात की। इस मौके पर संघ के सह संपर्क प्रमुख रामलाल भी मौजूद रहे। मदनी के साथ रामलाल। एएनआइ

कोलकाता पहुंचे आरएसएस प्रमुख

जासं, कोलकाता : राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत शनिवार को चार दिवसीय प्रवास पर कोलकाता पहुंचे। बताया जा रहा है कि भागवत का कोई सार्वजनिक कार्यक्रम नहीं है। वह सिर्फ सांगठनिक बैठकों में हिस्सा लेंगे। भागवत का एक महीने के अंदर कोलकाता का यह दूसरा दौरा है। संघ के सूत्रों का कहना है कि वह तीन दिनों तक उत्तर और दक्षिण बंगाल के प्रचारकों के साथ संघ प्रमुख बैठक करेंगे। उधर, 7 से 9 सितंबर तक राजस्थान के पुष्कर में आयोजित आरएसएस की राष्ट्रीय कार्यशाला में भागवत शामिल होंगे। इसमें भाजपा अध्यक्ष अमित शाह, कार्यकारी अध्यक्ष जेपी नड्डा, महासचिव राम माधव भी शामिल होंगे।

सियासत ▶ दिल्ली सीएम के लिए भाजपा का प्रत्याशी तय नहीं, आप बना रही इसे मुद्दा

आप बढ़ा रही भाजपा की बेचैनी

पूछा, आप का मुख्यमंत्री पद का चेहरा कौन होगा?

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

आम आदमी पार्टी (आप) ने मुख्यमंत्री पद को लेकर एक ऐसा मुद्दा छेड़ दिया है जो भाजपा के लिए गले की हड्डी बन रहा है। आप यह बात भली भांति समझ रही है कि भाजपा इतनी आसानी से दिल्ली के लिए मुख्यमंत्री का चेहरा घोषित करने वाली नहीं है। ऐसे में विधानसभा चुनाव होने तक आप इस मुद्दे को जितना उठाएगी, भाजपा की बेचैनी उतनी ही बढ़ेगी।

दिल्ली विधानसभा चुनाव भले ही फरवरी में प्रस्तावित है, मगर आप सहित सभी दल तैयारी में जोर शोर से जुटे हैं। आम आदमी पार्टी जन संवाद करने के लिए एक सितंबर से तीन अक्टूबर तक अभियान चलाने जा रही है। इसके तहत सरकार की उपलब्धियों के बारे में जनता को बताया जाएगा। वहीं सरकार के प्रति जनता की राय भी पार्टी जानेगी। पार्टी ने यह भी साफ कर दिया है कि आगामी विधानसभा चुनाव मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के नाम पर ही लड़ा जाएगा। पार्टी उनके नाम पर वोट मांगेगी। इन सब के बीच आप भाजपा से पूछ रही है कि उसका मुख्यमंत्री पद का चेहरा कौन होगा? इस मुद्दे पर भाजपा जवाब देने से बच रही है।

दिल्ली फतह करने के लिए भाजपा सांसदों ने किया मंथन

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : दिल्ली में सत्ता का वनवास खत्म करने को लेकर भाजपा नेतृत्व गंभीर है। फरवरी में विधानसभा चुनाव प्रस्तावित है और इसकी तैयारी अभी से शुरू कर दी गई है। चुनाव प्रभारी व सह-प्रभारियों की तैनाती के बाद भाजपा अध्यक्ष व गृह मंत्री अमित शाह खुद विधानसभा चुनाव की तैयारियों पर नजर बनाए हुए हैं। शनिवार देर शाम उन्होंने दिल्ली के सभी सांसदों व विधायकों के साथ राजधानी की राजनीतिक स्थिति और पार्टी की गतिविधियों पर चर्चा की। शाह ने प्रदेश भाजपा अध्यक्ष मनोज तिवारी सहित सभी सांसदों, तीनों विधायकों व

गृह मंत्री अमित शाह ने दिल्ली के सभी भाजपा सांसदों, विधायकों व स्थानीय नेताओं से चर्चा की

दिल्ली भाजपा के पूर्व अध्यक्ष विजय गोयल व सतीश उपाध्याय के साथ बैठक की। सदस्यता अभियान व केंद्रीय नेतृत्व द्वारा दिए गए अन्य कार्यक्रमों की प्रगति के बारे में जानकारी हासिल की। उन्होंने नरेंद्र मोदी सरकार द्वारा लिए गए फैसलों खासकर जम्मू कश्मीर से धारा 307 व 35 ए हटाए जाने को प्रचारित करने को कहा। इसके साथ ही दिल्ली की अरविंद केजरीवाल सरकार की नाकामियों को भी जनता के बीच ले जाने का निर्देश दिया। इसके अलावा दिल्ली के विकास के लिए भाजपा की सरकार क्यों जरूरी है इस बारे में लोगों को बताने और केंद्र सरकार की उपलब्धियां जन-जन तक पहुंचाने को कहा। माना जा रहा है अगले कुछ दिनों में दिल्ली भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष की हिदायत के अनुसार रणनीति बनाकर चुनावी तैयारी को गति देगी। पार्टी ने केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावडेकर को दिल्ली का चुनाव प्रभारी बनाया है। उनके साथ केंद्रीय राज्य मंत्री हरदीप सिंह पुरी व नित्यानंद राय सह प्रभारी बनाए गए हैं।

बगैर दूल्हें की बारात : आप के राष्ट्रीय नेता व राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने कहा कि हम तो भाजपा से यही पूछ रहे हैं कि आप दिल्ली में विधानसभा चुनाव लड़ने जा रहे हो बताओ कि आप का मुख्यमंत्री पद का चेहरा कौन है? भला कभी ऐसा भी होता है कि बगैर दूल्हे की बारात गई हो। सच तो यह है कि भाजपा में मुख्यमंत्री पद के लिए होड़ मची हुई है। भाजपा के तीन नेता मुख्यमंत्री पद के लिए पार्टी में बवाल मचाए हुए हैं। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष मनोज तिवारी और पूर्व केंद्रीय मंत्री विजय गोयल अलग-अलग कार्यक्रम चला रहे हैं। विजेंद्र गुप्ता भी मुख्यमंत्री पद की दौड़ में हैं। हमने इसे लेकर विजय गोयल को पत्र लिख है। मगर उनकी ओर से कोई जवाब नहीं आया है।

जनता पूछ रही है : आम आदमी पार्टी के मुख्य प्रवक्ता सौरभ भारद्वाज ने कहा कि यह केवल हम ही नहीं जनता भी भाजपा से पूछ रही है कि उसका मुख्यमंत्री पद का चेहरा कौन है? इसके पीछे लोग यह तर्क दे रहे हैं कि भाजपा ने लोकसभा का चुनाव मोदी बनाम कौन पर लड़ा है। ऐसे में अब विधानसभा चुनाव में वह अरविंद केजरीवाल के मुकाबले मुख्यमंत्री पद का चेहरा क्यों नहीं घोषित कर रही है। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के स्तर का दिल्ली भाजपा में कोई नेता नहीं है। केजरीवाल ने पिछले पांच सालों में जितना काम किया है वह जनता के सामने है। भाजपा दोनों ओर से फंस रही है।

गोयल बोले, अपना घर संभालें आप के नेता : भाजपा नेता व पूर्व केंद्रीय मंत्री विजय गोयल का कहना है कि आम आदमी पार्टी विस चुनाव के बाद एक भी चुनाव नहीं जीती है। उसके नेता और कार्यकर्ता पार्टी छोड़-छोड़कर जा रहे हैं। आम आदमी पार्टी के लोगों को हमारी चिंता की जरूरत नहीं है। वे अपना घर संभालें।

दिल्ली सरकार ने केंद्र के फैसले पर अभी नहीं दी सहमति

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : केंद्र सरकार के मोटर वाहन (संशोधन) बिल-2019 को लागू करने के मामले में दिल्ली परिवहन विभाग के उप सचिव राजेश राणा ने ट्रैफिक पुलिस के विशेष आयुक्त को पत्र भेजकर मोटर वाहन बिल को परिवहन आयुक्त द्वारा मंजूरी देने की बात की है। हालांकि परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत ने इस बिल को लेकर सभी स्टेक होल्डर्स (परिवहन से संबंधित सरकारी एजेसियों) के साथ मिलकर सहमति बनाने की बात कही है। इसे लागू करने के लिए दिल्ली सरकार ने अभी अधिसूचना जारी नहीं की है। ऐसे में रविवार से इसे दिल्ली में लागू करना आसान नहीं होगा।

एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने मोटर वाहन (संशोधन) बिल-2019 का गजट नोटिफिकेशन 30 अगस्त को जारी किया। लेकिन दिल्ली के परिवहन मंत्री के पास शुक्रवार शाम सात बजे इससे जुड़ी फाइल आई। इसलिए इस पर कोई सहमति नहीं बन पाई है। हालांकि सख्त हुए ट्रैफिक नियमों का परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत ने स्वागत करते हुए कहा कि दिल्ली सरकार इस विषय को लेकर एक-दो दिन में विचार करेगी।

परिवहन मंत्री ने कहा कि कठोर दंड से दुर्घटनाओं में कमी आएगी। मगर उन्होंने कहा कि इंफोर्समेंट एजेंसियों को सुविधा मिलनी चाहिए नहीं तो उसके अधिकारी केवल अदालती मामलों में ही व्यस्त रहेंगे।

जीटीबी अस्पताल परिसर में डॉक्टर ने की खुदकशी

स्वदेश कुमार, नई दिल्ली

तीन साल पहले अतिरिक्त चिकित्सा अधीक्षक ने की थी आत्महत्या

जीटीबी अस्पताल परिसर में आठवीं मंजिल से छलांग लगाकर एक डॉक्टर ने खुदकशी कर ली है। मृतक की पहचान डॉ. पल्लव सहारिया (44) के रूप में हुई है। पुलिस को मौके से कोई सुसाइड नोट बरामद नहीं हुआ है। अब तक की जांच में कारणों का पता नहीं चला है। पुलिस ने शव को जीटीबी अस्पताल की मोर्चरी में भेज दिया है। रविवार को उनके परिजन के असम से यहां पहुंचने के बाद पोस्टमार्टम किया जाएगा। शुरुआती जांच में पुलिस मानसिक तनाव की वजह से यह कदम उठाने की आशंका जता रही है। तीन साल पहले अस्पताल की पांचवीं मंजिल से गिरकर एक अतिरिक्त चिकित्सा अधीक्षक की मौत हुई थी। बाद में इसे खुदकशी करार दिया गया।

मूलरूप से गुवाहाटी, असम के रहने वाले डॉ. पल्लव पैथोलॉजिस्ट थे। वह नोएडा में एक निजी पैथ लैब में कार्यरत थे। उनकी पत्नी डॉ. प्रियंका गोगोई जीटीबी अस्पताल में ब्लड बैंक के प्रमुख के पद पर कार्यरत हैं। इस वजह से अस्पताल परिसर में ही स्टाफ क्वार्टर में आठवीं मंजिल पर उन्हें फ्लैट आवंटित है। शनिवार सुबह करीब दस बजे डॉ. प्रियंका अस्पताल चली गईं। दोनों बच्चे स्कूल जा चुके थे। सुबह करीब साढ़े दस बजे डॉ. पल्लव को नोएडा स्थित कार्यालय के निकलना था, लेकिन उन्होंने आठवीं मंजिल से नीचे छलांग लगा दी। आस पड़ोस के लोगों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुंची और खून से लथपथ डॉ. पल्लव को अस्पताल की इमरजेंसी में ले गए। वहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने डॉ. पल्लव के फ्लैट की तलाशी ली, लेकिन वहां से कोई सुसाइड नोट बरामद नहीं हुआ। डॉ. प्रियंका और अन्य परिजन से पूछताछ में भी कारण स्पष्ट नहीं हो पाया है। डॉ. प्रियंका को करीब से जानने वाले डॉक्टरों ने बताया कि घर में किसी तरह का विवाद नहीं था। ऐसे में पुलिस के लिए यह मामला पहेली बन गया है। जीटीबी अस्पताल परिसर में तीन साल में डॉक्टर की खुदकशी का यह दूसरा मामला है। इससे पहले 31 अगस्त 2016 में अतिरिक्त चिकित्सा अधीक्षक डॉ. आरकेबी चौधरी ने पांचवी मंजिल से छलांग लगाकर जान दे दी थी। इस मामले में परिजन ने अधिकारियों पर प्रताड़ना का आरोप लगाया था। इसके अलावा जनवरी, 2018 में जीटीबी अस्पताल परिसर स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल साइंसेज (यूसीएमएस) में पीजी (मेडिसिन) के प्रथम वर्ष के छात्र डॉ. शरत प्रभु ने दिलशाद गार्डन स्थित फ्लैट पर नशे का इंजेक्शन लगाकर खुदकशी कर ली थी।

न्यूज गैलरी

दिल्ली-एनसीआर में सीएनजी के दाम बढ़े

नई दिल्ली : दिल्ली-एनसीआर में सीएनजी के दाम में इजाफा हुआ है। दिल्ली के साथ ही रेवाड़ी, गुरुग्राम व करनाल में सीएनजी 50 पैसे तो नोएडा, ग्रेटर नोएडा व गाजियाबाद में यह 55 पैसा महंगी हो गई है। यह बढ़ोतरी रविवार सुबह छह बजे लागू हो जाएगी। बढ़ोतरी के बाद से दिल्ली में सीएनजी 47 .10 रुपये प्रति किलो तो नोएडा, ग्रेटर नोएडा व गाजियाबाद में 53 .50 रुपये में मिलेगी। इसी तरह गुरुग्राम व रेवाड़ी में 58 .95 रुपये तथा करनाल में यह 55 .95 रुपये प्रति किलो में मिलेगी। बढ़ोतरी के पीछे इंद्रप्रस्थ गैस लिमिटेड (आइजीएल) ने डॉलर के मुकाबले रुपये को कमजोर होना बताया है। (जासं)

डेंगू के खिलाफ केजरीवाल का महाअभियान आज से

नई दिल्ली : दिल्ली को डेंगू और चिकनगुनिया से मुक्ति दिलाने के लिए दिल्ली सरकार रविवार से 10 हफ्ते, 10 बजे, 10 मिनट महाअभियान शुरू कर रही है। इस अभियान को सफल बनाने के लिए मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने अपील की है कि सभी कार्यकर्ता आज 10 बजे अपने घरों का निरीक्षण करें। केजरीवाल ने ट्वीट कर अपील की है कि कार्यकर्ता अपने घरों का निरीक्षण करने के साथ ही गली-मोहल्ले में हर घर में जाकर सबको इस अभियान के बारे में बताएं और उनसे पूछें कि उन्होंने अपने घरों में जांच की है क्या। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज रविवार 10 बजे अगर कुछ कर रहे हैं तो प्लीज उसे निरस्त कर दीजिए। बस अपने घर की जांच करनी है। डेंगू को हराना है। मुख्यमंत्री ने कहा कि वह आज 10 बजे अपने घर की जांच करेंगे। (जासं)

डूसू चुनाव में समान फीस और मेट्रो बना बड़ा मुद्दा

नई दिल्ली : दिल्ली विश्वविद्यालय (डीयू) में छात्र संगठनों की ओर से कॉलेजों में जाकर छात्र संघ चुनाव के लिए प्रचार किया जा रहा है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) और नेशनल स्टूडेंट यूनियन ऑफ इंडिया (एनएसयूआइ) की तरफ से डूसू चुनाव के लिए घोषणापत्र तैयार करने के लिए छात्रों के साथ संवाद किया जा रहा है। एबीवीपी की राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी मोनिका चौधरी ने कहा कि घोषणापत्र के लिए संगठन के प्रतिनिधियों की बैठकें हो रही हैं। सात सितंबर को घोषणापत्र का एलान किया जा सकता है। इस वर्ष छात्राओं की सुरक्षा, नए छात्रावास के निर्माण, मेट्रो पास जैसे मुद्दों को घोषणापत्र में शामिल करेंगे। साथ ही विश्वविद्यालय में सभी पाठ्यक्रमों की एक समान फीस लागू हो। वहीं एनएसयूआइ के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष अक्षय लाकड़ा ने बताया कि इस वर्ष डूसू चुनाव के लिए घोषणापत्र में मेट्रो किराये में छात्रों को छूट को बड़ा मुद्दा बनाया जाएगा। (जासं)

पाक पत्रकार के साथ थरूर ने दुबई में बिताई थीं तीन रातें

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

सुनंदा। फाइल फोटो

सुनंदा पुष्कर मौत मामला

अभियोजन पक्ष ने कोर्ट में पत्रकार नलिनी सिंह का पढ़ा बयान

सुनंदा पुष्कर मौत मामले में अभियोजन पक्ष ने राउज एवेन्यू कोर्ट को बताया कि सुनंदा की पत्रकार मित्र नलिनी सिंह ने अपने बयान में पुलिस को बताया था कि कांग्रेस नेता शशि थरूर और पाकिस्तानी पत्रकार मेहर तरार ने दुबई में एक साथ तीन रातें बिताई थीं। जिरह के दौरान अभियोजक अतुल श्रीवास्तव ने नलिनी सिंह के बयान को पढ़ा। नलिनी ने बयान में कहा था कि वह सुनंदा को तीन-चार साल से जानता थीं। सुनंदा ने निजी जीवन के बारे में उनसे साझा करना शुरू कर दिया था। उन्होंने थरूर के साथ अपने रिश्ते को साझा किया और बताया था कि थरूर और तरार ने एक साथ तीन रातें बिताई हैं। नलिनी ने अपने बयान में कहा था कि मौत से एक दिन पहले सुनंदा ने फोन किया था। वह रो रही थीं कि थरूर और तरार ने रोमांटिक संदेश साझा किए। संदेश में लिखा था कि थरूर आम चुनावों के बाद सुनंदा को तलाक दे देंगे। इतना ही नहीं थरूर के परिवार ने भी इस फैसले का समर्थन किया था।

अभियोजक ने सुप्रीम कोर्ट द्वारा तरुण तेजपाल के फैसले का हवाला देते हुए कहा, यहां तक कि मानसिक यातना भी क्रूरता हो सकती है। उन्होंने कहा कि यह दोनों पक्षों की तीसरी शादी थी। मानसिक यातना ने सुनंदा को आत्महत्या करने के लिए प्रेरित किया था। अभियोजक ने कोर्ट को बताया सुनंदा के बेटे शिव मेनन ने जांच के दौरान कहा था कि उनकी मां एक मजबूत महिला थीं। वह आत्महत्या नहीं कर सकतीं। उन्होंने सुनंदा के भाई आशीष के बयान को भी पढ़ा, जिसमें उन्होंने कहा था कि सुनंदा मेरी बड़ी बहन थीं। वह अपनी शादी में खुश थीं, लेकिन हालिया विवाद के कारण वह तनावग्रस्त थीं। वह कभी आत्महत्या नहीं कर सकती थीं।

अभियोजक ने अदालत को बताया कि थरूर के घरेलू सहायक नारायण सिंह ने अपने बयान में कहा था कि सर और मैडम का झगड़ा हुआ था। सुनंदा अपने दोस्त संजय के साथ थीं। त्रिवेंद्रम से वापस आने के बाद उन दोनों में झगड़ा हुआ। यहां तक कि दुबई में वे दोनों केटी नाम की एक लड़की से लड़े। वे दोनों सुबह चार बजे तक लड़ते रहे। सुनंदा सुबह पांच बजकर 30 मिनट तक फोन पर थीं।

विमानों में यात्रियों का सामान चुराने वाला शातिर फिर चढ़ा पुलिस के हत्थे

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : आइजीआइ एयरपोर्ट थाना पुलिस ने एक ऐसे शातिर चोर को गिरफ्तार किया है, जो चोरी के मकसद से हवाई यात्रा करता था। इस दौरान उसे जहां भी मौका मिलता वह यात्रियों का कीमती सामान और नकदी लेकर फरार हो जाता था। आरोपित की पहचान राजेश कपूर के रूप में हुई है। उस पर पहले से चोरी के 11 मुकदमे दर्ज हैं। राजेश की चोरी की हरकतों के कारण ही कई एयरलाइंस कंपनियों ने उसे ब्लैक लिस्ट कर रखा था। बावजूद इसके वह फर्जी नाम से हवाई सफर करता था। आइजीआइ एयरपोर्ट पुलिस वर्ष 2017 में भी उसे गिरफ्तार कर चुकी है। आरोपित सिंगापुर और मलेशिया में भी रह चुका है।

आइजीआइ एयरपोर्ट जिला के डीसीपी संजय भाटिया ने बताया कि 29 अगस्त को विस्तारा एयरलाइंस के ड्यूटी मैनेजर ने पुलिस में एक संदिग्ध यात्री की शिकायत की। विमान में उसकी गतिविधियां संदिग्ध पाए जाने पर एयरलाइंस कर्मचारी ने उसे दबोच पुलिस के हवाले कर दिया। उसके पास से सचिन नाम से बना आधार कार्ड बरामद हुआ। उसने सचिन गुप्ता नाम से ही टिकट भी बनवा रखा था। जब पुलिस ने सख्ती से उससे पूछताछ की तो पता चला कि उसका असली नाम राजेश कपूर है और उड़ानों में चोरी की वारदात में वह शामिल रहा है। उसके खिलाफ दर्ज 11 मुकदमों में से चार आइजीआइ एयरपोर्ट थाने के हैं।

मतदाता सूची में स्वयं जांचिए अपना नाम

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

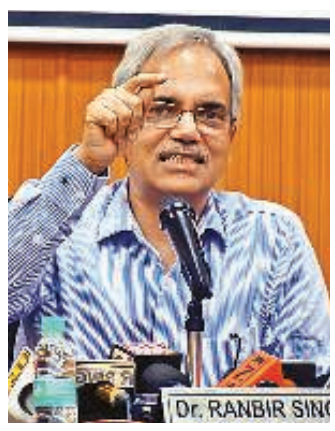

दिल्ली में मतदाता सूची में सुधार व नाम दर्ज करने को लेकर पत्रकार वार्ता करते मुख्य चुनाव अधिकारी डॉ. रणवीर सिंह। जागरण

फरवरी में विधानसभा चुनाव मानकर सीईओ कार्यालय कर रहा तैयारी

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : दिल्ली में समय से पहले विधानसभा चुनाव कराने की अटकलों पर दिल्ली के मुख्य निर्वाचन अधिकारी डॉ. रणबीर सिंह ने कहा है कि वह फरवरी में प्रस्तावित चुनाव के आधार पर चुनाव की तैयारी कर रहे हैं। यह पूछे जाने पर कि क्या अक्टूबर में भी चुनाव हो सकते हैं। इसके जवाब में उन्होंने कहा कि आप लोगों का इस बारे में क्या सूत्र हैं मुझे नहीं मालूम। मेरे पास चुनाव आयोग से ऐसे कोई संकेत नहीं दिए गए हैं कि समय से पहले चुनाव हो सकते हैं। हालांकि प्रस्तावित समय से छह महीने पहले भी चुनाव कराए जाने का प्रावधान है। मगर यह चुनाव आयोग ही तय करता है। पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि उनकी जिम्मेदारी है कि राज्य में निष्पक्ष और व्यवस्थित तरीके से चुनाव हों।

जाएं। यदि एक मतदाता के नाम कई जगह हैं तो वे हटाए जाएं। दिल्ली के सीईओ का कहना है कि ईवीपी कार्यक्रम को ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह से किया जा सकता है। ऑनलाइन में दो तरह से आवेदन कर सकेंगे। आप नेशनल वोटर सर्विस पोर्टल पर जाकर मतदाता सूची में अपना नाम देख सकते हैं। कुछ गड़बड़ी है तो उसे जांच सकेंगे तथा दूसरे में मोबाइल वोटर हेल्पलाइन एप पर जाकर भी इस प्रक्रिया को पूरा कर सकेंगे। परिवार के 16 से 18 साल के सदस्यों के नाम भी लोड कर सकेंगे। इसके अलावा अपने क्षेत्र के किसी भी कॉमन सर्विस सेंटर पर जाकर मतदाता सूची में गड़बड़ी ठीक करा सकते हैं। दिल्ली में ऐसे 500 सक्रिय सेंटरों को भी यह जिम्मेदारी दी गई है। ये सेंटर हर विधानसभा क्षेत्र में सात से आठ हैं। सेंटरों के संचालक कम पैसे में यह काम करके देंगे। वहीं दिव्यांग मतदाता हेल्पलाइन नंबर 1950 पर कॉल करके सत्यापन के लिए सहायता प्राप्त कर सकते हैं। माना जा रहा है कि इस प्रक्रिया से वोट काटे जाने के आरोपों में भी कमी आएगी। लोग स्वयं भी इस कार्रवाई का हिस्सा बनेंगे और गड़बड़ियों को भी ठीक किया जा सकेगा।

अपनी विरासत वापस लाने पर गर्व : पटेल

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

पुराना किला में संग्रहालय का उद्घाटन करने के बाद प्राचीन मूर्तियों का अवलोकन करते केंद्रीय मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल व सांसद मीनाक्षी लेखी। इस संग्रहालय में 195 मूर्तियां हैं। जागरण

पुराने किले में शनिवार को केंद्रीय मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल ने पुरावशेषों की प्रदर्शनी के लिए संग्रहालय का उद्घाटन किया। संग्रहालय में मौर्यकाल की टेराकोटा की देवी मां, ब्रह्मा-ब्रह्माणी, चोल काल की पार्वती व श्रीदेवी की कांस्य मूर्ति व खड़े बुद्ध की मूर्ति समेत 195 मूर्तियां हैं। इनमें कई मूर्तियां ऐसी हैं जिन्हें दुनियाभर में चोर व तस्करों से बरामद किया गया और भारत सरकार इन्हें वापस लेकर आई। यह संग्रहालय सुबह 10 से शाम पांच बजे तक पर्यटकों के लिए खोला जाएगा।

इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री ने कहा कि यह हर भारतीय के लिए गर्व की बात है कि हम अपनी विरासत को वापस अपने देश लेकर आए हैं। इस दौरान उन्होंने बताया कि इस तरह की 4,144 प्राचीन मूर्तियों जब्त की गई हैं। इस मौके पर उनके साथ नई दिल्ली से सांसद मीनाक्षी लेखी समेत एसआइ के अन्य अधिकारी भी मौजूद थे।

दो भागों में विभाजित की गई है गैलरी : पर्यटकों के लिए इस गैलरी को दो भागों में विभाजित किया गया है। इसके एक भाग में विदेश से लाई गईं मूर्तियों को प्रदर्शित किया गया है व दूसरे भाग में ऐतिहासिक कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया है।

कुतुब मीनार में एलईडी लाइटों का उद्घाटन किया : पुराने किले के बाद केंद्रीय मंत्री कुतुब मीनार पहुंचे। वहां उन्होंने एलईडी लाइटों का उद्घाटन किया। इस मौके पर उनके साथ दक्षिणी दिल्ली के सांसद रमेश बिधूड़ी व एएसआइ दिल्ली सर्किल के निदेशक एनके पाठक भी मौजूद थे। बताया जा रहा है कि एलईडी लाईटों से 62 फीसद कम बिजली की खपत होगी जिससे करीब 16 हजार रुपये प्रतिमाह की बचत होगी।

नोएडा से लखनऊ तक तैनात अधिकारियों की फंसेगी गर्दन

सुरेंद्र राम, नोएडा

फर्जी पत्रकार मामला

अवैध उगाही के आरोप में गिरफ्तार कथित पत्रकारों के तार नोएडा से लेकर लखनऊ तक जुड़े हैं। पूछताछ में आरोपितों ने दर्जन भर पुलिस अधिकारियों के नाम का पर्दाफाश किया है। पुलिस की कार्रवाई की जद में नोएडा से लेकर लखनऊ तक तैनात कई अधिकारी आ हैं। हालांकि अभी जिलाधिकारी व एसएसपी ने अवैध कब्जा व उगाही कराने, पैसे लेकर ट्रांसफर-पोस्टिंग कराने समेत अन्य धोखाधड़ी के मामलों में लिप्त आरोपित अधिकारियों के नाम उजागर नहीं किए हैं। यह दावा किया गया है कि जल्द ही इनके नामों का भी पर्दाफाश किया जाएगा। आरोपितों के कारनामों में शामिल कई अधिकारियों के नाम सामने आने से लखनऊ तक हड़कंप मच गया है।

अधिकारियों ने बताया है कि ट्रांसफर-पोस्टिंग, अवैध उगाही व जमीनों पर कब्जा, राजनीतिक नियुक्तियां समेत अन्य धोखाधड़ी के कारनामों में पुलिस अधिकारियों, पत्रकारों और वकीलों ने कॉकटेल बना लिया था। इनके बीच बहुत अच्छी बनती थी। इसी कॉकटेल की वजह से नितिश पांडेय ने गढ़ी चौखंडी गांव में प्राधिकरण की जमीन की रजिस्ट्री करा ली और उस पर अवैध कब्जा कर लिया। इसमें कोतवाली फेस में तैनात कुछ पुलिसकर्मियों की भूमिका संदिग्ध है। अवैध कब्जा कराने में लिप्त पुलिस अधिकारी व कर्मचारियों की जांच की जा रही है। इसमें कुछ साक्ष्य भी पुलिस के पास मौजूद हैं। स्थानीय पुलिस अधिकारियों से साठगांठ कर आरोपित कांस्टेबल, एसआइ व इंस्पेक्टरों की ट्रांसफर पोस्टिंग कराते थे। इस तरह की चार ऑडियो पुलिस के पास मौजूद हैं। इनमें आरोपित अधिकारियों से बातचीत कर रहे हैं।

एसएसपी वैभव कृष्ण ने दावा किया है कि आरोपितों के मोबाइल फोन के वाट्सएप चैट, मैसेज, ऑडियो रिकॉर्डिंग मौजूद है। ये साक्ष्य परीक्षण के लिए एक प्रतिष्ठित लैब को भेजा गए हैं। चैट, ऑडियो व मैसेज से पता चला है कि ये लोग जानबूझ कर फर्जी खबरें प्रसारित कर रहे थे। चैट में आरोपित सुशील पंडित ने स्वीकार भी किया है कि यह खबर गलत है।

हार्दिक पहुंचे जेएनयू एनएसयूआइ को नोटिस

जासं, नई दिल्ली : गुजरात के पाटीदार नेता हार्दिक पटेल के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में शुक्रवार रात को पहुंचने के बाद नेशनल स्टूडेंट यूनियन ऑफ इंडिया (एनएसयूआइ) को जेएनयू छात्र संघ चुनाव समिति की तरफ से कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है। एनएसयूआइ को इस मामले में 24 घंटे में जवाब देने के लिए कहा गया है। चुनाव समिति के अधिकारियों की ओर से कहा गया है कि संतोषजनक जवाब नहीं मिलने पर एनएसयूआइ का नामांकन रद हो सकता है।

जेएनयू छात्र संघ के मुख्य चुनाव आयुक्त शशांक पटेल ने बताया कि हार्दिक जेएनयू में रात करीब 10 बजे गंगा ढाबा के पास आए थे। छात्र संघ चुनाव समिति के पदाधिकारियों ने उन्हें नियमों से अवगत कराया और कहा कि विवि में आचार संहिता लागू है और यह उसकी अवेहलना है। चुनाव के नियमों के अनुसार कोई भी बाहरी व्यक्ति छात्र संगठनों के लिए प्रचार नहीं कर सकता है। वहीं, एनएसयूआइ के जेएनयू प्रभारी सनी मेहता ने कहा कि हार्दिक पटेल वहां प्रचार के लिए नहीं आए थे, बल्कि अपने दोस्तों से मिलने और एक ढाबे पर चाय पीने आए थे।

चेतावनी

त्वचा के काला पड़ने और अन्य तरह की हो रही एलर्जी, डॉक्टर बोले संभल कर करें हेयर कलर व फेयरनेस क्रीम का इस्तेमाल

हर्बल मेहंदी में केमिकल लोचा, संक्रमित हो रही त्वचा

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

फेयरनेस क्रीम से त्वचा की एलर्जी होने की बात पहले भी सामने आती रही है। अब हेयर कलर व हर्बल मेहंदी से त्वचा रोग होने की बात सामने आई है। ऐसे में यदि आप यह सोचकर बाल रंगने में हर्बल मेहंदी का इस्तेमाल कर रहे हैं कि यह रसायन मुक्त है तो सचेत हो जाएं। एम्स के अध्ययन में यह बात सामने आई कि हर्बल मेहंदी में भी ऐसे रासायन इस्तेमाल हो रहे हैं जिनसे एलर्जी से पीड़ित होकर लोग इलाज के लिए पहुंच रहे हैं। साथ ही विदेश में हुए एक अंतरराष्ट्रीय शोध में भी बात समाने आ चुकी है कि हेयर डाई व हर्बल मेहंदी में रसायनों की मिलावट हो रही है। लिहाजा एम्स ने एक दूसरा शोध भी शुरू किया है। इसमें यह पता लगाया जा रहा है कि देश में तैयार हेयर कलर में किस तरह के रसायन मिलाए जा रहे हैं।

एम्स के त्वचा रोग विभाग के प्रमुख डॉ. वीके शर्मा ने कहा कि यूरोप में जो शोध हुआ था, उस दौरान शोधकर्ताओं ने भारत में बनने वाले हेयर कलर के सैंपल भी लिए थे, जिसमें हर्बल मेहंदी के उत्पाद शामिल थे। उस शोध में पाया गया था कि हेयर डाई में पांच तरह के रसायन का इस्तेमाल हो रहा है। हर्बल मेहंदी में भी रसायन युक्त डाई का इस्तेमाल हो रहा है। जिसमें पीपीडी सबसे प्रमुख है।

आइआइटी रुड़की के साथ मिलकर मिलावट पर शोध : डॉ. वीके शर्मा ने कहा कि हर्बल मेहंदी के पैकेट पर यह बात लिखी नहीं होती है कि उसमें क्या मिलाया गया है। इसलिए एम्स ऋषिकेश व आइआइटी रुड़की के साथ मिलकर यहां भी शोध किया जा रहा है। इसके लिए दिल्ली और इसके आसपास के शहरों में बिकने वाले 50 हेयर डाई उत्पादों के सैंपल लिए गए हैं। इनमें रसायनिक हेयर डाइ के साथ-साथ हर्बल भी शामिल हैं और उसकी जांच की जा रही है। अगले कुछ महीनों में यह शोध पूरा हो जाएगा।

प्रिजर्वेटिव से त्वचा रोग ज्यादा : डॉ. रीति भाटिया ने कहा कि जनवरी 2015 से अक्टूबर 2017 तक एलर्जी से पीड़ित 106 मरीजों पर शोध किया गया। इनमें 77 महिलाएं व 29 पुरुष थे। इनमें से ज्यादातर लोग 30 से 44 वर्ष की उम्र के थे। शोध में पाया गया कि 74 मरीजों के चेहरे की त्वचा

एम्स के अध्ययन में सामने आए चौंकाने वाले तथ्य।

पर कालापन आ गया था। शेष मरीजों को दूसरे तरह की एलर्जी थी। मरीजों में एलर्जी का कारण जानने के लिए पैच टेस्ट किया गया। इस टेस्ट से यह पता लगाया जाता है कि किस तरह के पदार्थ या रसायन के दुष्प्रभाव से एलर्जी हुई है। इस दौरान 77 मरीजों में पैच टेस्ट की रिपोर्ट पॉजिटिव आई। इनमें 50 फीसद मरीजों में एलर्जी का कारण प्रिजर्वेटिव पाया गया। फेयरनेस क्रीम व कॉस्मेटिक को संरक्षित रखने में इसका इस्तेमाल होता है। इसके अलावा 31 फीसद मरीजों को एलर्जी ऐसे रसायन से हुई था, जिसका इस्तेमाल हेयर डाई में होता है। इसमें पीपीडी से एलर्जी अधिक पाई गई।

इस्तेमाल करें पर संभल कर : डॉ. वी के शर्मा ने कहा कि 35 फीसद मरीज बालों को रंगने के अलावा फेयरनेस क्रीम का इस्तेमाल भी करते थे। हेयर डाई व क्रीम से एलर्जी होने पर त्वचा का रंग बदलने लगता है। त्वचा लाल या काली होने लगती है। खुजली व जलन जैसा महसूस हो सकता है। कई लोगों को एग्जिमा भी हो सकता है। इसलिए इस्तेमाल करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि त्वचा पर कोई एलर्जी हो रही है या नहीं। दुष्प्रभाव महसूस होने पर इस्तेमाल बंद कर देना चाहिए।

बिंदी व सिंदूर से भी त्वचा रोग : डॉक्टर कहते हैं कि ज्यादातर महिलाएं व लड़कियां श्रृंगार के लिए बिंदी का इस्तेमाल करती हैं। इस बिंदी व सिंदूर से भी एलर्जी के कारण त्वचा रोग के मामले देखे जाते हैं। लिक्विड बिंदी से त्वचा सफेद हो जाती है। सिंदूर का कारोबार असंगठित क्षेत्र द्वारा किया जाता है। इसमें मिलावट की निगरानी की व्यवस्था नहीं है, जबकि लाल व पीले रंग के सिंदूर बनाने में अलग-अलग तरह के रसायनों का इस्तेमाल हो रहा है। इसलिए सिंदूर निर्माण को निगरानी के दायरे में लाना होगा। साथ ही बिंदी के इस्तेमाल के प्रति महिलाओं को सजग रहना चाहिए।

फ्लैश लाइट से डरकर चौथी मंजिल से कूदा सांड़, मौत

**जागरण

1.17 करोड़ के बंद नोट जमा करने की मांग पर सुप्रीम कोर्ट ने तमिलनाडू के कारोबारी के. रमन ने नोटिस जारी किया है। कारोबारी दिसंबर 2016 में तय अवधि के दौरान बंद नोट जमा कराने में विफल रहा था।

करतारपुर कॉरिडोर के काम में तेजी से पाकिस्तान की नीयत पर संदेह

राज्य ब्यूरो, चंडीगढ़

- बड़ा सवाल, इस रास्ते का इस्तेमाल पाकिस्तान भारत में आतंकी गतिविधियां बढ़ाने के लिए तो नहीं करेगा?
- पाक के पूर्व आर्मी चीफ असलम बेग ने दिया भड़काऊ बयान
- कहा, जिहाद ही भारत को सबक सिखाने का एकमात्र रास्ता
- कॉरिडोर का इस्तेमाल पाकिस्तान खालिस्तानी आतंक बढ़ाने के लिए करेगा
- लाइन ऑफ कंट्रोल जिहादियों को भारत में घुसने से नहीं रोक सकती

जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच संबंधों में काफी कड़वाहट आ गई है। पाकिस्तान ने हर तरह का व्यापार भारत के साथ बंद कर दिया है, लेकिन करतारपुर कॉरिडोर के काम में उसके द्वारा काफी तेजी दिखाई जा रही है। असल सवाल यह है कि पाकिस्तान सरकार क्या सचमुच भारत के साथ संबंध सुधारना चाहती है या फिर भारत और पाकिस्तान के बीच बसे सिखों का भरोसा जीतने में लगी है? क्या इस रास्ते का इस्तेमाल पाकिस्तान भारत में आतंकी गतिविधियों को बढ़ाने के लिए तो नहीं करेगा?

पाकिस्तान की नीयत पर इसलिए भी संदेह होता है, क्योंकि अनुच्छेद 370 को खत्म करने से नाराज होकर भारत को युद्ध की धमकी देने वाले पाकिस्तान के ही पूर्व आर्मी चीफ मिर्जा असलम बेग ने कहा है कि जिहाद ही भारत को सबक सिखाने का एकमात्र रास्ता है। बेग ने कहा कि पाकिस्तान करतारपुर कॉरिडोर का इस्तेमाल खालिस्तानी आतंक को बढ़ाने के लिए करेगा। पाकिस्तान की सेना और सरकार खालिस्तानी मुहिम के जरिये भारत को परेशान करेगी। उन्होंने कहा कि लाइन ऑफ कंट्रोल जिहादियों को भारत में घुसने से रोक नहीं सकती। उल्लेखनीय है कि पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान के शपथ ग्रहण समारोह में पंजाब के कैबिनेट मंत्री नवजोत सिंह सिद्धू भी पहुंचे थे। पाकिस्तान के आर्मी चीफ कमर जावेद बाजवा ने सिद्धू से गले मिलते ही कहा था कि पाकिस्तान सरकार करतारपुर कॉरिडोर को खोलने पर विचार कर रही है। तब मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह ने इस तरह की गतिविधियों पर संदेह व्यक्त किया था और सिद्धू को संभल करने चलने को कहा था।

करखा डेरा बाबा नानक में चल रहा करतारपुर कॉरिडोर के टर्मिनल का निर्माण कार्य। जागरण

कैप्टन ने भी कहा था, हमें संभलकर चलना चाहिए : कैप्टन अमरिंदर ने कहा था कि पाकिस्तान का इतिहास गवाह है कि इस तरह की बातें करके वह आतंकी गतिविधियों को बढ़ाता है। वह करतारपुर कॉरिडोर खोले जाने की प्रक्रिया से काफी खुश हैं, लेकिन हमें संभलकर चलने की जरूरत है। यही नहीं, भाजपा नेता सुब्रह्मण्यम स्वामी ने भी कुछ दिन पहले चंडीगढ़ में करतारपुर कॉरिडोर का काम बंद करने की वकालत की थी।

जाखड़ ने कहा-बेग व स्वामी बाधा न पैदा करें, हमारी सेना सक्षम : सत्तारूढ़ कांग्रेस के प्रदेश प्रधान सुनील जाखड़ ने पाक के पूर्व आर्मी चीफ असलम बेग और सुब्रह्मण्यम स्वामी को जवाब देते हुए कहा है कि परमात्मा की कृपा से यह रास्ता खुल रहा है। ऐसे में कोई बाधा पैदा न करें। उन्होंने कहा कि पहले भी पाकिस्तान आतंकी गतिविधियों को भारत में बढ़ाता रहा है और आगे भी बढ़ाएगा, उसके ऐसे इरादों का मुंहतोड़ जवाब देने के लिए भारत की सेना सक्षम है। आतंकी गतिविधियों से हम खुद निपट लेंगे।

कॉरिडोर का काम जल्द पूरा करने में लगे हैं 800 इंजीनियर और मजदूर

संवाद सहयोगी, कलानौर (गुरदासपुर) : नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एनएचएआइ) की ओर से करतारपुर कॉरिडोर का निर्माण 70 फीसद पूरा कर लिया गया है, जबकि लैंड पोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एलपीएआइ) तीन शिफ्टों में काम कर रही है। शुक्रवार को भारत-पाकिस्तान की टेक्निकल टीम की बैठक के बाद एलपीएआइ टर्मिनल के निर्माण में तेजी से जुट गई। शनिवार को टर्मिनल का निर्माण जारी था। अभी टर्मिनल की गैलरी, कार पार्किंग, इलेक्ट्रिकल ब्लॉक व सुरक्षा ब्लॉक का काम चल रहा है। एलपीएआइ के अधिकारी सुखदेव सिंह ने बताया कि टर्मिनल का निर्माण दिन-रात किया जा रहा है। इस समय 800 इंजीनियर और मजदूर इंजीनियर पार्किंग, चेक पोस्ट, गैलरी, वेटिंग रूम व सैनिटेशन के काम में जुटे हुए हैं। उन्होंने दावा किया कि अक्टूबर तक टर्मिनल का निर्माण पूरा कर लिया जाएगा।

शाह ने कहा-समय पर पूरा करेंगे कॉरिडोर

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने को लेकर तल्ख हुए भारत-पाक रिश्तों का बुरा असर करतारपुर साहिब परियोजना पर नहीं पड़ेगा। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को सिख समुदाय के लोगों को भरोसा दिलाया है कि करतारपुर साहिब गलियारे (कॉरिडोर) का काम तय समयसीमा के अंदर पूरा कर लिया जाएगा। शाह ने स्पष्ट रूप से कहा है, 'मोदी सरकार करतारपुर गलियारे के कार्य को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है।' माना यह जा रहा है कि अगर हालात सामान्य रहे तो नवंबर तक यह कार्य पूरा हो जाएगा।

गृह मंत्री अमित शाह का यह बयान भारत-पाक प्रतिनिधिमंडल के बीच हुई उस बैठक के बाद आया है जो करतारपुर के जीरो प्वाइंट पर रखी गई थी। उसमें तीर्थयात्रियों के लिए प्रस्तावित गलियारे की सड़कों और पुल के स्तर जैसे तकनीकी पहलुओं पर चर्चा की गई है। तनाव बढ़ने के बाद यह ऐसी पहली बैठक थी। बैठक में प्रत्येक पक्ष के 10 से 15 अधिकारियों ने हिस्सा लिया। बता दें कि इस बैठक में दोनों पक्षों ने परियोजना की प्रगति की समीक्षा करने के लिए तकनीकी विशेषज्ञों की एक और बैठक कराने पर भी सहमति जताई है। इसके बाद राजनीतिक पहलुओं पर एक बैठक भी जल्द ही होने के आसार हैं। भारत की तरफ से बैठक में गृह मंत्रालय, सीमा सुरक्षा बल व भारतीय भूमि पत्तन प्राधिकरण के अधिकारियों ने भाग लिया। यह प्राधिकरण अत्याधुनिक यात्री टर्मिनल इमारत का निर्माण कर रहा है। शाह का बयान इसलिए खास है क्योंकि पिछले दिनों में दोनों देशों की ओर से कुछ लोगों की तरफ से ऐसे बयान आए थे जिससे विवाद खड़ा हुआ था।

उल्लेखनीय है करतारपुर गलियारा पंजाब में गुरदासपुर से तीन किमी दूर भारत-पाकिस्तान की सीमा से लगा होगा। सिख श्रद्धालु इस गलियारे से पाकिस्तान स्थित ऐतिहासिक गुरुद्वारा दरबार साहिब तक सीधे दर्शन के लिए जा सकेंगे। यह गलियारा पाक के करतारपुर में दरबार साहिब को गुरदासपुर जिले के डेरा बाबा नानक गुरुद्वारे से जोड़ेगा और भारतीय सिख तीर्थयात्रियों को वीजा-मुक्त आवाजाही की सुविधा प्रदान करेगा।

महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री पर सौ करोड़ का जुर्माना

आवासीय घोटाला ▸ सत्र अदालत ने सुरेश जैन को सात साल की सजा भी सुनाई

एक अन्य पूर्व मंत्री और 46 अन्य को तीन से सात साल की सजा

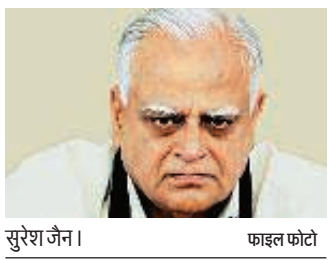

सुरेश जैन। फाइल फोटो

मुंबई, एजेंसियां : महाराष्ट्र में धुले जिले की सत्र अदालत ने राज्य के पूर्व मंत्रियों सुरेश जैन, गुलाबराव देवकर और 46 अन्य को करोड़ों रुपये के 'घरकुल' आवासीय घोटाले में दोषी ठहराया है। सुरेश जैन को सात साल कैद और 100 करोड़ रुपये जुर्माने की सजा सुनाई गई है। गुलाबराव को पांच साल कारावास और पांच लाख रुपये जुर्माने की सजा सुनाई गई है। जबकि बाकी 46 दोषियों को तीन से सात साल कैद की सजा सुनाई गई है।

विशेष न्यायाधीश सृष्टि नीलकंठ के सजा सुनाने के साथ ही अदालत में मौजूद सभी 48 दोषियों को हिरासत में ले लिया गया। शिवसेना नेता सुरेश जैन और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) नेता गुलाबराव देवकर के अलावा अन्य आरोपितों में कुछ पूर्व पार्षद और अधिकारी भी शामिल हैं। इस मामले में कुल 52 आरोपित थे, जिनमें से तीन की मौत हो चुकी है जबकि एक अभी भी फरार है। शुरुआत में यह मामला जलगांव की अदालत में चल रहा था, लेकिन सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर इसे धुले स्थानांतरित कर दिया गया था।

बता दें कि 'घरकुल' आवासीय योजना के तहत जलगांव के बाहरी इलाके में 5,000 फ्लैट बनाए जाने थे। इनके निर्माण का ठेका खंदेश बिल्डर्स को दिया गया था। लेकिन योजना में सिर्फ 1,500 फ्लैट का ही निर्माण किया गया। जलगांव के पूर्व नगर आयुक्त प्रवीण गेदम ने इस संबंध में फरवरी, 2006 में शिकायत दर्ज कराई थी। आरोपितों पर बिल्डर को फायदा पहुंचाने और 29 करोड़ रुपये तक की अनियमितता में संलिप्त होने का आरोप लगाया गया था। घोटाले के समय सुरेश जैन राज्य के गृह राज्यमंत्री थे। मार्च 2012 में उन्हें गिरफ्तार किया गया था। सुप्रीम कोर्ट से जमानत मिलने से पहले वह एक साल से ज्यादा समय तक जेल में भी रहे थे। गुलाबराव देवकर 1995 से 2000 तक जलगांव नगर परिषद में पार्षद थे। उन्हें मई 2012 में गिरफ्तार किया गया था। जमानत मिलने से पहले वह भी तीन साल जेल में रहे थे।

नारद कांड में सीबीआइ के सामने पेश हुए तृणमूल सांसद प्रसून बनर्जी

जागरण संवाददाता, कोलकाता

- दिल्ली में होने का हवाला देकर हाजिर नहीं हुए पूर्व मेयर शोभन चटर्जी

नारद स्टिंग कांड में पूछताछ के लिए शनिवार को पूर्व फुटबॉलर एवं तृणमूल कांग्रेस के सांसद प्रसून बनर्जी सीबीआइ के समक्ष पेश हुए। जांच अधिकारियों ने उनकी आवाज के नमूने रिकार्ड किए। उधर, तृणमूल छोड़कर भाजपा में शामिल हुए शोभन चटर्जी ने दिल्ली में होने का हवाला देकर शनिवार को पेश होने में असमर्थता जताई।

सूत्रों के अनुसार नोटिस मिलने के बाद शनिवार सुबह करीब 10 बजे प्रसून बनर्जी अपने अधिवक्ता के साथ निजाम पैलेस स्थित सीबीआइ कार्यालय पहुंचे। जांच अधिकारियों ने करीब तीन घंटे तक पूछताछ की। आवाज के नमूने लिए गए। उनकी आवाज का स्टिंग ऑपरेशन की फुटेज के साथ मिलान किया जाएगा। उधर, सीबीआइ ने कोलकाता के पूर्व मेयर एवं भाजपा नेता शोभन चटर्जी को भी आवाज का नमूना रिकार्ड कराने के लिए शनिवार को हाजिर होने का नोटिस भेजा था, लेकिन उन्होंने अपने प्रतिनिधि के हाथों पत्र भेजकर सीबीआइ से मोहलत मांगी है। पत्र में कहा गया कि वह विवाह विच्छेद के सिलसिले में कानूनी सलाह लेने के लिए वर्तमान में दिल्ली में हैं। दिल्ली से लौटने के बाद संभवतः वह सोमवार को सीबीआइ के समक्ष पेश हो सकते हैं। सूत्रों के अनुसार मदन मित्रा को भी शनिवार को हाजिर होना था, लेकिन वह नहीं पहुंचे थे। सूत्रों की मानें तो नारद स्टिंग कांड में फंसे 11 विधायक-सांसदों को सीबीआइ ने नोटिस भेजा है।

इसी माह पेश हो सकती है चार्जशीट : नारद स्टिंग ऑपरेशन कांड में सीबीआइ इसी महीने चार्जशीट कोर्ट में दाखिल कर सकती है। सीबीआइ तेजी से जांच को पूरी करने की दिशा में बढ़ रही है। प्रतिदिन इस मामले में किसी न किसी नेता अथवा सांसद से पूछताछ हो रही है। तृणमूल के तीन सांसदों सौगत रॉय, काकुली घोष दस्तीदार और प्रसून बनर्जी के नाम चार्जशीट में आरोपित के तौर पर डालने की अनुमति के लिए जांच एजेंसी ने जो चिट्ठी लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को लिखी थी, उसपर जल्द सहमति मिल सकती है।

एटीसी के निर्देश को न सुन पाने के कारण स्पाइसजेट पायलट निलंबित

नई दिल्ली, प्रेट्र : एयर ट्रैफिक कंट्रोल (एटीसी) निर्देश को सही से न सुन पाने के कारण विमानन नियामक डीजीसीए ने स्पाइसजेट के एक पायलट को तीन महीने के लिए निलंबित कर दिया। दरअसल फर्स्ट ऑफिसर पायलट ने अपने पायलट इन कमांड (पीआइसी) को एटीसी के निर्देश को सही से नहीं बताया जिसके कारण मुंबई एयरपोर्ट पर एक रनवे पर दो विमानों के उतरने की स्थिति उत्पन्न हो गई थी।

इस घटना की जब जांच कराई गई तो पता चला कि पांच जुलाई की सूरत-मुंबई फ्लाइट में फर्स्ट ऑफिसर पायलट अतुल यादव ने अपने पीआइसी को यह जानकारी दी कि उसे एटीसी से रनवे14 के लिए क्लीयरेंस निर्देश मिले थे। सच्चाई यह थी कि रनवे 14 के लिए क्लीयरेंस निर्देश इंडिगो विमान के लिए दिया गया था जो उसके आगे था।

जांच के क्रम में जब डीजीसीए ने यादव को कारण बताओ नोटिस जारी किया तो जवाब में उसने अपनी गलती स्वीकार की और कहा कि एटीसी का संदेश सही से न सुन पाने के कारण उससे यह गलती हुई। इस गलती के लिए उसे तीन महीने के लिए निलंबित कर दिया गया। निलंबन अवधि की गणना 10 जुलाई, 2019 से की जाएगी। बता दें कि रनवे पार करने अथवा रनवे से जुड़ी अन्य घटनाओं को लेकर गत दिनों कई पायलटों के खिलाफ डीजीसीए ने कार्रवाई की है और उन्हें निलंबित किया है।

आतंक के खिलाफ लड़ाई में इंटरपोल का मिलेगा साथ

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- गृहमंत्री अमित शाह से मिले इंटरपोल के महासचिव स्टॉक
- आतंकवाद के खिलाफ दिखाई प्रतिबद्धता के लिए दिया धन्यवाद

भारत दौरे पर आए इंटरपोल महासचिव जुर्गेन स्टॉक ने शनिवार को केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह से मुलाकात कर उन्हें आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में इंटरपोल के सहयोग का भरोसा दिया। स्टॉक ने शाह को आतंकवाद के खिलाफ दिखाई उनकी प्रतिबद्धता के लिए धन्यवाद भी दिया।

स्टॉक से मुलाकात के दौरान शाह ने राजधानी दिल्ली में इंटरपोल महासभा की मेजबानी का प्रस्ताव भी रखा। गृहमंत्री ने कहा कि 2022 में भारत अपनी आजादी की 75वीं वर्षगांठ मनाएगा। उसी साल यहां इंटरपोल महासभा की बैठक कर सकता है। शाह ने भारत में इंटरपोल का ग्लोबल एकेडमी का रीजनल सेंटर स्थापित करने की भी इच्छा जताई। उन्होंने इसके लिए हरसंभव मदद करने का आश्वासन भी दिया।

स्टॉक ने इंटरपोल की अपनी तीन प्राथमिकताएं गिनाईं, जिनमें काउंटर टेररिज्म (आतंकवाद का मुकाबला), संगठित व बढ़ते अपराध और साइबर क्राइम प्रमुख हैं। बैठक के दौरान गृहमंत्री ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भ्रष्टाचार मुक्त समाज की अवधारणा के साथ नशीली दवाओं के कारोबार, अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद, काला धन और मनी लांड्रिंग पर सख्त रुख का जिक्र किया। शाह ने इन अवैध कारोबार के खिलाफ लड़ाई को प्राथमिकता देने के लिए इंटरपोल के साथ समझौते की बात की। उन्होंने इनके खिलाफ सीमित नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर रणनीति बनाने की जरूरत पर बल दिया। शाह ने हाल ही में संसद में पारित यूएपीए (गैरकानूनी गतिविधि रोकथाम अधिनियम) जैसे कानून का जिक्र किया। शाह ने रेड कार्नर नोटिस जारी करने और उसमें होने वाले विलंब पर चिंता भी जताई। उन्होंने आर्थिक अपराध कर देश छोड़कर भागने वाले अपराधियों और आतंकियों पर शिकंजा कसने के लिए इंटरपोल से सहयोग की अपेक्षा की।

इससे पूर्व इंटरपोल के महासचिव जुर्गेन स्टॉक ने शुक्रवार को केंद्रीय गृह सचिव एके भल्ला से मुलाकात की। इस दौरान आतंकवाद फैलाने के आरोपित जाकिर नाईक सहित अन्य के खिलाफ लंबित रेड कॉर्नर नोटिस पर कार्रवाई करने पर जोर दिया गया। नाईक इस समय मलेशिया में है।

आजम खां के परिजनों पर भी पुलिस का शिकंजा कसा

मुस्लेमीन, रामपुर

सपा सांसद आजम खां के परिवारीजन भी अब पुलिस के शिकंजे में फंसते जा रहे हैं। पहले आजम खां, फिर उनके विधायक बेटे अब्दुल्ला, इसके बाद उनकी पत्नी और राज्यसभा सदस्य तजीन फात्मा पर पुलिस मुकदमे दर्ज करती रही है। अब उनके बड़े भाई सेवानिवृत्त अधीक्षण अभियंता शरीफ खां और भतीजे बिलाल पर मुकदमा दर्ज हुआ है। शुक्रवार को बड़ी बहन को भी पुलिस ने थाने ले जाकर पूछताछ की।

आजम खां पर लोकसभा चुनाव से पहले के भी 10 मुकदमे हैं। चुनाव के बाद भी उन पर 58 मुकदमे दर्ज हो चुके हैं। इस तरह उनके खिलाफ थानों और अदालतों में कुल 68 मुकदमे विचाराधीन हैं। आजम के अलावा उनके बेटे अब्दुल्ला आजम पर भी पांच मुकदमे चल रहे हैं। उनकी पत्नी व राज्यसभा सदस्य डॉ. तजीन फात्मा के खिलाफ धोखाधड़ी के दो मुकदमे दर्ज किए गए हैं। उनके बड़े बेटे अदीब के खिलाफ भी एक मुकदमा दर्ज है।

भाई, भतीजे और भांजे पर भी मुकदमा : आजम खां के घर के बराबर में ही उनके बड़े भाई सेवानिवृत्त अधीक्षण अभियंता शरीफ अहमद खां रहते हैं। पुलिस ने तीन दिन पहले ही शरीफ खां और उनके बेटे बिलाल के खिलाफ हत्या के प्रयास का मुकदमा दर्ज किया है। इस मुकदमे में आजम खां और अब्दुल्ला आजम को भी नामजद किया गया है।

बड़ी बहन से की थाने में पूछताछ, भांजा भी नपा : आजम खां की बड़ी बहन 78 साल की निकहत अफलाक से पुलिस ने शुक्रवार को थाने ले जाकर पूछताछ की। आजम खां के पास में ही उनके भांजे फरहान खां रहते हैं। उनके खिलाफ भी हत्या के प्रयास का मुकदमा दर्ज किया गया है। फरहान खां के खिलाफ मारपीट का एक और मामला दर्ज था, उसमें पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार भी कर लिया, जिसमें जमानत पर छूटे तो उनके खिलाफ हत्या के प्रयास का मुकदमा दर्ज करा दिया गया।

नौकरी के आवेदनों की तरह तहरीर मांग रही पुलिस : आजम खां की पत्नी तजीन फात्मा कहती हैं कि पुलिस आजम खां और उनके परिजनों के खिलाफ ऐसे तहरीर मांग रही है जैसे सरकार नौकरी के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित करती है। तमाम फर्जी मुकदमे दर्ज किए जा रहे हैं। पुलिस अधीक्षक डॉ. अजय पाल शर्मा का कहना है कि लोग रिपोर्ट दर्ज कराने आ रहे हैं, तो रिपोर्ट दर्ज की जा रही है।

दूसरे दिन ईडी ने शिवकुमार से आठ घंटे तक की पूछताछ

- एजेंसी ने कांग्रेस नेता को सोमवार को भी बुलाया है
- शुक्रवार को चार घंटे तक की पूछताछ के बाद दर्ज किया था बयान

नई दिल्ली, प्रेट्र : प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने कर्नाटक से कांग्रेस के वरिष्ठ नेता डीके शिवकुमार से मनी लांड्रिंग के एक मामले में दूसरे दिन आठ घंटे तक पूछताछ की। उन्हें फिर सोमवार को भी हाजिर होने के लिए कहा गया है। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। कांग्रेस नेता शनिवार को नई दिल्ली स्थित ईडी मुख्यालय में पेश हुए। जांच एजेंसी पुरानी दिल्ली के चांदनी चौक इलाके में दिए गए नोटों से भरे बैग के बारे में पता लगाने में जुटी है। आयकर विभाग ने 2017 में राष्ट्रीय राजधानी में कांग्रेस नेता के आवास पर छापे के दौरान इस मामले को सामने लाया था।

अधिकारियों ने कहा कि मनी लांड्रिंग रोकथाम अधिनियम (पीएमएलए) के तहत मामले के जांच अधिकारी ने शुक्रवार को चार घंटे तक शिवकुमार से पूछताछ की थी और उनका बयान दर्ज किया था। कांग्रेस नेता से शनिवार को उनकी संपत्ति और सहयोगियों के माध्यम से चांदनी चौक भेजे गए नोटों से भरे बैग के बारे में सवाल पूछे गए।

बेंगलुरु से यहां पहुंचने के बाद शुक्रवार को अपनी पहली उपस्थिति दर्ज कराते हुए, कनकपुरा के विधायक शिवकुमार ने कहा कि वह ईडी की जांच में सहयोग करेंगे। उन्होंने ईडी कार्यालय के बाहर संवाददाताओं से कहा, 'यह मेरा कर्तव्य है (पेश होना)... मैं कानून का सम्मान करता हूं। हम विधायक और कानून का पालन करने वाले नागरिक हैं। उन्होंने (ईडी) मुझे बुलाया है ... मुझे नहीं पता कि उन्होंने मनी लांड्रिंग रोकथाम अधिनियम (पीएमएलए) के तहत क्यों बुलाया है।

उन्होंने कहा, 'लेकिन, मुझे देखने दिजिए, उनकी बात सुन लेते हैं। मैं उनका (ईडी) सामना करने के लिए तैयार हूं।' कर्नाटक हाई कोर्ट ने गुरुवार को ईडी द्वारा उन्हें जारी किए गए समन को चुनौती देने वाली शिवकुमार की याचिका खारिज कर दी थी, जिसके बाद उन्हें एजेंसी के सामने पेश होना पड़ा। केंद्रीय जांच एजेंसी ने हनुमंतैया और अन्य के खिलाफ मनी लांड्रिंग का मामला दर्ज किया था।

डीके शिवकुमार। फाइल फोटो

शिवकुमार, कांग्रेस ने लगाया बदले की राजनीति का आरोप : शिवकुमार ने पिछले साल सितंबर में शिवकुमार, नई दिल्ली में कर्नाटक भवन में कार्यरत एक कर्मचारी कर्नाटक के मुख्यमंत्री बीएस येद्दयुरप्पा पर प्रतिशोध की राजनीति करने का आरोप लगाया। कांग्रेस ने केंद्र पर बदले की राजनीति करने का आरोप लगाया है। पार्टी ने कहा है कि अपनी विफलताओं से लोगों का ध्यान हटाने के लिए केंद्र उसके नेताओं को निशाना बना रही है।

कांग्रेस-जद (एस) सरकार के दौरान नेताओं की फोन टैपिंग की जांच में जुटी सीबीआइ

नई दिल्ली, प्रेट्र : सीबीआइ ने कर्नाटक में कांग्रेस-जदएस की पिछली सरकार के दौरान नेताओं की कथित फोन टैपिंग की जांच की जिम्मेदारी संभाल ली है। अधिकारियों ने शनिवार को बताया कि एजेंसी ने मुख्यमंत्री बीएस येद्दयुरप्पा के नेतृत्व में कर्नाटक सरकार के अनुरोध पर एक प्राथमिकी दर्ज की है। मुख्यमंत्री ने सीबीआइ जांच की घोषणा की थी।

जदएस के अयोग्य करार दिए विधायक एएच विश्वनाथ के रहस्योदघाटन के बाद से यह घोटाला जोर पकड़ रहा है। जदएस के प्रदेश अध्यक्ष रहे और बगावत करने वाले विश्वनाथ ने पूर्व मुख्यमंत्री एचडी कुमारस्वामी सरकार पर फोन टैप करने और उनके समेत 300 से अधिक लोगों की जासूसी करने का आरोप लगाया था। सिद्दरमैया, एम. मल्लिकार्जुन खड़गे और गठबंधन सरकार में गृह मंत्री एमबी पाटिल समेत कई कांग्रेस नेताओं ने जांच की मांग की जबकि पार्टी के अन्य अहम नेता और पूर्व मंत्री डीके शिवकुमार ने जासूसी के आरोपों को खारिज कर दिया तथा कुमारस्वामी का समर्थन किया।

खबरों के अनुसार, सिद्दरमैया के करीबियों के फोन भी टैप कराए गए थे। सिद्दरमैया उस समय गठबंधन समन्वय समिति के प्रमुख थे। पूर्व मुख्यमंत्री जगदीश शेट्टार समेत कई भाजपा नेताओं ने कुमारस्वामी पर अपनी सरकार बचाने के लिए फोन टैपिंग कराने का आरोप लगाया।

आज से मिलने लगेगी भारतीयों के स्विस बैंक खाते की जानकारी

नई दिल्ली, प्रेट्र : रविवार से भारतीयों के स्विस बैंक खातों की जानकारी मिलनी शुरू हो जाएगी। स्विट्जरलैंड रविवार को नई दिल्ली में कर अधिकारियों को भारतीयों के स्विस बैंक खातों की जानकारी उपलब्ध कराएगा। दोनों देशों के बीच सूचनाओं का आदान-प्रदान तेज हो गया है। सितंबर से स्विस बैंक की गोपनीयता का युग समाप्त हो जाएगा। यह मोदी सरकार की कालेधन के खिलाफ लड़ाई में बड़ी सफलता मानी जा रही है। 2014 में पहली बार सत्ता में आने के बाद से सरकार संघर्ष में जुटी है।

केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) ने कहा है, 'हमें स्विट्जरलैंड में रेजिडेंट भारतीयों के 2018 के सभी वित्तीय खातों के संबंध में जानकारी मिल जाएगी।' सीबीडीटी आयकर विभाग के लिए नियम तैयार करता है। आयकर विभाग ने भी ट्वीट कर कहा है कि कालेधन के खिलाफ सरकार की लड़ाई में यह कदम महत्वपूर्ण साबित होगा।

29 और 30 अगस्त के बीच स्विट्जरलैंड के एक प्रतिनिधिमंडल ने राजस्व सचिव एबी पांडे, सीबीडीटी चेयरमैन पीसी मोड्य और सीबीडीटी सदस्य (विधायी) अखिलेश रंजन से मुलाकात की थी। उसी में इस बात की सहमति बनी थी।

असमंजस

कांग्रेस के हरियाणा प्रभारी गुलाम नबी आजाद की सोनिया गांधी से मुलाकात के बाद भी मिली निराशा, दिन भर दिल्ली में अपने समर्थक विधायकों से चर्चा में व्यस्त रहे पूर्व सीएम

फैसले की घड़ी के इंतजार में हुड्डा ने बिताया फिर एक दिन

बिजेंद्र बंसल, नई दिल्ली

शनिवार देर शाम तक भी कांग्रेस आलाकमान की तरफ से हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा के मनमाफिक कोई निर्णय नहीं आया। आलाकमान के फैसले की घड़ी के इंतजार में हुड्डा ने फिर एक दिन बिता दिया। हालांकि इस दौरान हुड्डा को तब बड़ी आस जगी थी कि जब सोनिया गांधी ने पार्टी के प्रदेश प्रभारी और राष्ट्रीय महासचिव गुलाम नबी आजाद को चर्चा के लिए बुलाया। मगर जब सोनिया से मिलकर आजाद वापस लौटे तो हुड्डा खेमे में कोई उत्साह नहीं था। शनिवार सोनिया गांधी से मिलने के बाद आजाद भी हरियाणा को लेकर कुछ नहीं बोले।

बता दें, पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा राज्य कांग्रेस का अध्यक्ष बदलने के लिए पुरजोर प्रयास में जुटे हैं। इसके लिए उनके समर्थक पार्टी छोड़ने तक की धमकी भी दे चुके हैं। पार्टी छोड़ने के मुद्दे पर खुद हुड्डा तैयार नहीं हैं, मगर उनके समर्थक 12 विधायकों में से आठ नई पार्टी बनाने के पक्ष में हैं। चार विधायकों ने हुड्डा को साफ तौर पर कह दिया है कि कांग्रेस पार्टी में रहकर ही वे संघर्ष में उनके साथ हैं। अलग पार्टी के लिए ये विधायक तैयार नहीं हैं।

भूपेंद्र सिंह हुड्डा। फाइल फोटो

नई पार्टी के बजाय हुड्डा के पास है एक विकल्प : हुड्डा को जिस तरह कांग्रेस आलाकमान से लगातार निराशा मिल रही है, उसके बाद दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में यह चर्चा भी है कि पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के नेता शरद पवार से बातचीत हो चुकी है। शरद पवार हरियाणा में हुड्डा को उनके मन मुताबिक पार्टी की कमान देने को तैयार हैं। हुड्डा एनसीपी के बैनर तले अपने समर्थकों के साथ चुनाव मैदान में उतरेंगे। इसके साथ ही हुड्डा भाजपा को चुनाव में मात देने के लिए जजपा-बसपा गठबंधन से चुनावी समझौता भी कर सकते हैं। हालांकि इन चर्चाओं को हुड्डा खेमे के लोग सिरे से खारिज कर रहे हैं मगर राजनीतिक विश्लेषक कह रहे हैं कि हुड्डा खुद इस विकल्प पर तभी जाएंगे जब आलाकमान उन्हें जरा भी सम्मान नहीं देगा। यदि आलाकमान सिर्फ मौजूदा प्रदेशाध्यक्ष अशोक तंवर को हटा देता है तो फिर हुड्डा कांग्रेस में ही रहकर चुनावी ताल ठोकेंगे।

सामूहिक नेतृत्व का खाका तैयार कर रहा है कांग्रेस आलाकमान : कांग्रेस के सूत्र यह भी बता रहे हैं कि मौजूदा प्रदेशाध्यक्ष डॉ. अशोक तंवर को आलाकमान हटाने का मन बना चुका है मगर उनकी जगह अनुसूचित जाति के ही नेता को यह पद दिया जाएगा। इसके लिए निर्विवाद रूप से पूर्व केंद्रीय मंत्री कुमारी सैलजा का नाम सबसे ऊपर है। इसके अलावा पार्टी आलाकमान प्रदेश कांग्रेस में बदलाव के साथ चुनाव कमेटियों की भी एक साथ घोषणा करना चाहता है ताकि प्रदेश के सभी प्रमुख नेता इनमें समायोजित हो जाएं। इससे बदलाव को लेकर विद्रोह की स्थिति भी नहीं आएगी।

भाजपा में टिकटार्थियों ने शुरू की बड़े नेताओं की परिक्रमा

जासं, नई दिल्ली : जन आशीर्वाद यात्रा में दमखम दिखाने वाले भाजपा टिकट के दावेदार अब बड़े नेताओं की परिक्रमा कर रहे हैं। ये नेता दिल्ली में हरियाणा चुनाव प्रभारी से लेकर प्रभावी केंद्रीय मंत्रियों और पार्टी के राष्ट्रीय पदाधिकारियों से अपने टिकट की जुगत लगा रहे हैं। इन नेताओं को यह भी पता है कि हरियाणा विस चुनाव में इस बार टिकट वितरण में सबसे बड़ी भूमिका मुख्यमंत्री मनोहर लाल की रहेगी मगर फिर भी वे भाजपा संसदीय बोर्ड के सदस्यों से मिलकर अपना परिचय पत्र देते हैं। फिलहाल हरियाणा के संगठन प्रभारी डॉ.अनिल जैन प्रदेश दौरे पर हैं। वे 8 सितंबर को रोहतक में होने वाली पीएम की रैली की तैयारियों के लिए पन्ना प्रमुखों की बैठकें ले रहे हैं। ऐसे में कुछ नेता डॉ. अनिल जैन से मिलने उनके प्रवास वाले जिला में ही चले जाते हैं। डॉ. जैन से ऐसे नेताओं को हालांकि जमकर डांट भी मिल रही है मगर कुछ नेताओं को उस जिला के प्रमुख नेता मिलवाते हैं तो वे चुप्पी साध जाते हैं।

कह के रहेंगे माधव जोशी

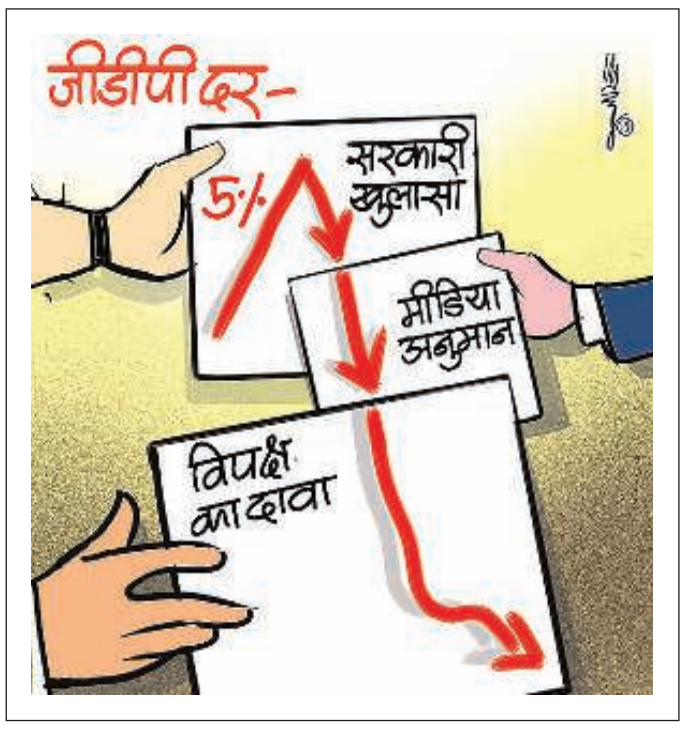

30 फीसद की कमी आई है लूट की वारदात में उत्तर प्रदेश में वर्ष 2018 की तुलना में। बीते वर्ष जहां 1,986 लूट के मामले दर्ज किए गए थे, वहीं इस वर्ष 31 जुलाई तक लूट की 1,379 वारदात सामने आईं।

मप्र में कांग्रेस अध्यक्ष बनाने पर विवाद जारी, सिंधिया समर्थक ने दिया इस्तीफा

नईदुनिया, इंदरगढ़

कांग्रेस नेता ज्योतिरादित्य सिंधिया को मध्य प्रदेश का कांग्रेस अध्यक्ष बनाने की मुहिम उनके समर्थकों ने तेज कर दी है। शनिवार को दतिया जिले के इंदरगढ़ में जुटे कांग्रेस नेताओं ने साफ कर दिया कि अगर सिंधिया को प्रदेश कांग्रेस की कमान नहीं दी गई तो पदाधिकारी व कार्यकर्ता इस्तीफा दे देंगे। इनमें प्रदेश कांग्रेस कमेटी सदस्य और ब्लॉक कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष शामिल हैं। वहीं, एक समर्थक ने इस्तीफा भी दे दिया है।

प्रदेश कांग्रेस कमेटी सदस्य राजेश दांतरे ने पत्रकारों से चर्चा में कहा कि सिंधिया को अपेक्षानुरूप जिम्मेदारी न देकर उपेक्षित किए जाने से आहत हम सभी पदाधिकारी भी इस्तीफा दे देंगे। इंदरगढ़ ब्लॉक कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष रामबहादुर सिंह गुर्जर, थरेट ब्लॉक कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष श्रीराम शर्मा ने कहा कि सिंधिया जिस राजनीतिक दल का नेतृत्व करेंगे, उसमें हम सभी कार्यकर्ता साथ हैं और रहेंगे। उधर, सालोन बी के ब्लॉक कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष ठाकुरदास खमरिया ने सिंधिया को प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष बनाने की मांग करते हुए इस्तीफा दे दिया है। वहीं, कार्यकारी अध्यक्ष अशोक दांगी ने रविवार से कांग्रेस कार्यालय के अंदर अनिश्चितकालीन धरना शुरू करने की चेतावनी दी है। श्योपुर के कांग्रेस जिलाध्यक्ष और पूर्व विधायक बृजराज सिंह चौहान ने कहा है कि कांग्रेस को जनता का विश्वास पुनः हासिल करने के लिए ज्योतिरादित्य सिंधिया जैसे जननायक को नेतृत्व सौंपने की जरूरत हैं। अगर सिंधिया को प्रदेश अध्यक्ष नहीं बनाया गया तो कांग्रेस को इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा।

ज्योतिरादित्य सिंधिया फाइल

सिंधिया का कद बहुत बड़ा, वे प्रदेश अध्यक्ष पद के लिए बहुत संघर्ष नहीं करेंगे : सिंधिया के कट्टर समर्थकों में शुमार मप्र के परिवहन मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने कहा कि वे (सिंधिया) देश और प्रदेश के बड़े नेता हैं। उनका कद बहुत बड़ा है और जहां तक मैं समझता हूं वे इसके लिए (प्रदेश अध्यक्ष) के लिए बहुत संघर्ष नहीं करेंगे। प्रदेश अध्यक्ष तय करने का काम हाईकमान का है। यदि उनकी इच्छा है और हाईकमान जिम्मेदारी सौंपता है तो पूरे प्रदेश के लाखों कार्यकर्ताओं के साथ युवा और किसानों को बहुत खुशी होगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ और ज्योतिरादित्य सिंधिया को आगे रखकर ही विधानसभा चुनाव लड़ा गया था। सिंधिया की नाराजगी की खबरों के बीच राजपूत ने शुक्रवार को दिल्ली में उनसे लगभग दो घंटे मुलाकात की। शनिवार को परिवहन विभाग को मिले अवॉर्ड को लेकर भोपाल में हुई पत्रकारवार्ता में उन्होंने कहा कि पार्टी में कई पद होते हैं और सबका अपना-अपना महत्व है। किसी भी जिम्मेदारी को कम नहीं आंका जा सकता है।

काशी में जन्मदिन मनाएंगे पीएम मोदी

जागरण संवाददाता, वाराणसी : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 17 सितंबर को काशी पहुंचेंगे। वह अपने संसदीय क्षेत्र के लोगों के बीच जन्मदिन मनाएंगे। ऐसा गोपनीय संदेश विभागों में पहुंच गया है। प्रदेश से लेकर जिला स्तर के अफसर सतर्क हो गए हैं। विभिन्न विभागों के मंत्रियों का दौरा भी शुरू हो गया है जबकि प्रमुख सचिव नगर विकास मनोज कुमार दो सितंबर को पहुंच रहे हैं। दो दिवसीय दौरे के दौरान वह विकास योजनाओं की समीक्षा और भौतिक सत्यापन के लिए निरीक्षण करेंगे।

पीएम मोदी। फाइल

सर्वाधिक फोकस नगर में ढांचागत निर्माण के साथ ही नमामि गंगे, ग्रामीण जलापूर्ति, सिंचाई व जल संसाधन पर होगा। नगर निगम प्रशासन की ओर से दो योजनाओं के शिलान्यास व लोकार्पण की तैयारी की जा रही है। गौदौलिया में प्रस्तावित मल्टी लेवल पार्किंग का शिलान्यास होना है। यह नगर का पहला मल्टी लेवल पार्किंग होगा। इससे श्रीकाशी विश्वनाथ बाबा का दर्शन करने आने वालों के लिए सहूलियत होगी। वहीं छितौनी कोट में बने कान्हा उपवन के लोकार्पण की भी तैयारी है। प्रधानमंत्री मोदी पिछले वर्ष भी जन्मदिन पर काशी में ही थे।

छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री जोगी की विधानसभा सदस्यता भी खतरे में

नईदुनिया, रायपुर

- **फर्जी जाति प्रमाण पत्र के मामले में दर्ज हो चुका है केस**
- **जांच के लिए गठित उच्च स्तरीय छानबीन समिति ने जोगी को आदिवासी नहीं माना**

छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री अजीत जोगी। फाइल

छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री अजीत जोगी का आदिवासी जाति प्रमाण पत्र रद किए जाने और मुकदमा दर्ज कराए जाने के बाद सियासत गरम हो गई है। जोगी की विधानसभा सदस्यता पर भी खतरा मंडराने लगा है। दरअसल, जोगी मरवाही विधानसभा सीट से विधायक हैं, जो अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित है।

गौरतलब है कि राज्य में फर्जी जाति प्रमाण पत्रों की जांच के लिए गठित उच्च स्तरीय छानबीन समिति ने पूर्व सीएम जोगी को आदिवासी नहीं माना है। उनके आदिवासी होने का प्रमाण पत्र रद करने के निर्देश दिए हैं। इस क्रम में प्रशासन ने जोगी के खिलाफ गैरजमानती धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है।

जोगी के जाति मामले में कांग्रेस ने झाड़ा पल्ला : जोगी मामले में कांग्रेस ने पूरी तरह से पल्ला झाड़ लिया है। कांग्रेस का कहना है कि जोगी पर कार्रवाई से पार्टी और उसकी सरकार का कोई नाता नहीं है। सब कुछ भाजपा सरकार में शुरू हुई जांच प्रक्रिया के तहत हुआ है। कांग्रेस के प्रदेश महामंत्री और संचार विभाग के अध्यक्ष शैलेश नितिन त्रिवेदी ने कहा कि जोगी हाई पावर कमेटी, मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और कांग्रेस पर जो भी आरोप लगा रहे हैं, वो सभी तथ्यहीन है। 2001 में राष्ट्रीय अनुसूचित जाति, जनजाति आयोग के समक्ष भाजपा नेता संतकुमार नेताम ने जोगी की जाति के खिलाफ आवेदन किया था। 2003 में राष्ट्रीय अनुसूचित जाति, जनजाति आयोग ने फैसला सुनाया था कि जोगी कंवर जाति के (आदिवासी) नहीं हैं, तब आयोग के अध्यक्ष भाजपा नेता दिलीप भूरिया थे।

129 अधिकारियों की जांच तेज, 16 नेताओं के भी नाम

छत्तीसगढ़ में फर्जी जाति प्रमाण पत्रों की जांच कर रही उच्च स्तरीय समिति के 129 अधिकारियों-कर्मचारियों और 16 नेताओं के प्रमाणपत्रों की जांच भी कर रही है। छानबीन समिति के अधिकारियों ने बताया कि फर्जी जाति के 580 पंजीकृत मामलों सभी की जांच की गई है। इसमें 220 जाति प्रमाण पत्र सही भी पाए गए हैं, जबकि 245 जाति प्रमाण पत्र गलत। समिति ने जिनकी जाति को गलत पाया, उसमें से 90 फीसद मामले कोर्ट में हैं, जबकि 115 मामलों की जांच अभी चल रही है। इससे जाति विवाद में फंसे लोगों को खलबली मची हुई है।

अर्थव्यवस्था को नष्ट करने का जिम्मेदार कौन : प्रियंका

नई दिल्ली, प्रेट्र : जीडीपी ग्रोथ में आई गिरावट के लिए कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने शनिवार को मोदी सरकार पर सीधा निशाना साधा। प्रियंका ने कहा कि केंद्र सरकार स्पष्ट करे कि अर्थव्यवस्था को नष्ट करने का जिम्मेदार कौन है। प्रियंका ने ट्वीट कर कहा कि अच्छे दिन लाने का ढिंढोरा पीटने वाली सरकार ने अब अर्थव्यस्था की हालत पंचर कर दी है। न जीडीपी की ग्रोथ है और न ही रुपये की मजबूती। रोजगार भी गायब हैं। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने कहा, 'हिट फिल्म क्यूएसक्यूटी याद है- कयामत से कयामत तक? अब क्यूएसक्यूटी क्वार्टर से क्वार्टर तक का पर्यायवाची हो गया है। हेडलाइंस को मैनेज करके लगातार दो तिमाहियों में जीडीपी ग्रोथ की निचली दर को दबाया जा रहा है।'

कांग्रेस प्रवक्ता मनीष तिवारी ने कहा, 'जीडीपी ग्रोथ पांच फीसद नहीं बल्कि तीन फीसद है। आधार वर्ष को 2004-05 से बदलकर 2011-12 करने की वजह से दो फीसद की सांख्यिकीय उछाल है। पिछले पांच साल में आयकर विभाग, प्रवर्तन निदेशालय और सीबीआइ के क्रूर और विवेकहीन इस्तेमाल ने व्यवस्थित तरीके से आर्थिक वातावरण को बिगाड़ दिया है।' वरिष्ठ कांग्रेस प्रवक्ता आनंद शर्मा ने कहा कि सरकार को बढ़ा चढ़ाकर वादे करने के बजाय अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवन देने का रोडमैप देश को बताना चाहिए। रणदीप सुरजेवाला ने ट्वीट किया, 'भाजपा राज में अर्थव्यवस्था की यह हालत, क्या यही नया भारत है?'

न्यायिक आयोग ने छत्तीसगढ़ सरकार को लगाई फटकार

झीरम नरसंहार ▶ जांच के नए बिंदुओं के प्रकाशन में बरती लापरवाही

मामले में अब छह सितंबर को होगी अगली सुनवाई

नईदुनिया, बिलासपुर

छत्तीसगढ़ के बहुचर्चित झीरम घाटी नरसंहार की जांच कर रहे विशेष न्यायिक जांच आयोग ने जांच में शामिल नए बिंदुओं पर दिए गए दिशा निर्देशों का पालन न करने पर सरकार को फटकार लगाई है। आयोग ने तल्ख लहजे में कहा कि यदि आप को सहयोग नहीं करना है तो लिखकर दें। इसके साथ ही 27 जुलाई के आदेशानुसार आम सूचना प्रकाशित कराने के निर्देश दिए हैं। मामले में अगली सुनवाई के लिए छह सितंबर को होगी।

बता दें कि नक्सलियों ने 25 मई, 2013 को झीरम घाटी में कांग्रेस की परिवर्तन यात्रा को घेरकर फायरिंग की थी। इसमें तत्कालीन प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष नंदकुमार पटेल, पूर्व केंद्रीय मंत्री विद्याचरण शुक्ल समेत 33 लोगों की मौत हो गई थी। मामले की जांच के लिए राज्य सरकार ने जस्टिस प्रशांत कुमार मिश्रा की अध्यक्षता में विशेष जांच आयोग का गठन किया है। दिसंबर 2018 में जांच के सभी बिंदुओं पर गवाहों का

झीरम घाटी में कांग्रेस की परिवर्तन यात्रा को घेरकर नक्सलियों ने फायरिंग की थी। प्रतीकात्मक

प्रतिपरीक्षण पूरा किया गया। इसके बाद कांग्रेस ने आयोग के समक्ष आवेदन प्रस्तुत किया। इसमें कुछ नए बिंदु शामिल कर तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह, तत्कालीन प्रदेश के गृह मंत्री ननकीराम कंवर, तत्कालीन केंद्रीय गृहमंत्री, तत्कालीन केंद्रीय गृह राज्यमंत्री को गवाही के लिए बुलाने की मांग की गई। इसके अलावा महेंद्र कर्मा पर हुए हमले के बाद उनके द्वारा मांगी गई सुरक्षा, नंदकुमार पटेल पर गरियाबंद जिला में झीरम से पहले हुए नक्सली हमला के बाद सरकार ने उनकी सुरक्षा के लिए क्या कदम उठाया था, इस पर सुनवाई करने की मांग की गई।

27 जुलाई को आयोग के अध्यक्ष जस्टिस प्रशांत मिश्रा ने शासन को राष्ट्रीय अखबार में जांच के नए बिंदुओं पर आम सूचना प्रकाशित कराने और इस संबंध में किसी को कोई जानकारी है तो उससे शपथ पत्र मंगाने के निर्देश दिए थे। शनिवार को सुनवाई के दौरान कांग्रेस के अधिवक्ता सुदीप श्रीवास्तव ने आवेदन प्रस्तुत कहा कि आयोग के निर्देशानुसार आम सूचना का प्रकाशन नहीं कराया गया है। आम सूचना का सही तरीके से प्रकाशन कराने व शपथ पत्र लेने की अंतिम तिथि 31 अगस्त से आगे बढ़ाने की मांग की गई। इस पर आयोग ने शासन को फटकार लगाई। जांच आयोग के समक्ष घटना के संबंध में जानकारी होने की बात कहते हुए शनिवार को तीन लोगों ने शपथ पत्र पेश किया है। इसमें बस्तर के कांग्रेस नेता अवधेश सिंह गौतम व सैय्यद सत्तार अली और शहीद महेंद्र कर्मा के रिश्तेदार चंद्रभान झाड़ी शामिल हैं। चंद्रभान झीरम घाटी हमले के दौरान महेंद्र कर्मा के साथ ही थे। गोली लगने से उनकी हथेली क्षतिग्रस्त हुई है।

मुसलमान कम, गैर मुसलमान ज्यादा कर रहे जासूसी : दिग्विजय

नईदुनिया, भिंड : पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आइएसआइ (इंटर सर्विसेस इंटेलीजेंस) के लिए जासूसी करने के मामले में पकड़े गए लोगों को लेकर मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने विवादित बयान दिया है। मप्र के भिंड में उन्होंने कहा कि आइएसआइ के लिए जासूसी मुसलमान कम और गैर मुसलमान ज्यादा कर रहे हैं। पाकिस्तान के लिए जासूसी करते पाए गए लोग बजरंग दल और भारतीय जनता पार्टी के हैं। वह आइएसआइ से पैसा ले रहे हैं।

पूर्व मुख्यमंत्री ने जम्मू-कश्मीर के मुद्दे पर कहा कि वहां स्थिति और बिगड़ेगी। जो लोग आपके साथ थे, उन्हें नजरबंद किया गया है। हवालात भेजा गया है। आपकी पैरवी कौन करेगा। पाकिस्तान के हिमायती और जम्मू-कश्मीर को आजाद देखने की चाह रखने वाले तो नहीं करेंगे। कश्मीर के लोगों का विश्वास बहुत जरूरी है। आर्थिक हालात पर उन्होंने कहा कि देश में सबसे ज्यादा बेरोजगारी भाजपा के मोदी (प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी) राज में बढ़ी है। ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री में तीन लाख गाड़ियां बिक नहीं रहीं। 10 लाख लोग बेरोजगार हो रहे हैं। नोटबंदी से देश में 50 लाख लोग बेरोजगार हुए हैं। उन्होंने कहा कि अर्थव्यवस्था संभालिए मोदी जी, ट्रिपल तलाक बाद में होता रहेगा। मप्र के कांग्रेस अध्यक्ष को लेकर पूर्व केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया की नाराजगी पर दिग्विजय ने कहा कमलनाथ हमारे अध्यक्ष हैं। उनका इस्तीफा नहीं हुआ है। झूठ बोलने वाली वाट्सएप यूनिवर्सिटी नाराजगी की बात फैला रही है। सिंधिया से मेरी बात हुई है।

उप्र में बच्चा चोरी की अफवाह फैलाने में अब तक 140 गिरफ्तार

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

बच्चा चोरी के संदेह में भीड़ की हिंसा की बढ़ती घटनाओं में अब पुलिस भी अराजकतत्वों का शिकार हो रही है। अफवाहों पर काबू पाने के लिए कसरत कर रही पुलिस के लिए यह और बड़ी चुनौती है। सोशल मीडिया के जरिये प्रदेश के कोने-कोने तक फैल रही अफवाहों पर काबू पाने के लिए पुलिस फिलहाल ग्रुप पेट्रोलिंग के फार्मूले पर काम कर रही है। राष्ट्रीय सुरक्षा कानून (रासुका) के तहत कार्रवाई की चेतावनी भी दी जा चुकी है, लेकिन घटनाएं लगातार सामने आ रही हैं।

प्रदेश में बच्चा चोरी होने की एक भी घटना नहीं हुई है, लेकिन एक अगस्त से अब तक केवल बच्चा चोरी के संदेह में बेकुसूरों पर भीड़ के हमले की 55 से अधिक घटनाएं प्रकाश में आ चुकी हैं। पश्चिमी उत्तर में 20 से अधिक घटनाएं हुई हैं। पुलिस ने ऐसी 41 घटनाओं में मुकदमें दर्ज कर 140 आरोपितों को गिरफ्तार किया है, जबकि अन्य आरोपितों की तलाश की जा रही है। संभल में चार दिन पहले बच्चा चोरी करने के संदेह में एक व्यक्ति को पीटकर मौत के घाट उतार दिया गया था। इस मामले में पुलिस ने हत्या की रिपोर्ट दर्ज की है। डीजीपी ओपी सिंह ने वीडियो कांफ्रेंसिंग कर सभी जिलों में अस्पताल, बस अड्डा व स्टेशन के आसपास तथा संवेदनशीन स्थानों पर ग्रुप पेट्रोलिंग करने के निर्देश दिए हैं। इन सभी मामलों में 15 दिनों में आरोपितों के खिलाफ चार्जशीट कोर्ट में दाखिल किये जाने का निर्देश भी दिया गया है, लेकिन पुलिस कार्रवाई का भय लोगों में नजर नहीं आ रहा।

पीलीभीत के सेहरामऊ उत्तरी थानाक्षेत्र के गांव सोंधा में शुक्रवार रात बच्चा चोरी के संदेह में ग्रामीणों ने एसआइ समेत छह पुलिसकर्मियों को डंडे से पीटकर घायल कर दिया। इससे पहले बरेली के भूड़ा गांव में समन तामील कराने आई दिल्ली पुलिस की टीम को ग्रामीणों ने घेरा। फतेहपुर में तो अफवाह फैलाने वालों ने स्वास्थ्य टीम पर ही हमला बोल दिया। उग्र ग्रामीणों ने पुलिस पर पथराव तक किया। पुलिस को हालात पर काबू पाने के लिए हवाई फायरिंग तक करनी पड़ी। ऐसी घटनाएं पुलिस के लिये खुली चुनौती हैं। पुलिस ने सोशल मीडिया की मॉनीटरिंग भी बढ़ाई है। खासकर वॉट्सएप पर वायरल हो रहे भ्रामक संदेश अफवाहों को और बढ़ावा दे रहे हैं।

> मानव मस्तिष्क में अहम रक्षा युक्ति का भाव अक्सर पनप जाता है। इन मामलों में भी ऐसा ही है। भीड़ संदिग्ध को यह समझकर पीटने लगती है, मानो वह उन्हीं के बच्चे को उठाने आया हो। चूंकि वे भीड़ में होते हैं इसलिए कार्रवाई का डर कम हो जाता है। जो सबका होगा, वही अंजाम मेरा होगा यह सोचकर वे मारपीट करने लगते हैं। ऐसी अफवाहों पर लगाम के लिए जरूरी है कि लोगों को जागरूक किया जाए।
>
> **-डॉ. सुविधा शर्मा, विभागाध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग, बरेली कॉलेज**

अनंत सिंह ने कुछ सवालों का दिया जवाब, कुछ पर चुप रहे

जागरण संवाददाता पटना

- **घर से एके 47 और ग्रेनेड बरामद होने के मामले में लिया है दो दिन की रिमांड पर**

बिहार स्थित मोकामा के विधायक अनंत सिंह को दो दिन की रिमांड पर लेने के बाद शनिवार को महिला थाने में रखकर पुलिस ने एके-47 और ग्रेनेड बरामदगी मामले में पूछताछ शुरू की। विधायक ने कुछ सवालों का बेधड़क जवाब दिया और कुछ पर चुप्पी साध ली। शाम को उनके वकील कोर्ट के आदेश के मुताबिक उनसे मिलने पहुंचे।

बाढ़ थाने के लदमा गांव स्थित उनके पैतृक घर से एके-47 और ग्रेनेड बरामदगी के मामले में शनिवार को पुलिस केंद्रीय आदर्श कारा बेउर से दो दिनों की रिमांड पर लेकर आई। उनके करीबी लल्लू मुखिया से भी इसी थाने में पूछताछ हो रही है। इसका नेतृत्व ग्रामीण एसपी कांतेश कुमार मिश्र कर रहे हैं।

शनिवार को महिला थाने में काफी संख्या में पुलिसकर्मियों की तैनाती कर दी गई थी। दोपहर को बाढ़ थानेदार संजीत कुमार कड़ी सुरक्षा व्यवस्था में विधायक को महिला थाने लेकर पहुंचे। पुलिस उन्हें लेकर थाने की दूसरी मंजिल पर चली गई। इसके कुछ ही देर बाद ग्रामीण एसपी कांतेश कुमार मिश्र सहित अन्य

अनंत सिंह फाइल

अधिकारी वहां पहुंचे। फिर अनंत सिंह से पूछताछ का सिलसिला शुरू हुआ। शाम तक अनंत सिंह से पूछताछ होती रही।

वहीं, लल्लू मुखिया से पुलिस वायरल ऑडियो के मामले में रिमांड पर लेकर पूछताछ कर रही है। इस मामले में पंडारक थाने में विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। उनके मन में जो भी तत्काल विचार आते थे, उसपर वे बोलते थे, वे कुछ भी छुपाते नहीं थे। वे बिहार के रहने वाले नहीं थे। फिर भी बिहार से उनका विशेष लगाव था।

पटना में लगेगी अरुण जेटली की प्रतिमा, हर वर्ष मनेगी जयंती

राज्य ब्यूरो, पटना : बिहार सरकार 28 दिसंबर को हर साल राजकीय समारोह पूर्वक पूर्व वित्त मंत्री अरुण जेटली की जयंती मनाएगी। पटना में उनकी प्रतिमा भी स्थापित की जाएगी। राजग की ओर से शनिवार को आयोजित श्रद्धांजलि सभा में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने यह घोषणा की। श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में मुख्यमंत्री कई बार भावुक हुए।

मुख्यमंत्री कहा कि जेपी आंदोलन में उनकी भूमिका से हम सभी परिचित हैं। 1998 में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में मुझे जेटली के साथ काम करने का मौका मिला था। 2005 में वे बिहार भाजपा के प्रभारी बने। फरवरी और अक्टूबर-नवंबर महीने में हुए विधानसभा चुनाव में उनकी भूमिका को भुलाया नहीं जा सकता है। नीतीश कुमार ने कहा कि अरुण जेटली विपरीत परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होते थे, वे कभी दुखी नहीं रहते थे। हमेशा उत्साहित होकर अपनी बात रखते थे। यह गुण मधु दंडवते में भी था। अरुण जेटली विधायक से संपर्क करने की कोशिश की गई, परंतु उनका फोन लगातार स्विच ऑफ आ रहा था। सीएस डॉ. चौधरी का कहना था कि कागजी प्रक्रिया पूरा करने के बाद ही पोस्टमार्टम करने

बिहार में सिविल सर्जन जोड़ते रहे हाथ और विधायक सुनाते रहे खरी-खोटी

जागरण संवाददाता, बिहारशरीफ

बिहार के सारे थाना क्षेत्र में एक जदयू कार्यकर्ता के असामयिक निधन पर शनिवार की सुबह सदर अस्पताल पहुंचे अस्थावां के जदयू विधायक डॉ. जितेंद्र कुमार पोस्टमार्टम में देरी होने पर भड़क गए। उन्होंने पहले पोस्टमार्टम करने पहुंचे डॉ. पवन कुमार के साथ दुर्व्यवहार किया और फिर सिविल सर्जन डॉ. परमानंद चौधरी से बदसलूकी करते हुए उन्हें खरी-खोटी सुनाई। इससे नाराज चिकित्सकों ने कामकाज ठप कर दिया और हड़ताल पर चले गए। चिकित्सकों ने कहा कि जब तक विधायक माफी नहीं मांगते तब तक हड़ताल जारी रहेगी।

चिकित्सकों के हड़ताल पर जाने से सदर अस्पताल में आए मरीजों को बिना इलाज लौटना पड़ा। जानकारी होने पर जिला प्रशासन ने चिकित्सकों से हड़ताल समाप्त करने का अनुरोध किया, लेकिन वे नहीं मानें। मामले में

बिहार के नालंदा में सिविल सर्जन को खरी खोटी सुनाते जदयू विधायक डॉ. जितेंद्र कुमार। इस दौरान हाथ जोड़े रहे सिविल सर्जन। जागरण

का प्रावधान है, लेकिन यह बताने के के बावजूद विधायक खरी-खोटी सुनाते रहे। उन्होंने कहा कि आप सभी काम ठीक से नहीं करते। सदर अस्पताल में न तो इलाज की बेहतर व्यवस्था है और न पोस्टमार्टम की। ऐसे में आप लोगों के होने का क्या फायदा है। सीएस बिना कुछ बोले हाथ जोड़कर सब कुछ सुनते रहे। इससे पहले पोस्टमार्टम करने आए डॉ. पवन कुमार को भी विधायक ने जमकर फटकार लगाई थी।

सदर अस्पताल के उपाधीक्षक डॉ. कृष्ण ने कहा, विधायक का इस तरह का व्यवहार शोभनीय नहीं है। आज उनके कारण सदर अस्पताल में आए सैकड़ों मरीजों को बिना इलाज लौटना पड़ा।

राजस्थान अभी लागू नहीं करेगा मोटर व्हीकल एक्ट

जागरण संवाददाता, जयपुर: एक तरफ जहां पूरे देश में रविवार से मोटर व्हीकल एक्ट लागू हो जाएगा वहीं राजस्थान सरकार अभी प्रदेश में इसको लागू नहीं करेगी। प्रदेश के परिवहन मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास ने कहा कि मोटर व्हीकल संशोधन एक्ट-2019 के कई प्रावधान अव्यवहारिक हैं। ऐसा लगता है कि एक्ट पास कराने वालों को गरीब और बेरोजगारों के दर्द का एहसास ही नहीं था। ऐसे में इनके बनाए प्रावधानों में बदलाव के बाद ही प्रदेश में नए यातायात नियम लागू किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि अधिकारी ये देख रहे हैं कि राज्य सरकार को किन प्रावधानों में बदलाव का अधिकार है।

खाचरियावास ने कहा कि हमारा काम यातायात नियमों का पालन कराना है, न कि पैसे वसूलना है। इसी के मद्देनजर बदलाव कर के नया एक्ट लाया जाएगा।

विरोध की यह है वजह : मोटर व्हीकल एक्ट में संशोधन के माध्यम से केंद्र सरकार ने यातायात नियम तोड़ने वालों पर भारी भरकम जुर्माने का प्रावधान किया है। खाचरियावास ने कहा कि आर्थिक मंदी के दौर में इतना भारी-भरकम जुर्माना लगाना सही नहीं है।

पहल

मप्र के सभी पीएचसी को टेलीमेडिसिन से जोड़ने की तैयारी, 100 करोड़ रुपये की लागत से तैयार होगा सेंटर, ओडिशा में सफल रहा है इस तरह का मॉडल

भोपाल में बैठे 40 डॉक्टर टेलीमेडिसिन के जरिये करेंगे इलाज

शशिकांत तिवारी, भोपाल

मध्य प्रदेश के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (पीएचसी) में अब मरीजों को विशेषज्ञों व सुपर स्पेशलिस्ट डॉक्टरों की सलाह भी मिल सकेगी। इसके लिए प्रदेश के सभी पीएचसी को टेलीमेडिसिन से जोड़ने की तैयारी है। यह सुविधा शुरू करने के लिए दो महीने के भीतर टेंडर जारी किया जाएगा। मरीजों को यह सुविधा अगले साल मिल सकती है। इसमें भोपाल से 40 डॉक्टरों की टीम मरीजों का इलाज करेगी। ओपीडी समय सुबह नौ से शाम चार बजे तक रहेगा।

ओडिशा में टेलीमेडिसिन का इस तरह का मॉडल सफल रहा है। अब मप्र में उसी तर्ज पर टेलीमेडिसिन की सुविधा शुरू करने की तैयारी चल रही है। नेशनल हेल्थ मिशन (एनएचएम) के अफसरों ने बताया कि भोपाल में सुबह नौ से दोपहर चार के बीच 40 डॉक्टरों की टीम बैठेगी। इसमें मेडिकल ऑफिसर व विशेषज्ञ होंगे। कुछ सुपर स्पेशलिस्ट डॉक्टरों को शामिल करने पर भी विचार चल रहा है। इसका सबसे बड़ा फायदा होगा कि प्रदेश में बिना डॉक्टर वाली करीब 371 पीएचसी में मरीजों को इलाज मिलने लगेगा। टेंडर में चुनी गई एजेंसी टेलीमेडिसिन का पूरा सेटअप लगाएगी। डॉक्टरों की नियुक्त करेगी। पूरी व्यवस्था पर करीब 100 करोड़ रुपये खर्च होंगे। इतनी ही राशि हर साल टेलीमेडिसिन सुविधा जारी रखने में भी लगेगी।

मप्र के पीएचसी में मरीजों को विशेषज्ञ डॉक्टरों की मिल सकेगी सलाह। प्रतीकात्मक

मप्र में कुल पीएचसी	1199
बिना डॉक्टर वालीं पीएचसी	371
एक पीएचसी से जुड़ी आबादी	30 हजार
एक पीएचसी में रोजाना मरीजों की संख्या	150 से 700 तक

टेलीमेडिसिन सेवा शुरू होने से पीएचसी में आने वाले मरीजों को काफी सुविधा हो जाएगी। ओपीडी समय में मरीजों के इलाज के लिए भोपाल में 40 डॉक्टरों की टीम बैठेगी। गैर संचारी रोगों से पीड़ित मरीजों का और बेहतर इलाज हो सकेगा।

छवि भारद्वाज, मिशन डायरेक्टर, एनएचएम

यह होगा फायदा : इन अस्पतालों में मरीज के पहुंचने पर नर्स भोपाल स्थित टेलीमेडिसिन सेंटर के डॉक्टरों से संपर्क करेंगी। डॉक्टर के बताए अनुसार मरीज की ब्लडप्रेशर, शुगर व अन्य जांचें की जाएंगी। भोपाल से डॉक्टर पूरी जांच व मरीज से जानकारी लेने के बाद दवा लिखेंगे। अस्पताल से फार्मासिस्ट मरीजों को दवाएं देंगे। टेलीमेडिसिन सुविधा शुरू करने का सबसे बड़ा मकसद गैर संचारी रोग जैसे हार्ट अटैक, हाई ब्लडप्रेशर, डायबिटीज, ब्रेन स्ट्रोक आदि बीमारियों से मरीजों को बचाना है।

अभी यह व्यवस्था : प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में मेडिकल ऑफिसर की पदस्थापना होती है। इसमें ज्यादातर एमबीबीएस डिग्रीधारी होते हैं। इससे मरीजों को विशेषज्ञ सेवाएं जैसे हड्डी की बीमारी, नाक, कान व गला की समस्याएं, आंख का उपचार आदि नहीं मिल पाता है। ऐसे में मरीजों को जिला अस्पताल या मेडिकल कॉलेज रेफर किया जाता है।

एक बार फेल हो चुकी है टेलीमेडिसिन सेवा : करीब 10 साल पहले भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के माध्यम से कुछ जिला अस्पतालों और मेडिकल कॉलेजों को जोड़ा गया था। यह सुविधा शुरू होने के करीब छह महीने बाद ही बंद हो गई थी।

पूर्व सैनिक की पत्नी ने साध्वी निरंजन पर लगाए गंभीर आरोप

जागरण संवाददाता, फतेहपुर

- **कहा, 2014 के चुनाव में दिया पैसा मांगा तो पति पर दर्ज कराया दुष्कर्म का मुकदमा**
- **साध्वी ने आरोपों को निराधार बताया, दायर करेंगी मानहानि का मुकदमा**

उप्र के फतेहपुर स्थित चांदपुर थाना क्षेत्र के रुरा गांव के पूर्व सैनिक की पत्नी ने केंद्रीय राज्यमंत्री साध्वी निरंजन ज्योति पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उनके मुताबिक 2014 के लोकसभा चुनाव में दिए गए 15 लाख रुपये वापस मांगने पर पति का उत्पीड़न किया जा रहा है। यह भी आरोप है कि चांदपुर थाने में महिला के पति के खिलाफ दुष्कर्म का झूठा मुकदमा दर्ज करा दिया गया। वहीं, केंद्रीय मंत्री ने आरोपों को निराधार बताया और कहा कि वह उक्त महिला के खिलाफ मानहानि का मुकदमा दर्ज कराएंगी।

शनिवार को पूर्व सैनिक रामकिशन की पत्नी रमा ने कलक्ट्रेट में पत्रकारों के समक्ष कहा कि मेरे पति राष्ट्रपति द्वारा विशिष्ट सेवा मेडल से सम्मानित हैं। पहले वह बसपा में थे। 2014 के लोकसभा चुनाव में जब साध्वी निरंजन ज्योति को फतेहपुर से प्रत्याशी बनाया गया तो उन्होंने पति से भाजपा में शामिल होने व बिरादरी का होने के नाते सहयोग मांगा। पति ने चुनाव के लिए 15 लाख रुपये भी दिए, जो कि वापस नहीं मिले। मांगने पर उत्पीड़न किया जाने लगा। प्रधानमंत्री, गृहमंत्री व मुख्यमंत्री को भेजे शिकायती पत्र को दिखाते हुए रमा ने कहा कि उनके पति वर्तमान में भाजपा के सक्रिय सदस्य हैं। महिला के साथ भाजपा सैनिक प्रकोष्ठ के पदाधिकारी भी मौजूद थे।

वहीं केंद्रीय राज्यमंत्री साध्वी निरंजन ज्योति ने आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए कहा कि वह उक्त महिला को जानती तक नहीं हैं। लेन-देन का आरोप बेबुनियाद है। पूर्व सैनिक दुष्कर्म का आरोपित है, उसका पार्टी से कोई वास्ता नहीं है। आरोपित पति को बचाने के लिए वह मिथ्या आरोप लगा रही है। कहा कि उक्त मह

अपील के लिए अभी हैं विकल्प

एनआरसी की अंतिम सूची जारी हो चुकी है। इस सूची में 19,06,657 लोगों के नाम शामिल नहीं हैं। ऐसे में जिन लोगों का नाम सूची में शामिल नहीं है उनके पास अपील करने के लिए कई विकल्प हैं। आइये विकल्पों पर एक नजर डालते हैं।

फॉरेन ट्रिब्यूनल करेगा मदद

एनआरसी जिनके नाम शामिल नहीं हैं उन्हें अब अपना नाम शामिल कराने के लिए फॉरेन ट्रिब्यूनल के सामने प्रामाणिक दस्तावेजों के साथ पेश होना होगा, जिसके लिए उसे 120 दिन का समय दिया गया है। असम में मौजूदा समय में 100 फॉरेन ट्रिब्यूनल कार्य कर रहे हैं। बाद में 200 और जल्द ही काम करने लगेंगे। किसी के भारतीय नागरिक होने या न होने का निर्णय फॉरेन ट्रिब्यूनल ही करेगी। इस निर्णय से असंतुष्ट होने पर हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट जाने का विकल्प मौजूद है।

फिर से सूची में शामिल होने के दावे का क्या होगा आधार?

जिन लोगों का नाम अपडेटेड एनआरसी में शामिल नहीं है, उनको फॉरेन ट्रिब्यूनल के पास इस आशय का साक्ष्य देते हुए नाम को फिर से सूची में शामिल करने का दावा करना होगा कि वे या उनके पूर्वज 24 मार्च, 1971 को या उससे पहले यहां के नागरिक थे। 1951 की एनआरसी में जो लोग शामिल थे, उनके वंशज अपडेटेड संस्करण में स्वत: ही शामिल हो जाएंगे। इसलिए वंशजों को उनके पूर्वजों से संबंधों का पुख्ता प्रमाण देना होगा। इसके लिए 1951 की एनआरसी से रिश्ता होना अनिवार्य नहीं है। इसके अलावा 24 मार्च, 1971 से पहले असम की मतदाता सूची में जिनका नाम शामिल था, वे या उनके वंशज अपडेटेड एनआरसी में शामिल किए जाने के पात्र होंगे। अन्य दस्तावेज भी पेश किए जा सकते हैं जिसमें जन्म प्रमाण पत्र, और जमीन के दस्तावेज। हालांकि ये तभी मान्य होंगे जब इन्हें 24 मार्च 1971 या उससे पहले जारी किया गया होगा।

मुफ्त में मिलेगी कानूनी सहायता

असम सरकार ने कहा है कि जिनका नाम सूची में नहीं है, ऐसे जरूरतमंद लोगों को मुफ्त कानूनी सहायता प्रदान करेगी। राज्य के सत्तारूढ़ भाजपा और कांग्रेस ने भी एनआरसी से बाहर रखे गए लोगों की सहायता करने की योजना बनाई है। कई गैर-सरकारी संगठन भी सक्रिय हैं।

ऐसे देखें सूची में नाम

फ़ाइनल सूची में शामिल नामों को एनआरसी की आधिकारिक वेबसाइट http://www.nrcassam.nic.in पर देखा जा सकता है।

1. एनआरसी की आधिकारिक वेबसाइट पर जाएं
2. कंप्लीट ड्राफ्ट एआरसी इज नाउ एक्टिव नामक टैब पर क्लिक करें।
3. अपना नाम जांचने के लिए अपना एआरएन नंबर दर्ज करें (आपका एआरएन नंबर आपके एनआरसी फॉर्म के फ्रंट पेज पर छपा है)
4. कैप्चा कोड दर्ज करें और खोज पर हिट करें
5. आपका नाम स्क्रीन पर प्रदर्शित होगा यदि इसे अंतिम एनआरसी सूची में शामिल किया गया है।

किन्हीं कारणों से यदि आधिकारिक वेबसाइट का सर्वर डाउन है तो आवेदक अपने नजदीकी एनआरसी सेवा केंद्र पर भी जा सकते हैं और अंतिम सूची में अपना नाम देख सकते हैं।

ऑनलाइन सेवा सिर्फ सात सितंबर तक उपलब्ध होगी।

अपडेटेड एनआरसी के मायने

असम में पहले से ही एनआरसी है, जो उस वर्ष की जनगणना के आधार पर 1951 में प्रकाशित हुई थी। इस तरह के दस्तावेज वाला एकमात्र राज्य असम वर्तमान में अपने नागरिकों की पहचान करने के लिए इसे अपडेट कर रहा है। सुप्रीम कोर्ट की निगरानी में इस सूची को तैयार और प्रकाशित किया गया है। इसमें 1985 के असम समझौते के अनुसार 24 मार्च, 1971 से पहले असम में प्रवेश करने वालों को नागरिक के रूप में मान्यता दिए जाने का प्रावधान है।

सूची से बाहर रहे लोगों का कानूनी लड़ाई हारने पर क्या होगा?

मौजूदा समय में राज्य में प्रवासियों के लिए छह डिटेंशन सेंटर हैं और 3,000 लोगों की क्षमता वाले सातवें का निर्माण किया जाएगा। हालांकि सूची से बाहर लाखों की संख्या में लोगों को डिटेंशन सेंटर में नहीं रखा जा सकता है। अगर ऐसा हुआ तो उन्हें आधिकारिक रूप से गैर नागरिक घोषित किया जा सकता है। सूची से बाहर लोगों के लिए कोई निश्चित नीति नहीं है। इन लोगों के पास मतदान के अधिकार नहीं होंगे। हालांकि अभी तक, काम, आवास और सरकारी स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा के उनके अधिकारों के बारे में कुछ भी स्पष्ट नहीं है। कुछ सुझाव दिए गए हैं कि उन्हें वर्क परमिट दिया जाए।

1985 के असम समझौते के अनुसार 24 मार्च 1971 के पहले असम आने वालों को नागरिकता देने का प्रावधान है

3000 लोगों की क्षमता वाले सातवें डिटेंशन सेंटर का निर्माण किया गया है असम में, इससे पहले यहां छह डिटेंशन सेंटर थे

2018 का मसौदा

जुलाई 2018 में एनआरसी का मसौदा प्रकाशित हुआ था। उस सूची में, भारतीय नागरिकों के रूप में 2.89 करोड़ निवासियों को शामिल किया गया था, जबकि 40 लाख को छोड़ दिया गया था। उसके बाद, जो लोग बचे हुए थे, उन्हें शामिल करने के लिए आवेदन दाखिल करने की अनुमति दी गई थी।

शरणार्थियों के लिए क्या हैं नीतियां

स्टेटलेस होना शरणार्थी होने के समान नहीं है। भारत के पास तिब्बत, श्रीलंका (तमिल) और पश्चिम पाकिस्तान के शरणार्थी हैं। इनमें से केवल अंतिम समूह को लोकसभा चुनाव में मतदान का अधिकार है विधानसभा चुनावों में नहीं। तिब्बतियों को सरकार कुछ शर्तों के साथ भारतीय नागरिकता देती है।

अंतिम सूची से भाजपा की असम इकाई नाराज

असंतोष ▶ एनआरसी की मूल सूची के मुकाबले नई सूची में बहुत ही कम लोगों को बाहर करने पर जताया एतराज

सत्तारूढ़ दल की केंद्र व राज्य सरकारों से राष्ट्रव्यापी एनआरसी बनाने की अपील

गुवाहाटी, प्रेट्र : असम में संशोधित राष्ट्रीय नागरिक रेजिस्टर (एनआरसी) की अंतिम सूची से सत्तारूढ़ भाजपा बेहद नाराज है। राज्य में सत्तारूढ़ दल को इस बात से असंतोष है कि एनआरसी की मूल सूची के मुकाबले बेहद कम लोग बाहर किए गए हैं। पार्टी ने केंद्र और राज्य सरकार से अपील की है कि एनआरसी को पूरे राष्ट्र में लागू किया जाए।

असम भाजपा के अध्यक्ष रंजीत कुमार दास ने शनिवार को एक प्रेस कांफ्रेंस में कहा कि वह मौजूदा एनआरसी का भरोसा नहीं कर सकते। वह केंद्र और राज्य सरकारों से अपील करते हैं कि एक राष्ट्रीय स्तर का एनआरसी तैयार किया जाए। उन्होंने कहा कि एनआरसी की अंतिम सूची (करीब 19 लाख से अधिक लोग बाहर) में पहले वाली आधिकारिक सूची (करीब 41 लाख से अधिक लोग बाहर) के मुकाबले बहुत कम लोगों को भारतीय नागरिकता से बाहर किया गया है।

उन्होंने यह भी कहा कि अगर विदेशी प्राधिकरण (एफटी) में अपीलों के खिलाफ फैसला आया तो सरकार भारतीय नागरिकों की सुरक्षा के लिए कानून लाएगी। उन्होंने कहा कि पार्टी सूची से बाहर किए गए लोगों की विदेशी ट्रिब्यूनल में अपील की प्रक्रिया पर नजर रखेगी। दास ने कहा कि अगर यह पाया गया कि वाजिब भारतीय नागरिकों की अपील के खिलाफ विदेशी ट्रिब्यूनल में विपरीत फैसले आ रहे हैं, तो हम पूरे 19 लाख मामलों के निपटारे का इंतजार नहीं करेंगे। हम एक कानून बनाकर उनके हितों की रक्षा करेंगे।

असम भाजपा के अध्यक्ष दास ने कहा कि उनकी पार्टी को राज्य के विभिन्न जिलों से रिपोर्ट मिल रही है कि स्वदेशी लोगों को सूची से बाहर कर दिया गया है। हमारे हिसाब से अपील करने वाले दो लाख वाजिब भारतीयों को सूची से बाहर कर दिया गया है। जबकि एनआरसी का मसौदे में अपना नाम शामिल न होने पर चार लाख से अधिक लोगों ने अपील ही नहीं की है।

दास ने दावा किया कि वर्ष 1971 से पहले से बहुत से शरणार्थी भारत आए, जैसे साहा, गांगुली, बिस्वास आदि जिनका नाम जानबूझकर शामिल नहीं किया गया। जबकि यह सरनेम असम का होने की पहचान है। जबकि फर्जी दस्तावेज वाले बहुत से लोगों को सूची में शामिल कर लिया गया। एनआरसी प्रशासन ने इन दस्तावेजों को जारी करने वालों से उसका मिलान नहीं किया।

दास ने यह भी दावा किया कि कांग्रेस के पूर्व मुख्यमंत्री हितेश्वर सैकिया ने अपने कार्यकाल 1991-96 के दौरान असम विधानसभा में बताया था कि राज्य में 30 लाख से अधिक विदेशी रह रहे हैं। उसके बाद तत्कालीन केंद्रीय मंत्री श्रीप्रकाश जायसवाल ने राज्यसभा में जानकारी दी थी कि भारत में दो करोड़ बांग्लादेशी घुसपैठ कर चुके हैं और 50 लाख बांग्लादेशी असम में बस गए हैं। पूर्व गृह मंत्री इंद्रजीत गुप्ता ने भी 42 लाख बांग्लादेशियों के घुसपैठ की बात स्वीकारी थी।

वहीं, असम के वित्त मंत्री हिमंता बिस्व सरमा ने कहा कि संशोधित एनआरसी में 1971 से पहले बांग्लादेश से भारत आने वालों में से बहुत से लोगों के नाम नहीं हैं। उन्होंने कई ट्वीट करके आरोप लगाया कि विरासत संबंध आंकड़ों में हेरफेर किया गया है।

सतर्क और संतुलित रवैया अपना रही कांग्रेस

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

असम में एनआरसी की अंतिम रिपोर्ट आने के बाद जहां भाजपा में असंतोष का स्वर है और सीमावर्ती क्षेत्रों में 20 फीसद नामों की फिर से जांच की अपील की है। वहीं कांग्रेस यह दुरुस्त करने में लगी है कि चूक से भी ऐसा बयान न जाए जो जनभावना के खिलाफ हो। यही कारण है कि एक तरफ जहां राजीव गांधी के काल में हुए असम अकार्ड का हवाला देते हुए एनआरसी पर परोक्ष रूप से श्रेय लेने की कोशिश हुई। वहीं यह भी कहा गया कि भूल से भी कोई सच्चा नागरिक सूची से न छूटे। बल्कि कांग्रेस नेता और असम के पूर्व सीएम तरुण गोगोई ने भाजपा पर ठीकरा फोड़ा कि वह दोषरहित एनआरसी नहीं ला पाई।

अनुच्छेद 370 पर कांग्रेस के रुख ने अंदर से पार्टी में दोफाड़ कर दिया था। ऐसे में एनआरसी को लेकर पूरी सतर्कता बरती गई। अंतिम रिपोर्ट आने के बाद कांग्रेस के

शनिवार को नई दिल्ली में कांग्रेस की वरिष्ठ नेता सोनिया गांधी से मुलाकात के बाद प्रस्थान करते पार्टी सांसद गौरव गोगोई। एएनआइ

कई नेताओं ने कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी से मुलाकात की। मुलाकात के बाद कांग्रेस नेताओं ने कहा-'देश के वास्तविक नागरिकों के हितों की सुरक्षा सुनिश्चित की जानी चाहिए।' असम से कांग्रेस के लोकसभा सदस्य गौरव गोगोई ने कहा, असम का हर वर्ग एनआरसी की स्थिति से नाराज है और लापरवाही से क्रियान्वयन के कारण भारत के बहुत सारे वास्तविक नागरिकों को भी अदालतों का सामना करना होगा। उन्होंने कहा कांग्रेस सबकी मदद करेगी। राजनीति से ऊपर देश हमारा लक्ष्य है। वहीं मेघालय से आने वाले कांग्रेस नेता मुकुल संगमा ने कहा कि एनआरसी असम अकार्ड के तहत हुआ है। कांग्रेस का मानना है कि किसी भी वैध नागरिक के हितों की रक्षा होनी चाहिए। ध्यान रहे कि भाजपा की ओर से कांग्रेस को कठघरे में खड़ा करते हुए कहा गया था कि उसने अपने काल में असम अकार्ड के तहत एनआरसी पर कोई काम नहीं किया और राज्य के मूल निवासियों के हितों की अनदेखी की थी। भाजपा की ओर से पूरे देश में एनआरसी की बात भी कही गई है। शुरुआत में कुछ नेताओं ने इसे सांप्रदायिक रंग देने की कोशिश की थी लेकिन बाद मे कांग्रेस सतर्क हो गई है।

एनआरसी के चक्कर में हजेला ने छह साल से फिल्म तक नहीं देखी

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली

असम एनआरसी के संयोजक प्रतीक हजेला के पास थी 3.3 करोड़ लोगों के 6.6 करोड़ कागजात की छानबीन की जिम्मेदारी

जिस नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटीजन (एनआरसी) की इस समय पूरे देश में चर्चा है, उसकी प्रमुख धुरी रहे हैं भोपाल में जन्मे प्रतीक हजेला। उनके पिता एसपी हजेला मध्य प्रदेश सरकार में अफसर रहते हुए सेवानिवृत्त हुए। चार भाइयों में प्रतीक सबसे छोटे हैं। बड़े भाई अनूप प्रतिष्ठित चिकित्सक हैं। हजेला के चाचा पीडी हजेला इलाहाबाद विश्वविद्यालय और सागर विश्वविद्यालय के कुलपति रह चुके हैं। प्रतीक ने आइआइटी दिल्ली से बीटेक (इलेक्ट्रॉनिक्स) किया। बाद में वह आइएएस बने। टेक्नोलॉजी के प्रति गहरा अनुराग रहा और यही वजह है कि उनसे आज भी कोई जानकारी मांगी जाने पर वह अपने एपल उपकरणों में तथ्यों को टटोलने लगते हैं। उन्हें फिल्में देखने का भी शौक है, लेकिन जबसे उन्होंने एनआरसी का काम संभाला है वह एक भी फिल्म देखने नहीं जा सके हैं। हजेला संगीत के भी शौकीन हैं। उन्हें जगजीत सिंह और मेहंदी हसन की गजलें पसंद हैं। वह सटीक और स्पष्ट बात करना पसंद करते हैं। एक बातचीत में उन्होंने बताया था कि वह आलोचनाओं और आरोपों का बोझ घर नहीं ले जाते। तकनीक में महारत रखने वाले हजेला पूजा-अर्चना में विश्वास रखते हैं और मानते हैं कि इससे सकारात्मक शक्ति मिलती है।

एनआरसी असम के संयोजक के तौर पर प्रतीक हजेला के पास 3.3 करोड़ लोगों के 6.6 करोड़ कागजात की छानबीन की जिम्मेदारी थी। ये कागजात असम के नागरिकों ने इसलिए लगाए थे ताकि वे साबित कर सकें कि वे 24 मार्च, 1971 के पहले से भारत में रह रहे हैं। एनआरसी प्रक्रिया से हजेला के जुड़ने की कहानी बड़ी दिलचस्प है। असम-मेघालय कैडर के 1995 बैच के आइएएस हजेला जुलाई 1996 में पहली बार असिस्टेंट कमिश्नर के तौर पर असम के सिलचर में आए थे। सिलचर असम के बंगाली बहुल काछार जिले का मुख्यालय था। सितंबर 2013 में तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने हजेला को कमिश्नर बनाया और फिर वह असम के गृह और राजनीतिक विभाग के सचिव भी बनाए गए। उन्होंने तब एनआरसी को अपडेट किए जाने की प्रक्रिया में रजिस्ट्रार जनरल ऑफ इंडिया के तहत राज्य संयोजक की भूमिका भी बतौर नोडल अधिकारी स्वीकारी। सूत्रों के अनुसार, अपनी नियुक्ति के छह महीने बाद हजेला ने अकेले ही एनआरसी प्रक्रिया का आधारभूत ढांचा खड़ा कर दिया था और अगस्त 2014 तक 10-12 लोगों की कोर टीम भी बना ली थी। हजेला को इसका पूरा श्रेय गया कि उन्होंने अकेले ही एनआरसी अपडेशन का टेक्निकल कॉन्सेप्ट बनाया। इसमें किसी भी व्यक्ति के पुरखों के बारे में मैपिंग डिजिटल डेटासेट्स से की जा सकती थी और यह डेटासेट्स दशकों पुराने दस्तावेजों के आधार पर तैयार किए गए थे। इसके बाद व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर वेरीफिकेशन कराने का तरीका क्या होगा इसे भी तय किया गया। सभी के पीछे दिमाग हजेला का ही था। हजेला ने भी एनआरसी के लिए आवेदन किया था और जब 31 दिसंबर, 2017 को पहला ड्राफ्ट जारी हुआ तो उसमें उनका और उनकी बेटी का नाम नहीं था। राज्य में लाखों लोगों की तरह यह पिता-पुत्री भी मई 2018 में गुवाहाटी में सुनवाई के लिए पहुंचे थे। उसके बाद उनका नाम अंतिम ड्राफ्ट में शामिल हुआ था।

30 जुलाई, 2018 को हजेला ने रजिस्ट्रार जनरल ऑफ इंडिया (आरजीआइ) शैलेष के साथ गुवाहाटी के एनआरसी ऑफिस में एक प्रेस कांफ्रेंस में फाइनल ड्राफ्ट जारी किया जिसमें 40 लाख लोग बाहर थे। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें और आरजीआइ को फटकार लगाते हुए प्रेस से किसी भी तरह की बातचीत करने से रोक दिया था और ऐसा करने पर जेल भेज दिए जाने की बात कही थी।

बीते कुछ महीनों में राज्य की मौजूदा सरकार और भाजपा की राज्य इकाई ने हजेला का हरसंभव विरोध किया है। 24 जुलाई को भाजपा राज्य इकाई ने कहा था कि वह 'कुछ ताकतों' के निर्देश पर काम कर रहे हैं ताकि गड़बड़ी वाली एनआरसी सूची जारी की जा सके जिसमें अवैधानिक रूप से रहने वाले लोगों के नाम भी हों। आरोपों से इतर यह मानना होगा कि हजेला ने जिस तरह का काम किया है वह बहुत ही कठिन और चुनौतीपूर्ण था।

असम एनआरसी के संयोजक प्रतीक हजेला की फाइल फोटो।

ममता बनर्जी ने ट्वीट कर केंद्र व भाजपा पर साधा निशाना

जागरण संवाददाता, कोलकाता

कहा-राजनीतिक लाभ लेने वालों के चेहरे बेनकाब हो गए

तृणमूल कांग्रेस ने केंद्र की भाजपा सरकार पर एनआरसी (नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटीजन ऑफ इंडिया) के नाम पर असम से बंगालियों को भगाने की कोशिश करने का आरोप लगाया है। साथ ही कहा है कि केंद्र सरकार को उन 19 लाख लोगों की जिम्मेदारी लेनी होगी, जिन्हें एनआरसी की अंतिम सूची से बाहर रखा गया है। उधर, ममता बनर्जी ने शनिवार शाम ट्वीट कर केंद्र सरकार और भाजपा पर निशाना शाधा। उन्होंने कहा कि राजनीतिक लाभ लेने की कोशिश की जा रही थी, लेकिन एनआरसी ने उनके चेहरे को बेनकाब कर दिया। उन्हें देश को जवाब देना होगा। देश और समाज की अवहेलना कर कदम उठाए जाने का यही नतीजा होता है।

ममता ने आगे कहा-'मुझे खास तौर पर बांग्लाभाषी भाई-बहनों के बारे में सोच कर बुरा लग रहा है, जिन्हें एनआरसी के कारण तकलीफ झेलनी पड़ रही है। दरअसल, असम सरकार में वित्तमंत्री हेमंत विश्वशर्मा ने कहा कि दिल्ली और असम सरकार विदेशियों को राज्य से बाहर निकालने के लिए नए तरीकों पर चर्चा कर रही है। मुझे नहीं लगता कि यह अंतिम सूची है, अभी और भी बहुत कुछ सामने आना बाकी है। इसी के बाद ममता बनर्जी ने प्रतिक्रिया दी है।

गौरतलब है कि ममता बनर्जी एनआरसी को लेकर लगातार केंद्र व असम की भाजपा सरकार की खिलाफत करती रही हैं। बीते साल जब एनआरसी की सूची जारी की गई थी, तब भी तृणमूल की ओर से इसका कड़ा विरोध किया गया था। पार्टी का एक प्रतिनिधिमंडल असम भी गया था।

ये असम से बंगालियों को निकालने की साजिश : बंगाल के शहरी विकास मंत्री व कोलकाता के मेयर फिरहाद हकीम ने शनिवार को पत्रकारों से बातचीत में कहा कि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने एनआरसी की अंतिम सूची से बाहर रखे गए 19.07 लाख लोगों को लेकर चिंता व्यक्त की है। उनका क्या भविष्य होगा? केंद्र सरकार को उनकी जिम्मेदारी लेनी होगी। उन्होंने कहा कि यह असम से बंगालियों को बाहर करने की साजिश है। सरकार इतनी असंवेदनशील कैसे हो सकती है? जो सालों से और कल तक यहां के नागरिक थे, आज उन्हें विदेशी कहा जा रहा है।

बंगाल में भी लागू होगी एनआरसी जैसी व्यवस्था

जागरण संवाददाता, कोलकाता : बंगाल में एनआरसी (नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटीजन ऑफ इंडिया) लागू होकर रहेगा। भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव व बंगाल भाजपा के प्रभारी कैलाश विजयवर्गीय ने शनिवार को यह दावा किया।

उन्होंने कहा कि बंगाल से ही देशभर में अवैध नागरिक फैल रहे हैं। बंगाल की सीमा से ही बांग्लादेशी एवं अन्य देशों के लोगों की भारत में घुसपैठ हो रही है, इसलिए बंगाल में एनआरसी का लागू होना जरूरी है। वैध नागरिकों का पता करना हमारा कर्तव्य है। विजयवर्गीय ने कहा कि सिर्फ बंगाल ही नहीं बल्कि देशभर में एनआरसी को लागू किया जाएगा। इस मुद्दे पर अन्य सरकारों ने कोई गंभीरता नहीं दिखाई। केंद्र में भाजपा की सरकार आने के बाद ही यह संभव हुआ है।

सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर असम में एनआरसी लागू होने के बाद देश के नागरिक समझ गए हैं कि भाजपा सरकार का क्या लक्ष्य है। देश के नागरिकों को विदेशी बनाना हमारा लक्ष्य नहीं है बल्कि हम चाहते हैं कि वैध नागरिक ही देश में रहें। जिनकी नागरिकता प्रमाणित नहीं हो रही है, उन्हें हमारी सरकार शीघ्र ही विदेशी नहीं घोषित कर रही है। लोगों को नागरिकता प्रमाणित करने के लिए भाजपा सरकार भी सहायता करेगी।

पूर्व सेना अधिकारी मुहम्मद सनाउल्ला अब भी जता रहे हैं न्याय मिलने की उम्मीद

गुवाहाटी, एएनआइ : सेवानिवृत्त सेना अधिकारी मुहम्मद सनाउल्ला ने न्याय मिलने का भरोसा जताया। पूर्व सेना अधिकारी का मामला गौहाटी हाई कोर्ट में अभी लंबित है। नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटीजन (एनआरसी) की अंतिम सूची में भी उनका नाम शामिल नहीं है।

एनआरसी की अंतिम सूची में अपना नाम नहीं होने के बाद भी सनाउल्ला ने कहा, 'मैं अपना नाम सूची में होने की उम्मीद नहीं कर रहा था। मेरा मामला अभी भी हाई कोर्ट में लंबित है। न्यायपालिका में मेरा पूरा भरोसा है और विश्वास है कि मुझे न्याय मिलेगा।'

मई में सनाउल्ला को असम पुलिस सीमा संगठन द्वारा गुवाहाटी में समन किए जाने के तुरंत बाद ही गिरफ्तार कर लिया गया था। विदेशी ट्रिब्यूनल ने उन्हें नागरिक नहीं माना था इसके बाद ही उन्हें गिरफ्तार किया गया था। वह सेना से मानद लेफ्टिनेंट के रूप में सेवानिवृत्त हुए थे। 30 साल तक सेना में सेवा देने वाले सनाउल्ला को कैप्टन बनाया गया था। उनकी सेवा के लिए उसको राष्ट्रपति से

असम के गुवाहाटी में अपने आवास पर पूर्व सैन्य अधिकारी मुहम्मद सनाउल्ला की फाइल फोटो। एपी

पदक भी मिला था। बाद में 20,000 रुपये की जमानत, दो अमानत पर हिरासत केंद्र से छोड़ा गया था।

असम में अंतिम सूची में अपना नाम देखने के लिए लगी लोगों की लंबी कतारें

बारपेटा, एएनआइ : असम में जैसे ही अंतिम सूची प्रकाशित हुई बड़ी संख्या में लोग एनआरसी सेवा केंद्र की तरफ दौड़ पड़े। शनिवार को अपना नाम देखने के लिए लोगों की लंबी कतारें लग गई। लोगों की उत्सुकता का आलम यह रहा कि दबाव बढ़ने से शनिवार को सरकारी एनआरसी वेबसाइट क्रैश हो गई।

मोतिउरहमान नाम के एक स्थानीय व्यक्ति ने बताया, 'मेरी पुत्र वधू को छोड़ मेरे परिवार के सभी सदस्यों के नाम हैं। हालांकि मैंने अधिकारियों को सभी कागजात सौंपे थे। मेरे पास इस बात की कोई जानकारी नहीं है कि यह कैसे हो गया। हम फिर से पूरी प्रक्रिया से होकर गुजरेंगे।' एक दूसरे स्थानीय व्यक्ति ने कहा कि उसकी मां का नाम पहले और दूसरे मसौदे से गायब था।

अब अंतिम सूची जारी हो गई है। इसमें उनका नाम होने से खुशी मिली है। शामिल किए गए लोगों के नाम की पूरक सूची की हार्ड कापी एनआरसी सेवा केंद्रों, उपायुक्त और सर्किल अधिकारी के कार्यालयों में उपलब्ध है। इस बीच शनिवार को एनआरसी की अधिकृत वेबसाइट दबाव के कारण कुछ ही मिनटों में क्रैश हो गई। साइट एनआरसी असम के राज्य समन्वयक के कार्यालय से संबंधित है।

असम के कामरूप जिले में एनआरसी की अंतिम सूची में अपना नाम देखते हुए लोग। प्रेट्र

एनआरसी का मकसद मुसलमानों को निशाना बनाना : इमरान

इस्लामाबाद, आइएएनएस : पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने एक बार फिर जम्मू और कश्मीर के आंतरिक मामले में जहर घोलने की कोशिश करते हुए कहा कि कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने और एनआरसी के पीछे भारत सरकार का व्यापक मकसद मुसलमानों को निशाना बनाना है। पाकिस्तानी पीएम इमरान खान ने शनिवार को कहा कि असम में एनआरसी की अंतिम सूची जारी होने के संदर्भ में 19 लाख 'अवैध विदेशियों' को रेजिस्टर से बाहर करने के मुद्दे को कश्मीर में बसे अवैध घुसपैठियों से जोड़ दिया है। जियो न्यूज के मुताबिक भारत सरकार के इस कदम से इस क्षेत्र से बड़े पैमाने पर मुसलमानों का पलायन होने का खतरा है। खान ने कहा कि अवैध नागरिकों को देश से बेदखल करने की योजना भी कश्मीर से मुसलमानों को निकालने के लिए है। इस बीच, इमरान खान ने अबूधाबी के क्राउन प्रिंस मुहम्मद बिन जायद अल नहयान को फोन पर बात करके कश्मीर मुद्दे पर समर्थन मांगा है।

घुसपैठ पर भाजपा का वार विपक्ष को करेगा बेनकाब

संतोष कुमार सिंह, नई दिल्ली :

▶ राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर के मुद्दे को विधानसभा चुनाव में उठाएगी भाजपा

▶ बांग्लादेशी व रोहिंग्या घुसपैठ के लिए आप व कांग्रेस को बताया जिम्मेदार

दिल्ली विधानसभा चुनाव में राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर (एनआरसी) भी मुद्दा होगा। असम में एनआरसी की अंतिम सूची जारी होने के बाद प्रदेश भाजपा उत्साहित है और इसे दिल्ली में भी लागू करने की मांग कर रही है।

भाजपा राष्ट्रीय राजधानी में अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी व रोहिंग्या घुसपैठियों को बाहर निकालने की मांग करेगी, वहीं आम आदमी पार्टी (आप) की सरकार व कांग्रेस को कठघरे में खड़ा करेगी। भाजपा का कहना है कि घुसपैठिये देश के भविष्य को दीमक की तरह चाट रहे हैं। बावजूद इसके कांग्रेस व आप सहित अन्य पार्टियां इनके समर्थन में खड़ी हैं। ये पार्टियां वोट बैंक की राजनीति में देश की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ कर रही हैं। भाजपा नेताओं का कहना है घुसपैठिये आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा होने के साथ-साथ यहां के नागरिकों के लिए उपलब्ध संसाधनों पर भी बोझ हैं। वे यहां के युवकों का रोजगार हथिया रहे हैं और गरीबों का राशन खा रहे हैं। वर्षों से लाखों लोग अवैध रूप से राजधानी में रह रहे हैं, क्योंकि पहले कांग्रेस और अब आप सरकार इन्हें संरक्षण दे रही है। घुसपैठियों का वोट मिल सके इसके लिए इनके राशन कार्ड व मतदाता पहचान पत्र सहित अन्य दस्तावेज भी बनवा दिए गए हैं। इन दस्तावेजों की जांच जरूरी है जिससे कि घुसपैठियों की पहचान की जा सके। इस मुद्दे को लेकर पार्टी के नेता व कार्यकर्ता लोगों के बीच जाएंगे। उन्हें बताएंगे कि किस तरह से आप की सरकार इन्हें समर्थन दे रही है और इसके रहते हुए दिल्ली से घुसपैठियों को निकालना मुश्किल है।

अंतिम सूची आने से पहले महिला ने कुएं में कूदकर जान दी

गुवाहाटी, आइएएनएस : असम के सोनितपुर जिले में नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटीजन (एनआरसी) की अंतिम सूची प्रकाशित होने से कुछ देर पहले एक महिला ने कुएं में कूदकर अपनी जान दे दी।

तेजपुर कस्बे से चार किलोमीटर दूर डोलबारी गांव में यह घटना घटी। ग्रामीणों ने बताया कि शायेरा बेगम अपने घर के पीछे स्थित कुएं में कूद गई। वह एनआरसी में अपना नाम नहीं होने को लेकर चिंतित थी।

उसने सोचा कि नाम नहीं होने के बाद उसे परिवार के साथ हिरासत केंद्र भेज दिया जाएगा। सोनितपुर के पुलिस अधीक्षक कुमार संजीत ने कहा कि पता चला है कि महिला मनोरोगी थी। उसने कुएं में कूदकर जान दी है। मामले की जांच कराई जा रही है।

30 से अधिक छात्रों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है केरल के कोझिकोड जिले में एक कॉलेज परिसर में पाकिस्तानी झंडे से मिलता-जुलता झंडा फहराने के जुर्म में। पुलिस के अनुसार यह घटना गुरुवार की है।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
रविवार 1 सितंबर 2019

महाराष्ट्र की केमिकल फैक्ट्री में धमाके, 13 लोगों की गई जान

दर्दनाक ▶ नाइट्रोजन गैस के सिलेंडरों के फटने से हुआ हादसा, 64 लोग घायल

मुख्यमंत्री ने मृतक के आश्रितों को पांच-पांच लाख रुपये मुआवजा देने की घोषणा की

महाराष्ट्र के धुले में शनिवार को नाइट्रोजन गैस सिलेंडरों में हुए धमाके से जलकर खाक हुई फैक्ट्री। प्रेट्र

मुंबई, प्रेट्र : महाराष्ट्र के धुले जिले में शनिवार की सुबह एक केमिकल फैक्ट्री में गैस सिलेंडरों में हुए धमाके में 13 कर्मचारियों की मौत हो गई और 64 अन्य घायल हो गए। मुख्यमंत्री देवेंद्र फड़नवीस ने मृतक आश्रितों को पांच-पांच लाख रुपये की मुआवजा राशि देने की घोषणा की है।

पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने शनिवार को बताया कि शिरपुर तालुका के वाघदी गांव में एक केमिकल फैक्ट्री में सुबह करीब पौने दस बजे जबरदस्त धमाका हुआ। आसमान तक काले धुएं के बादल छा गए। उस समय वहां कम से कम 100 कर्मचारी मौजूद थे। उन्होंने बताया, 'केमिकल फैक्ट्री में नाइट्रोजन गैस सिलेंडरों में विस्फोट होने से 13 कर्मचारियों की मौत हो गई जबकि 64 अन्य घायल हो गए।'

अधिकारी ने बताया कि मौके पर राहत एवं बचाव अभियान जारी है जबकि आग पर काबू पा लिया गया है। दमकल, पुलिस और राज्य आपदा प्रतिक्रिया बल (एसडीआरएफ) राहत एवं बचाव अभियान में जुटे हुए हैं। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फड़नवीस ने इस हादसे पर दुख जताया और मृतकों के परिजनों को पांच-पांच लाख रुपये की आर्थिक सहायता देने की घोषणा की। मुख्यमंत्री कार्यालय (सीएमओ) ने ट्वीट किया, 'मुख्यमंत्री फड़नवीस ने धुले जिले में शिरपुर के निकट एक केमिकल फैक्ट्री में लोगों की मौत पर दुख जताया है। कलेक्टर, एसपी मौके पर मौजूद हैं। एसडीआरएफ की टीम भी मौके पर पहुंच गई है और अब आग पर काबू पा लिया गया है।'

रुमित केमसिंथ प्राइवेट लिमिटेड की केमिकल इकाई दवाइयां बनाने के लिए इस्तेमाल होने वाले केमिकल का निर्माण करती है। अधिकारी ने बताया, 'प्रथम दृष्टया केमिकल रिसाव के कारण आग लगी और आग सिलेंडरों तक पहुंच गई जिससे विस्फोट हुआ।' घायलों को धुले सिविल अस्पताल और शिरपुर कॉटेज अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सभी मृतकों की पहचान कर ली गई है। दंगा नियंत्रण पुलिस की एक टुकड़ी स्थानीय पुलिसकर्मियों के साथ मौके पर तैनात कर दी गई है। इस बीच केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने फड़नवीस से बात की और केमिकल फैक्ट्री में हुए विस्फोट के बाद की स्थिति का जायजा लिया।

मुख्यमंत्री ने टेलीफोन पर हुई बातचीत के दौरान शाह को बताया कि राज्य सरकार संकट में फंसे लोगों की मदद करने की पूरी कोशिश कर रही है। शाह ने ट्वीट किया, 'महाराष्ट्र के धुले में एक केमिकल फैक्ट्री में विस्फोट के कारण हुए जानमाल के नुकसान के बारे में जानकर दुख हुआ। मुख्यमंत्री फड़नवीस से बात की है और राज्य सरकार जरूरतमंद लोगों की मदद करने के लिए हरसंभव कोशिश कर रही है।'

485 करोड़ की क्रिप्टोकरेंसी घोटाले के सरगना की हत्या, पांच गिरफ्तार

जागरण संवाददाता, देहरादून

- हत्या में शामिल पांच अन्य आरोपितों की तलाश में पुलिस दे रही दबिश
- क्रिप्टोकरेंसी के पासवर्ड जानने को दोस्तों ने केरल से देहरादून ले जाकर की हत्या

क्रिप्टोकरेंसी की आभासी दुनिया के बादशाह अब्दुल शकूर की उत्तराखंड के देहरादून में हत्या हो गई। पुलिस ने हत्या के पांच आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया है। वहीं, अन्य पांच आरोपितों की तलाश के लिए पुलिस ने केरल, दिल्ली और उत्तराखंड में शनिवार को दबिश दी। शकूर की हत्या के बाद करोड़ों-अरबों कमाने का सपना देख रहे दक्षिण भारत के हजारों निवेशकों का सपना भी टूट गया है।

देहरादून के एसएसपी अरुण मोहन जोशी ने कहा कि पुलिस यह पता लगाने की कोशिश में है कि शकूर क्रिप्टो करेंसी के कारोबार में कैसे आया और कैसे इतनी ऊंचाई पर पहुंच गया। वह अंडरवर्ल्ड या फिर विदेशी सरजमीं से क्रिप्टोकरेंसी का संचालन करने वाले गैंग से तो नहीं जुड़ा था। इसका पता लगाने के लिए शकूर और उसके दोस्तों के ई-मेल से लेकर वॉट्सअप चैटिंग और बैंक अकाउंट के ट्रांजेक्शन तक की तह में जाने में जुटी है। ऐसे में फरार चल रहे शकूर के कोर ग्रुप के तीन सदस्यों समेत पांच आरोपितों की गिरफ्तारी के बाद ही गुत्थी सुलझेगी।

दोस्त बने दुश्मन : केरल निवासी अब्दुल शकूर 485 करोड़ रुपये की क्रिप्टो करेंसी का मालिक था। यह बात उसके ग्रुप के करीब दस दोस्तों को पता थी। दो साल पहले शकूर ने अकाउंट हैक होने की बात फैलाई तो जिन लोगों ने उसके जरिये क्रिप्टोकरेंसी में निवेश कर रखा था, वह रकम वापस लेने का दबाव बनाने लगे थे। इस पर शकूर भूमिगत हो गया। उसके दोस्तों को मालूम था कि शकूर को बिजनेस में घाटा तो हुआ है, लेकिन अब भी उसके पास करीब 485 करोड़ रुपये की क्रिप्टो करेंसी है।

पासवर्ड जानने के लिए इतना पीटा की हो गई मौत : क्रिप्टोकरेंसी का पासवर्ड जानने के लिए दोस्त उसे घुमाने के बहाने देहरादून लेकर आए। यहां पासवर्ड जानने के लिए उसे इतनी भयंकर यातनाएं दीं कि गुरुवार को शकूर की मौत हो गई। शुक्रवार को पुलिस ने शकूर की हत्या के पांच आरोपितों फारिस ममनून निवासी शबाना मंजिल करूवंबरम मंजीरी मल्लपुरम केरल, अरविंद सी निवासी चेन्निक कठहोडी मंजीरी मल्लपुरम, आसिफ व आफताब मोहम्मद निवासी पलाई पुथनकलइथिल मंजीरी, सुफेल मुख्तार निवासी पुथईकलम पलपत्ता केरल को देहरादून से गिरफ्तार कर लिया था। जबकि पांच अन्य आरोपितों की तलाश जारी है। पुलिस को संदेह है कि अन्य पांच आरोपित केरल अथवा दिल्ली में हो सकते हैं।

इन आरोपितों की है तलाश : आशिक निवासी निल्लीपुरम, अरशद निवासी वेंगरा, यासीन, रिहाब और मुनीफ निवासी मंजीरी मल्लपुरम केरल।

कौन था शकूर

केरल निवासी शकूर तीन-चार साल से क्रिप्टो करेंसी में लोगों से निवेश कराता था। इसके लिए कोर ग्रुप बना रखा था। कोर ग्रुप में रिहाब, अरशद, आसिफ व मुनीफ शामिल थे। कोर ग्रुप के सदस्यों ने भी अपनी टीम बना रखी थी। इस टीम में आशिक, सुफेल, आफताब, फारिस ममनून, अरविंद सी और आसिफ शामिल थे। यह टीम क्रिप्टो करेंसी में निवेश के लिए बिचौलिए का काम करती थी।

शरीर पर मिले थे 11 गहरे घाव

पोस्टमार्टम रिपोर्ट में शकूर के शरीर पर 11 तरह की चोटों के निशान मिले थे। पुलिस को प्रेमनगर में मांडूवाला स्थित कमरे की तलाशी में खून से सना चाकू, पेचकस और खून से सने कपड़े बरामद हुए हैं।

न्यूज गैलरी

मुख्य अभियंता के घर मिले पौने तीन लाख रुपये

गोपालगंज : अपने आवास पर ठेकेदार को जिंदा जलाकर मारने के आरोपी गंडक परियोजना के मुख्य अभियंता के सरकारी आवास पर पुलिस टीम के अलावा आर्थिक अपराध की इकाई ने घंटों पड़ताल की। आर्थिक अपराध टीम ने 2.74 लाख नकदी, करीब 300 ग्राम सोने के जेवरात, स्टेट बैंक व डाकघर सहित आधा दर्जन बैंक की पासबुक व चेकबुक बरामद किया। जांच के दौरान पुलिस अधीक्षक सहित कई पुलिस पदाधिकारी मौजूद रहे। गुरुवार को ठेकेदार रामाशंकर सिंह की मुख्य अभियंता मुरलीधर के आवास पर जलाकर हत्या कर दी गई थी। ठेकेदार के बेटे राणा प्रताप सिंह के बयान पर नगर थाने में हत्या की प्राथमिकी में मुख्य अभियंता मुरलीधर सिंह के अलावा सहायक अभियंता जितेंद्र कुमार सिंह व सत्येंद्र कुमार तथा मुख्य अभियंता की पत्नी को नामजद किया गया है। शुक्रवार की रात्रि मुख्य अभियंता के आवास पर आर्थिक अपराध इकाई की टीम पहुंची। पुलिस अधीक्षक राशीद जमां ने भी आवास पर खड़े वाहनों की पड़ताल कराई। पुलिस यह पता कर रही है कि आवास पर खड़े वाहन किसके हैं। (जासं)

उन्नाव दुष्कर्म पीड़िता की सेहत में सुधार

नई दिल्ली : उन्नाव दुष्कर्म पीड़िता की हालत में काफी सुधार है। उन्हें एम्स ट्रॉमा सेंटर के आइसीयू से निकालकर प्राइवेट वार्ड में स्थानांतरित कर दिया गया है। हालांकि पूरी तरह स्वस्थ होने में अभी वक्त लगेगा। उल्लेखनीय है कि पीड़िता और उनके वकील को 5 अगस्त को लखनऊ से एयर एंबुलेंस से दिल्ली लाया गया था और उन दोनों को एम्स के ट्रॉमा सेंटर के आइसीयू में भर्ती किया गया था। तब से उनका एम्स में इलाज चल रहा है। इलाज के दौरान गंभीर संक्रमण भी होने की बात सामने आई थी, लेकिन डॉक्टर इलाज में कामयाब रहे। उन्हें दो दिन पहले आइसीयू से प्राइवेट वार्ड में स्थानांतरित किया गया है। वहीं वकील महेंद्र सिंह अभी आइसीयू में ही हैं। (राब्यू)

मुहर्रम का चांद दिखा, यौमे आशूरा 10 को

लखनऊ : मुहर्रम का चांद शनिवार को दिखाई दिया। मरकजी चांद कमेटी के अध्यक्ष और ईदगाह के इमाम मौलाना खालिद रशीद फरंगी महली ने एलान किया कि मुहर्रम का चांद हो गया है। मुहर्रम की पहली तारीख एक सितंबर को होगी और यौम-ए-आशूरा 10 सितंबर को होगा। शिया चांद कमेटी के अध्यक्ष मौलाना सैफ अब्बास नकवी ने भी चांद होने का एलान किया है। इस्लामिक कैलेंडर के मुताबिक मुहर्रम हिजरी का पहला महीना होता है। (जासं)

कोलकाता में 10 किलो विस्फोटक के साथ दो गिरफ्तार

जागरण संवाददाता, कोलकाता : कोलकाता में स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) ने शुक्रवार रात 10 किलोग्राम विस्फोटक व दो हथियार के साथ दो लोगों को गिरफ्तार किया है। जब्त विस्फोटक का इस्तेमाल आम तौर पर आतंकी करते हैं, जिससे संदेह है कि दोनों के संबंध किसी आतंकी संगठन से हैं। गौरतलब है कि बंगाल में बांग्लादेश का आतंकी संगठन जमात-उल-मुजाहिदीन (जेएमबी) सक्रिय है और उसके कई आतंकियों की अब तक गिरफ्तारी हो चुकी है।

एसटीएफ के मुताबिक गुप्त सूचना पर शुक्रवार रात नारकेलडांगा थाना क्षेत्र के राजाबाजार ट्राम डिपो के पास एपीसी रोड पर नजर रखी जा रही थी। इसी बीच वहां घूम रहे दो लोगों की गतिविधियां संदिग्ध लगने पर उनसे पूछताछ की गई। उनके पास मौजूद एक बैग की तलाशी ली गई तो उसमें से 10 किलोग्राम विस्फोटक और दो हथियार मिले। एसटीएफ ने दोनों को गिरफ्तार कर पूछताछ की तो उन्होंने अपने नाम फैयाज खान (55) और मोहम्मद मुकीम खान बताए।

चमोली में तीसरे दिन भी नहीं खुला बदरीनाथ हाईवे

जागरण संवाददाता, देहरादून

- बदरीनाथ में करीब 1300 यात्री कर रहे राजमार्ग खुलने का इंतजार
- पहाड़ी से गिरे पत्थरों की चपेट में आने से चार यात्री हुए चोटिल

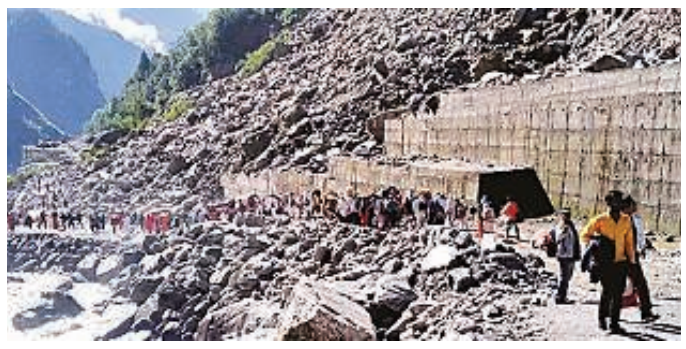

चमोली के लामबगड़ में मलबा आने से बंद बदरीनाथ राजमार्ग तीसरे दिन भी नहीं खोला जा सका। ऐसे में यात्री पैदल ही आवाजाही कर रहे हैं। जागरण

उत्तराखंड में हुई बारिश के बाद मलबा आने से चमोली के लामबगड़ में बंद बदरीनाथ हाईवे को तीसरे दिन भी नहीं खोला जा सका। हाईवे पर लगातार पहाड़ी से मलबा आने से इसे सुचारू करने में मुश्किलें सामने आ रही हैं। हालांकि शुक्रवार से ही लामबगड़ से पैदल आवाजाही हो रही है, लेकिन शनिवार को पैदल आवाजाही करने वालों को परेशानी का सामना करना पड़ा। पहाड़ी से पत्थर आने के कारण चार यात्रियों को हल्की चोटें आई हैं। दूसरी ओर उत्तरकाशी में गंगोत्री हाईवे सुबह के समय चुंगी बड़ेथी में छह घंटे और हेलूगाड़ में चार घंटे बंद रहा। जबकि यमुनोत्री हाईवे भी डाबरकोट में मलबा आने से तीन घंटे तक रुका रहा। केदारनाथ गौरीकुंड हाईवे भी सुबह दो स्थानों पर बंद रहा। मार्ग को दोपहर बाद यातायात के लिए खोल दिया गया।

चमोली के लामबगड़ में बंद बदरीनाथ हाईवे के शनिवार को यातायात के लिए खोले जाने की उम्मीद थी, लेकिन पहाड़ी से लगातार मलबा गिरने से मार्ग को नहीं खोला जा सका। लामबगड़ भूस्खलन जोन में बनाए गए पैदल रास्ते से ही आवाजाही जारी रही। पहाड़ी से मलबा गिरना जारी रहने के बावजूद यात्रियों ने जान जोखिम में डालकर आवाजाही की। पैदल मार्ग से आवाजाही करते समय पहाड़ी से गिरे पत्थरों की चपेट में आने से मध्य प्रदेश के चार यात्रियों को हल्की चोटें भी आईं। स्थानीय लोगों और एसडीआरएफ की मदद से उन्हें सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पांडुकेश्वर लाया गया। जहां उपचार के बाद चारों यात्रियों को छुट्टी दे दी गई है। हाईवे बंद होने के कारण बदरीनाथ धाम में करीब 1300 यात्री रुके हुए हैं। यह यात्री निजी वाहनों से बदरीनाथ धाम की यात्रा पर आए हैं और पिछले तीन दिन से मार्ग खुलने का इंतजार कर रहे हैं। उधर, मौसम विभाग के अनुसार उत्तराखंड में अगले 24 घंटे मौसम सामान्य रहेगा। कुछ पहाड़ी जिलों में बारिश के आसार हैं।

छात्रा के माता-पिता को अपने साथ ले गई दिल्ली पुलिस

चिन्मयानंद प्रकरण

जागरण संवाददाता, शाहजहांपुर

- सुप्रीम कोर्ट का आदेश देखने के बाद साथ जाने को हुए राजी

वीडियो वायरल कर पूर्व केंद्रीय मंत्री स्वामी चिन्मयानंद पर गंभीर आरोप लगाने वाली छात्रा के माता-पिता को दिल्ली पुलिस अपने साथ ले गई। सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर शनिवार दोपहर टीम शाहजहांपुर पहुंची। छात्रा के पिता ने कोर्ट का आदेश मांगा, जिसे देखने के बाद वह साथ जाने को राजी हो गए। स्वामी चिन्मयानंद के डिग्री कॉलेज में परास्नातक की पढ़ाई करने वाली छात्रा ने 24 अगस्त को एक वीडियो वायरल कर गंभीर आरोप लगाए थे। इसके बाद वह लापता हो गई। 27 अगस्त को उसके पिता ने स्वामी चिन्मयानंद पर अपहरण का आरोप लगाते हुए मुकदमा दर्ज कराया था। तहरीर में दुष्कर्म का आरोप भी लगाया था।

राजस्थान के दौसा से बरामद हुई थी छात्रा : मामले का सुप्रीम कोर्ट ने स्वतः संज्ञान लिया, जिसके बाद शुक्रवार को छात्रा को राजस्थान के दौसा जिले के एक होटल से बरामद कर सुप्रीम कोर्ट में पेश किया गया। कोर्ट के आदेश पर छात्रा के माता-पिता को भी दिल्ली ले जाने के लिए वहां की पुलिस शनिवार दोपहर सवा 12 बजे शाहजहांपुर पहुंची। दिल्ली के मंदिर मार्ग थाना के एसएचओ विक्रमजीत सिंह पुलिस टीम के साथ छात्रा के घर पहुंचे और उसके माता-पिता से साथ चलने को कहा। पुलिस टीम से छात्रा के पिता ने कहा कि वह दिल्ली चलने से पहले सुप्रीम कोर्ट का आदेश देखना चाहते हैं। आदेश देखने के बाद वह पुलिस के साथ जाने को तैयार हुए।

मुझे नहीं पता, बेटी के पास क्या साक्ष्य हैं : इससे पहले छात्रा के पिता ने मीडिया से बातचीत में कहा कि उनकी बेटी के पास साक्ष्य हैं, इसलिए वह अपनी जान को खतरा बता रही थी। हम दिल्ली जाकर उससे मिलेंगे। वहीं पता चलेगा कि उसके पास क्या साक्ष्य हैं।

गणेश मंडपों में चंद्रयान-दो...

गणपति मंडपों में धर्म और विज्ञान का अद्भुत संगम देखा जा सकता है। मुंबई में लाल बाग राजा मंडल ने इस वर्ष चंद्रयान-दो की थीम पर भगवान गणेश का मंडप तैयार किया है। गणेश की विशाल प्रतिमा के साथ सौरमंडल और चंद्रयान की प्रतिकृतियां तैयार की गई हैं। एएनआइ

सिख लड़की के जबरिया निकाह से बेनकाब हुआ पाक

वरिंदर सिंह वालिया, पंजाबी जागरण

जिस समय पाकिस्तान स्थित गुरुद्वारा श्री करतारपुर साहिब कॉरिडोर को अंतिम रूप देने के लिए भारत और पाकिस्तान के बीच अटारी-वाघा जीरो लाइन पर बैठक चल रही थी, उसी समय श्री ननकाना साहिब में गुरद्वारा तंबू साहिब के हेड ग्रंथी की बेटी का अपहरण कर धर्म परिवर्तन कराए जाने को लेकर पाक सिख समुदाय की अहम बैठक चल रही थी। इस बैठक में शामिल लोग असुरक्षा की भावना से भरे हुए थे।

जब सीमा पर तनाव के बावजूद दोनों देशों की सरकारें श्री गुरु नानक देव जी का 550वां प्रकाश पर्व मनाने की तैयारी कर रही हैं तब पहले सिख गुरु के जन्म स्थान के नाम पर बने जिले से एक सिख लड़की का अपहरण कर धर्म परिवर्तन करने की खबर ने दुनिया भर के सिखों को झिंझोड़ कर रख दिया है।

हेड ग्रंथी के परिवार का कहना है कि आतंकी संगठन जमात-उद-दावा के सदस्यों समेत कुछ गुंडे आधी रात को उनके घर आए और उनकी बेटी जगजीत कौर को अगवा कर के ले गए। इसके बाद निकाह के समय की बनाई गई वीडियो वायरल कर दी गई। वायरल वीडियो में पीड़ित लड़की डरी-डरी दिखाई दे रही है। निकाह की बुनियादी शर्त है कि एक तरफ से दरख्वास्त हो और दूसरी तरफ से मंजूरी मिले। दो गवाह जो बालिग और होशमंद मुसलमान हों, इस रस्म के समय अवश्य हाजिर होने चाहिए। वायरल हुए वीडियो में इस्लामिक रीति रिवाजों के मुताबिक ऐसी कोई दरख्वास्त नहीं दी गई और न ही वहां कोई होशमंद गवाह ही मौजूद था। पीड़ित परिवार ने जब एफआइआर दर्ज कराई तो गुंडे दोबारा उनके घर आ धमके और धमकी दी कि यदि एफआइआर वापस न ली गई तो सारे परिवार को इस्लाम कुबूल करने के लिए मजबूर किया जाएगा। जब पीड़ित परिवार ने गवर्नर हाउस के सामने आत्मदाह करने की चेतावनी दी तब ननकाना साहिब का प्रशासन कुंभकर्णी नींद से जागा।

पाक सरकार खास रणनीति के तहत सिखों को खुश करने के लिए हरसंभव कोशिश करती है जिसका नतीजा है करतारपुर कॉरिडोर। भारत-पाक सीमा पर तनाव के बावजूद करतारपुर कॉरिडोर का निर्माण कार्य युद्ध स्तर पर हो रहा है। ऐसे समय में ननकाना साहिब के एक गुरुद्वारे के हेड ग्रंथी की बेटी का अपहरण कर उससे जबरदस्ती निकाह करने की खबर ने पाकिस्तान की विश्व स्तर पर किरकिरी कराई है। पाकिस्तान गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पूर्व प्रधान मस्तान सिंह ने कहा है कि इमरान सरकार पीड़ित सिख परिवार के साथ झूठी सहानुभूति का दिखावा कर मगरमच्छ के आंसू बहा रही है।

ठेकेदार आत्महत्या मामले में एई और जेई गए जेल

जागरण संवाददाता, वाराणसी : वाराणसी में लोक निर्माण विभाग के ठेकेदार अवधेश श्रीवास्तव खुदकशी मामले में पुलिस हिरासत में लिए गए सहायक अभियंता (एई) आशुतोष कुमार सिंह व अवर अभियंता (जेई) मनोज कुमार सिंह को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। इससे पहले शनिवार दोपहर उन्हें मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट की कोर्ट में पेश किया गया। वहीं, दूसरी ओर इस मामले की तहकीकात करने लखनऊ से आई तीन सदस्यीय टीम देर शाम जांच रिपोर्ट शासन को सौंप देगी। घटना के बाद से ही कमेटी के सदस्य अधिकारियों से पूछताछ व फाइलों की छानबीन में जुटे थे। अधिकारियों, कर्मचारियों और ठेकेदारों के भी बयान दर्ज किए गए हैं।

गौरतलब है कि ठेकेदार अवधेश श्रीवास्तव लोक निर्माण विभाग के कई काम कर रहे थे। करोड़ों रुपये बकाया होने के बाद वह कई महीने से विभाग के चक्कर लगा रहे थे। ऐसे में परेशान होकर वह 28 अगस्त को चीफ इंजीनियर ऑफिस जा पहुंचे। पुलिस का कहना है कि पहले उन्होंने बकाया धनराशि की मांग की। वहां बात बढ़ने पर वह तैश में आ गए और अपनी रिवाल्वर से खुद को गोली मार ली। वहीं, ठेकेदार आत्महत्या मामले में एकजुट ठेकेदारों ने शनिवार को लोक निर्माण विभाग परिसर से सर्किट हाउस तक न्याय यात्रा निकाली।

बोले कश्मीरी

पाकिस्तान को डर, गुलाम कश्मीर पर भी न हो जाए भारत का कब्जा, पाक, नेकां और पीडीपी को एक ही पलड़े में तोल रहे घाटी के लोग

अब दिल्ली से नहीं, इस्लामाबाद से दूर रहने की जरूरत

नवीन नवाज, श्रीनगर

पाकिस्तान भले ही खुद को कश्मीरियों का हमदर्द दिखाने के लिए कोई भी नाटक करे, लेकिन कश्मीरी अवाम अब उसके मकड़जाल से बाहर निकलता दिख रहा है। ऐसे में वादी के लोग अब खुलकर पाकिस्तान को इन हालातों के लिए जिम्मेदार ठहरा रहे हैं। वहीं, विशेष दर्जे की आड़ में कश्मीर केंद्रित दलों ने घाटी को अपनी सल्तनत बनाकर रखा था। अगर ऐसा न होता तो न यहां अलगाववाद होता और न ही केंद्र को कड़े कदम उठाने पड़ते।

अनुच्छेद-370 हटने के बाद कश्मीर में नई बहस छिड़ गई है। ऐसे में लोग अब राज्य के मौजूदा हालात और अपने भविष्य पर चर्चा करते हुए पाकिस्तान, नेशनल कांफ्रेंस और पीडीपी को तराजू के एक ही पलड़े में रख रहे हैं। टीवी चैनलों की बहस में अलगाववादी खेमे का प्रतिनिधित्व करने वाले एक युवा वकील ने कहा कि पांच अगस्त से लेकर आज तक कश्मीर में जो हुआ, उससे साफ है कि हमें दिल्ली से नहीं, पाकिस्तान से दूर रहने की जरूरत है।

575 जांबाजों ने ली देश रक्षा की शपथ

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर : शहीद लेफ्टिनेंट उमर फैयाज और लांसनायक नजीर अहमद वानी के नक्शे कदम पर चलते हुए जम्मू-कश्मीर के 575 युवा 11 माह के कठिन प्रशिक्षण के बाद शनिवार को जैकलाई रेजिमेंटल सेंटर से पूर्ण सैनिक बनकर बाहर निकले। रंगरेथ स्थित जम्मू कश्मीर लाइट इन्फेंट्री रेजिमेंटल सेंटर में शनिवार सुबह दीक्षा समारोह में इन युवाओं ने राष्ट्रीय एकता, अखंडता के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने की शपथ ली। शनिवार सुबह जांबाज बाना सिंह स्टेडियम में सधे कदमों के साथ मार्च पास्ट करते हुए जब तिरंगे को सलामी देते निकले तो दर्शक दीर्घाओं में बैठे लोग भी रोमांचित हो उठे। दर्शकों की भीड़ में बैठे सभी जवानों के परिजन गौरवान्वित महसूस कर रहे थे। सलामी लेने के बाद लेफ्टिनेंट जनरल अश्विनी कुमार ने कहा कि आज का दिन हम सभी के लिए गौरवशाली है। यह कश्मीर में उग रहे नए सूरज का एलान है। उन्होंने कहा कि जवान अपनी यूनिटों में जाने के बाद हमेशा आम नागरिकों के जान-माल-सम्मान के साथ साथ राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने की सेना की गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाएं।

सारी दुनिया ने भारत को सही बताया : एक अधखुले रेस्तरां में बैठे कश्मीर की सिविल सोसाइटी के कुछ जाने माने चेहरों में शामिल एक वरिष्ठ पत्रकार ने कहा कि अब हमें आगे देखना चाहिए। 70 सालों तक हम पाकिस्तान को अपना हितैषी मानते रहे, लेकिन उसने कभी भी कश्मीर को लेकर अपनी संकल्पबद्धता साबित नहीं की है। आज दुनिया के सभी देश भारत को सही ठहरा रहे हैं। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान कह रहे हैं कि वह कुछ नहीं कर सकते, क्योंकि अब उन्हें डर है कि गुलाम कश्मीर में भी भारत का कब्जा हो जाएगा। हमें हकीकत को समझना चाहिए कि यह बदलाव हमारी बेहतरी के लिए हुआ है।

पाक से आई बंदूकों ने बनाए कब्रिस्तान : कश्मीर की चुनावी सियासत में भाग्य आजमा चुके सलीम मलिक ने बात आगे बढ़ाते हुए कहा कि हमें सोचना चाहिए कि हम ऐसा क्या करें जिससे यहां अमन और तरक्की का माहौल बने। हमें इस्लामाबाद को छोड़ दिल्ली की तरफ देखना चाहिए। इस्लामाबाद से कुछ नहीं मिलने वाला। कारण, कुछ भी रहा हो पाकिस्तान से आई बंदूकों ने न सिर्फ हमारे यहां कब्रिस्तान तैयार किए, बल्कि भाईचारे की तहजीब को भी नुकसान पहुंचाया है।

पाबंदी हटने पर भी सड़कों पर क्यों नहीं उतरे लोग : एक सियासी दल के वरिष्ठ कार्यकर्ता और पूर्व नौकरशाह ने कहा कि अब वक्त दोष मढ़ने का नहीं है। हमें यह देखना चाहिए कि अब हम कश्मीर को कहां लेकर जा सकते हैं। यहां दुकानें बंद हैं, स्कूल बंद हैं, क्या यह लोगों की मर्जी से बंद हैं या डर से। यह समझा जाए। अगर लोगों की मर्जी से बंद होती तो क्यों नहीं पूरा कश्मीर पाबंदियों में राहत मिलने पर भी सड़कों पर नारा नहीं लगा रहा। क्यों लोग यहां मुख्यधारा की राजनीति करने वालों की हिरासत पर खुश हैं।

जस्टिस राकेश प्रकरण सुलझाने को सुप्रीम कोर्ट और पीएमओ सक्रिय

राज्य ब्यूरो, पटना

- पटना हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश और जस्टिस राकेश कुमार पहुंचे दिल्ली
- सोमवार को भी किसी बेंच में नहीं है जस्टिस राकेश कुमार का नाम

पटना हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश अमरेश्वर प्रसाद शाही ने सोमवार को भी जस्टिस राकेश कुमार को काम से अलग रखा है। उनका नाम सोमवार को सुने जाने मामलों की दैनिक सूची से नदारद है। वैसे शनिवार को मुख्य न्यायाधीश शाही और न्यायाधीश राकेश कुमार दिल्ली में थे। चर्चा है कि मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई ने विवाद सुलझाने के लिए दोनों को बुलाया है। वहीं, प्रधानमंत्री कार्यालय ने जस्टिस राकेश कुमार और स्पेशल कोर्ट का फैसला मंगा लिया है।

बुधवार को पटना हाई कोर्ट के जस्टिस राकेश कुमार ने न्यायपालिका पर तल्ख टिप्पणी की थी। उन्होंने एक मामले की सुनवाई के दौरान कहा था-'भ्रष्टाचारियों को न्यायपालिका से भी संरक्षण मिलता है।' उन्होंने यह भी कहा था कि 'जबसे न्यायाधीश पद की शपथ ली है, तब से देख रहा हूं कि सीनियर जज भी मुख्य न्यायाधीश के आगे पीछे घूमते हैं। ताकि उनसे 'फेवर' लिया जा सके।'

उनकी इस टिप्पणी पर गुरुवार को पटना हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश ने कहा था, 'ऐसा लगता है कि पूरे देश में वही सबसे ईमानदार जज हैं। संभव है कि वह व्यक्तिगत कारणों से क्षुब्ध हों, जिस कारण उन्होंने पूरी न्यायपालिका की गरिमा पर सवाल खड़ा कर दिया।' इसके बाद पटना हाई कोर्ट की 11 न्यायाधीशों की एक बड़ी बेंच ने जस्टिस कुमार के कृत्य की भर्त्सना करते हुए उनके आदेश को निलंबित कर दिया था। इसके बाद जस्टिस राकेश कुमार ने कहा था कि वह अपने रुख पर कायम हैं और वह भ्रष्टाचार से समझौता नहीं कर सकते। उसी समय से उन्हें किसी एकल या डबल बेंच में शामिल नहीं किया जा रहा है।

छोड़िए दोषारोपण कीजिए सुपोषण

देश में कुपोषण की गंभीर स्थिति को बताने के लिए आंकड़ों की कमी नहीं है। बुलंद भारत की इस बदरंग तस्वीर की कई वजहें हैं। इनमें सबसे बड़ी वजह लोगों का पौष्टिक खुराक न लेना है। सुविधा संपन्न और वंचित तबकों को समान रूप से यह वजह प्रभावित कर रही है। अधिकांश लोग भूख शांत करने के नाम पर पेट भरने के लिए कुछ भी खा लेते हैं, उन्हें पता ही नहीं कि वह भोजन उनकी शारीरिक और मानसिक जरूरतों को पूरा करने में कितना सक्षम है। हमारे पुरखों को देखिए- सर्दी, गर्मी, बरसात हाड़ तोड़ मेहनत करते थे, बीमार भी नहीं पड़ते थे, बदले में खाने के लिए कोदो, सांवा, चना, ज्वार, बाजरा और मक्का जैसे मोटे अनाज मिलते थे। इनका सेवन करना उनकी विवशता थी, विकल्प के रूप में कुछ होता नहीं था। ऐसी मौसमी सब्जियां उनकी खुराक का हिस्सा होती थीं जो बिना उपक्रम उग आती थीं। लता वाली फलियां, फल, कंदमूल जैसे आहार विवशता में ही सही, वे पौष्टिक खुराक ले रहे थे। लिहाजा उन्हें विटामिन सप्लीमेंट्स की जरूरत नहीं पड़ती थी। आज बाजार में मोटे अनाजों के पैकेट मिलने लगे हैं। किसान इन्हें उगाना बंद कर चुके हैं क्योंकि कम पैदावार और कम न्यूनतम समर्थन मूल्य से नकदी फसलें ज्यादा मुफीद साबित हो रही हैं। जो वंचित तबका है, वह सुपोषित भोजन के प्रति जागरूक नहीं है, और उसे ये सब हासिल भी नहीं है। देश के हर नागरिक को स्वस्थ और पोषित रखना सरकार का कर्तव्य है, लेकिन कुछ हमारी भी जिम्मेदारी है कि हम खुद को सुपोषित रखें। लिहाजा संसाधनों और तमाम चीजों की कमी का रोना छोड़ हम अपनी खुराक में उन चीजों को ज्यादा से ज्यादा शामिल करें, जो स्थानीय स्तर पर सुलभ हैं, सस्ती और पौष्टिकता से भरपूर हैं। तमाम महंगी चीजों में मिलने वाले पोषक तत्वों के सस्ते और सुलभ विकल्प हमारे आसपास मौजूद हैं। सितंबर से केंद्र सरकार कुपोषण के खिलाफ देशव्यापी मुहिम चलाने जा रही है। खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मोटे अनाज के सेवन की विरत होती प्रवृत्ति पर चिंता जाहिर की है। आइए हम खुद को सुपोषित रखकर सरकार के इस महती अभियान के भागीदार बनें। तो छोड़िए दोषारोपण, कीजिए सुपोषण।

आज हम देखते हैं कि जिस भोजन को हमने छोड़ दिया, उसको दुनिया ने अपनाना शुरू कर दिया। जौ, ज्वार, रागी, कोदो, सावां और बाजरा जैसे अनेक अनाज कभी हमारे खान-पान का हिस्सा हुआ करते थे, लेकिन ये हमारी थालियों से गायब हो गए। अब इस पोषक आहार की पूरी दुनिया में मांग है

शुक्रवार, 30 अगस्त को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का ट्वीट

आहार की गुणवत्ता में किया जाए सुधार

पूर्णिमा मेनन
सीनियर रिसर्च फेलो, इंटरनेशनल फूड पॉलिसी रिसर्च इंस्टीट्यूट

जब तक हम भारतीय समाज में महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव को खत्म नहीं करेंगे और सभी के पौष्टिक खुराक की चिंता नहीं करेंगे, कुपोषण का दानव हमें मुंह चिढ़ाता रहेगा।

कुपोषण के कई रूप हैं, जैसे बच्चों का नाटा रह जाना, कम वजन, एनीमिया प्रमुख हैं। इनमें से कुछ में समय के साथ सुधार हुआ है। ओडिशा, छत्तीसगढ़ जैसे गरीब राज्यों में भी सुधार देखा गया। यह किसी विडंबना से कम नहीं है कि कुपोषण के साथ भारत अधिक वजन, मधुमेह और उच्च रक्तचाप जैसी नई चुनौतियों का भी सामना कर रहा है, जिसे पोषण संबंधी गैर-संचारी रोग भी कहा जाता है। हर पांच में से एक महिला और हर सात में से एक भारतीय पुरुष आज बढ़ते वजन से पीड़ित हैं। शहरी क्षेत्र में दिनोंदिन यह प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है।

मातृ एवं शिशु अल्पपोषण, बच्चों और व्यस्कों का बढ़ता वजन और गैर-संचारी रोग मिलकर भारत के विकास को प्रभावित करते हैं। साथ ही मातृ एवं शिशु मृत्यु दर, स्कूल प्रदर्शन को प्रभावित करने के साथ ही आर्थिक लागत में भी इजाफा करते हैं। कुल मिलाकर, भारत में कुपोषण का बोझ एक ऐसी चुनौती है, जिससे सभी को चिंतित होना चाहिए। भले ही भारत में चल रहे कार्यक्रम और राजनीतिक नेतृत्व पोषण एजेंडे को आगे बढ़ाने का एक सक्षम माध्यम बने हुए हों, लेकिन दो उपेक्षित चीजों पर बिना ध्यान दिए कुपोषण के सभी रूपों से छुटकारा नहीं मिल सकता है। पहली भारतीय समाज में लड़कियों और महिलाओं की स्थिति और दूसरी देश भर में आहार की गुणवत्ता।

लैंगिक मसले पर तीस वर्षों से शोधकर्ता कह रहे हैं कि महिलाओं के खिलाफ भेदभाव, शिक्षा की कम पहुंच, कम उम्र में शादी, स्वास्थ्य सेवाओं की कम पहुंच के साथ अन्य चीजें भारत में कुपोषण को बढ़ावा दे रही हैं। कुपोषण से निपटने के लिए हम अभी भी आइसीडीएस और स्वास्थ्य प्रणाली पर ध्यान ज्यादा केंद्रित करते हैं, लैंगिक संबंधी चुनौतियों को नजर अंदाज कर रहे हैं। भारत की महिलाएं कुपोषित हैं। कुछ का वजन कम है और कुछ में खून की कमी है। और अन्य अधिक वजन वाली हैं। दूसरा, कम उम्र और खून की कमी से पीड़ित महिलाओं से पैदा होने वाली संतान के कुपोषित होने की संभावनाएं अधिक होती हैं। भारत में बहुत सी महिलाओं के बच्चे तब होते हैं जब वे किशोर अवस्था में होती हैं। इस पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। इससे भी बुरी बात यह है कि कुपोषित बच्चे बड़े होकर मधुमेह और उच्च रक्तचाप जैसी बीमारियों से पीड़ित होते हैं, जिससे मृत्यु की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। कुल मिलाकर ध्यान न देने के कारण भारत की लड़कियों और महिलाओं के स्वास्थ्य पर और समाज के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

दूसरी चीज के तहत, केंद्र और राज्य को आहार की गुणवत्ता और भोजन के स्वस्थ पैटर्न पर बहुत जोर देने की आवश्यकता है। चाहे वह अल्पपोषण हो या एनीमिया या अधिक वजन और मोटापा, भारत की आबादी द्वारा ग्रहण किए जाने वाले भोजन की गुणवत्ता और विविधता पर ध्यान देने की आवश्यकता है। आहार की गुणवत्ता को किसी भी व्यक्ति के जीवन में भोजन के सभी स्रोतों के संदर्भ में देखना जरूरी है। चाहे वह सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत दिया जा भोजन हो, मिड-डे मील के तहत उपलब्ध कराया जा रहा भोजन हो, आइसीडीएस या देश के बाजारों में उपलब्ध खाद्य पदार्थ हो, वर्तमान चुनौती उच्च अनाज और कम प्रोटीन वाले खाद्य पदार्थों की है। पीडीएस ज्यादातर चावल, गेहूं, तेल और चीनी की आपूर्ति करता है; आइसीडीएस खाद्य पदार्थों में भी अनाज की मात्रा अधिक होती है और चीनी के तत्व भी शामिल होते हैं। शोध बताते हैं कि भले ही स्वस्थ खाद्य पदार्थ जैसे अंडा, डेयरी, फल, सब्जियां और दालें बाजारों में उपलब्ध हों, लेकिन उनकी लागत अधिकांश लोगों की पहुंच से दूर है। भारत के बाजारों में डिब्बाबंद खाद्य पदार्थों की बढ़ती उपलब्धता और प्रचार-प्रसार भी भारत में आहार की खराब गुणवत्ता में योगदान कर रहा है। भारत में कुपोषण को खत्म करने के लिए सरकार, कृषि और खाद्य प्रणाली के लिए एक बड़ी चुनौती उत्पादन, उपलब्धता और पहुंच में सुधार करने की है। आहार की गुणवत्ता में सुधार से मातृ और बाल कुपोषण में सुधार के साथ-साथ गैर-संचारी रोगों से छुटकारा मिलेगा।

मोटा अनाज खाओ प्रभु के गुण गाओ

कभी हमारे आहार का जरूरी हिस्सा रहे मोटे अनाज आज उपेक्षित हैं। औसतन अन्य अनाजों की तुलना में ज्यादा पौष्टिक इन मोटे अनाजों के सेवन से हम अपना और अपनों का सुपोषण सुनिश्चित कर सकते हैं।

मोटा अनाज

घास कुल (ग्रैमिनी) के पौधे जिनको उनके बीज के लिए उगाया जाता है। अनाज कहलाते हैं। एक परिपक्व अनाज के दाने के तीन भाग होते हैं। भ्रूण या जर्म, स्टार्च युक्त इंडोस्पर्म और पेरी कार्प या वाह्य आवरण। कुछ अनाज के दानों की वाह्य झिल्ली रेशेदार छिलकों से कसी होती है, जिनको मंड़ाई से भी सामान्यत: नहीं निकाला जा सकता है। इन अनाजों को मोटा अनाज कहते हैं। जैसे चना, ज्वार, बाजरा, मक्का, कोदो, मडुवा, सांवा, रागी, कुटकी, कंगनी आदि।

जरूरत है बड़ी

महंगाई के दौर में गरीबों को पेट भरने के लिए पौष्टिक भोजन के रूप में मोटे अनाजों की आपूर्ति। गौरतलब है कि 26 सबसे गरीब अफ्रीकी देशों से भी ज्यादा गरीब लोग केवल आठ भारतीय राज्यों (बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल) में रहते हैं। 26 दक्षिण अफ्रीकी देशों में कुल गरीबों की संख्या 41 करोड़ है जबकि केवल इन आठ भारतीय प्रदेशों में 42.1 करोड़ गरीब आबादी निवास कर रही है।

प्रमुख पैदावार क्षेत्र : कर्नाटक, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात और उत्तर प्रदेश

गुणों का गुणक

- मोटे अनाज में पल्प अधिक होता है। यह आंतों में चिपकने की बजाय आसानी से आगे बढ़ता है। इससे पेट पर कब्ज का कब्जा नहीं हो पाता।
- मोटा अनाज सुपाच्य है। हाजमा ठीक रखता है। मोटापे को हावी नहीं होने देता। तासीर के अनुसार भी सेवन किया जा सकता है।
- पहले माताएं शिशुओं को ज्वार और मक्के के आटे का घोल पिलाती थीं। यह उनके लिए सुपोषक होता था।

महात्म्य

देहाती भोजन समझकर जिन मोटे अनाजों को रसोई से बाहर किया जा चुका है, अब वैज्ञानिक शोध से बार-बार उनकी पौष्टिकता प्रमाणित हो रही है। भारतीय खाद्य एवं चारा विभाग की फसल विज्ञानी डा. उमा रघुनाथन के मुताबिक धान और गेहूं की अपेक्षा सावां, कोदो जैसे मोटे अनाजों की पौष्टिकता अधिक है। इस संबंध में डा. उमा का भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की पत्रिका में शोधपत्र प्रकाशित हो चुका है।

होता रहा है इस पौष्टिक अनाज के साथ भेदभाव

आजादी के बाद बदली कृषि-नीति ने भारतीयों को गेहूं और चावल जैसी फसलों पर निर्भर बना दिया। बाजारीकरण के बढ़ते प्रभाव से लोगों का मोटे अनाजों से मोहभंग होता चला गया। हरित क्रांति के दौर में जिस एकफसली खेती को बढ़ावा मिला उनमें धान और गेहूं को केंद्रीय भूमिका मिली। लिहाजा कुल कृषि योग्य भूमि में मोटे अनाजों की पैदावार कम होती गई। 1966 से 2006 के पिछले चार दशकों में चावल का उत्पादन 3.8 करोड़ से बढ़कर 8.6 करोड़ टन और गेहूं का उत्पादन 1.5 करोड़ टन से बढ़कर सात करोड़ टन हो गया जबकि मोटे अनाजों का उत्पादन 1.85 करोड़ टन से घटकर 1.8 करोड़ टन रह गया।

खूबियां

- इन फसलों के उत्पादन को बढ़ावा देकर जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा संकट, गिरता भू-जल स्तर, स्वास्थ्य और खाद्यान्न संकट जैसी समस्याओं पर काबू पाया जा सकता है।
- इन फसलों को पानी, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों की कम जरूरत पड़ती है जिससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति और भू-जल स्तर पर विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता।
- लागत कम आती है, सूखा प्रतिरोधी होने के साथ साथ इनको कम उपजाऊ भूमि पर भी उगाया जा सकता है।

इनको भी परखें

जई : आसानी से पचने वाले फाइबर और कॉम्पलेक्स कार्बोहाइडेट्स का अच्छा स्रोत।
- लो सैच्यूरेटेड फैट के साथ लेने पर हृदय संबंधी बीमारियों के खतरे को कम करता है।
- यह एलडीएल (लो डेसिंटी लिपोप्रोटीन) की क्लियरेंस बढ़ाता है।
- इसमें मौजूद फोलिक एसिड बढ़ती उम्र वाले बच्चों के लिए बहुत उपयोगी होता है। यह एंटीकैंसर भी होता है।
- कैल्शियम, जिंक, मैग्नीज, लोहा और विटामिन-बी व ई भरपूर मात्रा में होते हैं।
- डिसलिपिडेमिया और डायबिटीज पीड़ितों के लिए फायदेमंद।

जौ : इस अनाज में सबसे ज्यादा अल्कोहल पाया जाता है।
- यह पच जाने वाले फाइबर का भी अच्छा स्रोत है।
- यह ब्लड कोलेस्ट्रोल को कम करके ब्लड ग्लूकोज को बढ़ाता है।
- मैग्नीशियम का भी अच्छा स्रोत और एंटीऑक्सीडेंट है।
- अल्कोहल की प्रचुर मात्रा से यह मूत्रवर्धक का काम करता है। जिससे हाइपरटेंशन से पीड़ितों के लिए फायदेमंद।

बाजरा : प्रोटीन का भंडार है। बाजरे में मैथाइन, ट्राइप्टोफान और इनलिसाइन बड़ी मात्रा में पाया जाता है।
- यह थायमीन अथवा विटामिन-बी का अच्छा स्रोत है और आयरन तथा कैल्शियम का भी भंडार है।

ज्वार : यह भी एक तरह से जाड़ों में पसंद किया जाने वाला अनाज है। इसमें बहुत कम वसा होती है और ये कार्बोहाइड्रेट का जबरदस्त भंडार है
- इसमें भी आयरन, कैल्शियम का उपयोगी भंडार होता है।

रागी : कैल्शियम का जबरदस्त स्रोत, इसलिए ऑस्टेपेनिया और ऑस्टेपोरेसिस से ग्रस्त लोगों के लिए फायदेमंद।
- यह मेनोपॉज के बाद महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए भी उपयोगी
- लेक्टोज की समस्या से पीड़ितों के लिए लाभकारी। इसीलिए रागी का प्रयोग छोटे बच्चों के भोजन में भी होता है।

ये हालात तो कैसे बने बात (खाद्य पदार्थों की आपूर्ति) *स्रोत : एफएओ*

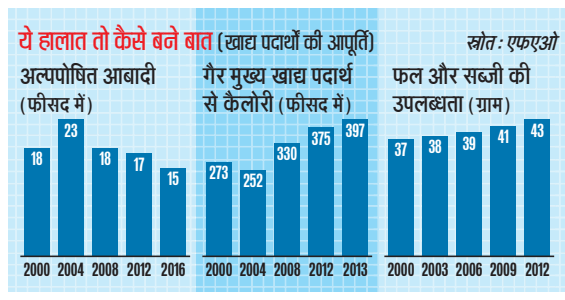

संतुलित कृषि क्रांति की दरकार

आज एक ऐसी सदाबहार हरित क्रांति की आवश्यकता है, जो बीजों एवं फसलो की विविधता बनाये रखते हुए पर्यावरणीय विशिष्टताओं के अनुरूप हो एवं सतत पौष्टिक आहार उपलब्ध करा सके।

प्रो कामेश्वर नाथ सिंह, कुलपति-उप्र राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक की पूर्णता की ओर अग्रसर मानव समुदाय विविध तकनीकी कारणों से बहुआयामी समस्याओं से जूझ रहा है। असंतुलित आहार एवं कुपोषण जैसी चुनौतियां उनमें से एक है, जो प्रकारांतर से अंधाधुंध अपनाई जाने वाली तकनीकी कारणों का प्रतिफल हैं।

एक क्षेत्र की संरचना, मिट्टी, जलसंसाधन एवं वानस्पतिक तथा प्राणि जगत दूसरे क्षेत्र से सर्वथा भिन्न है। इस विविधता एवं भिन्नता के अनुरूप अलग-अलग फसलों का उत्पादन नैसर्गिक प्रक्रिया है, जो हजारों वर्षो के बाद बीजों की विविधता के रूप में विकसित हुई। भौगोलिक विशिष्टता एवं विविधता के अनुरूप विकसित ये बीज अनेकानेक पोषण तत्वों यथा लौह तत्व, मैगनीज,फॉस्फोरस, प्रोटीन आदि तत्वों से भरपूर होते थे, परंतु कृषि क्रांति ने परंपरागत पोषण से पुष्ट फसलों यथा सांवा, कोदो, मडुवा, टांगुन, दलहन, तिलहन आदि को लील लिया। आज पूरा चिकित्सा जगत परंपरागत 'मोटे अनाज' कहे जाने वाले खाद्यान्नों को खाने का सुझाव दे रहा है, जो हमारी प्रचलित कृषि व्यवस्था पर सोचने के लिए वैकल्पिक कृषि हेतु नियोजकों एवं नीति निर्धारकों को ध्यानाकर्षित कर रहा है। हरित क्रांति से पूर्व ग्रामीण क्षेत्रों में बीजों की एवं फसलों की इतनी विविधता थी, कि हर खेत की प्रकृति के अनुसार अलग-अलग बीजों एवं फसलों का चयन किया जाता था, जो मानसूनी लीला, अतिवृष्टि एवं अनावृष्टि को सहन करते हुए पर्याप्त उत्पादन देते थे। धान की बीजों की इतनी विविधता थी, कि यदि हर किस्म के धान के एक-एक टुकड़े को घड़े में रखा जाय तो वह घड़ा भर जाता था। कुछ खेतों का नामकरण तो उन विशिष्ट फसलों के आधार पर होता था। हरित क्रांति के आगमन के थोड़े ही समय में सिंचाई, कीटनाशक, संकरबीज एवं रसायनिक उर्वरकों के प्रयोग को बढ़ाकर गेहूं एवं धान जैसी फसलों का उत्पादन तो बढ़ गया, जो तत्कालीन जनसंख्या विस्फोट के परिणाम स्वरूप बढ़ती जनसंख्या के जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक था, परंतु बिना क्षेत्रीय भौगोलिक विविधताओं एवं विशिष्टताओं का विचार किये, इस अस्वाभाविक क्रांति के चलते भूमि की नैसर्गिक उर्वराशक्ति में ह्रास, भूगर्भिक जल सिकुड़न एवं असंतुलन, बीज विविधता का विलोपन, खाद्य पदार्थों की विषाक्तता जैसी समस्याएं मुखरित हुई, जो अब इस प्रचलित कृषि पद्धति की निरंतरता के आगे एक प्रश्न वाचक चिह्न हैं। फसलों की विविधता समाप्त होने के कारण सम्प्रति कृषि कुछ ही गिनी चुनी फसलों पर आश्रित होती जा रही है, जो मिट्टी के पारिस्थितिकीय संतुलन के लिए संकट होने के साथ-साथ पौष्टिक एवं संतुलित आहार की उपलब्धता के लिए भी संकट है। इस समसामयिक संकट से उबरने के लिए नियोजकों एवं नीति निर्धारकों से प्रचलित कृषि व्यवस्था पर ध्यान अपेक्षित है, जिससे वैकल्पिक कृषि का मार्ग प्रशस्त हो सके।

सामान्य गेहूं में जहां अल्प अवधि में घुन लग जाता है वहीं मडुआ का दाना दो दशक तक ज्यों का त्यों बना रहता है।

23%
काबुली चने में प्रोटीन

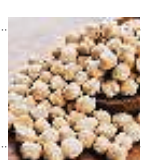

81%
100 ग्राम चावल की तुलना में कंगनी अधिक पौष्टिक

जनमत

हां 92% 08% नहीं

क्या गुणवत्ता से भरपूर मोटे अनाजों के प्रति हमारी नकारात्मक और अज्ञान सोच ने देश को सुपोषण से वंचित रखा है?

हां 88% 12% नहीं

क्या कुपोषित आबादी को विटामिंस सप्लीमेंट देने की जगह पौष्टिक खुराक मुहैया कराना सरकार का ज्यादा कारगर कदम होगा?

आपकी आवाज

हमारे देश के मोटे अनाज भी गरीबी - अमीरी के भेद का शिकार हुए हैं। जबकि वक्त के साथ अगर मोटे अनाजों को स्वाद और नये-नये व्यंजनों से जोड़ा जाता तो विटामिन सप्लीमेंट्स लेने की जरूरत न पड़ती और आपूर्ति होने पर इनका कृषि उत्पाद भी अधिक होता। अभी भी प्रचार प्रसार और संरक्षण से यह खाने के मेन्यू में प्रथम पसंद बन सकते हैं। **अमन कुमार रुड़की**

आधुनिकता के इस दौर में हम मोटे अनाज को बिल्कुल ही नजरअंदाज कर चुके हैं। मोटे अनाज गेहूं और चावल की अपेक्षा अधिक पोषणयुक्त होते हैं। इनपर जलवायु परिवर्तन का भी कम असर होता है। **प्रसुन दुबे**

दरअसल इंसान बड़ा विचित्र जीव है। जब उसके पास जो चीज अधिक मात्रा में होती है तो उसकी बेकद्री करना शुरू कर देता है। मोटे अनाजों के साथ यही हुआ। आज अगर हम अपने खुराक में इन अनाजों को शामिल कर लें, तो हर महीने दवाओं के मद में भारी व्यय न करना पड़े। **रिंकू सिंह**

पौष्टिकता बने पहली प्राथमिकता

देश में आजादी के बाद से ही सरकारों का ध्यान लोगों की खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करना रहा है। सुपोषण सरकारों की प्राथमिकता के केंद्र में जगह नहीं बना पाया।

रीतिका खेड़ा, अर्थशास्त्री और समाज विज्ञानी, भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद

आजादी के सत्तर साल बाद आज अगर देश के लोगों की खाद्य सुरक्षा और पोषण सुनिश्चित करने को लेकर देशव्यापी अभियान चलाने की जरूरत पड़ रही है तो जाहिर तौर पर कई सवाल लोगों के दिमाग में घूम रहे होंगे। आखिर किसी विकासशील देश में पोषण की इतनी अहमियत क्यों है? और इतने सालों के दौरान हम इसे कर क्यों नहीं पाए।

पूरी दुनिया में खाद्य सुरक्षा, पोषण और स्वास्थ्य के लिए सरकारें कार्यरत हैं। अमेरिका दुनिया के सबसे सक्षम देशों में से है, फिर भी वहां 'फूड स्टैंप्स' की योजना चल रही है। जापान, स्वीडन जैसे विकसित देशों में स्कूलों में मध्यान्ह भोजन का कार्यक्रम भी चलता है। अतः इस तरह की योजनाओं का चलना, केवल हमारी विफलता की निशानी नहीं है, यह सरकार की जिम्मेदारी है, और लोगों का हक है। जब तक दोनों- लोग और सरकारें- रहेंगे, तब तक ऐसे कार्यक्रम चलते रहेंगे।

इसका अर्थ यह नहीं कि हमें जो कुछ करना चाहिए था, किया। भारत में कुपोषण की समस्या इतनी बड़ी है, कि इससे निपटना आसान नहीं। आज लगभग हर तीसरा बच्चा कुपोषित है और महिलाओं में खून की कमी (एनीमिया) अभी भी 40 फीसद के आसपास है।

दरअसल भारत में पिछले 70 साल में पोषण पर जरूरत से काफी कम खर्च किया गया है। जो खर्च हुआ, उसका जोर खाद्य सुरक्षा पर रहा। जन वितरण प्रणाली में ज्यादातर राज्यों में केवल गेहूं या चावल ही दिया जाता है, जिससे ज्यादा से ज्यादा खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है। पोषण सुरक्षा प्राथमिकता नहीं बन सकी।

सरकारी नीतियों में जिस पर जोर देना चाहिए था उसमें मां के स्वास्थ्य, छोटे बच्चों के पोषण और संबंधित जरूरतें जैसे मसले शामिल हैं। कुपोषण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चलता है। मां के कुपोषित होने से बच्चे कुपोषित पैदा होंगे। साथ ही, कुपोषण के लिए मां के गर्भ से लेकर बच्चे के जीवन के पहले 1000 दिन सबसे अहम होते हैं। राष्ट्रीय स्तर पर कुपोषण से लड़ने में छोटे बच्चों और माओं पर ध्यान दिए जाने वाली समझ व्यापक रूप से हमारी नीतियों में पिछले 15 साल से ही दिखने लगी है। हालांकि कई मसलों पर अभी ध्यान देने की जरूरत है। जैसे पहले 6 महीनों में केवल स्तनपान सुनिश्चित कराना।

छोटे बच्चों पर केंद्रित मुख्य योजना है, समेकित बाल विकास योजना, जिसकी सेवायें आंगनवाड़ी द्वारा पहुचायी जाती हैं। आंगनवाड़ियां कुपोषण पर सीधा वार करने में सबसे असरदार योजना हो सकती है। उनकी स्थिति में भी बहुत सुधार आया है। जहां रोज खाना मिलना तो दूर, गांव की आंगनवाड़ी कहाँ है लोग यह भी नहीं जानते थे, आज कई राज्यों की आंगनवाड़ियां प्री-प्राइमरी स्कूल बनने की कोशिश में हैं। दक्षिण के राज्य पहले से ही सक्रिय थे, अब ओडिशा, छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में भी छोटे बच्चों पर खर्च बढ़ाया गया है। इन राज्यों में अंडा, दूध, चिकी इत्यादि पौष्टिक आहार देने की पहल हुई है।

पिछले दो दशक में जो सुधार आया है, वह राज्यों की मुहिम रही है। केंद्र से अभी भी समर्थन की कमी है। चाहे वह धनराशि की रूप में हो या योजना में लचीलेपन की। एक खतरा यह है कि मां-बच्चे के नाम पर जो खर्च हो रहा है वह उन पर कम, निजी कंपनियों की जेब में जाएगा। संप्रग-एक सरकार के समय से कंपनियों की कोशिश रही है कि गर्म खाने की बजाय प्री-पैक्ड खाना दिया जाए। केंद्र सरकार पोषण अभियान चला रही है जिसमें खर्च और ध्यान स्मार्टफोन और सॉफ्टवेयर द्वारा रिकॉर्ड-कीपिंग पर है। बच्चों पर नहीं। इस प्रवृत्ति को अविलंब समझने-परखने और उजागर करने की जरूरत है ताकि कल्याणकारी योजनाओं के नाम पर हो रहा खर्च जन कल्याण पर केंद्रित रहे, निजी मुनाफे में न व्यय हो जाए।

दैनिक जागरण

कड़ी मेहनत का कोई विकल्प नहीं होता

नागरिकता का सवाल

आखिरकार असम में राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर यानी एनआरसी की अंतिम लिस्ट सामने आ गई। इस लिस्ट के अनुसार 19 लाख से अधिक लोग ऐसे हैं जो अपनी भारतीय नागरिकता साबित नहीं कर पाए हैं। हालांकि यह एक बड़ी संख्या है, लेकिन असम के ही कई नेता यह सवाल कर रहे हैं कि क्या केवल इतने ही लोग बांग्लादेश से घुसपैठ करके आए थे? इसी के साथ ऐसे सवाल भी उठ रहे हैं कि इन 19 लाख लोगों का क्या होगा? यह सवाल इसके बावजूद उठ रहा है कि एनआरसी में नाम न होने वालों को फॉरेनर्स ट्रिब्यूनल में अपील का अधिकार दिया गया है। अपील करने की समय सीमा भी 60 से बढ़ाकर 120 दिन कर दी गई है। इतना ही नहीं, अगर कोई फॉरेनर्स ट्रिब्यूनल के फैसले से संतुष्ट नहीं होता तो उसे अदालत जाने का अधिकार होगा। इसके बावजूद एनआरसी पर संकीर्ण राजनीति शुरू हो गई है। राजनीति करने के लिए इस तथ्य की अनदेखी की जा रही है कि एनआरसी तैयार करने का काम सुप्रीम कोर्ट के आदेश के तहत किया गया है। जो लोग एनआरसी की खामियों के सहारे अपनी राजनीतिक रोटियां सेंक रहे हैं वे वही हैं जो यह समझने को तैयार नहीं कि जहां करोड़ों लोगों की छानबीन होनी हो वहां कुछ गलती रह जाना स्वाभाविक है। उन्हें यह पता होना चाहिए कि गलतियां दूर करने की हरसंभव कोशिश हो रही है।

एनआरसी को लेकर राजनीति का एक मैदान असम के बाहर भी तैयार हो रहा है। कई राज्यों में असम की तर्ज पर एनआरसी की मांग हो रही है। पता नहीं इन मांगों का क्या होगा, लेकिन यह समझना जरूरी है कि भारत कोई धर्मशाला नहीं कि जो चाहे यहां आकर बस जाए। दुर्भाग्य से असम और आसपास के अन्य राज्यों के साथ पश्चिम बंगाल में ऐसा ही हुआ। इन राज्यों में कई इलाके ऐसे हैं जहां बांग्लादेशी लोगों के आधिक्य के कारण सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक माहौल बदल चुका है। असम में एनआरसी तैयार करने का एक बड़ा आधार यही था कि राज्य की सांस्कृतिक विरासत के साथ-साथ यहां के मूल निवासियों की पहचान के लिए खतरा पैदा हो गया था। विडंबना यह है कि कई राजनीतिक दल इस खतरे की अनदेखी करने की वकालत कर रहे हैं। यह ठीक नहीं। आज जब हर देश अपने और विदेशी नागरिकों की पहचान सुनिश्चित कर रहा है तब भारत को भी यह तय करना चाहिए कि देश में रहने वाला कौन भारतीय है और कौन नहीं? चूंकि यह पहचान तय करना वक्त की मांग है इसलिए एनआरसी का काम उदाहरण पेश करने वाला होना चाहिए। इससे ही एनआरसी पर हो रही राजनीति थमेगी।

मॉब लिंचिंग पर कानून

बंगाल में अब मॉब लिंचिंग में किसी की मौत होने पर दोषी पाए जाने वाले लोगों को फांसी तक की सजा हो सकती है, क्योंकि शुक्रवार को विधानसभा में बंगाल सरकार ने मॉब लिंचिंग रोकने के लिए सर्वसम्मति से बिल पारित करा लिया है। इस नए कानून में मॉब लिंचिंग में शामिल लोगों को तीन वर्ष से लेकर सश्रम उम्रकैद और यहां तक कि फांसी की सजा भी हो सकती है। मॉब लिंचिंग के खिलाफ कानून बनाने वाला बंगाल राजस्थान व मणिपुर के बाद देश का तीसरा राज्य बन गया है। बिल जब विधानसभा में पारित किया जा रहा था तो मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के निर्देशानुसार यह कानून बनाकर बंगाल ने एक बार फिर देश को राह दिखाई है। केंद्र सरकार को भी जल्द इस बाबत कानून बनाना चाहिए। बंगाल विधानसभा में पारित हुए बिल का विपक्षी दलों कांग्रेस व वाममोर्चा ने भी समर्थन किया। भाजपा का मानना है कि कानून अच्छा है, लेकिन सत्ता पक्ष इसका राजनीतिक दुरुपयोग कर सकता है। कानून के तहत मॉब लिंचिंग की साजिश रचने वालों के साथ वे लोग भी सजा के हकदार होंगे, जो हिंसक भीड़ का हिस्सा होंगे। नए कानून के मुताबिक धर्म, जाति, लिंग, जन्म स्थान, भाषा, आहार, व्यवहार, जातीयता या किसी अन्य आधार पर भीड़ द्वारा की गई हिंसा मॉब लिंचिंग मानी जाएगी।

बिल पर चर्चा के दौरान मुख्यमंत्री ने मॉब लिंचिंग को सामाजिक बुराई करार देते हुए इसके खिलाफ एकजुट होने की अपील की। उन्होंने कहा कि उच्चतम न्यायालय ने मॉब लिंचिंग के खिलाफ कार्रवाई करने का निर्देश दिया है। केंद्र सरकार को भी इसके खिलाफ कानून लाना चाहिए। चूंकि केंद्र सरकार ऐसा करने में विफल रही है, लिहाजा हमने राज्य स्तर पर इस सामाजिक बुराई पर लगाम कसने के लिए कानून बनाया है। इस मामले में भी बंगाल ने देश को राह दिखाई है। सदन में मुख्यमंत्री ने स्पष्ट कर दिया कि कानून को हाथ में लेने का अधिकार किसी को नहीं है। यदि कोई शिकायत है तो पुलिस को सूचित किया जाना चाहिए। यहां एक बड़ा सवाल यह है कि क्या इस कानून से मॉब लिंचिंग जैसी जघन्य घटनाएं थम जाएंगी? सिर्फ कानून बनाने से ही स्थिति बदल जाती तो देश में हत्या, दुष्कर्म, चोरी व डकैती की कोई घटना नहीं होती। सिर्फ कानून बनाने से नहीं होगा, लोगों में यह जागरूकता भी लानी होगी कि सभी कानून का सम्मान करें। अगर ऐसा नहीं होगा तो लाख कानून बनेंगे लेकिन घटनाएं नहीं रुकेंगी।

पुलिस सुधारों का समय

संजय गुप्त

पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो के स्थापना दिवस पर अमित शाह ने जो कुछ कहा उससे पुलिस और उसकी कार्यप्रणाली में बदलाव की उम्मीद दिखने लगी है

अवधेश राजपूत

जम्मू-कश्मीर को अनुच्छेद 370 से मुक्त करने का बड़ा काम करने के बाद ऐसा लगता है कि गृहमंत्री अमित शाह ने अपनी निगाह आंतरिक सुरक्षा को मजबूत करने पर लगा दी है। पिछले दिनों पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो के स्थापना दिवस पर मुख्य अतिथि के रूप में उन्होंने जो कुछ कहा उससे पुलिस और उसकी कार्यप्रणाली में बदलाव की एक उम्मीद नजर आने लगी है। इस मौके पर गृहमंत्री ने कहा कि देश को पांच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का प्रधानमंत्री का जो लक्ष्य है उसे पाने के क्रम में आंतरिक सुरक्षा को मजबूत करना आवश्यक है। निःसंदेह जब देश का आम नागरिक अपने को सुरक्षित महसूस करेगा तभी विकास के लिए उपयुक्त माहौल का निर्माण होगा।

भारतीय पुलिस तमाम विषम परिस्थितियों में कार्य करने के लिए विवश है। चूंकि वह कम वेतन, काम के बोझ, समुचित प्रशिक्षण और आधुनिक तकनीक एवं हथियारों की कमी से दो-चार है इसलिए उसकी मुश्किलें बढ़ती जा रही हैं। भारतीय पुलिस की छवि अच्छी नहीं, लेकिन वह जिन हालात में काम करती है वैसे हालात विकासशील देशों में शायद ही कहीं दिखते हों। हालांकि पुलिस सुधार की पहल एक अर्से से हो रही है, लेकिन अभी तक वह सही तरह आगे नहीं बढ़ सकी है। अमित शाह के बयान से यह रेखांकित हो रहा है कि पुलिस सुधार मोदी सरकार के एजेंडे में आ गया है। इसका कारण यह है कि उन्होंने आइपीसी और सीआरपीसी में बदलाव पर जोर देते हुए यह कहा कि भारतीय पुलिस अंग्रेजों के बनाए जिन कानूनों के तहत संचालित है उनका मकसद अपने शासन को बनाए रखना था। आजादी के 70 सालों बाद यह आवश्यक हो जाता है कि आइपीसी और सीआरपीसी के केंद्र में जनता होनी चाहिए, न कि राज्य। बेहतर हो कि पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो आइपीसी और सीआरपीसी में परिवर्तन पर व्यापक विचार-विमर्श की पहल करे और जो उसे जो सुझाव मिलें उनसे गृह मंत्रालय को अवगत कराए।

अमित शाह ने राष्ट्रीय स्तर पर पुलिस विश्वविद्यालय के साथ फोरेंसिक साइंस विश्वविद्यालय बनाने की जो जरूरत जताई वह समय की मांग है। उन्होंने यह सही कहा कि यह थर्ड डिग्री का जमाना नहीं, टेलीफोन टैपिंग से कोई नतीजा नहीं निकलेगा और हमें जांच के लिए आधुनिक तरीके अपनाने होंगे। आज जब दोषियों को सजा दिलाने में फोरेंसिक प्रमाण महत्वपूर्ण साबित हो रहे हैं तब हम इस सच्चाई से मुंह नहीं मोड़ सकते कि गंभीर और बड़े मामलों में सीबीआइ जैसी एजेंसी भी फोरेंसिक सुबूत नहीं जुटा पाती। इसका फायदा अपराध करने वाले उठाते हैं। अमित शाह की प्राथमिकता में जेल विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों का प्रशिक्षण भी है ताकि अपराधियों के जेल से बाहर आने के बाद उन्हें अच्छा नागरिक बनाया जा सके। स्पष्ट है कि इसके लिए जेल मैनुअल को अपग्रेड करना होगा और जेल कर्मचारियों की सोच में बदलाव भी लाना होगा। अभी पुलिस आधुनिकीकरण की प्रक्रिया सात पहलुओं पर काम कर रही है। गृह मंत्री ने ठीक ही कहा कि इन सभी के बीच समन्वय बनाकर ही बेहतर परिणाम हासिल किया जा सकता है। पुलिस आधुनिकीकरण के लिए योजना बनाते समय कम से कम अगले 10 साल का खाका होना चाहिए। गृह मंत्री की इस बात से शायद ही कोई असहमत हो कि पुलिस को आपराधिक सोच वालों से हमेशा चार कदम आगे रहना चाहिए। पूछताछ में भी वैज्ञानिक तरीके का सहारा लिया जाना चाहिए। अपराध के प्रकार और अपराधियों की मानसिकता के अध्ययन के लिए हर राज्य में मोडस ऑपरेंडी ब्यूरो की स्थापना होनी चाहिए। इसी के साथ संघीय पुलिस का ढांचा निर्मित करने की दिशा में भी आगे बढ़ा जाना चाहिए। यह इसलिए आवश्यक है, क्योंकि अक्सर ही विभिन्न राज्यों की पुलिस के बीच तालमेल का अभाव दिखता है। इस अभाव को कई बार राज्यों में सत्तारूढ़ अलग-अलग दल और गंभीर बना देते हैं। कई बार तो वे सीबीआइ के काम में भी अड़ंगा लगाते हैं। बतौर उदाहरण कुछ समय पहले बंगाल सरकार कोलकाता के पुलिस आयुक्त को सीबीआइ की पूछताछ से बचाने के लिए अड़ गई थी। राज्य सरकारें ऐसा इसलिए कर पाती हैं, क्योंकि सीबीआइ दिल्ली पुलिस स्टैबिलशमेंट एक्ट के तहत काम करती है। साफ है कि इस जांच एजेंसी को वास्तविक संघीय स्वरूप देने की आवश्यकता है।

ऐसा नहीं है कि पिछली सरकारों में पुलिस सुधार की बात न की गई हो। इस तरह की बातें हमेशा होती रही हैं। और तो और उच्चतम न्यायालय भी इस दिशा में सक्रिय रहा है। उसने पुलिस सुधार संबंधी सात सूत्रीय दिशा निर्देश दिए थे, लेकिन उनके अमल को लेकर राजनीतिक दलों ने अपेक्षित इच्छाशक्ति नहीं दिखाई। ये दिशानिर्देश उत्तर प्रदेश के पूर्व पुलिस महानिदेशक प्रकाश सिंह की याचिका पर दिए गए थे। इन दिशानिर्देशों के तहत सुरक्षा आयोग का गठन करना और पुलिस कंप्लेंट अथॉरिटी बनाना था। इसके अलावा पुलिस प्रमुख का कम से कम दो साल का कार्यकाल सुनिश्चित करना था। सबसे महत्वपूर्ण दिशानिर्देश अपराध की विवेचना और कानून व्यवस्था के लिए अलग-अलग व्यवस्था लागू करने संबंधी था। ये दिशानिर्देश देते समय सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि पुलिस की जिम्मेदारी केवल कानून के प्रति होनी चाहिए। इससे पहले विधि आयोग, मलिमथ समिति, पद्मनाभैया समिति और राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग भी पुलिस सुधारों को लेकर अपने-अपने सुझाव दे चुके हैं, लेकिन उनकी सिफारिशें ठंडे बस्ते में पड़ी रहीं।

अपने देश में केंद्रीय जांच एजेंसियों के रूप में सीबीआइ और एनआइए ही हैं। जहां सीबीआइ किसी मामले की जांच राज्यों की अनुमति या अदालत के निर्देश पर करती है वहीं एनआइए केवल आतंकी मामलों की जांच करती है। रोजमर्रा के जीवन में आम आदमी का वास्ता जिस पुलिस से पड़ता है उसका नियंत्रण राज्यों के हाथ में है। आम तौर पर पुलिस राज्य सरकारों की कठपुतली की तरह काम करती है। वह कई बार उन गतिविधियों से आंखें मूंद लेती है जिन्हें सत्तारूढ़ दल गंभीर नहीं मानते या फिर जिन पर लगाम लगने से उन्हें अपना वोट बैंक खोने का डर सताता है। पुलिस की कार्यप्रणाली में सुधार के लिए यह आवश्यक है कि वह बेजा राजनीतिक नियंत्रण से मुक्त हो। चूंकि भारतीय पुलिस खुद को आज की जरूरतों के अनुरूप नहीं ढाल सकी है इसलिए वह जनता का भरोसा नहीं हासिल कर पा रही है। कैसी भी परिस्थितियां हों, पुलिस को जनता को अपनी वर्दी का रौब दिखाने से बचना चाहिए, क्योंकि आज भी अधिकांश लोग पुलिस के पास जाने में हिचकिचाते हैं। पुलिस को इस स्थिति को बदलना होगा। जनता को भी यह समझना होगा कि पुलिस को सहयोग देना और उसका आदर करना उसकी जिम्मेदारी है। जहां जनता को इस जिम्मेदारी को पूरा करना चाहिए वहीं पुलिस को भी चाहिए कि वह अपनी छवि बदलने के लिए सक्रिय हो। निःसंदेह छवि आचरण में सुधार से ही बदलेगी।

response@jagran.com

जुगाड़ की जुगाली करने वाले

हास्य-व्यंग्य

ज्ञान चतुर्वेदी

गऊ आदमी किसी के काम को मना नहीं करता, लेकिन करता किसी का नहीं। लोग शिकायत भी नहीं करते कि वह हुआ क्यों नहीं

एक होता है गऊ आदमी। वह होता तो नहीं, पर सब तरफ गऊ कहलाता है। सब उसकी तारीफ करते हैं। कहते हैं कि फलाने साहब बड़े गऊ आदमी हैं। नहीं, वह दूध नहीं देता है। कभी दे भी पाता तो भी किसी को न देता। वह किसी को कुछ भी देने का हिमायती नहीं। उसके पास दूध होता तो वह खुद पी डालता, पर वह दुधारू न होने के बावजूद गऊ है। वैसे उसे गऊ कहना भी अर्धसत्य है। उसमें गऊ नहीं, बछड़ा तत्व प्रबल है। व्यवस्था के थन पर उसकी सतत नजर बनी रहती है। वह हरदम इसी जुगाड़ में रहता है कि व्यवस्था के थन कहां हैं? सभी दुधारू मामलों पर उसकी नजर रहती है। सरकारी दफ्तरों की कायदे से टोह लेता है। जी हुजूरी में अव्वल। लोग मानते हैं कि गऊमाता टाइप आदमी है। बार-बार नमस्कार करता है। जी-जी में लगा रहता है। सब उसकी चुप्पी के कायल हैं। वह गाय बनकर व्यवस्था के थनों के नीचे अपना बर्तन लगाए रहता है।

वह छोटे पद पर है। वह बहुत बड़ी जगह बैठा है। वह कहीं किसी पद पर नहीं। पर वह जहां है, गऊ आदमी के तौर पर मशहूर है। मान लें कि एक बड़ा अधिकारी है और वह गऊ भी है। वह बड़े पद पर है। बड़ी पावर है उसके पास, पर वह किसी के विरुद्ध कुछ नहीं करता। पैने सींग हैं, पर सिर झुकाए रहता है। सब कहते हैं कि गऊ है बेचारा। यह सुनकर कतई बुरा नहीं मानता, बल्कि संतोष महसूस करता है। सब उसे गऊ मानें-यही तो वह चाहता भी है। गऊ होना उसकी रणनीति है। हथियार है। वह गऊ रहकर अपना काम निकालता रहता है। खूब आदर भी है। वैसे भी भारत में गऊ माता की पूजा होती है। आदमी होने के खतरों को भी वह बखूबी समझता है। गऊ टाइप बनने के फायदों से भी बखूबी वाकिफ है। वह जानता है कि समाज गोभक्तों का है। एक बार आप गऊ माता टाइप व्यक्तित्व बना लो तो लोग पूजा न भी करें, मगर डंडा नहीं मारते। गऊ आदमी को पता है कि व्यवस्था की मंडी सांडों के कब्जे में है। इसीलिए वह पता करके रखता है कि स्थानीय समाज के सांड कौन हैं? व्यवस्था के सांडों और उसके बीच एक अलिखित समझौता है। गऊ को नियमित चारा और सानी मिलती रहे, उसे सांडों से एतराज नहीं। वैसे, गऊ आदमी, इस मामले में गऊ से थोड़ा अलग है कि उसकी नजर चारे पर भी है और दूध पर भी। इधर सांडों को भी हर कुर्सी पर ऐसे ही गऊ आदमी चाहिए जो अपना चारा लें और उन्हें व्यवस्था के थन से बराबर दूध निचोड़ने दें। समझौता हो जाता है और बढ़िया चलता भी है।

गऊ आदमी ईश्वर का डर रखता है। सभी का बराबर आदर करता है। किसी को भी किसी काम के लिए मना नहीं करता और बाद में आत्मीय दुख के साथ यह भी बताता है कि काम क्यों नहीं हो पाया? वह हर काम के लिए हां कह देता है। 'हो जाएगा' उसकी स्थाई टेक है। सबको हां बोलता है, करता किसी का काम नहीं। हां, जो चढ़ावा चढ़ा दे, उस पर जरूर कृपा कर देता है। जो न दे उससे भी ऐसी मीठी हां बोलता है कि फाइल में चींटियां चलने लगती हैं। इसी के चलते, काम न होने पर भी लोग उसे कुछ नहीं कह पाते। गऊ आदमी है। आप चिल्ला सकते नहीं। उसे गालियां दो तो स्वयं को ही पाप लगेगा। लोग वहां आ जाएंगे। लानतें देंगे कि आप ऐसे सीधे, गऊ आदमी से कैसी बात कर रहे हो?

गऊ आदमी प्रायः अकेला बैठा दिखेगा, पर वह अकेला नहीं। जुगाली के साथ है। जुगाड़ की जुगाली कर रहा है। बड़ी कुर्सी पर। आपकी फाइल पर। महत्वपूर्ण निर्णयों को रोके हुए। फाइलों पर कुंडली मारे हुए। काम रुका पड़ा है, पर सभी मजबूर हैं। कहते हैं कि फाइल गऊ आदमी के पास अटकी हुई है। एक बार आप गऊ आदमी होने की कला साध लें तो फिर आपसे कोई कुछ नहीं कह पाता। बड़े-बड़े ट्रक, बड़बड़ाते हुए, कच्चे में उतरकर बगल से निकल जाते हैं। क्या करें? सड़क पर कब्जा है गऊ आदमी का। वह सुरक्षित है। जानता है कि बड़ा ही धर्मभीरू सिस्टम है उसके चारों तरफ। गऊ के कब्जे को अब यहां सामाजिक और वैधानिक सी स्वीकृति है।

कृपया हॉर्न न बजाएं। शिकायत न करें। फाइल पर बैठे गऊ आदमी का रोना न रोएं। उसे प्रणाम करें। ऐसों को रिश्वत देना प्रसाद चढ़ाना कहलाता है, व्यवस्था में। प्रसाद की व्यवस्था करें। चढ़ाते रहें। पुण्य कमाते रहें!

response@jagran.com

तथ्य-कथ्य | प्रवासी भारतीय

(आंकड़े लाख में)

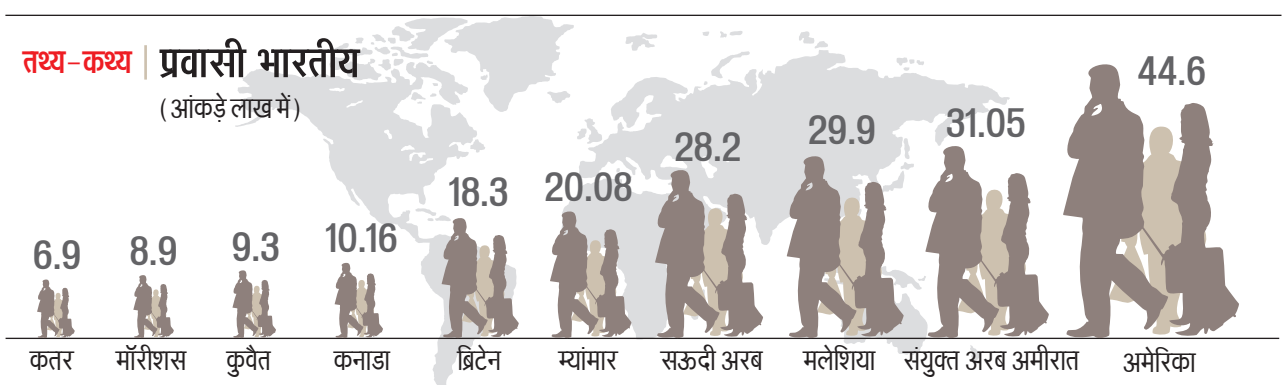

ऊर्जा

समय और भाग्य

'यह समय भी गुजर जाएगा' एकदम सही कहावत है। सुख-दुख दोनों स्थितियों में यह कारगर सिद्ध होती है। सुख में यह सुखी मनुष्य की वर्तमान स्थिति के कारण उस पर अहंकार को हावी होने से बचाती है और दुख में दुखी मनुष्य को भविष्य की संभावनाओं के प्रति संबल देती है, जैसा भी समय है गुजर ही जाएगा। मनुष्य की प्रवृत्ति भी अजीब किस्म की है। सुख के दिनों में वह अपनों को भूल जाता है और दुख के दिनों में उसके अपने उसे भूल जाते है। जब सुख साथ होता है तो वह अपने में ही आनंदित रहकर स्वयं को सीमित कर लेता है। इसके विपरीत दुख के समय में उसकी मदद करने वाले सीमित हो जाते है। दुख से सुख और सुख से दुख की यह यात्रा जीवन भर अनवरत जारी रहती है।

अक्सर मन वांछित लक्ष्य की प्राप्ति न होने पर कहा जाता है कि समय ने साथ न दिया, तात्पर्य यहीं होता है कि अभी स्थितियां विपरीत हैं। आत्मसंतुष्टि के लिए कही जाने वाली यह बात मनुष्य को आशावान बनाए रखती है जिससे वह समय परिवर्तन की आस लिए अपनी मेहनत के प्रति लगनशील बना रहता है। जीवन में मेहनत के साथ-साथ भाग्य भी अपनी भूमिका निभाता है। निःसंदेह मेहनत किसी कार्य की सफलता का पहला आवश्यक तत्व है, किंतु भाग्य का साथ भी उतना ही जरूरी है। प्रायः हम विजय प्राप्त करने के लिए अपनी पूरी ऊर्जा लगा देते हैं, किंतु बहुधा मेहनत से अधिक भाग्य प्रबल साबित होता है। अच्छे समय के साथ अच्छे भाग्य की जरूरत से भी इन्कार नहीं किया जा सकता।

'समय से पहले और भाग्य से ज्यादा किसी को नहीं मिलता' इस कहावत में भी यहीं भाव निहित है। समय अच्छा हो तो मनुष्य को अपने भाग्य पर इठलाना नहीं चाहिए और समय बुरा हो तो मेहनत के बल पर भाग्य के सहारे अपनी स्थिति परिवर्तित करने में कोई कसर शेष नहीं रखनी चाहिए। किसी रात में वह साहस नही कि वह दिन होने से रोक सके। समय में इतनी शक्ति और भाग्य में इतना बल है कि वह किसी का भी कायापलट कर सकते हैं जिसे हम चमत्कार मानने लगते हैं।

सौरभ जैन

कुछ गुत्थी सुलझीं कुछ और उलझीं

मुकुल व्यास

रूपकुंड झील में मानव कंकालों की पड़ताल के दौरान कुछ नए निष्कर्ष सामने आए हैं। इनसे कुछ और सवाल खड़े हो गए हैं

अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिकों के दल ने हिमालय में स्थित रूपकुंड झील के 800 मानव कंकालों के रहस्य को सुलझाने का दावा जरूर किया है, लेकिन उनके निष्कर्षों ने उत्तराखंड की इस बर्फीली झील में बिखरे हुए कंकालों के बारे में कुछ नए सवाल खड़े कर दिए हैं। 2000 के दशक में किए गए डीएनए अध्ययन में अनुमान लगाया गया था कि रूपकुंड के किनारे मरने वाले लोग दक्षिण एशिया के रहने वाले थे और ये सभी लोग एक हजार वर्ष पहले एक ही घटना में मारे गए थे, लेकिन अब अस्थि-अवशेषों के 38 नमूनों के संपूर्ण जीनसमूह के डीएनए विश्लेषण ने वैज्ञानिकों के पुराने निष्कर्षों को एकदम पलट दिया है।

नए निष्कर्षों से पता चलता है कि रूपकुंड के पहले समूह में दक्षिण एशियाई मूल के 23 लोग थे, लेकिन इनकी मृत्यु सातवीं और दसवीं शताब्दी के बीच किसी एक या विभिन्न घटनाओं में हुई थी। ये दक्षिण एशियाई लोग संभवतः भारतीय रहे होंगे। इनके अलावा इन कंकालों में 14 लोगों का दूसरा समूह शामिल है जिनकी मृत्यु एक हजार वर्ष बाद किसी एक ही घटना में हुई थी। अध्ययन में चौंकाने वाली बात यह थी कि इस समूह का आनुवंशिक संबंध दक्षिण एशियाई लोगों से नहीं था। ये पूर्वी भूमध्यसागरीय देशों से आए थे। शायद वे ग्रीस के थे। भूमध्यसागरीय समूह के साथ एक और व्यक्ति की मृत्यु हुई थी, लेकिन वह दक्षिण पूर्वी एशिया का निवासी था। इन लोगों का एक-दूसरे से कोई संबंध नहीं था। अतिरिक्त आइसोटोपिक अध्ययन से पता चला कि भूमध्यसागरीय और दक्षिण एशियाई लोगों का खानपान एकदम अलग था। सबसे बड़ा सवाल यह है कि भूमध्यसागरीय लोग रूपकुंड क्यों गए और उनकी मृत्यु कैसे हुई? शोधकर्ताओं के पास इसका कोई जवाब नहीं है।

लखनऊ स्थित बीरबल साहनी पुराविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक और इस अध्ययन के सह-लेखक नीरज राय का कहना है कि हमने रूपकुंड में मिले कंकालों के सभी आनुवंशिक रिश्तों का उत्तर देने का प्रयास किया है, लेकिन हम यह उत्तर नहीं खोज पाए कि भूमध्यसागरीय लोग झील तक क्यों आए। शोधकर्ता यह जानने की कोशिश में हैं कि रूपकुंड में पहुंचने वाले लोग कौन थे और उनकी मृत्यु कब हुई। मृत्यु का कारण भी स्पष्ट नहीं हो पाया। उनका युद्ध में मरना संभव नहीं लगता, क्योंकि रूपकुंड में पुरुषों के साथ महिलाओं के भी अस्थिपंजर मिले हैं। वहां कोई हथियार और हिंसा का भी कोई चिन्ह नहीं दिखा। मृत्यु के समय ये लोग स्वस्थ थे, अतः इनके किसी महामारी से मारे जाने की आशंका भी नहीं लगती। एक स्थानीय लोकगीत या प्रचलित कथाओं में इन लोगों की मृत्यु का कुछ संकेत मिलता है। इस लोक गीत में 'राज जात यात्रा' का उल्लेख है जो हर 12 साल बाद नंदा देवी की पूजा-अर्चना के लिए निकाली जाती है। लोक गीत के अनुसार नंदादेवी तीर्थयात्रियों के अभद्र व्यवहार से क्रुद्ध हो गईं। देवी के क्रोध से उन पर 'लोहे के गोले' बरसे। एक आशंका यह लगती है कि मरने वाले लोग तीर्थयात्री थे जो खराब मौसम और भयानक ओलावृष्टि की चपेट में आ गए होंगे।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

जलवे का असर

भाजपा जिस रफ्तार से तरक्की कर रही है उसी गति से पार्टी के नेताओं की लोकप्रियता भी बढ़ती जा रही है। पार्टी के ऐसे चेहरे जो टीवी और अखबारों में दिखते हैं, उन्हें पहचानने वाले हर जगह मिलते हैं और चाहे-अनचाहे वे वीआइपी हो ही जाते हैं। कुछ दिनों पहले भाजपा के एक प्रवक्ता एअरपोर्ट पर थे तो सुरक्षा जांच के वक्त सुरक्षाकर्मी ने उनसे टिकट के लिए पूछा। भाजपा नेता ने अपना टिकट दिखाया तो सुरक्षाकर्मी ने कहा कि उसे चुनाव का टिकट चाहिए। नेता जी उसे वादा कर किसी तरह पीछा छुड़ाकर आगे बढ़े, लेकिन कुछ दिनों बाद वह बायोडाटा के साथ भाजपा कार्यालय पहुंच गया। बताते हैं कि खासतौर से पार्टी प्रवक्ताओं के लिए अब देश में कोई भी जगह ऐसी नहीं है जहां उन्हें पहचानने वाले और सेल्फी लेने वाले न मिल जाएं।

घंटी वाले बाबू

राजनीतिक दलों के कार्यकर्ता या नेताओं से नजदीकी रखने वाले लोग जब मंत्रियों के पीए, एपीएस या ओएसडी बन जाते हैं तो वे सरकारी बाबुओं की नकल करने की हरसंभव कोशिश करते हैं। कुर्सी पर बैठते ही उनका स्वभाव और नजरिया बदल जाता है। बताया जाता है कि श्रमशक्ति भवन में बैठने वाले एक मंत्री के निजी स्टाफ में भी आजकल कुछ ऐसा ही हो रहा है। मंत्रीजी के साथ एक राजनीतिक व्यक्ति अटैच है। उस व्यक्ति को आजकल कुछ ऐसा शौक लगा है कि वह अपनी अहमियत और व्यस्तता दिखाने के लिए अजीबोगरीब हकरत करते रहते हैं। कुछ नहीं होता है तो वह पल-पल में घंटी ही बजा देते हैं। चपरासी दौड़कर आता है तो कहते हैं अच्छा थोड़ी देर में आओ। खाली बैठे हों और किसी का फोन आ जाए तो कह देते हैं कि अभी व्यस्त हैं। बहरहाल क्या वह बाबुओं की नकल कर पा रहे हैं, यह तो फिलहाल मालूम नहीं, लेकिन कई अधिकारियों को उनका ढंग पसंद नहीं आ रहा है।

राजरंग

अटक गई थीं सांसें

कई बार परदे की पीछे की कहानी सामने नजर आ रही तस्वीर से ज्यादा दिलचस्प हो जाती है। ऐसा ही कुछ इस बार खेल एवं युवा मंत्रालय के एक भव्य और शानदार कार्यक्रम में भी देखने को मिला। देश के युवाओं को शारीरिक रूप से चुस्त-दुरुस्त रहने का मंत्र देने के चक्कर में मंत्रालय और कार्यक्रम से जुड़े तमाम अधिकारियों के पसीने छूट गए। अंतिम क्षणों तक मंत्रालय के अधिकारी और स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया के अधिकारियों के बीच कार्यक्रम की प्रक्रिया और तौर-तरीकों पर विचार होता रहा। कार्यक्रम और उसकी तैयारियों को गुप्त रखना भी उनके लिए किसी चुनौती से कम नहीं था। यहां तक कि कर्टेन रेजर का समय तय कर फिर आनन-फानन में उसे रद कर दिया गया। आलम यह था कि खुद पीआइबी के अधिकारी कार्यक्रम की जानकारी पाने के लिए सचिव महोदय से समय मांगते रह गए, लेकिन उन तक को इससे दूर रखा गया। कार्यक्रम सफलतापूर्वक निपट तो गया, लेकिन मंत्रालय के अफसर इसका श्रेय सिर्फ और सिर्फ ऊपर वाले को दे रहे हैं। गोपनीयता बनाए रखने के चक्कर में सबकी सांसें अटकी पड़ी थीं।

नायब का नायाब शौक

वैसे तो नायब मंत्रियों के कामकाज के आवंटन में अमूमन कोताही ही बरती जाती है, लेकिन अगर वे 'कामकाज' करने पर ही उतारू हो जाएं तो भला उनका कोई क्या बिगाड़ सकता है? ऐसे नायब मंत्रियों का काम आमतौर पर फीता काटना, उद्घाटन करना और देश-विदेश में खास जगहों का दौरा करने तक ही सीमित होता है। मगर खेती-किसानी महकमे में पहली बार आए नायब मंत्री को गजब का शौक है। फीता काटने और मंच पर भाषण देने की लत के चलते आए दिन कार्यक्रम कराने पड़ते हैं। इन दिनों राज्यवार किसानों को बुलाकर उन्हें दिन भर भाषण पिला रहे हैं। सामान्य तौर पर उद्घाटन करने वाले वीआइपी पहले सत्र के बाद लौट जाते हैं, लेकिन नायब साहब वहीं दिन भर डटे रहते हैं। हर सत्र की अध्यक्षता खुद करते हैं जिसके लिए उन्हें किसी की इजाजत की जरूरत नहीं रहती है। बीच की कुर्सी पर जमे रहना उनका हक है। चर्चा के प्रत्येक सत्र में कूद पड़ने से शिरकत करने वाले अफसर और वैज्ञानिक असहज होने लगे हैं। नायब साहब की शिकायत भला करे तो कौन करे और करनी भी हो तो किससे की जाए?

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।

1882 में हुई थी मध्य प्रदेश के इंदौर में डेली कॉलेज की स्थापना। इस शिक्षा संस्थान के संरक्षक माउंटबेटन से लेकर महाराज यशवंतराव होलकर जैसे लोग रह चुके हैं।

अनंत विजय

आजकल

बयान से बेनकाब होती विचारधारा

भारत में ऐसे लोगों, लेखकों की कमी नहीं है जो बोलने-लिखने की स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति के नाम पर ऐसी बातें बोल-लिख जाते हैं जो देश के संबंध में घोर आपत्तिजनक होती हैं। ऐसी ही एक लेखिका हैं अरुंधति राय, जो अक्सर ऐसी बातें बोलती-लिखती रहती हैं जिसका फायदा कई बार अन्य देश अपने हितों को प्रोत्साहित करने के लिए करते हैं, लिहाजा इस बारे में भी ऐसे लेखकों को विचार करना चाहिए

इन दिनों एक बार फिर से बुकर पुरस्कार से सम्मानित लेखिका अरुंधति राय चर्चा में हैं। वर्ष 2011 में दिए गए उनके एक भाषण के अंश को पाकिस्तानी मीडिया ने भारत को बदनाम करने की नीयत से छाप दिया। पाकिस्तान के हुक्मरानों ने भी उसकी आड़ में भारत को घेरने की कोशिश की। अरुंधति के उस बयान के सामने आते ही सोशल मीडिया पर एक बवंडर सा उठा, जमकर इस विषय पर चर्चा शुरू हो गई। भारत और बांग्लादेश के ट्वीटर उपयोगकर्ताओं ने उनकी लानत-मलामत शुरू की और 'डबल स्टैंडर्ड' हैशटैग के साथ यह मसला ट्वीटर पर ट्रेंड करने लगा। दरअसल वर्ष 2011 में अरुंधति राय ने एक चर्चा के दौरान घोर आपत्तिजनक बातें कही थीं। ये ऐसी बातें हैं जो सीधे सीधे राष्ट्र के खिलाफ हैं। उनका अंदाज ही भारत को अपमानित करने जैसा था और कहीं से भी यह नहीं लग रहा था कि एक भारतीय बोल रहा हो।

भारत के बारे में अरुंधति ने कहा कि वो भारत जैसी जगह के बारे में बात कर रही हैं जहां कश्मीर, मणिपुर, नगालैंड, मिजोरम में तब से युद्ध हो रहे हैं जब से भारत एक संप्रभु राष्ट्र बना। भारत जब गुलामी की बेड़ियों से आजाद हुआ तब से ही वह एक औपनिवेशिक राष्ट्र बन गया। तमाम झंझावातों के बीच हिंदुस्तान का लोकतंत्र मजबूत और परिपक्व हुआ, ये अरुंधति को ना तो दिखा और ना ही वो समझ पाईं। अपने जहर बुझे बयान में अरुंधति ने कहा कि भारत में 1947 से ही कश्मीर, मणिपुर, नगालैंड, मिजोरम, पंजाब, तेलंगाना, गोवा, हैदराबाद में निरंतर युद्ध जारी है और भारत ने अपनी ही जनता के खिलाफ सेना की तैनाती की और युद्ध किया।

अरुंधति का पाकिस्तान प्रेम तब झलक उठा जब वो बोलीं कि पाकिस्तान ने अपनी सेना को उस तरह से अपने देश की जनता के खिलाफ इस्तेमाल नहीं किया जिस तरह से लोकतांत्रिक भारत ने किया। उनका ये वीडियो सामने आते ही भारत और बांग्लादेश में तीखी प्रतिक्रिया हुई। बांग्लादेश के लोगों ने अरुंधति को 1971 में पाकिस्तानी सेना के पूर्वी बंगाल (जो बांग्लादेश बना) में किए कुकृत्यों की याद दिलानी शुरू कर दी। एक के बाद एक अत्याचार की फेहरिश्त सामने आने लगी। दरअसल अरुंधति जैसे लोग भारत के खिलाफ बोल अंतरराष्ट्रीय सुर्खियां बटोरते हैं।

अरुंधति की इस चर्चा को सुनते हुए मुझे 24 फरवरी 2016 को तत्कालीन मानव संसाधन मंत्री स्मृति ईरानी का लोकसभा में दिया भाषण याद आ गया। स्मृति ईरानी के भाषण के पहले तृणमूल कांग्रेस के सांसद डॉ. सुगतो बोस ने भाषण दिया था और उनके भाषण पर सोनिया गांधी और राहुल गांधी मुग्ध थे, तालियां बजा रहे थे। जब स्मृति ईरानी के बोलने की बारी आई तो उन्होंने भी सुगतो बोस के भाषण की सराहना की, लेकिन सोनिया और राहुल गांधी के सामने बोस की बहन शर्मिला बोस की किताब के कुछ पन्ने खोल दिए। जिस सुगतो बोस के भाषण पर कांग्रेसी लहालोट हो रहे थे, उन्हीं की बहन इतिहासकार शर्मिला बोस ने एक किताब लिखी थी- द डेड रेकनिंग। किताब में शर्मिला बोस ने लिखा है- 'बांग्लादेश मुक्ति संग्राम एक भ्रांति है, मिथ्या है, पाकिस्तानी सेना ने पूर्वी बंगाल के लोगों पर किसी तरह का अत्याचार किया ही नहीं था जिसे बचाने के लिए इंदिरा गांधी गई थीं।'

अरुंधति ने कोई नया राग नहीं छेड़ा है, बल्कि इस तरह के जहर बुझे बयान या लेखन लंबे समय से होते रहे हैं। बहुधा पाकिस्तान के पक्ष में। अरुंधति ने तो भारत की इस तरह की तस्वीर पेश की जैसे यहां दलितों, अल्पसंख्यकों को सेना की मदद से कुचला जा रहा हो। अरुंधति अपने भाषण में प्रश्न उठाती हैं कि ये कौन लोग हैं जिनके खिलाफ भारत ने युद्ध छेड़ रखा है या युद्ध करना तय किया है। फिर खुद ही उसका उत्तर देती हैं कि पूर्वोत्तर में आदिवासियों, कश्मीर और हैदराबाद में मुसलमानों, तेलंगाना में आदिवासियों, गोवा में ईसाइयों और पंजाब में सिखों के खिलाफ। इतना बोलते बोलते वो यह भी कह जाती हैं कि ये सब 'अपर कास्ट हिंदू स्टेट' की तरफ से किया जा रहा है। अब इस अंतिम वाक्य से ही उनका एजेंडा साफ हो जाता है। ये सीधे-सीधे समाज को बांटनेवाला बयान है, देश के खिलाफ वहां की जनता को उकसानेवाला बयान है। जब वो ये बात कह रही थीं तब वो भूल गई थीं कि उस वक्त देश को तीन अल्पसंख्यक समुदाय के लोग ही चला रहे थे, मनमोहन सिंह उस वक्त देश के प्रधानमंत्री थे जो सिख समुदाय से आते हैं, सत्ताधारी दल कांग्रेस की अध्यक्ष सोनिया गांधी ईसाई और उनके राजनीतिक सलाहकार अहमद पटेल मुसलमान। क्या तब किसी कोने से ये आवाज आई थी कि बहुसंख्यक हिंदुओं के देश में तीन सबसे ताकतवर शख्सियत जो सत्ता चला रहे थे वो अल्पसंख्यक समुदाय के थे। नहीं।

आज भी इस तथ्य को रेखांकित करना इस वजह से आवश्यक हो गया, क्योंकि अरुंधति के बयान को पाकिस्तान अपने हक में प्रचारित करने में लगा है। अरुंधति जिन माओवादियों और अलगाववादियों को भारत का नागरिक मान रही हैं उनकी आस्था भारत में कभी नहीं रही। वो भारत को तोड़ने का सपना देखते रहे और किसी भी संप्रभु राष्ट्र को अपने देश की संप्रभुता और अखंडता को अक्षुण्ण रखने का अधिकार है। अब भी अरुंधति के पक्ष में लेख लिखे जा रहे हैं, लेकिन उनके समर्थक ये भूल गए हैं कि भारत में कभी भी माओवादियों या नक्सलियों के खिलाफ सेना का इस्तेमाल नहीं किया गया।

दरअसल अरुंधति जैसे लोगों की, उन जैसे लेखकों की बुनियाद ही भारत बोध पर टिकी है। वो वैश्विक मंचों पर जाकर भारत में हो रहे कथित अत्याचारों पर, कथित मानवाधिकार हनन पर भाषण देती रही हैं। उनके समर्थन में लिखनेवाले कुछ लोग अभी हाल में प्रकाशित उनकी किताब 'द मिनिस्ट्री ऑफ अटमोस्ट हैप्पीनेस' से उदाहरण देकर उनका बचाव करने की कोशिश में लगे हैं। जब ये पुस्तक प्रकाशित हुई थी तो इसको फिक्शन कहकर प्रचारित किया गया था, बुकर प्राइज के लिए उसको फिक्शन कैटेगरी में ही नामित किया गया था। अब उनके समर्थक उस उपन्यास को ही तथ्य के तौर पर पेश कर रहे हैं। अगर हम अरुंधति के समर्थकों के तर्कों को मान भी लें तो उस किताब में और भी बहुत कुछ लिखा गया है। अरुंधति का उपन्यास 'द मिनिस्ट्री ऑफ अटमोस्ट हैप्पीनेस' एक लड़के की कहानी से शुरू होता है। घटनाओं के बाद जैसे ही पात्रों के बीच संवाद शुरू होता है वैसे ही लेखक पर एक्टिविस्ट हावी हो जाता है और वो अपनी वैचारिकी का बोझ पाठकों पर लादने लग जाती है। फिक्शन की आड़ लेकर जब अरुंधति कश्मीर के परिवेश में घुसती हैं तो अपने पूर्वाग्रहयुक्त नजरिये को सामने रखती नजर आती हैं। कश्मीर के परिवेश का वर्णन करते हुए वो लिखती हैं- 'मौत हर जगह है, मौत ही सबकुछ है, करियर, इच्छा, कविता, प्यार मोहब्बत सब मौत है। मौत ही जीने की नई राह है। जैसे जैसे कश्मीर में जंग बढ़ रही है, कब्रगाह भी उसी तरह से बढ़ रहे हैं, जैसे महानगरों में मल्टी लेवल पार्किंग बढ़ते जा रहे हैं।

कश्मीर समस्या में उनको जंग नजर आ रहा था। अपनी सैद्धांतिकी को वे फिक्शन की चाशनी में लपेटकर पेश कर रही हैं, ताकि निकल गया तो ठीक है पाठकों के दिमाग में बात घर कर जाएगी और अगर ज्यादा आलोचना हुई तो उसको फिक्शन कहकर पल्ला झाड़ लिया जाएगा। उपन्यास का एक पात्र बिप्लब दासगुप्ता एक सरकारी मुलाजिम है, जो खूब शराब पीता है व कश्मीर में पदस्थापित है। उसकी हरकतों को भी अरुंधति ने विषय बनाया है। संकेत ये कि सरकारी मुलाजिम ठीक व्यवहार नहीं करते।

उस उपन्यास में अरुंधति ने बताया है कि किस तरह की परिस्थितियों के चलते कश्मीरी युवक आतंकवादी बन जाता है, कहीं भी आतंक की असली वजह पर, उसकी जमीन तैयार करने में पाकिस्तान की भूमिका पर जोर डाला है, ऐसा याद नहीं पड़ता। अब भले ही अरुंधति ने भारतीय सेना की तैनाती को लेकर दिए अपने बयान पर माफी मांग ली है, लेकिन जो जहरीली सोच अंदर तक घुसी है, उसका क्या किया जा सकता है, इस पर विचार करना चाहिए।

मशहूर रूसी लेखक सोल्झेनित्सिन ने लिखा था- 'कम्युनिस्ट विचारधारा एक ऐसा पाखंड है जिससे सब परिचित हैं, नाटक के उपकरणों की तरह उसका इस्तेमाल भाषण के मंचों पर होता है।' तो क्या ये माना जाए कि अरुंधति वो पाखंड रच रही थीं और भाषण के मंच का इस्तेमाल कर रही थीं।

फिर से

मसान में हिसाब नहीं होता साहिब!

शोक के समय ताने नहीं दिए जाते। लेकिन भारतीय राजनीति और राजनीतिक दलों के समर्थक भाषाई पतन के उस कगार पर खड़े हैं, जहां से ना तो मर्यादा की रेखा दिखाई देती है, और ना ही ईश्वर का डर। प्रश्न यह नहीं है कि नैतिकता की मूर्ति पर पहला पत्थर किसने मारा, प्रश्न यह है कि इस माहौल में जब हम पर नजर पड़ी, तब हम क्या कर रहे थे। दूसरे का अपराध सिद्ध कर देने से अपना अपराध छोटा नहीं हो जाता।

झूठे दिखावे के लिए ही सही, लेकिन किसी की मृत्यु पर मौन रखना हमारी परंपरा रही है। इस देश की राजनीति ने अपने धुर विरोधी के निधन पर भी संवेदनाएं प्रकट करने के उदाहरण देखे हैं।

युद्ध में कुंभकर्ण के शव को सम्मान के साथ लंका पहुंचाने वाली मर्यादा देखी है हमने। मरणासन्न रावण की विद्वत्ता की प्रशंसा करते राघव देखे हैं हमने। महाभारत के युद्ध में भीष्म को शरशैया पर लिटाने के बाद उनसे लिपटकर बिलखते अर्जुन देखे हैं हमने। यहां तक कि अभिमन्यु के अंतिम संस्कार में भी वे सातों महारथी शोकसंतप्त उपस्थित थे, जिन्होंने चक्रव्यूह में उस वीर की हत्या की थी।

लेकिन आज, इंदिरा जी के निधन पर 'मूर्ति की आवश्यकता तो मूर्तिभंजकों को भी पड़ती है' जैसा वाक्य बोलने वाले पंडित अटल बिहारी वाजपेयी के प्रतिमानों को कितना पीछे छोड़ आए हैं हम, यह गत कुछ दिनों की सोशल साइट्स देख कर समझा जा सकता है।

मसान में हिसाब नहीं होता। शव से शिकवे नहीं किए जाते। अरथी किसी की भी हो, उसे हाथ जोड़कर ही विदा किया जाता है। यदि हाथ जोड़ने जितनी गैरत न भी बची हो, तो भी पत्थर मारने जैसा वैभत्स्य तो बिल्कुल क्षम्य नहीं हो सकता। सोशल मीडिया पर स्वयं को राजनीतिक कार्यकर्ता सिद्ध करने और किसी विचारधारा विशेष के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जताने की होड़ में किसी दिवंगत आत्मा पर ऐसी-ऐसी पोस्ट की जा रही हैं जो कम से कम एक मनुष्य के लिए तो शोभनीय नहीं हो सकती। इससे भी अधिक वीभत्स यह है कि गत कुछ समय में क्रमवार अनेक राजनेताओं के निधन के बाद फेसबुक पर यह चर्चा की जा रही है कि अगला नंबर किसका है। घृणा होती है यह सब देख कर। मृत्यु न तो उपहास का विषय है, न ही परिहास का। हास्य और व्यंग्य, ये दोनों रस मृत्यु के सम्मुख मौन रहते हैं। मूढ़ता इतनी गहन बन जाए कि कोई मूढ़ अपराध करने लगे और फिर उसे सही सिद्ध करने के लिए और बड़े मूर्खतापूर्ण तर्क करने लगे तो यह समझ नहीं आता कि इसका अंत कहां होगा।

हमें बचपन से यह सिखाया गया है कि 'मरे हुए को नहीं कोसते!' लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण सत्य है कि वर्तमान राजनीति केवल मृतकों को कोस-कोस कर अपने ठीये जमा रही है। नफरत की इस दलदल में कीचड़ फेंका गया तो किसी का भी दामन नहीं बचेगा। घृणा अंधी होती है,

और वह केवल काला रंग देखती है, उसे उजला आयाम दिखाई नहीं पड़ता। यदि इस प्रवृत्ति पर अंकुश नहीं लगाया गया तो जवाहरलाल नेहरू, महात्मा गांधी, इंदिरा गांधी, संजय गांधी, राजीव गांधी, विनायक दामोदर सावरकर, राम मनोहर लोहिया और भीमराव अंबेडकर से लेकर मनोहर परीकर, शीला दीक्षित, मदनलाल खुराना और अरुण जेटली तक सबके चित्र अपमानित होंगे।

जिसने भी इस देश के लिए अपना समय दिया और जीवन संपन्न करके चला गया, उसे याद करके कुछ अच्छा न बोल सकें, तो कम से कम बुरा तो ना ही बोलें। ऐसे में अशोक साहिल के दो मिसरे याद आते हैं :

चाहे मय्यत हो किसी की, बढ़ के कंधा दीजिए,
रंजिशें अपनी जगह, इंसानियत अपनी जगह।

(चिराग जैन की फेसबुक वॉल से साभार)

ट्वीट-ट्वीट

बैंकों का विलय अच्छा कदम है। मगर इसकी सफलता के लिए कुछ उपाय करने होंगे। इनमें बैंकों के निदेशक मंडलों को अधिक स्वायत्तता, सरकारी दखल कम, ग्राहकों पर अधिक ध्यान, साझा आइटी प्लेटफॉर्म के साथ शाखाओं एवं मानव संसाधन का तार्किक रूप से इस्तेमाल करना होगा।
हर्ष गोयनका@hvgoenka

असम का भाजपा नेतृत्व भले ही एनआरसी को खारिज कर रहा हो, लेकिन पार्टी के नेता देश भर में यह कवायद कराना चाहते हैं।
श्रीनिवासन जैन@SreenivasanJain

केंद्रशासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में एनआरसी की सख्त जरूरत है। वहां जमे हुए रोहिंग्या हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए बहुत बड़ा खतरा हैं।
अशोक पंडित@ashokepandit

अगर कोई नई आर्थिक नीति नहीं आती तो पांच ट्रिलियन डॉलर के विचार को तिलांजलि दे दीजिए। केवल बोल्डनेस या बुद्धिमता से ही अर्थव्यवस्था को नहीं बचाया जा सकता। उसे इन दोनों पहलुओं की जरूरत है। आज हमारे पास इन दोनों में से कुछ भी नहीं है।
सुब्रमण्यम स्वामी@Swamy39

मैं भारत-पाक दोनों की आलोचना करता हूं। मगर नजरिये और दुष्प्रचार में कुछ महीन अंतर होता है। भारतीय पक्ष को प्रकाशित किए बिना न्यूयॉर्क टाइम्स ने एकतरफा पाकिस्तानी दुष्प्रचार छाप दिया। यह बहुत ही बेतुका है।
विपिन नारंग@NarangVipin

रचनाकर्म

प्रेम, विछोह और जिजीविषा की गाथा

अमित तिवारी

अंग्रेजी की लेखिका नमिता गोखले का चर्चित उपन्यास 'थिंग्स टु लीव बिहाइंड' हिंदी में अनूदित होकर 'राग पहाड़ी' के नाम से प्रकाशित हुआ है। इसके कथानक में आने वाले उतार-चढ़ाव संगीत के राग पहाड़ी जैसा ही आभास देते हैं। इसके अलावा, इन दो शब्दों की अर्थवत्ता की दृष्टि से भी पुस्तक खरी उतरती है। इसे पढ़ते समय 'राग' का अनुभव होता है और 'पहाड़ों' को जी लेने जैसी प्रतीति भी होती है। इस पुस्तक का देशकाल उन्नसवीं सदी के मध्य से बीसवीं सदी की शुरुआत तक का कुमाऊं क्षेत्र है।

नमिता गोखले को कथा और कथेतर दोनों तरह के लेखन के लिए जाना जाता है। उनकी कथाओं के स्त्री पात्र सामाजिक रूढ़ियों से संघर्ष करते और उन्हें तोड़ते नजर आते हैं। वह चाहे उनके उपन्यास 'पारो : ड्रीम्स ऑफ पैशन' की मुख्य पात्र पारो हो या इस उपन्यास की दो अलग- अलग पीढ़ियों का प्रतिनिधित्व करतीं तिलोत्तमा व देवकी।

कथानक बुनते समय लेखिका ने मूल देशकाल को छूने का सफल प्रयास किया है। कहीं-कहीं यह पुस्तक एक ऐतिहासिक दस्तावेज होने का अनुभव भी कराती है। घटनाओं को परत-दर-परत लिखते हुए एक-एक पात्र का शब्द-चित्र पाठक के मानस में छपता चला जाता है। कहीं-कहीं प्रवाह की जीवंतता ऐसी है कि महसूस होता है कि हम ही उन घटनाक्रमों के बीच चहलकदमी कर रहे हैं। पात्रों के मन की उधेड़बुन भी कई बार पाठक को अपने ही मन की उधेड़बुन का एहसास देती है।

कथानक में तत्कालीन समाज की जातीय रूढ़ियों को दिखाया गया है। साथ ही आजादी के लिए संघर्षरत वर्ग के बीच की हलचल भी कहीं-कहीं दिख जाती है। मुख्य पात्र तिलोत्तमा स्वयं तीन पीढ़ियों का प्रतिनिधित्व करती है। यह पुस्तक बंदिशों के बीच पली-बढ़ी तिलोत्तमा के उड़ान की कहानी है, जो मौका मिलते ही पंख फैलाकर उन्मुक्त गगन की ओर बढ़ चलती है। पूरा कथानक छोटे-छोटे हिस्सों में उसके अलग-अलग रूप दिखाता है। समाज में स्त्री-पुरुष के भेद के चलते पुत्र के स्थान पर पुत्री की इच्छा रखना। अपने अल्हड़पन को खूबसूरती से जीने की कला और बीतते समय के साथ बढ़ती समझ उसके चरित्र को नई ऊंचाइयां देते हैं। कहानी उसकी बेटी देवकी की ओर मुड़ जाती है। उसमें भी बहुत कुछ मां जैसा ही है। समाज की व्यवस्था को मानना और अपने सपनों को जीते रहना उसके स्वभाव का हिस्सा है।

कहानी का अंतिम भाग तीसरी पीढ़ी का भी जिक्र करता है। यहां देवकी की दो बेटियां हैं, जो अलग ही परिवेश में पल-बढ़ रही हैं। तिलोत्तमा उनके संस्कार और स्वभाव से दुखी भी है, लेकिन अपने मन को समझाने का प्रयास भी करती है। कहानी के आखिरी कुछ अंश ही जीवन का बड़ा दर्शन सिखा जाते हैं। तिलोत्तमा अपनेआप से कहती है, 'अतीत को पीछे छोड़ो! सिर्फ आगे देखो भविष्य की ओर। आगे नजर रख कि क्या कुछ होना है अभी। जो पीछे छोड़ आई है, उसकी फिकर न कर।' वहीं देवकी भी अपने प्रेमी द्वारा बनाई हुई अपनी तस्वीर के कोने-कोने को निहारती प्रेम के उन पलों को याद करती है। इस तस्वीर से जुड़ी उसके जीवन की हर छोटी-बड़ी बात उसकी आंखों के सामने आ जाती है। उसका प्रेमी जा चुका है। वह जानती है कि यह तस्वीर उसे अतीत से जोड़े रखने की कड़ी है। वर्तमान में उसके जीवन की नाव के ठहराव के लिए लंगर भी यही तस्वीर है और भविष्य के लिए छूट जाने वाली सौगात भी इसी में है।

नमिता गोखले के इस उपन्यास में स्त्री पात्रों की आकांक्षाओं, सामाजिक रूढ़ियों के प्रति विद्रोह और उनकी जिजीविषा को सुंदरता से रूपायित किया गया है...

पुस्तक : राग पहाड़ी
लेखिका : नमिता गोखले
प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
मूल्य : 199 रुपये (पेपरबैक)

इस उपन्यास के सहज संप्रेषण का जितना श्रेय लेखिका के कौशल को जाता है, उतना ही श्रेय इसका हिंदी में अनुवाद करने वाले पुष्पेश पंत को भी जाता है। अनुवाद इतनी खूबसूरती से किया गया है कि आभास ही नहीं होता कि हम कोई अनूदित पुस्तक पढ़ रहे हैं। शब्दों का चयन ऐसा है, मानो कथानक की मूल भाषा हिंदी ही है। अध्यापन और शोध कार्यों से जुड़े रहे पुष्पेश पंत को स्तंभ लेखन और टेलीविजन डॉक्यूमेंट्री निर्माण के लिए जाना जाता है। हाल में उन्होंने कथा साहित्य की अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकों के अनुवाद किए हैं। उन्होंने एक उपन्यास और कुछ कहानियां भी लिखी हैं।

वजूद को पहचानने का संघर्ष

अरुण सिंह

घर-गृहस्थी से आगे निकलकर महिलाएं अब जीवन के हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं। ऐसा कोई काम नहीं, जो महिलाएं न कर रही हों। लेखिका मोनिका अग्रवाल भी अपने कहानी संग्रह 'अनुगूंज' के जरिये महिलाओं को अपना वजूद पहचानने और अंतर्मन की आवाज सुनकर अपना रास्ता खुद बनाने की प्रेरणा देती हैं। इन कहानियों में वे जिंदगी को एक अलग नजरिये से देखती हैं। इस संग्रह में सभी कहानियां महिला पात्रों को ध्यान में रखकर लिखी गई हैं। महिलाओं के साथ जो भी अच्छा या बुरा होता है या जिस कारण से घटित होता है, उसी को शब्दों में उतारने की उन्होंने कोशिश की है। ये कहानियां आम जीवन में महिला-पुरुष के रिश्तों को समय की कसौटी पर तौलती हैं। युवा मन के रंगीन सपनों को उड़ान देती हैं। साथ ही बुरे अनुभवों को पीछे छोड़कर नई शुरुआत करने की बात करती हैं। इनमें प्यार का एहसास है, कच्ची उम्र के छद्म प्रेम का धोखा है, सामाजिक समस्याएं हैं, वैवाहिक संबंध हैं और शहर का लिव-इन-रिलेशनशिप भी है।

अधूरी दास्तां, अनुगूंज, अस्थि विसर्जन, एक प्यार ऐसा भी और टीनएजर्स लव जैसी कहानियों से गुजरते हुए उस आम महिला और पुरुष से हमारा बार-बार सामना होता है, जो कहीं-न-कहीं किसी-न-किसी रूप में एक-दूसरे के प्रति प्यार, धोखा व आत्मसमर्पण जैसी घटनाओं को अंजाम देते हैं। आधुनिक जीवन की ये कहानियां बेहतर दुनिया बनाने की चाहत रखती हैं और एक प्रकार का संदेश देती नजर आती हैं। ये कहानियां युवतियों को अपने सपने पूरे करने की प्रेरणा देती हैं। साथ ही आधुनिक चकाचौंध से बचते हुए संभलकर कदम बढ़ाने की नसीहत भी देती हैं।

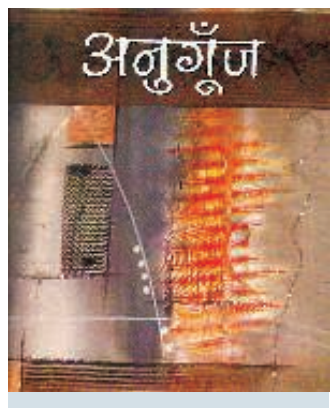

पुस्तक : अनुगूंज
लेखिका : मोनिका अग्रवाल
प्रकाशक : के एल पचौरी प्रकाशन, गाजियाबाद
मूल्य : 250 रुपये

पुस्तक में संपादन की त्रुटियां अखरती हैं। कई कहानियों में पात्रों के नाम बार-बार दोहराए गए हैं। कुछ कहानियां भी आपस में गड्डु-मड्डु हो गई हैं। लेकिन लेखिका खुद कहती हैं कि 'मुझे शब्दों से खेलना नहीं आता, पर सराहना जरूर आता है। जिंदगी की छोटी-छोटी चीजों में खुशियां तलाशना आता है। मुझ में अपने जीवन के अनुभवों को कलमबद्ध करने का जुनून है जो मेरे हौसलों को उड़ान देता है।' कुल-मिलाकर युवा लेखिका का प्रयास सराहनीय है।

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या एयर इंडिया का निजीकरण करने का सरकार का फैसला सही है?

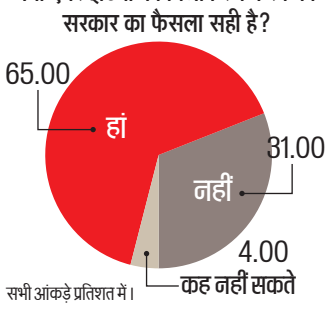

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या कुछ सरकारी बैंकों के विलय से उनकी स्थिति में सुधार होगा?

अपनी राय और अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए अपने मोबाइल के मैसेज बॉक्स में जाकर **POLL** लिखें, स्पेस देकर **Y, N** या **C** लिखकर 57272 पर भेजें
Y -हां, **N**-नहीं, **C**-कह नहीं सकते

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

भारत में हैं बस गए कहां-कहां से आय,
खुल्लमखुल्ला देश को समझा किए सराय।
समझा किए सराय भोगते सब सुविधाएं,
एनआरसी के नाम वही अब शोर मचाएं।
वोटबैंक बन आज सिद्ध करते निज स्वारथ,
करतूतों से आज उन्हीं की रोता भारत।
- ओमप्रकाश तिवारी

आशीष व्यास
संपादक, नई दुनिया, मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश डायरी

मौन के मार्ग पर कब प्रस्थान करेंगी साध्वी?

लगता है भोपाल सांसद प्रज्ञा ठाकुर विवादित बात-बयान का पर्याय बन गई हैं! सुर्खियां बनाते-बटोरते इस चेहरे से जैसे ही कोई चर्चा जुड़ती है, नए संदेह- नए सवाल खड़े हो जाते हैं। फिर शुरू होता है अनुशासन के नाम पर कार्रवाई का किस्सा। कहानी बनाई जाती है, किरदार खोजे जाते हैं। लेकिन निर्णय टल जाता है! कुछ दिन शांति रहती है और फिर एक दिन अचानक कोई असामान्य मुद्दा सामने आ जाता है। साध्वी प्रज्ञा इस बार तंत्र-मंत्र वाली 'मारण शक्ति' के साथ प्रस्तुत हुई हैं। भाजपा के वरिष्ठ नेताओं के निधन पर प्रज्ञा ने कहा कि इसके पीछे विपक्ष का हाथ है, वह पार्टी के नेताओं पर तांत्रिक क्रिया कर रहा है! प्रदेश भाजपा कार्यालय में पूर्व केंद्रीय मंत्री अरुण जेटली और मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल गौर की श्रद्धांजलि सभा में वे बोल बैठीं- 'विपक्ष भाजपा को नुकसान पहुंचाने के लिए मारण शक्ति (तांत्रिक क्रिया) का प्रयोग कर रहा है।' साध्वी प्रज्ञा की इस धारणा से श्रद्धांजलि सभा में पसरा मौन मुखर हो उठा। लोग यह समझने में लग गए कि इस बयान का मतलब क्या है? लोग एक-दूसरे से पूछ-पूछकर सोशल मीडिया का मसाला तैयार करने लगे। उधर, साध्वी अपनी सोच को शब्द दे रही थीं। '...बड़ा कठिन समय चल रहा है। जब मैं लोकसभा चुनाव लड़ रही थी, उस समय एक महाराज जी मेरे पास आए थे। उन्होंने कहा कि आप अपनी साधना का समय बढ़ाते रहना। बहुत बुरा समय है, विपक्ष एक ऐसी मारण-शक्ति का प्रयोग कर रहा है, जिससे भाजपा को नुकसान हो। निश्चित रूप से यह भाजपा के कर्मठ, योग्य और ऐसे लोगों पर असर करेगा, जो भाजपा को संभालते हैं।'

सुर्खियों-समाचारों से जब यह मामला आगे बढ़ा तो सबसे पहले चपेट में आए प्रदेश के वे नेता जो मीडिया से मुखातिब थे। कई बोले यह साध्वी की निजी राय है, तो कुछ यह कहने से भी नहीं चूके कि आखिर इसमें गलत क्या है? विवाद गरमाते देख भाजपा प्रदेश अध्यक्ष राकेश सिंह ने कहा कि प्रज्ञा ठाकुर के बयान को राजनीतिक चश्मे से नहीं देखा जाना चाहिए। लेकिन विपक्ष तब तक इस उड़ती पतंग को लूटने का मन बना चुका था! कांग्रेस मीडिया सेल की अध्यक्ष शोभा ओझा पूरे तेवर के साथ सामने आईं और कहा, 'प्रज्ञा का बयान बेहद आपत्तिजनक है। वे अपना मानसिक संतुलन खो चुकी हैं। उन्हें इलाज की जरूरत है।' वरिष्ठ कांग्रेस नेता ज्योतिरादित्य सिंधिया भी इस विवाद में अपनी राय देने से नहीं चूके और बोले, 'मुझे बड़ा अफसोस है कि जिम्मेदार पद पर बैठे व्यक्ति ने ऐसा बयान दिया है। बीजेपी को ऐसे व्यक्ति को अवसर

देने पर अपने गिरेबान में झांकना चाहिए। अगर राजनीतिक क्षेत्र या इसके बाहर का कोई भी व्यक्ति इस स्तर को नीचे गिराने की कोशिश करता है, तो इस पर तीखी प्रतिक्रिया होनी चाहिए।' पक्ष-विपक्ष के इन बयानों में यदि कुछ टटोलने की कोशिश करें तो जो साफ दिखाई देता है, वह है साध्वी का विवादों के केंद्र में आ जाना। ऐसे उलझे मसलों के जरिये कांग्रेस प्रदेश की राजनीति में अपने लिए ऐसे अवसर की तलाश करती दिखाई देती है जो उसे विपक्ष के 'अनुशासित-संगठन' से लड़ने के लिए नए मोर्चे बनाने में मदद करे। लोकसभा चुनाव के दौरान भी प्रज्ञा ठाकुर ने मुंबई एटीएस के पूर्व प्रमुख हेमंत करकरे को लेकर कहा था- 'करकरे ने मुझे प्रताड़ित किया था, मैंने श्राप दिया। इसलिए आतंकवादियों ने उन्हें मार दिया।' तब चुनावी मैदान में खड़ी प्रज्ञा ने यह कहकर डैमेज कंट्रोल की कोशिश की थी कि- 'अगर किसी को उनके बयान से चोट पहुंची है तो वे माफी मांगती हैं।' लेकिन तब तक विवादों का दायरा काफी बढ़ चुका था। लोकसभा चुनाव के दौरान ही जब नाथूराम गोडसे को पहला हिंदू आतंकवादी कहा गया, प्रज्ञा तब भी नहीं चूकीं और बोल पड़ीं- 'नाथूराम गोडसे देशभक्त थे, हैं और रहेंगे। ऐसा बयान देने वालों को चुनाव में जवाब दिया जाएगा।' स्वाभाविक था यह बयान कई ऐसे दबे-छुपे विवादों को सामने ले आया, जिन्हें लंबे समय से भुला दिया गया था। संदर्भ और प्रसंग कुछ भी रहें, लेकिन ऐसे बयानों से भाजपा विपक्षी कांग्रेस को एक ऐसा हथियार थमा देती है, जो पहला वार उसी पर करता है। बहरहाल मुद्दा बने 'मारण शक्ति' बयान के बाद एक बार फिर शीर्ष नेताओं की तरफ से साध्वी को नसीहत दी गई है कि इस तरह के विवादित बयान ना दें। भोपाल-दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में यह चर्चा भी समानांतर रूप से चल रही है कि सत्ता-संगठन के वरिष्ठ नेता समझाइश के साथ अब साध्वी को यह चेतावनी भी दे रहे हैं कि अब मौन ही उनके लिए सर्वश्रेष्ठ मार्ग है!

विवादों का डेली कॉलेज : अंग्रेजों के जमाने में स्थापित 137 साल पुराने इंदौर के प्रतिष्ठित डेली कॉलेज का विवाद परिसर लांघकर अब राजनीतिक गलियारों तक आ पहुंचा है। राजा-रजवाड़ों के राजसी ठाठ से भरे इतिहास और ब्रिटिशकालीन स्थापत्य की खूबसूरत इमारत के बीच यह संस्थान खुद को विवादों से दूर रखता है। लेकिन हाल ही में हुई कॉलेज बोर्ड की बैठक में आर्थिक अनियमितता का मामला उठा। ऑडिट रिपोर्ट में आई आपत्ति पर सचिव और प्राचार्य से गड़बड़ियों को लेकर जवाब मांगा तो प्राचार्य नाराज होकर बैठक से चले गए। इसके बाद विभिन्न पक्षों की ओर से जो बयान सामने आए हैं उससे यह अंदाजा लगाया जा रहा है कि ओल्ड डेलियंस (पूर्व छात्र) पुराना रुतबा कायम रखते हुए संस्थान से जुड़ाव बनाए रखना चाहते हैं। उधर, प्राचार्य अनुशासन के नाम पर कुछ सख्त नियम लागू करने के पक्षधर हैं। प्रदेश के ऊर्जा मंत्री और कॉलेज के पूर्व विद्यार्थी प्रियव्रत सिंह ने दखल देते हुए फिलहाल मामले को शांत करवाया है। इस शिक्षा संस्थान के संरक्षक लॉर्ड माउंटबेटन, महाराज यशवंतराव होलकर से लेकर पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह तक रहे हैं। इस तरह के विवाद सामने आने से वे लोग चिंतित हो उठते हैं जो मन से चाहते हैं कि इस प्रतिष्ठित संस्थान की परंपरागत छ

25 हजार से अधिक नामांकन मिल चुके हैं अब तक अगले वर्ष दिए जाने वाले प्रतिष्ठित पद्म पुरस्कारों के लिए सरकार को। नामांकन या सिफारिशें दाखिल करने की अंतिम तिथि 15 सितंबर है।

आंगन में आई पोषणबाड़ी तो दूर भागा कुपोषण

बदलाव की बयार ▶ मध्यप्रदेश के श्योपुर में चार हजार ग्रामीण घरों में लगी पोषणबाड़ी ने दिए अच्छे परिणाम

आंगन में छोटी सी बगिया बनाकर हरी सब्जियां पैदा की जाती हैं

हरिओम गौड़, श्योपुर

सुपोषण की जंग

▶ गांधी सेवा आश्रम की पहल को राज्य सरकार ने किया पुरस्कृत

मध्य प्रदेश का श्योपुर जिला कुपोषण के लिए पूरे देश में कुख्यात रहा है। अब भी यह जिला कुपोषण से जूझ रहा है। हालांकि, अच्छी खबर यह है कि यहां घरों में विकसित की गई पोषणबाड़ियों ने कुपोषण पर प्रहार करना शुरू कर दिया है। अच्छे परिणाम देख अब राज्य सरकार पूरे प्रदेश में पोषणबाड़ी योजना लागू करने जा रही है।

श्योपुर में सहरिया जनजाति के परिवारों की संख्या भी अच्छी खासी है। पिछड़ेपन और संसाधनहीनता के कारण कुपोषण यहां घर कर गया। कुपोषित बच्चों को पोषक आहार मुहैया कराने के सरकारी जतन उतने सफल परिणाम नहीं दे पाए, जो गांधी सेवा आश्रम की पोषणबाड़ी ने कर दिखाया। समाजसेवी संस्था गांधी सेवा आश्रम ने सहरिया परिवारों के आंगन में पोषणबाड़ी लगवाई, जिसमें उगे फल-सब्जियों के सेवन से हजारों महिलाएं एनीमिया रोग (रक्ताल्पता) और बच्चे कुपोषण की चपेट से बाहर आ गए। इस प्रयोग को मप्र सरकार पुरस्कृत कर चुकी है।

गांधी सेवा आश्रम ने साल 2016 में कराहल और श्योपुर ब्लॉक की 50 ग्राम पंचायतों के 4203 सहरिया आदिवासी परिवारों के आंगन में पोषणबाड़ी लगवाई। हर सहरिया परिवार को सात-सात फलों (अनार, सीताफल, अमरूद, सहजन, आंवला, नींबू और पपीता) के पौधों अलावा मैथी, पालक, धनिया, मटर, मूली, गाजर, प्याज, तोरई, लौकी, भिंडी, बैगन आदि सब्जियों के बीज दिए गए। यह पोषणबाड़ी घर के उस हिस्से में लगाई जहां स्नानागार और रसोई का उपयोग किया जा चुका पानी बेकार बह जाता था। अधिकांश फल और सब्जियों के पौधों ने छह से 10 महीने में पैदावार देना शुरू कर दिया। चूंकि गांवों के अधिकांश घरों के आंगन में सब्जी-फल होने लगे, इसलिए इन्हें कोई चाहकर भी नहीं बेच सकता था और खुद के आहार में उपयोग करने लगे। इससे भोजन में पोषण बढ़ा और सहरिया परिवारों की महिलाओं को एनीमिया व बच्चों को कुपोषण की चपेट से मुक्ति मिलनी शुरू हुई।

गांधी सेवा आश्रम के इस प्रोजेक्ट को महिला एवं बाल विकास विभाग ने पूरे प्रदेश में लागू करने का निर्णय लिया है। इसे पोषण वाटिका या किचिन गार्डन के नाम से सभी जिलों में लागू किया जाना है। सरकार से मिले प्रोत्साहन से गदगद गांधी सेवा आश्रम ने इस साल विजयपुर व कराहल में तीन हजार परिवारों में भी पोषणबाड़ी विकसित करने का निर्णय लिया है।

गांवों में बनाए गए हैं बीज बैंक

हर मौसम की सब्जी अलग होती है और मौसम के हिसाब से सहरिया परिवारों को सब्जियों के बीज गांव में ही नि:शुल्क मिलें इसके लिए गांधी सेवा आश्रम ने 50 पंचायतों के 35 गांवों में बीज बैंक बनाए हैं। इस बैंक में उन्नत बीजों को इकट्ठा करके पोषणबाड़ी करने वाले सहरिया परिवारों को बांटा जाता है। इनके अलावा कई आंगनबाड़ी केंद्रों पर भी यह बाड़ियां लगाई गई हैं।

मप्र के श्योपुर स्थित कराहल में अपने घर में बनी पोषणबाड़ी में काम करती सहरिया महिला। नईदुनिया

पोषणबाड़ी में पैदा फल और सब्जियों के सेवन से आदिवासी महिलाओं को एनीमिया और बच्चों को कुपोषण से मुक्ति मिली है। मप्र सरकार ने हमारे प्रयोग को सराहा और पुरस्कृत भी किया। अब सरकार इसे पोषण वाटिका व किचिन गार्डन के नाम से पूरे प्रदेश में लागू कर रही है। इस साल हम भी तीन हजार परिवारों में इसे विकसित कर रहे हैं।

-जयसिंह जादौन, प्रबंधक, गांधी सेवा आश्रम, श्योपुर

श्योपुर में पोषणबाड़ी एक अच्छा प्रयोग हुआ है। इससे कुपोषित बच्चे व एनीमिक महिलाओं की सेहत को लाभ हुआ है। हम इसे प्रदेश के अन्य प्रभावित जिलों में लागू करने जा रहे हैं।

-इमरती देवी, मंत्री, महिला एवं बाल विकास विभाग, मप्र

केले के तने से बने पैड 121 बार कर सकेंगी इस्तेमाल

तलाशी राह ▶ एक तने से तैयार हो रहे 10 हजार ईको फ्रेंडली सैनिटरी नैपकिन, कीमत 199 रुपये

मनु त्यागी, नई दिल्ली

स्वस्थ समाज

जी हां, केले के तने से तैयार इस ईको फ्रेंडली सैनिटरी पैड को 121 बार या दो साल तक इस्तेमाल किया जा सकता है। इसकी कीमत भी महज 199 रुपये है, जबकि सब्सिडीयुक्त सामान्य पैड पर दो साल में ग्रामीण महिलाओं को करीब 1,800 रुपये खर्च करने पड़ते हैं। बाजार में उपलब्ध ब्रांडेड पैड पर तो यह राशि दोगुने तक पहुंच जाती है।

आपको यह जानकर हैरत होगी कि हर साल तकरीबन एक लाख आठ हजार टन कूड़ा सिर्फ सैनिटरी पैड का होता है। सबसे बड़ी बात कि इसका जैविक निस्तारण नहीं हो सकता है। जलाने के अलावा कोई और उपाय नहीं है। एक पैड में चार पॉलीथिन के बराबर प्लास्टिक होती है। यह प्लास्टिक मैटेरियल न केवल महिलाओं की सेहत के लिए बल्कि पर्यावरण की सेहत के लिए भी खतरे का सबब है। वहीं, आज भी हमारे देश में ऐसी लाखों महिलाएं हैं, जो सैनिटरी पैड का इस्तेमाल ही नहीं करतीं। आज भी महिलाएं पुराने तौर तरीके अपना रही हैं, जो स्वास्थ्य के लिए नुकसानदेह साबित होता है। कुछ महिलाएं गरीबी की वजह से सैनिटरी पैड नहीं खरीद पातीं हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों तक में सरकार की ओर से सब्सिडी देकर पैड उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

इन सभी समस्याओं का कारगर समाधान दिल्ली स्थित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, आइआइटी) के दो छात्रों के स्टार्टअप ने प्रस्तुत कर दिखाया है। टेक्सटाइल विषय में चौथे वर्ष की पढ़ाई कर रहे 21 वर्षीय अर्चित अग्रवाल और हैरी सेहरावत ने सांफे नामक स्टार्टअप शुरू किया। दिल्ली आइआइटी ने इसे प्रारंभिक सहयोग मुहैया कराया। विशेषज्ञ प्राध्यापकों के मार्गदर्शन में छात्रों ने केले के तने से विशेष फैब्रिक विकसित करने में सफलता पाई। इससे बने सैनिटरी पैड को महिलाएं 121 बार इस्तेमाल कर सकेंगी।

इसे तैयार करने वाले छात्रों ने बताया कि केले के तने का इस्तेमाल भारत में फिलहाल कहीं भी दोबारा इस्तेमाल किए जाने वाले पैड बनाने में नहीं किया जा रहा है। हां, अफ्रीका में यह युक्ति सफल रही है, जहां दोबारा इस्तेमाल किए जा सकने वाले नैपकिन निःशुल्क बांटे जाते हैं। खास बात यह है कि इस नैपकिन को आसानी से आठ घंटे इस्तेमाल के बाद सिर्फ ठंडे पानी में धोकर सुखा देना है और डेढ़ घंटे बाद वह दोबारा इस्तेमाल योग्य हो जाएगा। दो साल में इसकी गुणवत्ता खराब या कम होने के सवाल पर अर्चित कहते हैं, लगातार इस्तेमाल के बावजूद सेहत पर भी कोई असर नहीं होगा। केले के तने में सोखने की क्षमता सर्वाधिक होती है, लेकिन दुर्भाग्य की बात यह है कि हमारे देश में केले के इस तने का इस्तेमाल न के बराबर ही होता है। इसे सिर्फ निर्यात कर दिया जाता है। हम केरल, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के किसानों से केले का तना 200 से 300 रुपये किलो की कीमत पर खरीद रहे हैं। एक तना करीब 60 किलो को होता है और इससे 10 हजार पैड बनाए जाते हैं।

इस स्टार्टअप को प्रोत्साहित करने वाली कंपनी हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड (एचपीसीएल) के चीफ जनरल मैनेजर संजय कुमार कहते हैं, आइआइटी जैसे संस्थान और उनके अंतर्गत आने वाली कंपनियां धारणा को तोड़ने का काम कर रही हैं। यह महिलाओं के हाइजीन और उनके कल्याण के क्षेत्र में एक बेहद ही उत्कृष्ट और जिम्मेदार सहयोग है। वहीं पर्यावरण को शुद्ध बनाए रखने में इससे बेहतर क्या सहयोग हो सकता है।

अर्चित ने बताया कि लांचिंग के पांच दिन के भीतर ही 5000 से अधिक पैड ऑनलाइन बिक गए। गांवों तक इस उत्पाद को पहुंचाने के लिए कुछ एनजीओ और सरकार की तरफ से गांवों में हर माह कम दाम पर नैपकिन बांटने वाली संस्थाओं से बात की गई है।

सरोकार की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/positive-news

अपने स्टार्टअप सांफे के तैयार किए हुए सैनिटरी पैड प्रस्तुत करते आइआइटी दिल्ली के छात्र अर्चित अग्रवाल (दाएं) और हैरी सेहरावत। सौजन्य से - सांफे

▶ आइआइटी दिल्ली के छात्रों का स्टार्टअप कर रहा उत्पादन, केला किसानों को भी मिल रहा फायदा

प्लास्टिक से बने सैनिटरी नैपकिन में नमी एकत्र हो जाती है, जिसके कारण त्वचा में फंगल संक्रमण की संभावना होती है। प्लास्टिक का इस्तेमाल शरीर और पर्यावरण के लिए नुकसानदेह भी होता है। जबकि यह पैड पूरी तरह रोगाणु रहित हैं। आइआइटी दिल्ली के छात्रों द्वारा की गई यह पहल वाकई सराहनीय है।

-डॉ. रीता बख्शी, स्त्री रोग विशेषज्ञ और आइवीएफ एक्सपर्ट, इंटरनेशनल फर्टिलिटी सेंटर, दिल्ली

मेडिटेशन व योग करते हैं बजरंग पूनिया

फिट रहे इंडिया हिट रहें हम

आज के दौर में बच्चों व युवाओं में जंक फूड का खासा क्रेज है जो कि हानिकारक है। वहीं, भारत के स्टार पहलवान बजरंग पूनिया नूनी घी व दही को अपनी फिटनेस का राज मानते हैं। बजरंग की डाइट में अलग-अलग फलों का जूस शामिल है। खेल रत्न अवॉर्ड से सम्मानित बजरंग फिट और तनाव रहित रहने के लिए मेडिटेशन और योग भी करते हैं।

बजरंग के फिटनेस के मंत्र

- सुबह-शाम दूध जरूर पीना
- पर्याप्त आराम करना और समय पर सोना व उठना
- दौड़ लगाना व खेलना जरूरी
- भोजन समय पर व जरूरत के मुताबिक करना

आप क्या खाते हैं?

मैं भोजन पर बड़ा ध्यान देता हूं। भोजन पौष्टिक हो और वजन बढ़ाने वाला नहीं हो। ना तो हमें वजन कम करना है और ना ही बढ़ने देना है। जब मैं भारत में होता हूं तो दही व नूनी घी भोजन में ज्यादा शामिल करता हूं। यह पौष्टिक होता है और फैट नहीं बढ़ाता। अगर प्रशिक्षण शिविर के लिए विदेशों में रहता हूं तो जूस, फल और अंडे का ज्यादा सेवन करता हूं। विदेश में रहते समय भी खाने में दाल ज्यादा शामिल करता हूं।

आपका कोई संदेश?

प्रधानमंत्री ने स्वस्थ रहने के लिए अभी एक मंत्र दिया है। हर व्यक्ति को स्वास्थ्य के लिए दौड़ना व कुछ ना कुछ खेलना चाहिए। खिलाड़ी बनने के लिए नहीं, लेकिन स्वस्थ रहने के लिए।

आप किसी तरह की ज्यादा एक्सरसाइज पसंद करते हैं?

जिस दिन मेट पर कुश्ती अभ्यास नहीं करना होता, उस दिन बास्केटबॉल, फुटबॉल खेलना व दोस्तों के साथ दौड़ लगाना ज्यादा पसंद है।

फिटनेस के लिए क्या जरूरी है?

मैं कभी तनाव नहीं लेता। खुश रहता हूं। कौन मेरे संबंध में क्या कहता है, कभी नहीं सुनता। अपने अभ्यास पर ध्यान देता हूं। आप हैरान होंगे कि मैं कभी मुकाबले से पहले भी तनाव में नहीं रहता कि किस के साथ मुकाबला है। अनुशासित और तनाव रहित जीवन आपको फिट रखेगा।

बजरंग का साप्ताहिक प्लान

सोमवार : सुबह कुश्ती अभ्यास और शाम को बास्केटबॉल, वालीबॉल, फुटबॉल खेलना।

मंगलवार : सुबह-शाम मेट पर कुश्ती का अभ्यास

बुधवार : सुबह स्प्रिंट लगाने की रेस होती है और ऐसे कई दौर चलते हैं।

गुरुवार : अभ्यास व जिम करना

शुक्रवार : सुबह-शाम मेट पर कुश्ती अभ्यास

शनिवार : सुबह क्रास कंट्री दौड़ और शाम को सोना व स्टीम बाथ

रविवार : पूरी तरह आराम। अटल जी की कविताएं सुनना और स्वामी विवेकानंद अन्य स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में पढ़ना।

अनिल भारद्वाज से बातचीत पर आधारित

'हनुमानगढ़ी' में विराजेंगे मुहम्मद अली के बजरंग बली

जागरण विशेष

विजय द्विवेदी, बहराइच

▶ घूरेदेवी मंदिर का कराया जीर्णोद्धार

▶ हनुमानगढ़ी जैसा हनुमान मंदिर बनवा रहे

उत्तर प्रदेश के बहराइच स्थित जैतापुर के मुहम्मद अली देवी मंदिर के साथ ही अब बजरंग बली का मंदिर भी बनवा रहे हैं। अयोध्या के हनुमानगढ़ी की तर्ज पर बन रहे इस मंदिर के लिए राजस्थान से संगमरमर की मूर्ति आ गई है। इसी के साथ इलाके में मुहम्मद अली और साढ़े पांच फीट लंबे उनके बजरंगबली की चर्चा तेज हो गई है।

सिलाई और बिजली मैकेनिक मुहम्मद अली ने 33 खंभों पर बन रहे इस मंदिर के लिए चंदा मांगकर 15 लाख रुपये जुटाए हैं। इससे पहले घूरेदेवी मंदिर के जीर्णोद्धार के लिए उन्होंने आठ लाख रुपये चंदा जुटाए थे। वह बताते हैं कि घूरेदेवी मंदिर के निर्माण के दौरान परिसर में जीर्णशीर्ण हाल में स्थित हनुमान मंदिर पर ध्यान गया। यहीं से बजरंग बली का मंदिर बनवाने की प्रेरणा मिली। इससे पहले घूरेदेवी का मंदिर बनवाने की प्रेरणा 2007 में आए स्वप्न से मिली थी। इस मंदिर में अभी गुंबद का कार्य चल रहा है।

सभी धर्मों का करते हैं आदर : मुहम्मद अली इस्लाम के साथ ही सभी धर्मों का आदर करते हैं। पांचों वक्त का नमाज अदा करने के साथ वह मंदिर में माथा भी टेकते हैं। वह कहते हैं कि धर्म से ताकत मिलती है और धर्म स्थल का निर्माण सबसे पवित्र कार्य है।

मां से विरासत में मिली गंगा-जमुनी तहजीब : मुहम्मद अली को गंगा-जमुनी तहजीब मां बतूल बेगम से विरासत में मिली। मां का घूरेदेवी में विश्वास था। इसीलिए मुहम्मद अली के मन में भी घूरेदेवी के प्रति आस्था हो गई। उम्र के साथ यह आस्था और भी प्रगाढ़ होती गई।

जागरण विशेष की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/jagran-special

मुहम्मद अली जागरण

बॉलीवुड सितारे भी हैं पंजाब के चन्ना के चूड़ों के दीवाने

संडे बॉक्स जरा हटके...

हरीश शर्मा, अमृतसर

पंजाबी परंपरा और संस्कृति में चूड़ा दुल्हन का खास शृंगार है। सुहाग और समृद्धि का प्रतीक है। विवाह के समय दुल्हन को चूड़ा पहनाने की रस्म भी बहुत खास होती है। यूं तो हर जगह कई तरह के चूड़े मिल जाएंगे, लेकिन अमृतसर के चन्ना चूड़े वाले के चूड़ों की चमक देश ही नहीं विदेश तक है। गुरचरण सिंह चन्ना के बनाए चूड़ों की बात ही ऐसी है कि बड़े-बड़े फिल्मी सितारे भी इनके दीवाने हैं। माधुरी दीक्षित, ऐश्वर्या राय और हेमामालिनी की बेटी ईशा देयोल के लिए चन्ना ने ही चूड़ा भेजा था। हेमा मालिनी ने तो चूड़ा लेने के लिए गुरचरण सिंह को खुद अपने घर मुंबई में बुलाया था।

क्यों हैं सब मुरीद : चन्ना की खासियत यह है कि वह ग्राहक की जरूरत व पसंद के मुताबिक चूड़े का डिजाइन तैयार कर देते हैं, इसलिए सब इनके मुरीद हैं। चन्ना के पास 500 रुपये से लेकर 5000 रुपये तक के चूड़े उपलब्ध हैं। उन्होंने बताया कि गरीब परिवारों की लड़कियों की शादी में वह चूड़ा निःशुल्क देते हैं।

माधुरी दीक्षित के साथ गुरचरण सिंह चन्ना। फाइल

बॉलीवुड से लेकर सात समंदर पार तक चमक : चन्ना अभिनेत्री माधुरी दीक्षित के प्रशंसक हैं। वह हर साल माधुरी के जन्मदिन पर केक काटते हैं। माधुरी दीक्षित भी इनके चूड़े की दीवानी हैं। उन्होंने चन्ना को विशेष तौर पर मिलने के लिए बुलाया था। कपिल शर्मा के शो में माधुरी आई थीं तो उन्होंने चन्ना चूड़े वाले का जिक्र किया था। उन्होंने बताया था कि खिलाफ फिल्म में चन्ना चूड़े वाले का बनाया चूड़ा उन्होंने पहना था। उसके बाद अपनी शादी के लिए अमृतसर से ही चूड़ा मंगवाया था। चन्ना चूड़े वाले के पास विदेश से भी चूड़े की मांग आती है। अमेरिका, इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया सहित कई अन्य देशों की लड़कियों को वह चूड़े भेज चुके हैं। हर साल विदेश में बसी औसतन 10 से 12 लड़कियां चूड़ा लेने के लिए आती हैं।

40 साल से चल रहा कारोबार : गुरचरण सिंह चन्ना बताते हैं कि वह करीब 40 साल से इस कारोबार में हैं। उन्होंने 12 साल की उम्र में काम सीखना शुरू कर दिया था। पांच साल तक काम सीखा और 17 साल की उम्र में खुद चूड़े बनाकर बेचने शुरू कर दिए थे। परिवार का इस धंधे से दूर-दूर तक वास्ता नहीं था। उनकी दुकान अमृतसर में सुल्तानविंड रोड पर है।

गुरचरण सिंह चन्ना चूड़े वाले। सौ. गुरचरण

पंजाबी दुल्हन के लिए जरूरी है चूड़ा : प्लास्टिक से बनी सफेद और गहरे कत्थई रंग की 21 चूड़ियों के सेट को चूड़ा कहा जाता है। पहले ये हाथी दांत से बनते थे। हाथी दांत के इस्तेमाल पर पाबंदी के बाद इसे प्लास्टिक से बनाया जाने लगा है। इसमें सफेद चूड़ियों पर क्रिस्टल वर्क (नगीने जड़ना) किया जाता है। आजकल यह कई रंगों में मिलता है। यह माना जाता है कि चूड़े की शुरुआत पंजाबी संस्कृति में हुई। अब तो चूड़ा पूरे भारत में दुल्हनें पहनने लगी हैं। पंजाबी परंपरा के मुताबिक दुल्हन को चूड़ा पहनना लाजिमी है और इसकी एक रस्म होती है। चूड़ा शादीशुदा होने का प्रतीक है। पंजाबी रिवाज के मुताबिक चूड़ा कम से कम 40दिन और अधिकतम एक साल तक पहना जाता है। चूड़े की रस्म शादी के दिन सुबह होती है। जब तक दुल्हन पूरी तरह तैयार न हो जाए, उसे चूड़ा दिखाया नहीं जाता। चूड़ा मामा देते और पहनाते हैं और उस दौरान मां दुल्हन की आंखें बंद कर देती है। एक रात पहले चूड़े को दूध में भिगोकर रखा जाता है। चूड़ा उतारने की भी रस्म होती है। शुभ दिन में चूड़ा उतारा जाता है। दुल्हन को शगुन दिया जाता है। उसकी जगह वह फिर कांच या धातु की चूड़ियां पहनती है।

▶ माधुरी दीक्षित, ऐश्वर्या राय और ईशा देयोल की शादी में यहीं से गया था चूड़ा

देश-दुनिया में प्रसिद्ध है अमृतसर का चूड़ा बाजार

विश्व प्रसिद्ध आध्यात्मिक स्थल श्री हरिमंदिर साहिब के समीप चूड़ा बाजार है, जहां 100 से ज्यादा चूड़ा बेचने वाले हैं। देश-विदेश से आने वाले पर्यटक इस बाजार में आकर चूड़ा जरूर खरीदते हैं। चूड़ा बाजार सहित अमृतसर में कई छोटी-बड़ी मनियारी की दुकानों पर भी चूड़ा बिकता है।

91 साल की हुई फ्रंटियर मेल

1928 में आज ही के दिन अफगान बॉर्डर से शुरू हुआ था सफर, देश की पहली एसी कोच वाली ट्रेन का गौरव इसी को मिला

कभी इस ट्रेन में गर्मी से बचाने के लिए लगती थी बर्फ की सिल्लियां

प्रदीप कुमार सिंह, फिरोजपुर

कभी सुना है कि ट्रेनों में बर्फ की सिल्लियां लगाकर यात्रियों को गर्मी से निजात दिलाई जाती हो? भले ही अजीब लगे, लेकिन यह सच है। 1928 में अफगान बॉर्डर से मुंबई के बीच चलने वाली पहली ट्रेन फ्रंटियर मेल में ऐसा ही किया जाता था। ट्रेन के सभी कोच के नीचे एक बॉक्स बना होता था, जहां बर्फ की इन सिल्लियों को रखा जाता। इन बॉक्स के ऊपर लगा पंखा अंदर बैठे यात्रियों तक ठंडक पहुंचाता था।

सिल्लियों के पिघलते ही अगले स्टेशन पर नई सिल्लियां लगा दी जातीं। ट्रेन में ज्यादातर यात्री लंदन से भारत आने वाले ब्रिटिश अफसर होते थे। महात्मा गांधी सहित सुभाष चंद्र बोस ने भी इसमें सफर किया है। 1934 में ट्रेनों में एसी लगाने का काम शुरू हुआ तो भारत की पहली एसी कोच वाली ट्रेन का गौरव भी इसी को प्राप्त हुआ। 1996 में इसका नाम बदलकर गोल्डन टेंपल एक्सप्रेस कर दिया गया और ट्रेन का आधुनिकीकरण हो गया। एक सितंबर को यह ट्रेन 91 साल पूरे कर रहे है।

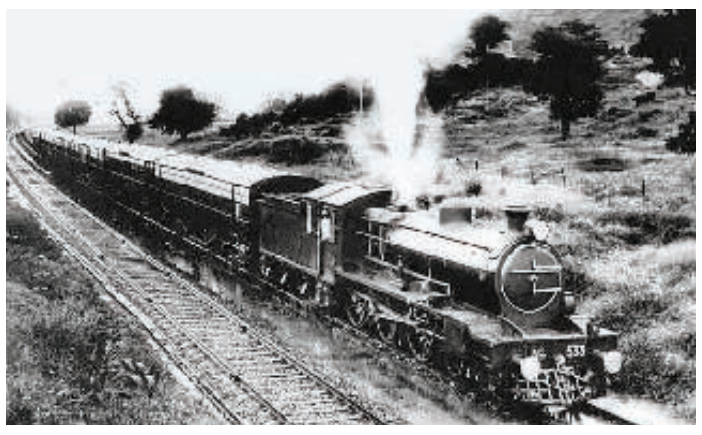

मुंबई से पेशावर तक चलने वाली फ्रंटियर मेल को भाप के इंजन के साथ चलाया जाता था। फाइल

1996
में नाम बदलकर कर दिया गोल्डन टेंपल मेल, लंदन से आने वाले अंग्रेजों को लाती थी ट्रेन

1934
में ट्रेनों में एसी लगाने का काम शुरू हुआ तो भारत में इस ट्रेन में सबसे पहले एसी लगाया गया। समय से चलना इस ट्रेन की खासियत है।

फ्रंटियर मेल में यात्रियों को गर्मी से राहत के लिए कोच के नीचे लगे बॉक्स में बर्फ की सिल्लियां लगाते हुए। फाइल फोटो

इसलिए पड़ा था 'फ्रंटियर मेल' नाम : रेलवे मंडल फिरोजपुर के डीएमओ एसपी सिंह भाटिया बताते हैं कि मुंबई से पेशावर तक चलने के कारण ही ट्रेन का नाम फ्रंटियर मेल पड़ा। शुरुआती दिनों में अधिकांशतः ब्रिटिश साम्राज्य के अधिकारी ही यात्रा करते थे। लंदन से भारत आने वाले अंग्रेजों के जहाज के साथ ही इस ट्रेन का टिकट जुड़ा होता था। आजादी से पहले तक ट्रेन बंबई, बड़ौदा, रतलाम, मथुरा, दिल्ली, अमृतसर, लाहौर, रावलपिंडी से होते हुए पेशावर तक जाती थी। ट्रेन को ग्रेट इंडियन पेनिनसुला रेलवे ने पंजाब मेल के जवाब में शुरू किया था। तब यह रेलगाड़ी मुंबई के समुद्र तट के किनारे बने बल्लार्ड पियर मोल रेलवे स्टेशन से चलती थी। जब बल्लार्ड स्टेशन को बंद किया गया तो इसका आरंभिक स्टेशन कोलाबा कर दिया गया।

..ताकि समाचारों से अपडेट रहें यात्री : जिस समय ट्रेन चलाई गई, उस समय भले ही इंटरनेट का जमाना नहीं था, लेकिन यात्रियों को समाचारों से अपडेट रखने के लिए समाचार एजेंसी रायटर के साथ टेलीग्राफ न्यूज का विशेष अनुबंध था। देश की यह पहली ट्रेन थी जिसमें अंग्रेज अधिकारियों के लिए रेडियो की व्यवस्था थी।

2335 किलोमीटर की यात्रा 72 घंटों में होती थी पूरी

मुंबई से पेशावर तक 2335 किलोमीटर का सफर यह ट्रेन 72 घंटे में पूरा करती थी। ट्रेन पूरी तरह से टाइम बाउंड थी। बकौल एसपी सिंह भाटिया, ब्रिटिश काल के समय एक बार ट्रेन 15 मिनट लेट हो गई तो इसके लिए उच्च अधिकारियों के नेतृत्व में जांच बैठा दी गई। 1930 में 'द टाइम्स' ने एक्सप्रेस ट्रेनों में इसे सबसे प्रसिद्ध बताया है। इसमें सात कोच होते थे। चार यात्रियों के लिए, एक पैंट्री व दो पार्सल कोच थे। आजादी के बाद ट्रेन अमृतसर-मुंबई के मध्य 1896 किलोमीटर रूट पर नियमित रूप से आवागमन कर रही है। अभी गोल्डन टेंपल के नाम से चलने वाली ट्रेन में 24 कोच हैं।

28 खुशहाल देशों की सूची में भारत नौवें स्थान पर है। हैप्पीनेस इंडेक्स के ताजा सर्वे में भारत को कुल 77 फीसद अंक मिले हैं, जो पिछले साल के 83 फीसद से कम हैं। 86 फीसद अंक के साथ ऑस्ट्रेलिया और कनाडा शीर्ष पर हैं।

'मान' गए लद्दाख

लद्दाख की धरती से चांद-तारों की सैर

14 हजार फीट की ऊंचाई पर बना दुनिया का पहला एस्ट्रो विलेज

15 गांवों की 30 महिलाएं करती हैं यहां बने पांच होमस्टे का संचालन

10 इंच के ऑटोमेटिक टेलीस्कोप से पर्यटकों को कराती हैं ब्रह्मांड के ग्रहों का दीदार

बिग न्यूज

विवेक सिंह, जम्मू

धरती पर रहने वालों को ब्रह्मांड के नजारे हमेशा से आकर्षित करते रहे हैं। लोगों की इस चाह को पर्यटन में बदलने का विचार आया और जन्म हुआ लद्दाख की धरती पर दुनिया के पहले एस्ट्रो विलेज का। यहां के मान गांव में देश ही नहीं विदेश से भी पर्यटक चांद, तारों और ग्रहों के शानदार नजारों को आंखों में कैद करने की हसरत लिए आ रहे हैं और लौट रहे हैं शानदार अनुभव के साथ यह कहकर-यहां फिर जरूर आएंगे...

मान गांव में तारे देखने के लिए लगाया गया टेलीस्कोप। फाइल

एक हसीन वादी अपने आस-पास फैली खूबसूरती से पर्यटकों को आकर्षित करती है। कैसा हो अगर वह जगह सैकड़ों-हजारों प्रकाशवर्ष दूर के दिलकश और रहस्यमय नजारों को भी आपके बेहद करीब ले आए? निःसंदेह सोने पर सुहागा। हर घुमक्कड़ को ऐसे ही ठिकाने की तलाश रहती है और उनकी इस हसरत को पूरा कर रहा है लद्दाख का एक गांव 'मान'।

14,000 फीट की ऊंचाई पर बना मान गांव अपनी ऊंचाई, शुष्क जलवायु और साफ सुथरे वातावरण के लिए हमेशा से एस्ट्रोनॉमी के लिए एक शानदार स्थान रहा है। यहां रात को आसमान में तारों और ग्रहों को आसानी से पहचाना जा सकता है। यहां से जूपिटर के छल्ले देख सकते हैं। किस्मत अच्छी हो तो आकाशगंगा भी दिख जाती है। स्थानीय लोगों ने लद्दाख में रात के आसमान को संसाधन के रूप में देखा। इसे रोजगार का जरिया बनाने की ठानी और एस्ट्रो होमस्टे बनाए। सामाजिक संस्था ग्लोबल हिमालयन एक्सपेडिशन ने 2013 में स्थानीय लोगों को एस्ट्रो होमस्टे बनाने की राह दिखाई। संस्था ने इंटरनेशनल एस्ट्रोनॉमिकल यूनियन के साथ इस प्रोजेक्ट पर काम शुरू किया। प्रोजेक्ट को नाम दिया एस्ट्रोनॉमी फॉर हिमालयन लिवलीहुड। इस तरह तैयार हुआ दुनिया का पहला एस्ट्रो विलेज। संस्था ने पहले एस्ट्रो विलेज में पांच होमस्टे बनाए और 15 गांवों की 30 महिलाओं को इन्हें चलाने का प्रशिक्षण दिया। अब ये महिलाएं टेलीस्कोप ऑपरेट करना जानती हैं। इन्हें आकाशीय घटनाओं की अच्छी समझ हो गई है। ये पर्यटकों के ठहरने का इंतजाम कराती हैं। साथ ही उन्हें ग्रामीण जीवन से रूबरू भी करवाती हैं। लद्दाख की विश्व प्रसिद्ध पैंगोंग टीसो के पास बसे इस गांव के हर होमस्टे की खिड़की से झील का नजारा दिखता है। यह झील 14,270 फीट की ऊंचाई पर है। इस खूबसूरत झील के पास रात को तारों का दीदार पर्यटकों को अद्भुत अहसास दिलाता है।

मान गांव के होमस्टे में पर्यटक को टेलीस्कोप से अंतरिक्ष के बारे में बताती लद्दाखी महिलाएं। फाइल

स्थानीय लोगों में जगी उम्मीद: जम्मू-कश्मीर के पुनर्गठन के बाद लद्दाख को केंद्र शासित प्रदेश (यूटी) बनाने का फैसला हो गया है। ऐसे में अब लद्दाख के पर्यटन को बढ़ावा मिलने से एस्ट्रो विलेज में आने वाले पर्यटकों की संख्या का बढ़ना तय है। गांव के निवासी दोरजे का कहना है कि यूटी बनने के बाद पर्यटन से जुड़े लोगों में नई उम्मीद पैदा हुई है। पहले लद्दाख के पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कुछ खास नहीं किया जाता था। एस्ट्रो विलेज इस कड़ी में शुरुआत है। मान गांव की चार महिलाओं को 10 इंच का ऑटोमेटिक ट्रैकिंग टेलीस्कोप चलाने की ट्रेनिंग दी गई। अब और महिलाएं भी प्रशिक्षित हो गई हैं। होमस्टे की संख्या भी बढ़ाई जानी है, ताकि ज्यादा से ज्यादा पर्यटकों को यहां के खूबसूरत नजारों का गवाह बनने का मौका मिल सके।

बढ़ रही है पर्यटकों की संख्या: यूं तो लद्दाख हमेशा से पर्यटकों की पसंद में शुमार रहा है, लेकिन इस एस्ट्रो विलेज ने यहां पर्यटन को बढ़ावा दिया है। इस वर्ष पर्यटन सीजन के तीन महीनों में 300 के करीब पर्यटक यहां पर पहुंचे। इससे करीब 75,000 रुपये की आमदनी हुई। ज्यादातर पर्यटक नाइट स्काई वॉचिंग के लिए यहां पहुंच रहे हैं। लिहाजा लद्दाख से सितारे देखने की ललक स्थानीय लोग के लिए बेहतर भविष्य व आमदनी का जरिया बन रही है।

कहां स्थित है: मान गांव लेह से 70 किलोमीटर की दूरी पर है। टैक्सी से पहुंचने में छह घंटे का समय लगता है। लद्दाख आने वाले अधिकतर पर्यटक पैंगोग झील तक पहुंचते हैं। वहां से आधे घंटे की ड्राइव से आठ किलोमीटर दूर मान गांव पहुंचा जा सकता है। वहां तक पहुंचने के लिए 17,590 फीट ऊंचे चांगला पास से गुजरना पड़ता है। गांव की शांति पर्यटकों को हैरान करती है। मान गांव के एक ओर पैंगोग झील है तो पीछे पहाड़ियां। इस गांव में शोर, प्लास्टिक प्रदूषण का नाम-ओ-निशान तक नहीं है। इतने शांत, साफ सुथरे माहौल में तारे देखने का मजा ही कुछ और है। इस गांव में 35 परिवार खेतीबाड़ी कर गुजर-बसर करते हैं। अब पर्यटकों के आने से रोजगार के नए साधन खुल रहे हैं।

लद्दाख में पर्यटन की अपार संभावनाएं : जामयांग

लद्दाख के भाजपा सांसद जामयांग सेरिंग नांग्याल का कहना है कि लद्दाख में पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं। लद्दाख में कुदरत की खूबसूरती से मालामाल कई ऐसे इलाके हैं जो पर्यटन से अभी अछूते हैं। यहां पर्यटन को बढ़ावा मिलने से लोग आर्थिक रूप से मजबूत होंगे। कश्मीर से जुड़ा होने के कारण लद्दाख को अब तक नजरअंदाज किया गया। अब लद्दाख के यूटी बनने के बाद क्षेत्र में उन्नति व खुशहाली का दौर आएगा। लद्दाख के दूरदराज के इलाकों में पर्यटन को बढ़ावा मिलना तय है।

मान गांव के होमस्टे के बारे में पर्यटकों को जानकारी देने के लिए लगाया गया बोर्ड। फाइल

धरती पर हरियाली फैलाने वाला भगीरथ

बदलती तस्वीर

नेशनल डेस्क, नई दिल्ली

जंगलों में दावानल की बढ़ती घटनाओं से चिंतित विकसित और विकासशील देशों में पर्यावरण संरक्षण की बात एक बार फिर जोरशोर से हो रही है, वहीं दूसरी तरफ भारत के पूर्वी राज्य मणिपुर के एक पर्यावरण प्रेमी अकेले ही वनों को बचाने और बढ़ाने में जुटा हुआ है। आइए जानते हैं नौकरी छोड़कर 18 वर्षों से जंगल आबाद करने में जुटे 46 वर्षीय **मोइरंगथेम लोइया** के बारे में...

आग की तपिश से बर्बाद होते अमेजन के जंगलों के समाचारों के बीच पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर के मोइरंगथेम लोइया का पर्यावरण प्रेम ठंडी फुहारों जैसा है। मोइरंगथेम के मुताबिक, उन्हें बचपन से ही पेड़-पौधे और जंगल अपनी ओर आकर्षित करते थे। प्रारंभिक शिक्षा पूरी कर आगे की पढ़ाई करने के लिए कॉलेज में दाखिला लिया। इस कारण घर व गांव दूर हो गया। पढ़ाई पूरी कर घर लौटे तो इलाके में घने जंगल तकरीबन साफ हो चुके थे। यह स्थिति दुखदायी थी। स्थानीय लोगों ने चावल की खेती करने के लिए जंगलों को साफ कर दिया था और पौधों तथा झाड़ियों में आग लगा दी थी। इस बात से उनका मन बेहद क्षुब्ध था।

नौकरी लग जाने के कारण वह फिर प्रकृति से दूर हो गए, लेकिन हरियाली और पेड़-पौधों से दूर होने के कारण मन अशांत रहने लगा। आखिरकार उन्होंने मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव की नौकरी से इस्तीफा दे दिया और वनसंपदा को बचाने का फैसला किया। सबसे पहला काम वन क्षेत्र तैयार करने के लिए इलाके की तलाश करना था। प्रयास रंग लाए और उनकी तलाश मणिपुर के पश्चिमी इंफाल क्षेत्र के मारू लांगोल पहाड़ी श्रृंखला पर खत्म हुई।

मोइरंगथेम के मुताबिक, लांगोल के पहाड़ को अपना घर बनाया और वहीं झोपड़ी बनाकर रहना शुरू कर दिया। वर्ष 2002 से पेड़ लगाने का काम शुरू किया। शिकारियों और जलावन (जलाने के लिए लकड़ियां) बीनने वालों के रूप में चुनौतियां कम न थीं। उन्हें वनों की आवश्यकता और महत्ता के बारे में बताने और समझाने में खासी मशक्कत करनी पड़ी। आखिरकार उन लोगों को बात समझ में आ गई। इसके बाद धीरे-धीरे स्थितियां अनुकूल होती गईं और करीब दो दशकों के प्रयास का फल 300 एकड़ के बड़े इलाके में जंगल के रूप में दुनिया के सामने है।

वह बताते हैं कि इस विशाल वनक्षेत्र में पौधों की 250 से अधिक प्रजातियां हैं। केवल बांस की ही 25 से ज्यादा प्रजातियां हैं। उन्होंने कहा कि जंगल खड़ा होने से वन्यजीव भी यहां वास करने लगे। मौजूदा समय में यहां बड़ी संख्या में विभिन्न प्रकार के पक्षी, सांप और जंगली जानवर रहते हैं। हरियाली की गंगा बहाने में जुटे इस भगीरथ का कुनबा अब बढ़ना शुरू हो गया है। मोइरंगथेम ने मित्रों और पर्यावरण प्रेमियों का एक छोटा सा समूह तैयार किया है। समूह का एकमात्र उद्देश्य वनक्षेत्र में इजाफा करना है। सभी लोगों पूरी शिद्दत के साथ इस काम को अंजाम तक पहुंचाने में लगे हुए हैं।

कोमलिका बारी : बांस के धुनष से शुरू किया अभ्यास, बनीं चैंपियन

इनसे मिलिए

बीते सप्ताह टाटा तीरंदाजी अकादमी की कोमलिका बारी ने स्पेन की राजधानी मैड्रिड में हुई विश्व युवा तीरंदाजी चैंपियनशिप के फाइनल में स्वर्णिम निशाना लगाकर इतिहास रच दिया। फाइल में जापान की वाका सोनोडा पर 7-3 से जीत के बाद महिला कैडेट रिकर्व श्रेणी में स्वर्ण पदक जीतने वाली इस खिलाड़ी के अब तक के सफर पर एक नजर...

जितेंद्र सिंह, जमशेदपुर

अगर इरादा मजबूत हो तो बड़े से बड़े लक्ष्य को भेदा जा सकता है। कुछ ऐसा ही कर दिखाया है बीते सप्ताह झारखंड के जमशेदपुर के बिरसानगर की रहने वाली कोमलिका बारी ने। उन्होंने स्पेन की राजधानी मैड्रिड में हुई विश्व युवा तीरंदाजी चैंपियनशिप के फाइनल में जापान की वाका सोनोडा को हराते हुए सोने पर निशाना साधा। एक बेहद साधारण परिवार में जन्मी कोमलिका के परिवार ने कभी सोचा भी नहीं था कि उनकी बेटी एक दिन दुनिया में देश का परचम बुलंद करेगी।

कोमलिका के पिता घनश्याम बारी मानगो के डिमना रोड में छोटा सा होटल चलाकर परिवार का भरण-पोषण करते हैं। वह बताते हैं, बचपन से ही बेटी की खेलों के प्रति गजब की रुचि थी। शुरुआत एथलेटिक्स से की। मां लक्ष्मी बारी ने कहा, ऐसे खेल में कदम रखो, जिसमें कॅरियर लंबा हो। सलाह मशविरे के बाद कोमलिका ने तय किया कि वह तीरंदाजी में कॅरियर बनाएंगी।

इस तरह शुरू हुआ सफर: पिता घनश्याम के मुताबिक, 17 साल की कोमलिका ने 10 साल की उम्र से ही बांस के तीर-धनुष से तीरंदाजी के क्षेत्र में हाथ आजमाने शुरू कर दिए थे। उसने दिन-रात मेहनत की और इस खेल को ही अपना जीवन बना लिया। कोमलिका को जानने वाले खिलाड़ी और कोच बताते हैं कि अपनी गलतियों को लगातार सुधारने और सीखने की क्षमताओं ने कोमलिका को इस बुलंदी तक पहुंचाया। 2016 में टाटा तीरंदाजी अकादमी में आने से पहले वह बांस के तीर-धनुष से आइएसडब्ल्यूपी ग्राउंड में अभ्यास करती थीं।

साइकिल से आती थीं सेंटर: कोमलिका के शुरुआती कोच सुशांतो ने बताया कि 2012 में तार कंपनी स्पोर्ट्स कांप्लेक्स में समर कैंप का आयोजन किया गया था, जिसमें कोमलिका शिक्षा निकेतन की छात्रा के रूप में शामिल हुई। वह अपने चचेरे भाई राजकुमार बारी के साथ रोज साइकिल से यहां अभ्यास करने आती थी। एक महीने का समर कैंप तो खत्म हो गया, लेकिन कोमलिका ने अभ्यास जारी रखा और वह सेंटर की नियमित प्रशिक्षु बन गई। 2016 में टाटा तीरंदाजी अकादमी की द्रोणाचार्य पुरस्कार कोच पूर्णिमा की नजर कोमलिका पर पड़ी और उन्होंने उसे अकादमी में शामिल कर लिया। बाद में पूर्णिमा ने उसे रिकर्व तीरंदाजी सिखाया।

सीनियर तीरंदाजों के साथ अभ्यास करने से बढ़ा आत्मबल: कोमलिका ने दैनिक जागरण को फोन पर बताया कि टाटा तीरंदाजी अकादमी में जयंत तालुकदार, दीपिका कुमारी जैसे सीनियर तीरंदाजों के साथ अभ्यास करने से उनका आत्मबल बढ़ा। सही मायने में टाटा तीरंदाजी अकादमी पहुंचने के बाद निशानेबाजी पर ध्यान दिया। उन्होंने कहा, सीनियर तीरंदाजों के साथ अभ्यास के दौरान मुझे पता चला कि शांति व धैर्य कैसे बनाए रखना है और विभिन्न परिस्थितियों को कैसे संभालना है।

नजर में लक्ष्य, दीवार पर नोट्स

टॉपर के टिप्स

विक्सन सिक्रोड़िया, कानपुर

सीएस प्रोफेशनल की परीक्षा में बीते सप्ताह टॉप करने वालीं उत्तर प्रदेश के कानपुर की **तान्या कथूरिया** बता रही हैं अपनी सफलता का राज...

किसने कहा है आसमां में सुराख नहीं हो सकता
बस एक पत्थर तबीयत से उछालो यारों...

किताबों को अपना मित्र बनाने वालीं तान्या कथूरिया ने अपनी मेहनत का एक पत्थर बड़ी तबीयत से उछाला और उसने आसमां में सुराख कर दिया। यह आसमां है, द कंपनी सेक्रेटरी ऑफ इंडिया की प्रोफेशनल परीक्षा। उत्तर प्रदेश के कानपुर की तान्या ने बीते सप्ताह इस परीक्षा में व्यावसायिक संवर्ग में देश में टॉप किया है।

सीएस प्रोफेशनल की परीक्षा में अखिल भारतीय स्तर पर अव्वल आने वालीं तान्या सीएस फाउंडेशन की भी टॉपर रही हैं। सीएस एक्जीक्यूटिव में भी उन्होंने देश में 12वीं रैंक प्राप्त की थी। उनकी सफलता का मंत्र योजनाबद्ध अध्ययन व सोशल मीडिया से दूरी बनाई रखना है। तान्या 12वीं तक विज्ञान वर्ग की छात्रा रहीं। इसके बाद उनके जीवन में एक ऐसा टर्निंग प्वाइंट आया, जिसने उनकी दिशा बदल दी। अखबार में सीएस टॉपर का इंटरव्यू पढ़ने के बाद उन्होंने स्नातक में वाणिज्य संकाय को चुना। बीकॉम करने के साथ तीन वर्ष के समय अंतराल में लगातार सीएस फाउंडेशन, एक्जीक्यूटिव व प्रोफेशनल की परीक्षा में सफलता प्राप्त की। तान्या बताती हैं कि स्नातक व प्रोफेशनल कोर्स की पढ़ाई एक साथ करने लिए उन्होंने दोनों परीक्षाओं की तैयारी के लिए योजनाबद्ध तरीके से अध्ययन किया। खुद नोट्स बनाए। उन्हें रोजाना दोहराने के लिए दीवारों पर चस्पा कर दिया। बीच-बीच में उन पर नजर डाल लेती थीं। कुछ ही समय में वह याद होते गए। प्रश्नों को तैयार करने के लिए उनका लिखकर अभ्यास करतीं। एक निश्चित समय में प्रश्नों को हल करने का लक्ष्य रखतीं। यह उनकी रोजाना की दिनचर्या थी।

बैडमिंटन व मूवी का शौक: कानपुर के लालबंगला की घाऊखेड़ा निवासी तान्या बताती हैं कि उन्हें बैडमिंटन खेलने व मूवी देखने का शौक है। पढ़ाई के बीच में मूड फ्रेश करने के लिए वह माता-पिता व बहन के साथ घर पर ही मूवी देखना पसंद करती हैं। जहां तक दोस्तों का सवाल है तो उनकी संख्या बहुत कम है और उनसे मिलना भी कभी-कभी हो पाता है क्योंकि वे भी अपनी पढ़ाई में व्यस्त रहते हैं। तान्या कहती हैं, 'हमें वही प्रोफेशन चुनना चाहिए, जिसमें हमारी रुचि हो। जिसे पढ़ने में सबसे ज्यादा मजा आए। अगर रुचि होगी तो सफलता मिलना आसान होगा।'

पानी की कमी से जूझ रही दुनिया की एक चौथाई आबादी

जल संकट वर्तमान में वैश्विक समस्या बनता जा रहा है। वर्ल्ड रिसोर्स इंस्टीट्यूट के हाल ही में किए गए एक अध्ययन में इसकी स्थिति पर प्रकाश डाला गया है और साथ ही इससे बचने के तरीके भी सुझाए गए हैं...

17 देशों की सूची में भारत का 13वां स्थान

दुनियाभर की एक चौथाई आबादी वर्तमान में पानी की भारी किल्लत की जूझ रही है। वर्ल्ड रिसोर्स इंस्टीट्यूट (डब्ल्यूआरआइ) ने दुनियाभर के देशों में पानी की किल्लत को देखते हुए एक अध्ययन किया है। पानी की परेशानी के अनुसार देशों को नंबर दिए हैं और उनको क्रम में रखा है। डब्ल्यूआरआइ की ओर से जारी रिपोर्ट में 17 देशों को गंभीर जल संकट वाला देश बताया गया है। इनमें भारत 13वें स्थान पर है। डब्ल्यूआरआइ ने बताया कि भारत के लिए ज्यादा चिंता की बात इसलिए है, क्योंकि यहां की आबादी बाकी 16 देशों की कुल आबादी से भी तीन गुना अधिक है।

चेन्नई से भी ज्यादा किल्लत

डब्ल्यूआरआइ ने बताया कि भारत के कई स्थानों पर पानी की समस्या चेन्नई से भी ज्यादा है। चेन्नई में हाल ही में पानी की भारी किल्लत सामने आई थी। इसके बाद नीति अयोग ने कहा था, 'भारत अपने इतिहास के सबसे बड़े जल संकट से पीड़ित है और लाखों लोगों की आजीविका खतरे में है।' भारत में नदियों और झीलों के अलावा भूजल स्रोत बड़े पैमाने पर हैं, जो सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध कराते हैं। 1990 से 2014 के बीच उत्तर के क्षेत्रों में भूजल का स्तर प्रतिवर्ष आठ सेमी की दर से गिरा है।

सुझाए ये रास्ते

डब्ल्यूआरआइ ने भारत के जल शक्ति मंत्रालय द्वारा पानी की किल्लत से निपटने के लिए उठाए गए कदमों पर ध्यान देते हुए सुझाव दिया है कि भारत सिंचाई के लिए कम से कम पानी का उपयोग करके, वर्षा जल का संचय, झीलों का संरक्षण और भूगर्भ जल स्रोतों को रिचार्ज कर पानी के संकट से निपटा जा सकता है।

जलवायु परिवर्तन बढ़ाएगा परेशानी

डब्ल्यूआरआइ की रिपोर्ट में बताया गया है कि जलवायु परिवर्तन से भविष्य में यहां पर स्थितियां और विकट ही होंगी। विश्वबैंक के अनुसार, इस क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन से होने वाली पानी की कमी से बड़ी आर्थिक क्षति की संभावना है। यह क्षति 2050 तक वार्षिक जीडीपी का छह से 14 प्रतिशत तक हो सकती है।

गंभीर जल संकट वाले देश

नंबर	देश	स्कोर
1.	कतर	4.97
2.	इजरायल	4.82
3.	लेबनान	4.82
4.	ईरान	4.57
5.	जार्डन	4.56
6.	लीबिया	4.55
7.	कुवैत	4.43
8.	सऊदी अरब	4.35
9.	इरीट्रिया	4.33
10.	यूएई	4.26
11.	सैन मैरिनो	4.14
12.	बहरीन	4.13
13.	भारत	4.12
14.	पाकिस्तान	4.05
15.	तुर्कमेनिस्तान	4.04
16.	ओमान	4.04

यह है स्थिति

बढ़ती मांग के कारण विश्वस्तर पर 1960 के बाद से पानी की निकासी दोगुनी से अधिक हो गई है। विश्वभर में 17 देश ऐसे हैं जहां भूजल के उपलब्ध संसाधनों का 80 फीसद तक दोहन किया जाता है। वहीं, 44 देश ऐसे हैं जहां पर पानी के उपलब्ध संसाधनों का 40 फीसद तक दोहन किया जाता है। सबसे अधिक पानी की किल्लत वाले 17 देशों में से 12 मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका के हैं। यह क्षेत्र सूखा और गर्म है इसलिए यहां पर पानी की उपलब्धता कम है, लेकिन मौजूदा समय में पानी की बढ़ती मांग से यहां किल्लत बहुत बढ़ गई है।

बिगड़ रहे हैं हालात

डब्लूआरआइ ने बताया कि अभी जिन देशों में पानी की उतनी किल्लत नहीं है वहां भी कुछ हिस्सों में स्थितियां बिगड़ रही हैं। जैसे इस लिस्ट में 48वें नंबर पर आने वाले दक्षिण अफ्रीका के वेस्टर्न केप और 71 नंबर पर आने वाले अमेरिका के न्यू मेक्सिको में पानी को लेकर दिक्कतें बढ़ने लगी हैं। डब्लूआरआइ ने इस लिस्ट को बनाने के लिए एक्वाडक्ट टूल का उपयोग किया जो पानी के जोखिम के 13 संकेतकों का उपयोग करके देश की स्थिति का निर्धारण करता है। इसमें प्रत्येक देश को स्कोर प्रदान कर उनका क्रम निर्धारित किया गया है।

अगरबत्ती के इंपोर्ट पर प्रतिबंध

नई दिल्ली, प्रेट्र : सरकार ने अगरबत्ती और इस तरह के दूसरे प्रोडक्ट के इंपोर्ट पर प्रतिबंध लगा दिया है। चीन और वियतनाम जैसे देशों से इसके इंपोर्ट में बेतहाशा इजाफे को देखते हुए यह प्रतिबंध लगाया गया है। नए नियमों के मुताबिक इस तरह के प्रोडक्ट को इंपोर्ट करने के लिए सरकारी अनुमति की जरूरत होगी। डायरेक्टर जनरल ऑफ फॉरेन ट्रेड (डीजीएफटी) के मुताबिक अगरबत्ती और इस तरह के दूसरे जलने वाले खुशबूदार उत्पादों के इंपोर्ट की पॉलिसी में सुधार किया गया है।

बैंकों का विलय, एफडीआइ नियमों में ढील और सरकार के पैकेज से इकोनॉमी की हालत सुधरने की पूरी उम्मीद है। आरबीआइ भी अपनी तरफ से स्थिति ठीक करने में लगा है।

— संदीप सोमानी
प्रेसिडेंट, फिक्की

दो-टूक ▶ पीएमईएसी अध्यक्ष ने नकारात्मक सोच वालों पर साधा निशाना

चालू वित्त वर्ष में 6.5 प्रतिशत ग्रोथ रेट का अनुमान : देबरॉय

कहा – निराशा का माहौल बनाने वाले कर रहे देश का नुकसान

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

चालू वित्त वर्ष (2019-20) की पहली तिमाही यानी अप्रैल-जून अवधि में जीडीपी की ग्रोथ रेट भले ही घटकर पांच प्रतिशत पर आ गई हो, लेकिन आने वाली तिमाहियों में इसके सुधरने की पूरी उम्मीद है। प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद (पीएमईएसी) के चेयरमैन बिबेक देबरॉय ने इसकी उम्मीद जताते हुए कहा है कि चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही की अपेक्षा दूसरी छमाही में ग्रोथ रेट अधिक रहेगा। इससे जीडीपी वृद्धि दर इस पूरे वर्ष के लिए 6.5 प्रतिशत तथा अगले वित्त वर्ष में सात प्रतिशत रहने का अनुमान है।

देबरॉय ने जोर देकर कहा, 'जो लोग निराशा का माहौल बना रहे हैं वे बहुत नुकसान कर रहे हैं। रचनात्मक आलोचना और सुझावों का स्वागत है। ऐसे में चिंता और निराशा के संदेशों से बचना चाहिए।' चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही के जीडीपी आंकड़ों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए उनका कहना था, 'अर्थव्यवस्था के बारे में बेसिर-पैर की नकारात्मक बातें फैलाई जा रही हैं। यह सच है कि ग्लोबल अनिश्चितता के चलते भारत के ग्रोथ रेट को प्रमुखता से बढ़ाने का जिम्मा अकेले नेट एक्सपोर्ट नहीं उठा सकता। इसके बावजूद वित्त वर्ष 2019-20 में देश की विकास दर 6.5 से सात प्रतिशत तक रहने का अनुमान है। ग्रोथ रेट का का अनुमान सरकारी संस्थानों या सरकार के लिए काम करने वालों ने नहीं लगाया है। सरकार से बाहर की एजेंसियों ने भी इसी तरह का अनुमान प्रकट किया है। जब दुनिया में कई देश पॉजिटिव ग्रोथ रेट के लिए संघर्ष कर रहे हैं, हमें भारत की 6.5 से सात प्रतिशत के ग्रोथ रेट को हल्के में लेकर खारिज नहीं करना चाहिए।'

उल्लेखनीय है कि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष : सरकार भी मानती है कि गरीबी दूर करने और नौकरियां बढ़ाने के लिए ग्रोथ रेट का अधिक होना जरूरी है। देबरॉय ने कहा कि सरकार ने जो सुधार किए हैं वे आर्थिक गतिविधियों में उतार-चढ़ाव और संस्थागत पहलू के सवालों का जवाब हैं। देबरॉय ने कहा, 'अर्थशास्त्री जब संस्थागत बाधाओं का जिक्र करते हैं तो वे अक्सर उन मुद्दों का जिक्र करते हैं जो राज्य सूची या समवर्ती सूची में शामिल हैं। कई बार ये विधायिका या न्यायपालिका से संबंधित होते हैं। चूंकि ये सुधार जटिल हैं, इसलिए ये एक दिन में नहीं बल्कि धीरे-धीरे होंगे।'

गौरतलब है कि बीते दो सप्ताह में केंद्र सरकार ने इकोनॉमी को मजबूती और ग्रोथ रेट को गति देने के लिए दो बार उपायों की घोषणा की है। देबरॉय ने वित्तीय क्षेत्र और टैक्स की प्रक्रियाओं में सुधारों की ओर ध्यान दिलाते हुए कहा कि जीएसटी काउंसिल के जरिये इनडायरेक्ट टैक्स सुधार होंगे जबकि डायरेक्ट टैक्स पर टास्क फोर्स ने अपनी रिपोर्ट सौंप दी है। सरकार ने सार्वजनिक उपक्रमों के निजीकरण, फिस्कल कंसोलिडेशन और केंद्रीय योजनाओं पर खर्च की समीक्षा का इरादा भी जाहिर किया है। इकोनॉमी के आधार स्तंभ मजबूत हैं। ये उपाय अगली कुछ तिमाहियों में परिणाम दिखाने शुरू कर देंगे।

प्रतीकात्मक

इनका यह अनुमान

- आइएमएफ ने चालू वित्त वर्ष में भारत का ग्रोथ रेट सात प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया है। – एशियाई विकास बैंक (एडीबी) ने भी जीडीपी ग्रोथ रेट इतना तक रहने की संभावना जताई है
- वर्ल्ड बैंक ने चालू वित्त वर्ष में 7.5 प्रतिशत तक विकास दर का अनुमान लगाया है
- भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआइ) के अनुमानों के मुताबिक चालू वित्त वर्ष में 6.9 पर्सेंट ग्रोथ रेट रहने वाला है।

ग्राहकों को घर से शोरूम तक लाने में जुटीं ऑटो कंपनियां

ग्रेट इंडियन फेस्टिवल सीजन

ऑटो कंपनियां विशेष ऑफर के साथ तैयार

ऑटो लोन के लिए भी कंपनियों की पूरी तैयारी

नितिन प्रधान ● नई दिल्ली

सरकार की तरफ से बीएस-4 गाड़ियों को लेकर आए स्पष्टीकरण के बाद ऑटोमोबाइल कंपनियों ने अब ग्राहकों को लुभाने की तैयारियां शुरू कर दी हैं। अब तक कार व दोपहिया वाहन खरीदने से हिचक रहे ग्राहकों के लिए कंपनियां इस फेस्टिवल सीजन में न केवल आकर्षक पैकेज लेकर आने की तैयारी में हैं, बल्कि ग्राहकों के बीच जाकर नई बनी स्थितियों की जानकारी भी दे रही हैं। दक्षिण में ओणम और पश्चिम भारत में गणेश चतुर्थी से शुरू हो रहे फेस्टिवल सीजन को लेकर कुछ कंपनियां ऑफर लेकर भी आई हैं।

गत 23 अगस्त को ही सरकार ने स्पष्ट किया कि अगले वर्ष 31 मार्च तक रजिस्टर होने वाले सभी बीएस-4 वाहन रजिस्ट्रेशन की पूरी अवधि तक मान्य होंगे। ऑटो कंपनियों का मानना है कि इससे भ्रम के बादल छंट गए हैं और शोरूम में ग्राहकों का लौटना अब शुरू होगा। ग्राहकों को शोरूम तक लाने के प्रयासों में कंपनियां न केवल छूट के ऑफर तैयार कर रही हैं, बल्कि अपने मार्केटिंग के बजट में भी इजाफा कर रही हैं ताकि ऑटो बाजार का मूड बदला जा सके।

कुछ कार मैन्यूफैक्चरिंग कंपनियों ने इस दिशा में पहल भी कर दी है। कंपनियां फेस्टिवल सीजन में नए लांच के लिए तैयार हैं। कई कंपनियों ने नए मॉडल लांच किए हैं। बाजार की मौजूदा स्थितियों को देखते हुए कंपनियां अपने मॉडलों की कीमतों को लेकर भी काफी सतर्क हैं। निसान इंडिया के डायरेक्टर (सेल्स एंड कॉमर्शियल) हरदीप सिंह बरार ने कहा, 'बाजार की मांग को ध्यान में रखते हुए हाल ही में हमने 10 लाख रुपये से कम कीमत पर ऑल न्यू किक बाजार में उतारी है। हालांकि हम पूरे फेस्टिव सीजन के लिए तैयार हैं।'

आमतौर पर गणेश चतुर्थी के बाद शुरू होने वाले पितृपक्ष में लोग खरीदारी से दूर रहते हैं। लेकिन कंपनियों की रणनीति इन 15 दिनों में भी बुकिंग की स्थिति को बनाए रखने की है। ग्राहकों को इस दौरान आकर्षित करने के लिए कंपनियां कुछ विशेष ऑफर की तैयारियों में हैं। निसान ने इस दौरान बुकिंग पर गोल्ड कॉइन की पेशकश की है। इसी तरह दोपहिया कंपनियां भी पितृपक्ष में बुकिंग के जरिये बाजार में गर्मी बनाए रखने की तैयारी कर रही हैं। कंपनियां फेस्टिवल सीजन में ग्राहकों को आसानी से ऑटो लोन उपलब्ध कराने के लिए बैंकों और एनबीएफसी के साथ विशेष अनुबंध कर रही हैं। होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया लिमिटेड इसकी तैयारी काफी पहले से कर रही थी और इसके लिए छह बैंकों और पांच एनबीएफसी के साथ करार कर चुकी है। कंपनी अपने ऑफर सितंबर के मध्य तक घोषित कर देगी। इसके अतिरिक्त मारुति सुजुकी सहित कुछ कंपनियां ग्राहकों के खास वर्गों मसलन सरकारी कर्मचारियों को आकर्षित करने के लिए विशेष छूट देने की तैयारी कर रही हैं। जबकि ह्युंडई त्योहारों में लगने वाले पूजा पंडालों के जरिये ग्राहकों तक पहुंचने की कवायद में जुटी है। इसके अतिरिक्त कंपनियां ग्रामीण और कस्बाई बाजारों में कार बाइक मेला लगाने की योजना बना रही हैं। कुछ कंपनियां एक्सचेंज ऑफर के जरिये अपनी बिक्री को बढ़ाने की कोशिशों में हैं। इसके लिए कंपनियां अपने डाटा से ऐसे ग्राहकों को फोन से संपर्क कर रही हैं जिनके वाहन चार पांच साल से अधिक पुराने हैं।

कंपनियों की तैयारी

- कोरियाई कंपनी किआ अपने सेल्टोस ब्रांड के साथ भारतीय बाजार में उतरी है
- ह्युंडई और मारुति सुजुकी भी अपने नए मॉडल बाजार में पेश कर चुकी हैं
- निसान ने एसयूवी सेग्मेंट में किक उतारी है। कंपनी ने केरल और महाराष्ट्र के बाजारों में अपनी कारों पर विशेष छूट की घोषणा भी कर दी है।
- पितृपक्ष के दौरान बुकिंग कराने वालों को गोल्ड कॉइन देगी निसान
- फाइनेंसिंग के लिए छह बैंकों और पांच एनबीएफसी के लिए होंडा मोटरसाइकिल ने किया करार
- पांच वर्ष से पुराने वाहनों के लिए कई कंपनियां ला रहीं एक्सचेंज ऑफर

रिटेल कंपनियों ने भी शुरू की तैयारी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : सोमवार से शुरू हो रहे फेस्टिवल सीजन में रिटेल स्टोर चेन चलाने वाली कंपनियों ने भी अपने स्टोर में ग्राहकों की संख्या बढ़ाने की कवायद शुरू कर दी है। इसके लिए न केवल स्टोर के लुक को आकर्षक बनाने पर जोर है बल्कि ग्राहकों को खरीदारी के लिए प्रोत्साहित करने के लिए छूट के प्रस्तावों के साथ भी कंपनियां तैयार हैं। इसके लिए कंपनियों ने अपने प्रमोशन बजट को भी इस बार बढ़ाया है।

देश में फेस्टिवल सीजन की शुरुआत ओणम से होती है और दिवाली के बाद नए साल तक चलती है। दक्षिण भारत में ओणम, पश्चिम में गणेश चतुर्थी, उत्तर में नवरात्र और पूर्वी भारत में दुर्गा पूजा से त्योहारी सीजन शुरू होता है। कंपनियां भी इसी प्रकार से क्षेत्रीय स्तर पर अपने ऑफर लेकर आती हैं। क्रोमा, बिग बाजार, स्पेंसर और मोर जैसी कंपनियां इन्हीं त्योहारों के मुताबिक देश के प्रत्येक भाग में अपने स्कीम चलाती हैं। इंडस्ट्री से जुड़े लोगों का मानना है कि इन कंपनियों ने इस वर्ष फेस्टिवल के दौरान अपने प्रमोशन खर्चों में 15 से 20 परसेंट की बढ़ोतरी की है। यह राशि अगले चार महीने इन कंपनियों के स्टोर पर चलने वाले शॉपिंग फेस्टिवल पर अलग-अलग मदों में खर्च होगी।

लाइफस्टाइल और अपैरल: रिटेल कंपनियां अपने स्टोर में लाइफस्टाइल और अपैरल प्रोडक्ट को लेकर काफी उत्साहित हैं। अगले चार महीने के लिए इन कंपनियों ने अपने स्टोर की शेल्फ पर नए डिजाइन और किफायती दामों के मिश्रण वाले प्रोडक्ट की रेंज रखना तय किया है ताकि ग्राहकों को उसकी जरूरत के मुताबिक प्रोडक्ट मिल सके। इसके अलावा कंपनियां फ्लैश डिस्काउंट, एक निश्चित राशि की खरीदारी पर गिफ्ट जैसे स्कीम के साथ फेस्टिवल सीजन के लिए तैयार हो रही हैं।

आज से सड़क पर गाड़ी सलीके से निकालिए

जेएनएन, नई दिल्ली

रविवार से सड़क पर अपनी मोटरसाइकिल या कार लेकर निकलने वालों का अपेक्षाकृत सख्त नियमों से सामना होने वाला है। मोटर व्हीकल एक्ट में संशोधन संबंधी कई प्रावधान रविवार से ही लागू हो रहे हैं। ऐसे में मोटर ड्राइविंग में मामूली सी असावधानी या लापरवाही अब जेब पर बहुत भारी पड़ने वाली है। खासतौर पर बच्चों को टू-व्हीलर चलाते देख खुश होने वाले पैरेंट्स को नए नियम बहुत भारी पड़ने वाले हैं।

यह होगा रविवार से

- एमरजेंसी वाहनों को रास्ता नहीं देने की स्थिति में 10 हजार रुपये का जुर्माना देना होगा।
- आयोग्य होने के बावजूद वाहन चलाने पर 10 हजार रुपये का जुर्माना देय होगा।
- ओला, उबर जैसी कंपनियों के ड्राइवरों द्वारा नियमों के उल्लंघन पर एक लाख रुपये देय होंगे
- ओवर स्पीडिंग के लिए 2 हजार रुपये तक का फाइन भरना होगा।
- बिना इंश्योरेंस गाड़ी सड़क पर निकालने के लिए दो हजार रुपये का जुर्माना देना होगा
- बिना हेलमेट के वाहन चलाते हुए पकड़े जाने पर एक हजार रुपये का फाइन देना होगा साथ ही तीन महीने के लिए लाइसेंस रद कर दिया जाएगा
- नाबालिग द्वारा सड़क अपराध करने पर उसके अभिभावकों को सजा होगी, साथ ही उनके वाहन का रजिस्ट्रेशन कैंसल कर दिया जाएगा
- ट्रैफिक नियमों के उल्लंघन पर अब 100 की जगह 500 रुपये देने होंगे
- अथॉरिटी द्वारा निर्धारित नियमों के उल्लंघन पर 500 की जगह दो हजार रुपये देने होंगे
- अनाधिकृत वाहन चलाने पर पांच हजार रुपये का जुर्माना देना होगा
- शराब पीकर गाड़ी चलाने पर 10 हजार रुपये ढीले करने पड़ेंगे

आज से ऑनलाइन रेल टिकट पर सर्विस टैक्स

नई दिल्ली, प्रेट्र : आइआरसीटीसी के जरिये ई-टिकट खरीदना रविवार से महंगा हो जाएगा, क्योंकि भारतीय रेलवे ने एक सितंबर से सर्विस टैक्स बहाल करने का फैसला किया है। आइआरसीटीसी की ओर से 30 अगस्त को जारी आदेश के मुताबिक नॉन एसी श्रेणी के लिए प्रति टिकट 15 रुपये और एसी श्रेणी के लिए प्रति टिकट 30 रुपये सर्विस टैक्स लिया जाएगा। जीएसटी इसके अतिरिक्त होगा। मालूम हो कि नरेंद्र मोदी सरकार ने डिजिटल पेमेंट को बढ़ावा देने के लिए तीन साल पहले सर्विस टैक्स को माफ कर दिया गया था। उससे पहले नॉन-एसी श्रेणी के टिकट पर 20 रुपये और एसी श्रेणी के प्रत्येक टिकट पर 40 रुपये टैक्स लगता था।

धान का घटा रोपाई रकबा, बढ़ेंगी मुश्किलें

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

मानसून की चौतरफा अच्छी बारिश के बावजूद धान की रोपाई घट गई है, जो खाद्य सुरक्षा के लिए चिंता का सबब बन सकती है। मानसून की बरसात जुलाई और अगस्त में बहुत अच्छी रही है। लेकिन खरीफ फसलों की बोआई पर उसका असर नहीं दिख रहा है। खरीफ बोआई रकबा में साढ़े 17 लाख हेक्टेयर से भी अधिक की कमी दर्ज की गई है।

मानसून की बरसात इस बार देश के ज्यादातर हिस्सों में खूब हुई है। अगस्त में पिछले वर्ष के मुकाबले 15 परसेंट अधिक बारिश हुई है। रोपाई के बाद खेतों में खड़ी धान की फसल को काफी फायदा होने का अनुमान है। लेकिन जब रोपाई रकबा ही कम हो गया तो उत्पादन में कमी आना तय माना जा रहा है। जुलाई में जब बिहार में धान की रोपाई अपने चरम पर होती है, उस समय वहां के लोग बाढ़ की विभीषिका से जूझ रहे थे। खेतों में पानी भरा हुआ था। नर्सरी डूबकर खराब हो गई थी। लिहाजा रोपाई बुरी तरह प्रभावित हुई। इसी तरह पश्चिमी बंगाल और कर्नाटक में भी बाढ़ ने रोपाई की राह रोक ली थी।

- बिहार, कर्नाटक और बंगाल में कम हुई धान की रोपाई
- अगस्त में राष्ट्रीय स्तर पर 15 परसेंट अधिक हुई बारिश

बाढ़ में कई राज्यों में धान की नर्सरी बह जाने से विकट स्थिति बनी है। फाइल

कृषि मंत्रालय के जारी साप्ताहिक वेदर वॉच रिपोर्ट के मुताबिक पिछले साल इस सप्ताह तक खरीफ सीजन की प्रमुख फसल धान की रोपाई 3.72 करोड़ हेक्टेयर में हो चुकी थी। लेकिन इस बार अच्छे मानसून और बारिश के बावजूद बोवाई रकबा 3.54 करोड़ हेक्टेयर तक ही पहुंच पाया है। 18 लाख हेक्टेयर की इस कमी का असर धान की कुल पैदावार पर दिख सकता है। दलहन की मांग को घरेलू खेती से पूरा करने की सरकार की तैयारी भी अंजाम तक पहुंचेगी, इस पर संदेह है। चालू सीजन में कुल 3.56 लाख हेक्टेयर दलहन का रकबा घटा है। अरहर की दाल की महंगाई को लेकर लगभग हर साल हो-हल्ला मचता रहा है। हालांकि पिछले दो वर्षों से घरेलू उत्पादन बढ़ने से हालात काबू में आ गया है। लेकिन इस बार अरहर की खेती को भी नुकसान हुआ है, और रकबा में भी मामूली कमी दर्ज की गई है। खरीफ सीजन में मूंग की खेती प्रभावित हुई है। दलहन फसलों के बोआई क्षेत्रों में सबसे अधिक कमी मूंग की खेती में ही आई है। पिछले वर्ष 33.50 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में मूंग की खेती हुई थी। उसके मुकाबले चालू वर्ष में यह 30 लाख हेक्टेयर पर ठहर गई है।

सीजी पावर ने सीएफओ को भी किया बर्खास्त

मुंबई, एएनआइ : संकट से जूझ रही कंपनी सीजी पावर में बर्खास्तगी का दौर जारी है। कंपनी ने चेयरमैन गौतम थापर को हटाने के एक दिन बाद ही चीफ फाइनेंशियल ऑफिसर (सीएफओ) वीआर वेंकटेश को भी उनके पद से हटा दिया है। वेंकटेश पर अनियमितता बरतने और अवैध ट्रांजैक्शन के आरोप लगे थे।

कंपनी ने अपनी रेगुलेटरी फाइलिंग में कहा है कि वेंकटेश को भ्रष्टाचार और स्टेकहोल्डर्स के भरोसे को तोड़ने के चलते उनके पद से बर्खास्त किया गया है। उन्होंने जान-बूझकर ऐसे कदम उठाए जो कंपनी और उसके शेयरहोल्डर्स के हित में नहीं थे। बीते 19 अगस्त को कंपनी की रिस्क एंड ऑडिट कमेटी ने अपनी जांच में पांच तरह की अनियमितताओं की बात कही थी। इनमें देनदारियों को छिपाना, संबंधित पार्टियों के ट्रांजैक्शन, अनअथॉराइज्ड गारंटी, नेटवर्थ छिपाना और कंपनी कर्मचारियों के ट्रांजैक्शन जैसी अनियमितताएं शामिल थीं। सीजी पॉवर ने अपनी फाइलिंग में कहा है कि कंपनी और ग्रुप की 1,053.54 करोड़ रुपये और 1,608.17 करोड़ रुपये की देनदारी छिपाई गई।

होटलों के साथ जोमेटो व स्विगी का विवाद सुलझने की ओर

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

स्विगी और जोमेटो जैसे ऑनलाइन फूड एग्रीगेटर्स और होटल-रेस्तरां के बीच चल रहा विवाद सुलझने की दिशा में बढ़ता दिख रहा है। नेशनल रेस्टोरेंट एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एनआरएआइ) के साथ इन एग्रीगेटर्स की बातचीत शुरू होने को लेकर सहमति बन गई है। सितंबर के मध्य तक दो पक्षों के बीच बातचीत होने की उम्मीद है।

एनआरएआइ ने 26 अगस्त को जोमेटो, स्विगी, उबर-ईट्स और फूडपांडा को पत्र लिखकर आठ मुद्दों पर सवाल खड़े किए थे। इनमें डीप डिस्काउंट, कमीशन की दरें, मनचाही शर्तें व नियम, पारदर्शिता का अभाव, ग्राहकों की डाटा मास्किंग और एग्रीगेटर्स द्वारा अपना खुद का ब्रांड डेवलप करने, रेस्तरां पर एग्रीगेटर सेवाओं का इस्तेमाल करने का दबाव डालने और अपने ऑनलाइन प्लेटफार्म पर रेस्तरां की डीप डिस्काउंटिंग के मुद्दे पर एक लॉगआउट अभियान भी शुरू किया था। जोमेटो के एक प्रवक्ता ने बैठक के बाद कहा कि एनआरएआइ के साथ हुई बैठक में विस्तार से सभी मुद्दों पर चर्चा हुई है। सभी लोग मिलकर इसका समाधान निकालने पर सहमत हैं। जल्द ही इस विषय को लेकर सब लोग फिर मिलेंगे, ताकि एक संभावित नतीजे तक पहुंचा जा सके।

प्रतीकात्मक

- सितंबर के मध्य तक दोनों पक्षों में बातचीत की उम्मीद
- डीप डिस्काउंट और कमीशन की दरों समेत कइ मुद्दों पर हैं मतभेद

गैर-पारदर्शी तरीके से रैंकिंग के मुद्दे शामिल हैं। एनआरएआइ ने 14 अगस्त को प्राइसिंग और

एनआरएआइ और जोमेटो में विवाद के सार्वजनिक होने के बाद जोमेटो के संस्थापक दीपिंदर गोयल ने पिछले सप्ताह एक ट्वीट के जरिये कहा कि फूड एग्रीगेटर्स लॉगआउट अभियान के चलते रेस्तरां के साथ जुड़े नहीं रहेंगे। दूसरी तरफ एनआरएआइ का कहना है कि गुरुवार को जोमेटो के साथ बैठक की शुरुआत ही इस बात से हुई कि वह जोमेटो गोल्ड के नाम से खुद का डिलीवरी वर्टिकल शुरू करना चाहता है। एनआरएआइ का कहना है कि यह उसे कतई स्वीकार्य नहीं है। स्विगी का कहना है कि वह एनआरएआइ के साथ दोनों पक्षों के लिए वैल्यू क्रिएट करने को लेकर वचनबद्ध है।

आधार बेस्ड केवाईसी से म्यूचुअल फंड से जुड़ेंगे युवा निवेशक

पिछले सप्ताह वित्त मंत्री ने सुधारों की पहली किस्त पेश की। सरकार इकोनॉमी की सुस्ती दूर करने के लिए कई तरह के सुधार कर रही है। वैसे तो सुधार इकोनॉमी के कई क्षेत्रों में किए जा रहे हैं। लेकिन इनमें से ज्यादातर पहले से अपेक्षित थे, और ऐसे कदम इक्विटी मार्केट के लिए असरदार हैं। अगर व्यापक तौर पर देखें तो इससे यह बात पुख्ता होती है कि आर्थिक समस्याएं अस्थाई हैं और ज्यादातर क्षेत्रों की समस्याएं हल कर ली जाएंगी। कुछ समस्याओं के लिए सीधी कार्रवाई की जरूरत होगी, कुछ क्रमिक तौर पर हल होंगी बाकी अपने आप दूर हो जाएंगी।

वित्त मंत्री ने जिन सुधारों की घोषणाएं की हैं, उनमें म्यूचुअल फंड में निवेश के लिए आधार को केवाईसी का माध्यम स्वीकार किया जाना शामिल है। यह घोषणा सुखद और चौंकाने वाली है। हालांकि यह कोई नई बात नहीं है। पहले आधार कार्ड इसके लिए वैध था, लेकिन बीते साल नवंबर में सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद इस पर रोक लग गई थी। इसी साल जुलाई में पास हुए नए आधार कानून के तहत यह फिर से प्रयोग हो सकेगा।

धीरेन्द्र कुमार, सीईओ
वैल्यू रिसर्च

बोनस

इकोनॉमी को गति देने के लिए सरकार ने कुछ नई घोषणाएं की हैं। इनमें म्यूचुअल फंड में निवेश के लिए आधार को केवाईसी के रूप में मान्यता देना भी शामिल है। हालांकि यह नया नहीं है और पिछले वर्ष आधार के उपयोग पर सुप्रीम कोर्ट का आदेश आने से पहले भी केवाईसी में इस कार्ड का उपयोग होता रहा है। लेकिन नए और युवा निवेशकों को आकर्षित करने के लिए आधार का केवाईसी के रूप में उपयोग इसलिए जरूरी हो गया है, क्योंकि वर्तमान दौर के युवाओं के पास हर चीज उनकी एक क्लिक पर उपलब्ध है। ऐसे में निवेश शुरू करने में ज्यादा कागजी तैयारी उन्हें रास नहीं आएगी। अब आधार फिर से उपयोग में लाया जा सकेगा, तो निवेश शुरू करने में आसानी और व्यक्तिगत निवेश में बढ़ोतरी होगी।

इस डिजिटल दौर में केवाईसी में आधार का प्रयोग महत्वपूर्ण होगा। इससे नए निवेशको की मार्केट तक पहुंच आसान होगी। नए दौर के निवेशको के लिए यह कोई नई बात नहीं है, लेकिन पुराने निवेशक इसे बड़ा काम समझते हैं। उन्हें लगता है कि केवाईसी की प्रक्रिया में में दो-चार दिन लग जाना आम बात है। मैं काफी लंबे समय से मार्केट पर नजर रख रहा हूं, इस लिहाज से यह कह सकता हूं कि आसान शुरुआत बहुत महत्वपूर्ण होती है। डॉक्यूमेंट को इकट्ठा करने और उसे ले जाकर जमा करने जैसे काम युवा और सही उम्र में निवेश शुरू करने वालों को नहीं भाते हैं। सच कहें, तो केवाईसी के जटिल नियम किसी को नहीं भाते। लेकिन पुराने जमाने के लोगों को इसकी आदत लगी हुई है, और टेक्नोलॉजी की पहुंच ने नए जमाने के लोगों को कई मामलों में अधीर बना दिया है।

एक युवा निवेशक एप डाउनलोड करता है या वेबसाइट खोलता है और निवेश शुरू करने के लिए मिनटों में जरूरी खानापूर्ति कर लेता है। इस तरह के किसी निवेशक के लिए पेपर वर्क चौंकाने वाला होगा। यह सब इतना जटिल होना आज के समय के अनुकूल नहीं होगा।

मुझे 1991 में आए मास्टरगेन के आइपीओ याद आते हैं। यह तब की यूनिट ट्रस्ट ऑफ इंडिया के क्लोज एंडेड फंड थे। उस समय इसके लिए उम्मीद के विपरीत 65 लाख एप्लीकेशन पड़े थे। ये एप्लीकेशन पेपर आधारित थे। पहले लोग इसे खरीदने के लिए लाइनों में लगे फिर जमा करने के लिए भी लाइनें लगीं। उस वक्त बैंकिंग, चेक क्लियरिंग, रिकॉर्ड कीपिंग स्टेटमेंट, यूनिट ट्रांसफर जैसे सारे काम पेपर पर होते थे। उस दौरान बड़ी संख्या में लोगों को सालभर परेशानियों से जूझना पड़ता था। कई बार रिकॉर्ड कीपिंग में गलती होती, तो कभी हस्ताक्षर नहीं मिलते। कंप्यूटर की अहमियत उस दौर में स्वीकार की जाने लगी थी, लेकिन ये सभी प्रक्रियाएं कंप्यूटराइज्ड नहीं हुई थीं। उस दौर के मुकाबले आज के दौर की बात करें, तो ऑटो रिक्शा से लेकर खाना तक सब कम्प्यूटर नेटवर्क में व्यवस्थित हो चुका है। ऐसे में म्यूचुअल फंड ऑफलाइन कैसे हो सकता है।

अगर हम तार्किक होकर बात करें तो म्यूचुअल फंड के लिए आधार बेस्ड केवाईसी सिर्फ एक छोटा सा कदम है। एंटी-मनी लॉन्डरिंग कानून के तहत सभी एंटिटी अपने लिए केवाईसी का नियम लागू करते हैं, इसलिए आधार को हर तरह के फाइनेंशियल ट्रांजैक्शन के लिए मान्य कर देना चाहिए।

नए निवेशकों के पास आधार और नेट बैंकिंग वाले बैंक अकाउंट हैं, इसलिए वन-स्टेप आधार केवाईसी एक अच्छा विकल्प साबित होगा। इस तरह से एप या वेबसाइट की मदद से तेज और आसान निवेश संभव होगा। हालांकि इस समय सरकारी सुधारों के दौर में यह बहुत छोटा प्रयास कहा जा सकता है, लेकिन निवेशक के नजरिये से यह काफी महत्वपूर्ण है।

इंडिया रेटिंग्स ने किया यस बैंक को डाउनग्रेड

मुंबई, एएनआइ : इंडिया रेटिंग्स ने यस बैंक की लांग-टर्म रेटिंग को डाउनग्रेड कर दिया है। एजेंसी ने बैंक की रेटिंग निगेटिव आउटलुक के साथ एए-माइनस से ए-प्लस कर दी है। देश के चौथे सबसे बड़े प्राइवेट बैंक की शॉर्ट-टर्म रेटिंग ए1-प्लस है। एजेंसी के मुताबिक बैंक के स्ट्रेस में चल रहे असेट में उम्मीद के मुताबिक सुधार नहीं दिख रहा है। बैंक जरूरत के मुताबिक फंड भी नहीं जुटा सका है।

बैंक ने नई रणनीतियां लागू की है, जिससे आगे कुछ टर्म में उसे चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। इंडिया रेटिंग मानता है कि बैंक का कुछ लोन एनपीए में भी जा सकता है। इस समय बैंक को सख्त जरूरत है कि वह वित्त वर्ष 2018-19 में निर्धारित किए गए 2,100 करोड़ रुपये के आपात फंड में इजाफा करे।

निगेटिव आउटलुक से बैंक के प्रॉफिट और बफर से संबंधित रिस्क का पता चलता है। स्ट्रेस में चल रहे असेट के सुधार में देर होने के रिस्क और बढ़ सकता है। बीते सप्ताह स्टॉक मार्केट में कंपनी का प्रदर्शन मिला-जुला रहा है। सोमवार को बाजार खुलने पर कंपनी के शेयर रेटिंग की वजह से प्रभावित हो सकते हैं।

निजता के उल्लंघन पर यूट्यूब पर 1400 करोड़ रुपये का जुर्माना

न्यूयॉर्क टाइम्स से

वाशिंगटन : निजता उल्लंघन में फेसबुक के बाद अब गूगल के स्वामित्व वाले यूट्यूब पर भारी भरकम जुर्माना लगा है। अमेरिकी नियामक ने यूट्यूब पर 20 करोड़ डॉलर (करीब 1400 करोड़ रुपये) तक का जुर्माना लगाया है। यह कार्रवाई बच्चों के निजता उल्लंघन के मामले में की गई है। बच्चों की निजता से जुड़े किसी मामले में यह अब तक का सबसे बड़ा जुर्माना बताया जा रहा है।

अमेरिकी उपभोक्ता सुरक्षा एजेंसी फेडरल ट्रेड कमीशन (एफटीसी) ने यूट्यूब पर लगे आरोपों का निपटारा करते हुए यह जुर्माना लगाया है। इस पर अभी अमेरिका के न्याय विभाग की मुहर लगनी बाकी है। एफटीसी के फैसले का विस्तृत विवरण अभी तक जारी नहीं किया गया है। इस मामले से जुड़े तीन लोगों ने यह जानकारी दी है। बच्चों की निजता से जुड़े एक मामले में एफटीसी ने इसी साल सोशल वीडियो शेयरिंग एप टिकटॉक के मालिकों पर रिकार्ड 57 लाख डॉलर (करीब 40 करोड़ रुपये) का जुर्माना लगाया था।

20 समूहों ने की थी शिकायत: बच्चों की निजता के करीब 20 हिमायती समूहों ने पिछले साल एफटीसी में यूट्यूब के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई थी। इसमें आरोप लगाया गया था कि यह वीडियो प्लेटफार्म बच्चों की निजी जानकारी जुटा रहा है और लाभ उठा रहा है। यह संघीय निजता कानून का उल्लंघन है। इस मामले से जुड़े गैर लाभकारी समूह कामर्शियल-फ्री चाइल्डहुड के कार्यकारी अधिकारी जोश गोलिन ने कहा, 'यूट्यूब ने बच्चों के निजता संबंधी कानून को नजरअंदाज करते हुए अवैध रूप से डाटा एकत्र किया और भारी मुनाफा कमाया।'

अमेरिकी संसद में पेश किए गए कई बिल: अमेरिकी नागरिकों के सोशल मीडिया डाटा और जेनेटिक डाटा समेत कई दूसरी जानकारियों की सुरक्षा को और पुख्ता करने के लिए इस साल संसद में कई बिल पेश किए गए हैं। यहीं नहीं कई अमेरिकी सांसद और नियामक फेसबुक व गूगल जैसी दिग्गज कंपनियों के बर्ताव पर चिंता भी जाहिर कर चुके हैं। डाटा दुरुपयोग को लेकर इन पर अंकुश लगाने की मांग की गई है।

फेसबुक पर लगा था 35 हजार करोड़ रुपये का जुर्माना

सोशल नेटवर्क की गोपनीयता और डाटा सुरक्षा में खामियों को लेकर एफटीसी ने गत जुलाई में दुनिया की दिग्गज नेटवर्किंग कंपनी फेसबुक पर पांच अरब डॉलर (करीब 35 हजार करोड़ रुपये) के जुर्माने को मंजूरी दी थी। निजता के उल्लंघन मामले में यह अब तक का सबसे बड़ा जुर्माना बताया जाता है।

लंदन में बलूचों ने किया पाकिस्तान के खिलाफ प्रदर्शन

- ब्रिटिश प्रधानमंत्री से की पाकिस्तान को दी जाने वाली वित्तीय मदद रोकने की मांग
- बलूच नागरिकों के अपहरण और हत्या के लिए पाक सेना को ठहराया जिम्मेदार
- इस प्रदर्शन का आयोजन बलूच नेशनल मूवमेंट की ब्रिटेन शाखा ने किया था

लंदन, एएनआइ : पाकिस्तान की जेलों में बंद बलूचिस्तान की आजादी के समर्थक हजारों राजनीतिक कार्यकर्ताओं की रिहाई के लिए लंदन में विशाल विरोध-प्रदर्शन हुआ। शुक्रवार को बड़ी संख्या में बलूच राजनीतिक कार्यकर्ता ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन के आवास के बाहर इकट्ठा हुए और उनसे इस मामले में हस्तक्षेप करने की मांग की। लापता लोगों के अंतरराष्ट्रीय दिवस पर हुए इस प्रदर्शन का आयोजन बलूच नेशनल मूवमेंट (बीएनएम) की ब्रिटेन शाखा ने किया था।

प्रदर्शन के दौरान पाकिस्तान सेना के खिलाफ के नारे लगाए गए। प्रदर्शनकारियों ने सेना पर बलूचों के अपहरण व उनकी हत्या का आरोप लगाया। बीएनएम नेता हकीम बलूच ने कहा, 'बलूच मूवमेंट के कार्यकर्ताओं को पाकिस्तान सेना की बर्बरता का सामना करना पड़ रहा है। हम यहां इसलिए इकट्ठा हुए हैं ताकि दुनिया को बलूच लोगों पर होने वाली हिंसा के बारे में बता सकें।' प्रदर्शन के बाद बीएनएम ने प्रधानमंत्री जॉनसन को ज्ञापन सौंप कर पाकिस्तान को दी जा रही वित्तीय सहायता रोकने और बलूचों की रिहाई के लिए पाक पर दबाव बनाने की मांग की। ज्ञापन के अनुसार, पाकिस्तान में 20 हजार से ज्यादा मानवाधिकार कार्यकर्ता, शिक्षक, पत्रकार, छात्र, वकील और राजनीतिक कार्यकर्ता लापता हो चुके हैं। छह हजार की या तो हिरासत में ही हत्या कर दी गई है या उन्हें प्रताड़ित किया जा रहा है। ज्ञापन के जरिये प्रदर्शनकारियों ने कहा, 'संयुक्त राष्ट्र के साथ ही स्थानीय व अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन और पाकिस्तान की न्याय तंत्र भी यह मानता है कि बलूचों के गायब होने में सेना का हाथ है। इसके बाद भी अब तक न तो किसी पर मुकदमा चला और न ही किसी को सजा हुई।'

पाकिस्तान के बलूचिस्तान में सेना द्वारा की जा रही ज्यादतियों के खिलाफ आवाज उठनी शुरू हो गई है। शनिवार को लंदन में ब्रिटिश प्रधानमंत्री के आवास 10 डाउनिंग स्ट्रीट के समीप बलोच राजनीतिक कार्यकर्ताओं की रिहाई की मांग को लेकर लोगों ने प्रदर्शन किया। एएनआइ

वीजा चाहने वालों पर अमेरिका की कड़ी नजर

तैयारी ▶ सोशल मीडिया पर फर्जी अकाउंट खोलकर वीजा मांगने वालों की होगी निगरानी

अमेरिकी गृह विभाग द्वारा निजता संबंधी मामलों की समीक्षा के बाद रिपोर्ट जारी

वाशिंगटन, एपी : ट्रंप प्रशासन ने अमेरिकी वीजा, ग्रीन कार्ड और नागरिकता चाहने वाले विदेशी नागरिकों पर नजर रखने के लिए सोशल मीडिया पर फर्जी अकाउंट्स खोलने का फैसला लिया है। इसके जरिये अधिकारी अब सोशल मीडिया पर ऐसे लोगों के अकाउंट्स की निगरानी कर सकेंगे। अमेरिका के गृह सुरक्षा विभाग की ओर से गत जुलाई में निजता संबंधी मामलों की समीक्षा की गई थी, जिसे शुक्रवार को ऑनलाइन जारी किया गया। इसमें यह बताया गया है कि अधिकारियों के फर्जी अकाउंट खोलने पर लगी रोक को हटा लिया गया है। अमेरिकी सिटिजनशिप एंड इमिग्रेशन सर्विसेज (यूएससीआइएस) ने एक बयान में कहा कि फर्जी अकाउंट और पहचान बनाने से जांचकर्ताओं के लिए फर्जीवाड़े या सुरक्षा चिंताओं को लेकर साक्ष्य जुटाना आसान हो जाएगा। इससे यह तय हो सकेगा कि किसी व्यक्ति को अमेरिका में प्रवेश की अनुमति दी जाए या नहीं।

सोशल मीडिया की जानकारी देना अनिवार्य : गत जून में अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने वीजा आवेदकों के लिए सोशल मीडिया पर अपने अकाउंट के बारे में जानकारी देना अनिवार्य कर दिया था। ट्रंप प्रशासन ने देश में आने वाले लोगों की व्यापक जांच के तहत यह कदम उठाया था।

डोनाल्ड ट्रंप। फाइल

कैसे खोले जाएंगे फर्जी अकाउंट? : यह अभी स्पष्ट नहीं है कि फेसबुक और ट्विटर जैसे सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर फर्जी अकाउंट कैसे खोले जाएंगे? क्योंकि ये सोशल साइटें फर्जी अकाउंट को अपने नियमों का उल्लंघन मानती हैं। फेसबुक और ट्विटर ने हाल ही में बड़ी संख्या में ऐसे अकाउंट बंद किए थे।

फर्जी अकाउंट बनाना हमारी नीति के खिलाफ: ट्विटर : अमेरिका के नए कदम पर ट्विटर ने अपने बयान में कहा है, 'फर्जी नाम से अकाउंट बनाकर लोगों की निगरानी करना हमारी नीति के खिलाफ है। हम यह पता लगा रहे हैं कि क्या यूएससीआइएस के प्रस्तावित कदम हमारी शर्तों के अनुकूल हैं या नहीं।'

2021 में शुरू होगा 9/11 हमले के साजिशकर्ताओं पर मुकदमा

- अमेरिका में हुए भयानक आतंकी हमले के दो दशक बाद तय हुई केस चलाने की तारीख
- अमेरिकी सैन्य जज कर्नल डब्ल्यू शेन कोहेन ने 11, जनवरी 2021 की तारीख तय की है

वाशिंगटन, एपी : अमेरिका में हुए 9/11 आतंकी हमले की साजिश रचने वाले आरोपितों के खिलाफ 2021 की शुरुआत में मुकदमा चलाया जाएगा। सैन्य जज कर्नल डब्ल्यू शेन कोहेन ने शुक्रवार को केस चलाने की तारीख तय की।

11, जनवरी 2021 को क्यूबा के नौसैनिक अड्डे स्थित कोर्ट कैंप जस्टिस में सैन्य ज्यूरी के चयन के साथ ही सभी आरोपितों पर मुकदमा शुरू हो जाएगा। उस हमले की साजिश रचने और उसमें मदद करने वाले पांच आरोपित ग्वांतानामो बे जेल में कैद हैं। अमेरिकी सेना का यह जेल क्यूबा के दक्षिण-पूर्वी हिस्से में ग्वांतानामो खाड़ी स्थित नौसैनिक अड्डे का हिस्सा है।

9 सितंबर, 2011 को कुख्यात आतंकी संगठन अल-कायदा ने अमेरिका में चार भयानक हवाई हमले किए थे। आतंकियों ने हाइजैक किए हुए विमान को वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के उत्तरी व दक्षिणी टावर से टकरा दिया था। इस हमले में करीब तीन हजार लोगों की मौत हुई थी और छह हजार से ज्यादा लोग घायल हुए थे। इस हमले के बाद से विश्व स्तर पर आंतकवाद को लेकर नई चर्चा शुरू हो गई थी।

अमेरिका ने हमले की साजिश रचने और उसमें मदद करने के लिए पांच संदिग्ध आतंकियों को आरोपित किया है। इनमें एक अल-कायदा का खालिद शेख मुहम्मद है, जो खुद को 9/11 व अन्य आतंकी हमलों का मास्टर माइंड बताता है।

कई साल अमेरिकी खुफिया एजेंसी सीआइए की कैद में रहने के बाद 2006 में पाकिस्तानी नागरिक खालिद व उसके चार अन्य साथियों को ग्वांतानामो बे जेल भेज दिया गया था।

न्यूयॉर्क में चाकू से हमले की साजिश रच रहा था पाक मूल का अमेरिकी

न्यूयॉर्क, एएनआइ: पाकिस्तानी मूल के अमेरिकी युवक अवैस चौधरी (19) पर न्यूयॉर्क शहर में चाकू से हमला करने की साजिश रचने का आरोप लगाया गया है। माना जा रहा है कि वह आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट (आइएस) से प्रेरित होकर ऐसा करने वाला था। वारदात को अंजाम देने के पहले ही उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

न्यूयॉर्क पुलिस विभाग के मुताबिक वह अकेले ही लोगों पर चाकू से हमला करने की तैयारी में था। हमले के लिए उसने न्यूयॉर्क के क्वींस क्षेत्र स्थित वर्ल्ड फेयर मरीना और ग्रांज सेंट्रल पार्क पर बने पैदल यात्रियों के पुल को चुना था। वारदात को अंजाम देने के लिए उसने इन जगहों का मुआयना भी किया था।

चौधरी के खिलाफ दर्ज शिकायत के मुताबिक वह पाकिस्तान में जन्मा अमेरिका नागरिक है। पुलिस के मुताबिक वह हमले का वीडियो भी बनाना चाहता था ताकि अन्य लोग भी ऐसी हिंसक वारदातों को अंजाम दें। संदिग्ध ने कथित तौर पर हमला करने के लिए चाकू, नकाब व दस्ताने के साथ मोबाइल से रिकार्डिंग करने का सामान भी ऑनलाइन मंगवाया था। गुरुवार की रात जब वह इन सामानों की डिलीवरी ले रहा था तभी उसे गिरफ्तार कर लिया गया। अगले दिन कोर्ट में उसे आतंकी संगठनों को सामान मुहैया करने के मामले में आरोपित किया गया। इसके साथ उसकी जमानत याचिका भी खारिज कर दी गई। दोषी साबित होने पर चौधरी को 20 साल जेल की कैद हो सकती है।

अफगानिस्तान में तालिबान और सैनिकों में छिड़ा संग्राम

36 लड़ाके मारे गए, तीन निर्दोषों की गई जान

- दोनों ओर से भारी हथियारों का इस्तेमाल

कुंदूज, रायटर : अफगानिस्तान के उत्तर में स्थित कुंदूज शहर में शनिवार को तालिबान और सरकारी सुरक्षा बलों के बीच भीषण संघर्ष छिड़ गया। टकराव में 36 तालिबान लड़ाकों के मारे जाने की खबर है, तीन शहरी मारे गए हैं और 41 घायल हुए हैं। सुरक्षा बलों को हुए नुकसान की जानकारी अभी नहीं मिली है। यह संघर्ष ऐसे समय छिड़ा है जब कतर में अमेरिका और तालिबान समझौते के करीब हैं जिसके चलते अफगानिस्तान से अमेरिकी फौजों की वापसी होगी।

कुंदूज में शनिवार को सुबह ही दोनों ओर से हमले शुरू हो गए। ये हमले कई ओर से हो रहे हैं। सरकारी सैनिक तालिबान पर हमले के साथ ही घायलों को अस्पताल पहुंचाने और अपना मोर्चा मजबूत करने के काम में लगे हुए हैं। शहर की बिजली और टेलीफोन लाइनें काट दी गई हैं। लोग घरों में दुबक गए हैं और शहर की सही स्थिति के बारे में जानकारी मुश्किल हो रही है। हमलों में तीन नागरिक मारे गए हैं और 41 घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। कुंदूज निवासी खालुद्दीन ने बताया है कि शहर की सड़कें वीरान हैं, दुकानें बंद हैं और लोग घरों में कैद हैं। शहर के कई इलाकों से हल्के और भारी हथियारों के चलने की आवाज आ रही हैं। भारी हथियारों में मशीनगन और हल्की तोप भी हो सकती हैं। कुंदूज और काबुल में मौजूद सरकारी अधिकारियों ने बताया है कि तालिबान लड़ाकों ने शहर के कई घरों में अपना ठिकाना बना लिया है और वे शहर के मुख्य अस्पताल में भी घुस गए हैं। वे वहीं से सरकारी बलों और आम नागरिकों पर हमले कर रहे हैं। गृह मंत्रालय ने संघर्ष में 36 तालिबान लड़ाकों के मारे जाने की पुष्टि की है। सरकारी बल हमले के लिए विमानों का भी इस्तेमाल कर रहे हैं। जाखिल इलाके में 20 तालिबान लड़ाके हवाई हमले में ही मारे गए हैं।

राष्ट्रपति अशरफ गनी के प्रवक्ता सिद्दीक सिद्दीकी ने कहा है कि सरकारी बल तालिबान का मुकाबला करते हुए नागरिकों की सुरक्षा भी कर रहे हैं, इसलिए उन्हें संयम बरतना पड़ रहा है।

अफगानिस्तान के कुंदुज शहर में मोर्चा संभाले अफगान सेना का जवान। रायटर

उत्तर कोरिया बोला, पोंपियो के चलते अमेरिका से वार्ता होना मुश्किल

- खराब बर्ताव करने का आरोप लगा अमेरिकी विदेश मंत्री पर बोला तीखा हमला
- हाल ही में उत्तर कोरिया ने पोंपियो को जहरीला पौधा तक करार दिया था

सियोल, रायटर : उत्तर कोरिया ने अमेरिका के विदेश मंत्री माइक पोंपियो पर तीखा हमला बोला है। उसने कहा कि पोंपियो के हालिया बयान के चलते अमेरिका के साथ वार्ता और मुश्किल हो गई है। पोंपियो ने उत्तर कोरिया के बर्ताव को खराब बताया था। अमेरिकी विदेश मंत्री ने गत मंगलवार को एक कार्यक्रम में कहा था, 'हमने माना है कि उत्तर कोरिया के खराब बर्ताव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।' उत्तर कोरिया की सरकारी न्यूज एजेंसी केसीएनए ने शनिवार को देश की उप विदेश मंत्री चोई सोन हुई के हवाले से कहा, 'पोंपियो की टिप्पणी अनुचित और उकसावे वाली है। इससे उत्तर कोरिया और अमेरिका के बीच संभावित बातचीत और मुश्किल हो गई है।' प्योंगयांग ने परमाणु वार्ता में आए गतिरोध के लिए पोंपियो को जिम्मेदार ठहराया था। हाल ही में उसने पोंपियो को जहरीला पौधा तक करार दिया था।

दोनों देशों में कायम है गतिरोध : अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और उत्तर कोरिया के सर्वोच्च नेता किम जोंग उन के बीच पहली शिखर वार्ता पिछले साल जून में सिंगापुर में हुई थी। इसके बाद दूसरी वार्ता गत फरवरी में वियतनाम में हुई थी। उत्तर कोरिया पर लगे प्रतिबंधों को हटाने की मांग पर यह वार्ता विफल हो गई थी। तब से परमाणु वार्ता को लेकर दोनों देशों में गतिरोध कायम है। गत जून में कोरियाई सीमा पर ट्रंप और किम की तीसरी मुलाकात हुई थी। इस दौरान दोनों नेताओं में परमाणु वार्ता फिर से शुरू करने पर सहमति बनी थी।

उत्तर कोरियाई लीडर किम जोंग उन ने शनिवार को यांगडोक काउंटी में हॉट स्प्रिंग रिसॉर्ट की निर्माणाधीन बिल्डिंगों का निरीक्षण किया और अधिकारियों को आवश्यक हिदायतें दी। एएफपी

एफएटीएफ ने कहा, जेवर बिक्री और बंध पत्र से लेनदेन पर नजर रखे पाक

इस्लामाबाद, आइएएनएस : द फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स (एफएटीएफ) ने पाकिस्तान में पनाह लिए आतंकी संगठनों को घेरने के लिए नए दिशानिर्देश जारी किए हैं। संस्था ने पाकिस्तान सरकार से आभूषणों की बिक्री और आर्थिक बंध पत्रों के जरिये लेन-देन पर नजर रखने के लिए कहा है। बंध पत्र सोने के बदले जारी किया जाता है और यह नकद भुगतान की सुविधा देता है। माना जा रहा है कि पाकिस्तान में आतंकी संगठन सोने और बंध पत्रों के जरिये चंदा प्राप्त करते हैं।

एफएटीएफ दुनिया में आतंक और संगठित अपराध के लिए मिलने वाले धन पर नजर रखता है। वह ऐसी सरकारों के खिलाफ कार्रवाई करता है जो आतंकी संगठनों को पालती-पोसती हैं। इसी के चलते एफएटीएफ की एशिया-प्रशांत क्षेत्र की इकाई ने हाल ही में पाकिस्तान को ब्लैक लिस्ट में डाला है। पाकिस्तान में बंध पत्र वास्तव में वित्त मंत्रालय की लॉटरी जैसी व्यवस्था है और सरकार के भुगतान के वादे पर जारी किया जाता है। एफएटीएफ को सुबूत मिले हैं कि आतंकी संगठन टेलीकॉम बैंकिंग के जरिये यह बंध पत्र जारी कराते हैं और इसके बाद उनके भुगतान से धन प्राप्त करते हैं।

ब्रिटेन में संसद निलंबित करने के विरोध में प्रदर्शन

लंदन, एपी : प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन के संसद को निलंबित करने के फैसले का पूरे ब्रिटेन में विरोध हो रहा है। कई हजार लोगों ने प्रधानमंत्री के आवास 10, डाउनिंग स्ट्रीट के समक्ष एकत्रित होकर विरोध जताया। इसके अतिरिक्त सेंट्रल लंदन, बेलफास्ट, यॉर्क और अन्य शहरों में भी प्रदर्शन हुए हैं। ये लोग बिना शर्त ब्रेक्जिट के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे थे। इनकी मांग संसद को बहाल कर उसमें ब्रेक्जिट प्रस्ताव पर चर्चा कराने की थी। प्रधानमंत्री जॉनसन ने 14 अक्टूबर तक के लिए संसद निलंबित कर ब्रेक्जिट प्रक्रिया पूरी करने की तैयारी की है। यूरोपीय यूनियन से ब्रिटेन का औपचारिक अलगाव 31 अक्टूबर को होगा।

राजधानी लंदन सहित विभिन्न शहरों में आयोजित विरोध प्रदर्शनों में लोग जॉनसन के खिलाफ नारेबाजी करते देखे-सुने गए। ये लोग जॉनसन पर सत्ता के अवैध कब्जे का आरोप लगा रहे थे। कह रहे थे कि संसद निलंबित कर प्रधानमंत्री ने देश के लोकतंत्र को धमकाने और नुकसान पहुंचाने का काम किया है। इन प्रदर्शनों में विपक्षी लेबर पार्टी के साथ ही ब्रेक्जिट विरोधी लोगों ने भी हिस्सा लिया। प्रदर्शनों में सरकार के फैसले के विरोध में पुलों को रोक देने और सड़कों को जाम करने का भी आह्वान किया गया। विरोध प्रदर्शन आयोजन करने वालों का दावा है कि इंग्लैंड, स्कॉटलैंड, वेल्स और उत्तरी आयरलैंड के 30 ज्यादा शहरों में सरकार विरोधी प्रदर्शन हुए। पश्चिमी इंग्लैंड के एक्सेटर शहर की 55 वर्षीय फार्मासिस्ट ब्रीडी वाल्टन भी अपने शहर में हुए प्रदर्शन में शामिल हुईं। उन्होंने बताया कि वे राजनीति से दूर रहने वाली शख्स हैं लेकिन जीवन में पहली बार आंदोलन में शामिल होने आई हैं। उन्होंने कहा, संसद को निलंबित करना तानाशाही है।

लंदन में व्हाइट हाल के सामने ब्रेक्जिट विरोधी हजारों कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया। वे हाथों में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और ब्रिटिश प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन के चित्र और स्लोगन लिखी तख्तियां लिए हुए थे। यहां संसद को निलंबित रखने के फैसले के खिलाफ देशव्यापी प्रदर्शन शुरू हो गए हैं। रायटर

कार्रवाई

टैंकर के सीरिया जाने को लेकर पक्की जानकारी होने का दिया हवाला, हाल में जिब्राल्टर की कोर्ट से रिहा हुआ था एड्रियन दरया-1

ईरान के तेल टैंकर को अमेरिका ने किया ब्लैकलिस्ट

वाशिंगटन, एएफपी : अमेरिका ने हाल ही में जिब्राल्टर के कब्जे से रिहा हुए ईरान के तेल टैंकर एड्रियन दरया-1 को ब्लैकलिस्ट कर दिया है। उसका दावा है कि ईरान सीरिया पर लगे प्रतिबंधों का उल्लंघन कर इस टैंकर से वहां तेल पहुंचा रहा है। अमेरिकी विदेश मंत्री ने इस संबंध में पक्की जानकारी होने को लेकर ट्वीट भी किया है। 21 लाख बैरल तेल से भरे इस टैंकर को जुलाई में भूमध्यसागर स्थित ब्रिटिश उपनिवेश पर हिरासत में ले लिया था। बाद में अमेरिका के विरोध के बावजूद 15 अगस्त को जिब्राल्टर की एक अदालत के आदेश पर उसे छोड़ा गया था।

टैंकर के साथ ही पोत के कैप्टन को ब्लैकलिस्ट करने के बाद अमेरिका के वित्त विभाग ने कहा, 'आतंकवाद विरोधी आदेश के तहत यह टैंकर अवरुद्ध संपत्ति है। इसकी मदद करने वालों को भी प्रतिबंधित किया जा सकता है।' जिब्राल्टर के कब्जे से छूटने के बाद एड्रियन दरया-1 ने भूमध्यसागर में कई बार अपनी दिशा बदली है। इसके अंतिम पड़ाव को लेकर लगातार अटकलें लगाई जा रही है। समुद्री यातायात की निगरानी करने वाली एजेंसी ने टैंकर के तुर्की के इस्केनदेरुन की तरफ मुड़ने की जानकारी दी थी। वहां के विदेश मंत्री मेवलत कावुसोग्लू ने तुरंत इसे खारिज कर टैंकर लेबनान जाने की बात की थी। लेबनान सरकार ने इससे इन्कार करते हुए कहा कि रिफानरी ना होने के चलते वह कच्चा तेल खरीदता ही नहीं। दरअसल, ईरान ने बीते सोमवार को तेल बेच दिए जाने की बात की थी। हालांकि उसने यह नहीं बताया कि इसे किसे बेचा गया है।

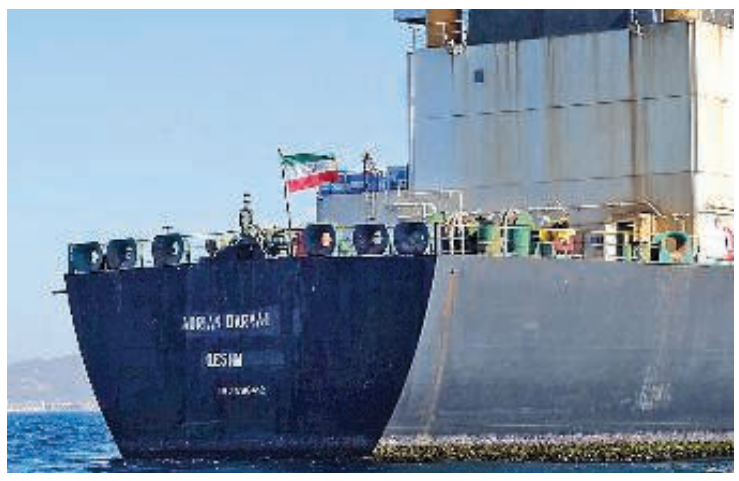
ईरान का तेल टैंकर एड्रियन दरया-1। पहले इस टैंकर का नाम ग्रेस-1 था। फाइल

ईरान को तेल बिक्री पर ढील दे रहा अमेरिका

ईरान के उप विदेश मंत्री अब्बास अराकची का कहना कि अमेरिका ईरान के तेल बिक्री पर ढील दे रहा है। दरअसल, पिछले साल अमेरिका ने 2015 में हुई परमाणु संधि से खुद को अलग कर ईरान पर दोबारा कई प्रतिबंध लगा दिए थे। इसके चलते दोनों देशों में टकराव जारी है। हाल में हुए जी7 देशों के सम्मेलन के दौरान फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुअल मैक्रों ने ट्रंप से मुलाकात कर इस मसले के हल पर बातचीत की थी। इसको लेकर ईरान के उप विदेश मंत्री अब्बासी अराकची ने कहा, 'मैक्रों ने ट्रंप से मुलाकात की। इस दौरान ट्रंप ने ईरान के तेल बिक्री के मसले पर थोड़ी ढील देने के संकेत दिए। यह अमेरिका के दबाव की नीति की हार और ईरान के प्रतिरोध की नीति की जीत है।'

हांगकांग में फिर चले पेट्रोल बम और आंसू गैस के गोले

- लोकतंत्र के लिए चल रहा आंदोलन चीनी सेना के मुख्यालय तक पहुंचा
- लोकतंत्र समर्थक प्रदर्शनकारियों ने पुलिस पर लेजर बीम से हमला किया

हांगकांग, रायटर: प्रमुख व्यापारिक केंद्र रहे हांगकांग में शनिवार को भी आंसू गैस के गोले और पेट्रोल बम चले। लोकतंत्र की मांग कर रहे आंदोलनकारियों और पुलिस के बीच फिर टकराव हुआ। कई लोगों के घायल होने की खबर है। तीन महीने से ज्यादा समय से जारी आंदोलन चीन सरकार के लिए हाल के दशकों का सबसे बड़ा राजनीतिक संकट माना जा रहा है।

प्रदर्शनकारी शनिवार को चीनी सेना और सरकारी के स्थानीय मुख्यालयों के नजदीक जा पहुंचे। वहां उन्होंने नारेबाजी करते हुए जमीन पर बिछी ईंटों को उखाड़कर पुलिस पर फेंकना शुरू कर दिया। जब उन्हें काबू करने के लिए पानी की तेज बौछार की गई तो प्रदर्शनकारी युवाओं ने पुलिसकर्मियों पर पेट्रोल बम फेंकने शुरू कर दिए। इस दौरान पुलिस ने आंसू गैस के गोले छोड़कर प्रदर्शनकारियों को काबू करने की कोशिश की। पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच चल रहे चूहे-बिल्ली के खेल में पुलिसकर्मियों पर नीली और हरी लेजर बीम से भी हमला किया गया। इससे पुलिसकर्मियों की आंखें चौंधिया गईं और कुछ देर के लिए उन्हें दिखाई देना बंद हो गया। वानचाई रेस्टोरेंट एंड बार के नजदीक पुलिस और प्रदर्शनकारियों में टकराव हुआ। दोनों ओर से पथराव और लाठीचार्ज व आंसू गैस छोड़ी गई। यहां से पुलिस ने कई प्रदर्शनकारी गिरफ्तार किए हैं।

ब्रिटेन का उपनिवेश रहा हांगकांग 1997 में चीन के कब्जे में आया था। कुछ मामलों में मिली स्वायत्तता हांगकांग को रास नहीं आ रही, लोगों की दरकार लोकतंत्र की है। इसी को लेकर तीन महीने से वहां आंदोलन चल रहा है। चीन की सरकार इसे दबाने का प्रयास कर रही है।

टेस्ट

घसियाली पिच पर विहारी ने संभाला मोर्चा

अग्रवाल और विराट के बाद हनुमा ने लगाया अर्धशतक भोजनकाल तक भारतीय टीम ने बनाए सात विकेट पर 336 रन

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली: मयंक अग्रवाल (55) और विराट कोहली (76) की अर्धशतकीय पारियों के बाद हनुमा विहारी ने जमैका के किंग्सटन में सबीना पार्क मैदान पर जारी दूसरे टेस्ट के दूसरे दिन घसियाली पिच पर मोर्चा संभाला। विहारी की नाबाद अर्धशतकीय पारी की बदौलत भारतीय टीम खबर लिखे जाने तक भोजनकाल तक सात विकेट के नुकसान पर 336 रन बना लिए थे। विहारी 84 रन बनाकर और इशांत शर्मा 11 रन बनाकर क्रीज पर मौजूद थे।

भारतीय टीम पहले दिन के स्कोर पांच विकेट के नुकसान पर 264 रनों से आगे खेलना उतरी, तो कप्तान जेसन होल्डर ने दिन की पहली ही गेंद पर रिषभ पंत (27) को बोल्ड करके पवेलियन भेज दिया। इसके बाद रवींद्र जडेजा (16) ने विहारी का थोड़ा साथ जरूर दिया, लेकिन ऑफ स्पिनर रहकीम कार्नवाल की गेंद को सीमा पार पहुंचाने के चक्कर में वह डेरेन ब्रावो को कैच थमा बैठे। इसके बाद इशांत शर्मा और विहारी ने भारत को कोई झटका नहीं लगने दिया। विहारी ने 158 गेंद में 13 चौकों की मदद से 84 रन बनाए।

पहले दिन वेस्टइंडीज के कप्तान जेसन होल्डर ने भारत के खिलाफ टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया। घसियाली पिच पर भारतीय टीम जैसी शुरुआत चाहती थी वह टीम को नहीं मिल सकी। उछाल भरी गेंदों को कुछ देर तक दोनों ओपनर राहुल और मयंक किसी तरह सामना करते रहे, लेकिन छठे ओवर में कप्तान होल्डर की एक बेहतरीन आउट स्विंग गेंद पर राहुल गच्चा खा गए और स्लिप में खड़े रकहीम कार्नवाल को कैच थमा बैठे।

भारतीय टीम इससे पहले कि इस विकेट से संभल पाती, पदार्पण मैच खेल रहे कार्नवाल ने पुजारा का विकेट लेकर मेहमान टीम को दूसरा झटका दे दिया। 46 रनों पर दो विकेट गंवा चुकी भारतीय पारी को कोहली और मयंक ने मिलकर संभालना शुरू किया। दोनों तीसरे विकेट के लिए 69 रन जोड़ने में कामयाब रहे, लेकिन कप्तान होल्डर ने मयंक को कार्नवाल के हाथों स्लिप में कैच कराकर पवेलियन भेज दिया। मयंक ने 127 गेंद में सात चौकों की मदद से 55 रन बनाए। टीम का स्कोर 164 रन पहुंचा तो उप कप्तान रहाणे गलती कर बैठे और तेज गेंदबाज रोच की गेंद की पर विकेटकीपर हैमिल्टन को कैच थमा बैठे। इसके बाद दिन का खेल खत्म होने में जब कुछ ही वक्त बचा था तो कप्तान कोहली भी 72 के स्कोर पर होल्डर की गेंद पर विकेटकीपर हैमिल्टन को कैच थमा बैठे। विहारी ने 80 गेंद का सामना करते हुए आठ चौके लगाए, जबकि पंत ने 64 गेंद का सामना करते हुए दो चौके और एक छक्का लगाया।

अपनी पारी के दौरान शॉट खेलते हुए हनुमा विहारी ● एपी

मैदान पर बिगड़ी रिचर्ड्स की तबीयत

दूसरे टेस्ट मैच से पूर्व विश्लेषण के सीधे प्रसारण के दौरान सर विवियन रिचर्ड्स बीमार हो गए। रिचर्ड्स आधिकारिक प्रसारक सोनी के साथ मैच से पहले और बाद में विश्लेषण कर रहे हैं। उन्होंने मैच से पूर्व शो के दौरान बेचैनी की शिकायत की। मैदान पर स्ट्रेचर लाया गया लेकिन वह दो वालंटियर की मदद से बाहर चले गए। बाद में जानकारी मिली कि उनके शरीर के सभी अंग सही काम कर रहे हैं। वैसे तो टीवी शो के दौरान रिचर्ड्स अच्छी स्थिति में नजर आ रहे थे लेकिन जमैका का मौसम व तापमान सभी के लिए झेलने की बात नहीं थी। अपने जमाने के इस लाजवाब क्रिकेटर के जल्द बेहतर होने की सभी कामना कर रहे हैं। हाल ही में विव रिचर्ड्स ने भारतीय कप्तान कोहली के साथ एक इंटरव्यू में हिस्सा लिया था जहां विराट ने रिचर्ड्स से कई सवाल पूछे।

स्कोर बोर्ड

टॉस : वेस्टइंडीज (गेंदबाजी)

भारत **336/7** (118 ओवर)

	रन	गेंद	चौके	छक्के
राहुल का. कार्नवाल बो. होल्डर	13	26	02	00
मयंक का. कार्नवाल बो. होल्डर	55	127	07	00
पुजारा का. ब्रूक्स बो. कार्नवाल	06	25	00	00
कोहली का. हैमिल्टन बो. होल्डर	76	163	10	00
अजिंक्य रहाणे का. हैमिल्टन बो. रोच	24	55	04	00
हनुमा विहारी नाबाद	84	158	13	00
रिषभ पंत बो. होल्डर	27	65	02	01
रवींद्र जडेजा का. ब्रावो बो. कार्नवाल	16	69	03	00
इशांत शर्मा नाबाद	11	20	01	00

अतिरिक्त : (बा-11, लेबा-12, वा-1) 24, कुल : 118

ओवर में सात विकेट पर 336 रन, विकेट पतन : 1-32 (राहुल, 6.5), 2-46 (पुजारा, 16.5), 3-115 (मयंक, 40.5), 4-164 (रहाणे, 59.5), 5-202 (कोहली, 72.1), 6-264 (पंत, 90.1), 7-302 (जडेजा, 110.1), गेंदबाजी : रोच 26-9-60-1, गेब्रियल 16-2-63-0, होल्डर 28-8-62-4, कार्नवाल 36-10-97-2, रोस्टन चेज 12-4-31-0

भारत के खिलाफ चार विकेट लेने वाले वेस्टइंडीज के कप्तान जेसन होल्डर। एपी

पुजारा के रूप में पहला टेस्ट विकेट लेकर अच्छा लगा : कार्नवाल

किंग्सटन, प्रेट्र: वेस्टइंडीज के ऑलराउंडर रहकीम कार्नवाल ने कहा कि अपने पदार्पण टेस्ट में भारतीय बल्लाज चेतेश्वर पुजारा को अपना पहला शिकार बनाकर उन्हें काफी अच्छा महसूस हुआ। इस 26 वर्षीय गेंदबाज ने भारत के खिलाफ दूसरे टेस्ट में पदार्पण किया और मुकाबले के पहले दिन 27 ओवर में सिर्फ 69 रन दिए। इस ऑफ स्पिनर ने अपने तीसरे ही ओवर में ही पुजारा का अहम विकेट ले लिया। कार्नवाल ने कहा कि पहले टेस्ट विकेट के रूप में उन्हें आउट करके अच्छा महसूस हुआ। यह वैसे कोई नई बात नहीं थी, लेकिन फिर भी मुझे अच्छा लगा। उन्होंने कहा कि पदार्पण करना अच्छा अहसास था। मुझे लगता है कि शुरू में गेंद अच्छी होती है। मुझे कड़ी मेहनत करनी होगी और गेंद सही लाइन-लेंथ में डालनी होगी। कार्नवाल ने कहा कि हमारे गेंदबाजों ने काफी अच्छी गेंदबाजी की और जब मुझे गेंद डालने को कहा गया तो ऐसा ही करने को कहा। पिच में थोड़ी नमी थी तो हमने सोचा था कि अगर हम पहले गेंदबाजी करते हैं तो हमारे पास विकेट लेने के मौके होंगे। टॉस हमारे पक्ष में गया और हमने पहले दिन अच्छा प्रदर्शन किया।

मयंक बोले, हम बहुत अच्छी स्थिति में हैं: सलामी बल्लेबाज मयंक अग्रवाल ने वेस्टइंडीज के खिलाफ खेले जा रहे दूसरे टेस्ट मैच के पहले दिन अर्धशतक लगाने के बाद कहा कि उनकी टीम मुकाबले में बेहतरीन स्थिति में है। अग्रवाल ने कहा कि मुझे लगा कि पहले सत्र में गेंद में मूवमेंट थी। केमार रोच और जेसन होल्डर ने शानदार गेंदबाजी की। बल्लेबाजी आसान नहीं थी, पिच में बहुत नमी थी और गेंद हरकत भी कर रही थी। मुझे लगता है कि होल्डर सही जगहों पर गेंदबाजी कर रहे हैं, वह आपको एक इंच भी जगह नहीं दे रहे हैं। वह आपको रन बनाने के लिए कोई खराब गेंद नहीं देते। उन्होंने कहा कि इसलिए दबाव हमेशा बना रहता है।

टेस्ट के पहले दिन पुजारा का विकेट लेने के बाद कार्नवाल ● एएफपी

महिपाल, करुण की पारी से इंडिया रेड का मजबूत जवाब

दलीप ट्रॉफी

- लोमरूर के शतक से इंडिया रेड ने बनाए 404 रन
- नायर ने खेली 154 गेंद में 90 रनों की अहम पारी

अलुर (बेंगलुरु), प्रेट्र: महिपाल लोमरूर (126) के बेहतरीन शतक और करुण नायर की 90 रनों की पारी के दम पर इंडिया रेड ने यहां कर्नाटक राज्य संघ क्रिकेट स्टेडियम में खेले जा रहे दलीप ट्रॉफी मैच के तीसरे दिन शनिवार को इंडिया ग्रीन के 440 रनों के जवाब में नौ विकेट खोकर 404 रन बना लिए हैं। दिन का खेल खत्म होने तक इंडिया रेड अभी भी इंडिया ग्रीन से 36 रन पीछे है। आवेश खान 34 और संदीप वॉरियर दो रन बनाकर खेल रहे हैं।

इंडिया ग्रीन ने अपनी पहली पारी में अक्षत रेडड्डी के 146 रनों के दम पर मजबूत स्कोर खड़ा किया था जिसका इंडिया रेड ने अच्छा जवाब दिया। इंडिया रेड ने दिन की शुरुआत दो विकेट पर 140 रनों के साथ की थी। दूसरे दिन करुण नायर 77 और महिपाल 22 रन बनाकर नाबाद लौटे थे। तीसरे दिन नायर को अंकित राजपूत ने 171 के कुल स्कोर पर बोल्ड किया, लेकिन महिपाल ने एक छोर संभाले रखते हुए अपनी टीम को इंडिया ग्रीन के स्कोर के पास पहुंचाने का प्रयास जारी रखा। वह 363 के कुल स्कोर पर धर्मेंद्र सिंह जडेजा की गेंद पर आउट हुए। उन्होंने अपनी पारी में 272 गेंदों का सामना किया और 14 चौके तथा तीन छक्कों की मदद से शतकीय पारी खेली। उनके साथ श्रीकर भरत ने 38 और जयदेव उनादकट ने 30 रनों का योगदान दिया। इंडिया ग्रीन की तरफ से जडेजा ने चार विकेट अपने नाम किए।

शास्त्री ने अश्विन पर जडेजा को तरजीह देने की वजह बताई

कहा, रवींद्र की बल्लेबाजी में सुधार हुआ है, सपाट पिच पर गेंदबाजी में उनका नियंत्रण बेहतर है

किंग्सटन, प्रेट्र: भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच रवि शास्त्री ने शनिवार को कहा कि रविचंद्रन अश्विन जैसे चैंपियन गेंदबाज के आगे वेस्टइंडीज के खिलाफ अंतिम-11 में रवींद्र जडेजा को तरजीह इसलिए दी गई क्योंकि उनकी बल्लेबाजी में सुधार हुआ है और सपाट पिच पर गेंदबाजी में मामले में उनका नियंत्रण बेहतर है।

वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट सीरीज में अंतिम-11 में अश्विन की जगह जडेजा को चुने जाने पर सुनील गावस्कर जैसे दिग्गज भी 'आश्चर्यचकित' हुए थे। जडेजा ने हालांकि पहले टेस्ट में दवाब में अर्धशतक लगाने के बाद पहली पारी में दो विकेट झटक कर आलोचकों को जवाब दिया था। शास्त्री ने कहा, 'जड्डू (जडेजा) को देखें तो उनका रिकॉर्ड शानदार है। आपको देखना होगा कि वह टीम में कितना सहयोग करते हैं। वह अब शायद दुनिया के सबसे अच्छे क्षेत्ररक्षकों में से हैं और उन्होंने अपनी बल्लेबाजी में काफी सुधार किया है।' अश्विन ने उपमहाद्वीप के बाहर सपाट पिचों पर हमेशा अच्छा प्रदर्शन किया है। शास्त्री ने तमिलनाडु के ऑफ स्पिनर की कमजोरी के बारे में बात करने की जगह स्पिनर के रूप में जडेजा की मजबूती के बारे में बात की। शास्त्री ने कहा, 'अगर आप इन पिचों को देखेंगे (नॉर्थ साउंड और किंग्सटन) तो मुझे नहीं लगता इस पिच (किंग्सटन) पर स्पिनरों के लिए कुछ होगा। यहां आपको नियंत्रण की जरूरत होगी।' पहले टेस्ट में जडेजा के चुना जाने के बारे में शास्त्री ने कहा कि टेस्ट मैच के पहले सत्र में नमी वाली पिच पर जडेजा की गेंदबाजी क्षमता के कारण उनका चयन हुआ था। उन्होंने कहा, 'हमने पहले टेस्ट में जडेजा का चयन इसलिए किया था क्योंकि पिच में नमी थी। अगर हम पहले गेंदबाजी कर रहे होते तो वह बल्लेबाजों को मुश्किल में डाल देते। ऐसे स्थिति में हम पहले सत्र में भी उनका इस्तेमाल कर सकते थे। यही कारण है कि हमने अश्विन की जगह जडेजा के साथ मैदान में उतरने का फैसला किया। अश्विन या कुलदीप को बाहर रखना मुश्किल फैसला है।'

इशान किशन के ताबड़तोड़ अर्धशतक से जीता भारत-ए

अनौपचारिक वनडे

- भारतीय टीम ने दक्षिण अफ्रीका-ए को दो विकेट से हराया
- इशान ने खेली 24 गेंद में 55 रन की बेहतरीन पारी

तिरुवनंतपुरम, प्रेट्र: युवा विकेटकीपर बल्लेबाज इशान किशन की 24 गेंद में 55 रन की धुआंधार पारी से भारत-ए ने बारिश से प्रभावित दूसरे अनौपचारिक वनडे मैच में दक्षिण अफ्रीका-ए को दो विकेट से शिकस्त दी। इस जीत से भारत-ए ने पांच मैचों की इस सीरीज में 2-0 की बढ़त कायम कर ली। जीत के 21 ओवर में 163 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरे भारत-ए ने एक ओवर शेष रहते आठ विकेट गंवा कर लक्ष्य हासिल कर लिया। किशन की शानदार पारी के अलावा क्रुणाल पांड्या ने भी 15 गेंद में नाबाद 23 रन की अहम पारी खेली।

बारिश के कारण खेल देर से शुरू हुआ और मैच को 21-21 ओवर का कर दिया गया। टॉस गंवा कर बल्लेबाजी के लिए उतरी दक्षिण अफ्रीका-ए की टीम ने जार्ज लिंडे के 25 गेंद में नाबाद 52 की पारी के बूते 21 ओवर में पांच विकेट पर 162 रन बनाए। लिंडे ने अपनी आतिशी पारी में एक चौका और पांच छक्के लगाए।

कप्तान टेंबा बावुमा (40) और हेनरिक क्लासेन (31) ने भी बल्ले से अच्छा योगदान दिया। लक्ष्य का पीछा करने उतरी भारतीय टीम की शुरुआत खराब रही। सलामी बल्लेबाज रितुराज गायकवाड़ एक रन बनाकर आउट हो गए। शुभमन गिल (24 गेंद में 21 रन) और अनमोलप्रीत (19 गेंद में 30 रन) इसके बाद दूसरे विकेट के लिए 49 रन की साझेदारी की।

सोहिल ने दिलजीत व विष्णु को पीछे छोड़ा

कोयंबटूर, आइएएनएस : बेंगलुरु के सोहिल शाह ने जेके टायर एफएमएससीआई नेशनल रेसिंग चैंपियनशिप के दूसरे राउंड के रेस-1 में शनिवार को विष्णु प्रसाद और दिलजीत टीएस के बीच की प्रतिस्पर्धा का फायदा उठाते हुए पहला स्थान हासिल किया।

तकनीकी सेफ्टी नियमों के कारण देरी से शुरू हुई रेस में दिल्ली के दो प्राइवेटियर्स-मानव दोउगाल और अक्षय कपूव ने खुद को पी-1 और पी-2 में पाया। दिलजीत और विष्णु ने पी-3 और पी-4 से शुरूआत की और पहले ही कार्नर में लीड लेकर रेस को जीवंत बना दिया। चेन्नई के विष्णु ने तीन रेसरों को पीछे छोड़ दिया लेकिन दिलजीत, ने दूसरे लैप में अपना मूव दिखाया और विष्णु को पीछे छोड़ते हुए डॉग फाइट की शुरुआत कर दी। विष्णु ने दिलजीत का पीछा किया और आठवें लैप में उन्हें गलती करने के लिए बाध्य किया।

उप राष्ट्रपति से मिलीं सिंधू

हाल ही में विश्व बैडमिंटन चैंपियनशिप का खिताब जीतने वाली भारतीय शटलर पीवी सिंधू ने शनिवार को हैदराबाद में उप राष्ट्रपति एम वेंकैया नायडू से मुलाकात की। इस दौरान सिंधू के साथ उनके माता-पिता भी मौजूद रहे ● एएनआइ

उम्मीद थी महेंद्र सिंह धौनी का चयन नहीं होगा : सौरव गांगुली

क्रिकेट डायरी

नई दिल्ली, प्रेट्र : भारत के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली ने कहा कि उन्हें उम्मीद थी कि दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ आगामी टी-20 सीरीज के लिए महेंद्र सिंह धौनी को नहीं चुना जाएगा और टीम प्रबंधन ने युवा रिषभ पंत को चुनकर एकदम सही फैसला लिया है।

38 वर्ष के धौनी के भविष्य को लेकर काफी अटकलें लगाई जा रही हैं। गांगुली ने कहा कि मुझे नहीं लगता था कि दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ सीरीज के लिए उनका चयन होगा। वेस्टइंडीज के खिलाफ टी-20 सीरीज से ही संकेत मिल गया था कि वे पंत को और मौके देना चाहते हैं। यह सही भी है क्योंकि जब धौनी भी युवा थे, तब उन्हें मौके दिए गए। यह पेचीदा स्थिति है जिससे कप्तान विराट कोहली को निपटना होगा। विराट की भूमिका काफी अहम है कि उन्हें धौनी से क्या कहना है। यह कहना मुश्किल है कि उनकी धौनी से क्या अपेक्षाएं हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि धौनी के संन्यास को लेकर अटकलबाजी होनी चाहिए। हर क्रिकेटर के जीवन में ऐसा पल आता है। मेराडोना, सैम्प्रास, तेंदुलकर और अब धौनी। आप उस उम्र में पहुंच जाते हैं कि ऐसी स्थिति आती है। गांगुली ने यह भी कहा कि पंत की तुलना धौनी से नहीं की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि वह धौनी नहीं है और ना ही अगले तीन चार साल में बन जाएगा। धौनी को 'द एमएस धौनी' बनने में 15 साल लगे। वह भारतीय क्रिकेट की खास जमात का हिस्सा हैं।

पूर्व कप्तान सौरव गांगुली। फाइल फोटो

वापसी के लिए किसी दबाव में नहीं हूं : विजय

चेन्नई, प्रेट्र : भारतीय टीम से बाहर चल रहे मुरली विजय ने शनिवार को कहा कि राष्ट्रीय टीम में वापसी के लिए वह किसी दबाव में नहीं हैं और वह जिस भी टीम के साथ खेल रहे हैं, उसके लिए योगदान करना चाहेंगे। विजय ने भारत के लिए अंतिम मैच दिसंबर 2018 में पर्थ में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ दूसरा टेस्ट खेला था। 35 साल के इस खिलाड़ी ने 61 टेस्ट में 38.28 के औसत से 3982 रन बनाए हैं जिसमें उनका शीर्ष स्कोर 167 रन का रहा है। विजय ने कहा कि निश्चित रूप से मैं अपने सपनों को कोई सीमाएं नहीं देता। मैं भारतीय टीम में जगह बनाने के लिए किसी दबाव में नहीं हूं। मैंने राष्ट्रीय टीम में चार बार वापसी की हैं। मैं इस समय जिस जगह पर हूं, उसका लुत्फ उठा रहा हूं। मैं अपनी तैयारियों के प्रति ईमानदार हूं। यह टीम का खेल है और मैं जानता हूं कि कैसे वापसी करते हैं। मैंने ऐसा पहले भी किया है। मैं जानता हूं कि यह कैसे करते हैं। देखते हैं यह कैसे होता है।

हार्दिक अब सुपरस्टार बन चुके हैं : पोलार्ड

कोलकाता, प्रेट्र : वेस्टइंडीज के विस्फोटक ऑलराउंडर कीरोन पोलार्ड का मानना है कि हार्दिक पांड्या का आत्मविश्वास ही उनकी सबसे बड़ी ताकत है। पोलार्ड इंडियन प्रीमियर लीग (आइपीएल) में पांड्या के साथ ही मुंबई इंडियंस के लिए खेलते हैं। पोलार्ड ने कहा कि मैंने उन्हें तब से देखा है जब उन्होंने मुंबई के लिए खेलना शुरू किया था और मैं आश्चर्यचकित नहीं हूं कि वह भारत के सुपरस्टार बन गए हैं। वह जिस तरह से खेलते है वो दर्शाता है कि मैदान के बाहर वह कैसे व्यक्ति हैं। कभी-कभी जब हम ऐसे व्यक्ति को देखते हैं तो रुढ़िवादी सोच वाले लोग उसके खिलाफ नकारात्मक बाते बोलते हैं।

पोलार्ड ने कहा कि वह अपने छोटे से करियर में बहुत कुछ झेल चुके हैं, लेकिन वह यहां से केवल बेहतर हो सकते हैं। वह बहुत मेहनत करते हैं। वह फिलहाल, जिस तरह का प्रदर्शन कर रहे हैं उससे मैं बिलकुल भी आश्चर्यचकित नहीं हूं।

चयन में कप्तानों की भूमिका अहम हो : रमीज राजा

कराची, प्रेट्र : पाकिस्तान के पूर्व क्रिकेटर कप्तान और मौजूदा कमेंटेटर रमीज राजा ने कहा कि टीम संबंधित मामलों में कप्तानों की भूमिका अहम होनी चाहिए और इस तरह की स्थिति में बदलाव से क्रिकेट प्रबंधन में मुश्किलें आ सकती हैं। अपने यू ट्यूब चैनल पर रमीज ने स्पष्ट किया कि टीम के मामलों में कोचिंग स्टाफ की तुलना में कप्तान की बात ज्यादा माननी चाहिए। उन्होंने कहा कि क्रिकेट में फुटबॉल की तरह के प्रबंधन के अनुरूप चलना मुश्किलों भरा हो सकता है। टीम के साथ इतना ज्यादा कोचिंग स्टाफ रखना बेकार है क्योंकि मुझे लगता है कि पुराने दिनों की तरह क्रिकेट में कप्तान की भूमिका कोचों की तुलना में ज्यादा अहम होती है। हमें कोचों को ज्यादा मजबूत बनाकर कप्तान की भूमिका को कम नहीं करना चाहिए। क्रिकेट को फुटबॉल की तरह चलाना भयानक हो सकता है क्योंकि वहां पर मैनेजर की भूमिका कप्तान से ज्यादा महत्वपूर्ण होती है क्योंकि वह सारे फैसले करता है। आप यही सब चीजें क्रिकेट में आजमाओगे तो इससे टीम के अंदर संदेह ही पैदा होगा।

पाकिस्तान में सुरक्षा का जायजा लेंगे सीए, ईसीबी के शीर्ष अधिकारी

कराची, प्रेट्र : पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने पुष्टि करते हुए कहा कि क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) और इंग्लैंड एवं वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) के शीर्ष अधिकारी सितंबर और अक्टूबर में सुरक्षा का जायजा लेने के लिए देश का दौरा करेंगे। पीसीबी के मुताबिक सीए के अध्यक्ष अर्ल एडिंग्स और मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) केविन रोबर्ट्स 16 से 18 सितंबर तक पाकिस्तान में रहेंगे। ईसीबी के सीईओ और निदेशक अक्टूबर में आएंगे। पीसीबी के अध्यक्ष एहसान मनी ने शुक्रवार को लाहौर में पीसीबी की संचालन बोर्ड को इस बात से अवगत कराया। मनी के मुताबिक, ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड के अधिकारियों को सुरक्षा खाके का पूर्ण ब्यौरा सौंपा जाएगा। इसका मकसद पाकिस्तान दौरे पर टीम भेजने के लिए उन्हें राजी करना है।

फुटबॉल | क्रिस्टियानो ने कहा, हमने 15 वर्षों तक मंच साझा किया है

मेसी के साथ डिनर करना चाहूंगा: रोनाल्डो

मोनाको, आइएएनएस: पुर्तगाल के सुपरस्टार स्ट्राइकर क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने चिर-प्रतिद्वंद्वी लियोन मेसी के साथ डिनर करने की इच्छा जाहिर की है। रोनाल्डो ने यह भी कहा कि उन्होंने और मेसी ने पिछले 15 वर्षों में जिस तरह का प्रदर्शन किया है वैसा खेल के इतिहास में किसी अन्य खिलाड़ी ने नहीं किया। रोनाल्डो ने यूएफा पुरस्कार के दौरान कहा, 'हमने 15 वर्षों तक मंच साझा किया है। मैं नहीं जानता कि फुटबॉल में ऐसा पहले कभी हुआ है। यह आसान नहीं है।' पिछले सत्र की शुरुआत से पहले रोनाल्डो स्पेनिश क्लब रीयल मैड्रिड से इटली के क्लब जुवेंटस में शामिल हुए जबकि मेसी अभी भी बार्सिलोना के लिए खेलते हैं। रोनाल्डो ने कहा, 'हमारे बीच अच्छा रिश्ता है, हमने अभी तक साथ में डिनर नहीं किया है, लेकिन मैं आशा करता हूं कि भविष्य में ऐसा हो। जाहिर तौर पर मैं स्पेन को याद कर रहा हूं। हमारे बीच पिछले 15 वर्षों तक मुकाबला चला। उन्होंने मुझे प्रेरित किया और मैंने भी ऐसा ही किया। फुटबॉल के इतिहास का हिस्सा होना अच्छा है। वह मुझसे दो साल छोटे हैं, लेकिन मुझे लगता है कि मैं अपनी उम्र के हिसाब से बहुत अच्छा हूं। मुझे उम्मीद है कि मैं अगले दो-तीन साल तक और यहां दिखूंगा।'

क्रिस्टियानो रोनाल्डो ● एएफपी

इंटर मिलान से जुड़े सांचेज

लंदन, एएफपी: इटली के क्लब इंटर मिलान ने मैनचेस्टर युनाइटेड से एलेक्सिस सांचेज को लोन पर अपने क्लब के साथ जोड़ा है। दोनों क्लबों ने इसकी जानकारी दी। सांचेज युनाइटेड के लिए 45 मैचों में सिर्फ पांच गोल कर पाए हैं। मिलान ने यह करार 30 जून 2020 तक के लिए किया है।

उज्बेकिस्तान ने दोस्ताना मैच में भारत को हराया: उज्बेकिस्तान की महिला फुटबॉल टीम ने शुक्रवार को याकासारी स्टेडियम में खेले गए दोस्ताना मैच में भारतीय महिला टीम को 5-1 से हरा दिया। भारत ने हालांकि पांचवें मिनट में ही बढ़त ले ली थी, लेकिन इसके बाद वह पांच गोल खा बैठी। भारत के लिए बाला देवी ने पांचवें मिनट में गोल किया। संजू यादव ने बायें छोर से डेंगमेई ग्रेस को क्रॉस दिया। ग्रेस ने गेंद बाला को पास की और भारत के हिस्से में गोल आया। उज्बेकिस्तान ने 30वें मिनट में ल्यूडमिला काराचिक के गोल की मदद से स्कोर बराबर कर लिया। 38वें मिनट में माफटुना शोयिमोवा ने उज्बेकिस्तान के लिए दूसरा गोल किया। पहले हाफ का अंत उज्बेकिस्तान ने 2-1 के स्कोर के साथ किया। निलुफर कुड्राटोवा ने 49वें मिनट में अपनी टीम के लिए तीसरा गोल किया। उज्बेकिस्तान के लिए चौथा गोल 62वें मिनट में आया। मैच खत्म होने में जब आठ मिनट का समय बाकी था, तब यूगिलोय कुछकारोवा ने उज्बेकिस्तान के लिए पांचवां गोल किया। दोनों टीमों के बीच अगला मैच सोमवार को खेला जाएगा।

मेरे खेल में अभी और सुधार की जरूरत : गौतम

कर्नाटक और राजस्थान रॉयल्स के 30 वर्षीय ऑलराउंडर कृष्णप्पा गौतम ने कर्नाटक प्रीमियर लीग (केपीएल) 2019 में बेल्लारी टस्कर्स की ओर से खेलते हुए टी-20 मैच में नाबाद 134 रन बनाने के अलावा आठ विकेट लेकर क्रिकेट जगत में हलचल मचा दी थी, लेकिन इस खिलाड़ी का मानना है कि उनके खेल में अभी और सुधार की जरूरत है और इस पर वह काम करेंगे। **कृष्णप्पा गौतम** से **अभिषेक त्रिपाठी** ने खास बातचीत की। पेश हैं मुख्य अंश :

साक्षात्कार

● आप ओवरऑल भारत के घरेलू क्रिकेट को कैसे देखते हैं। इतना क्रिकेट हो रहा है तो क्या इससे युवाओं को फायदा होगा?

-हमारा घरेलू टूर्नामेंट बहुत ही अच्छा है। हमारे यहां जितने भी टूर्नामेंट हो रहे हैं उसमें क्रिकेटरों को मौके मिलते हैं। बहुत सारे टूर्नामेंट हैं जैसे दलीप ट्रॉफी, मुश्ताक अली और भी टूर्नामेंट चलते हैं। एक अच्छी चीज यह है कि सभी क्रिकेटर को खेलने का मौका मिलता है।

● आपने अभी शतक और आठ विकेट चटकाए तो उस दौरान आपके दिमाग में क्या चल रहा था। उस दिन के बारे में क्या कहेंगे?

-मैं सकारात्मक होकर मैदान पर गया था। हम लोगो ने मैच से पहले फैसला किया था कि उनकी गेंदबाजी बहुत मजबूत है और हम उनके सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजों को लक्ष्य बनाएंगे और इससे मदद भी मिली। हमने बस यह सोचा था कि हमें अच्छा खेलना है।

● इस प्रदर्शन से आपको क्या फायदा मिलेगा और इससे आपका आत्मविश्वास बढ़ेगा?

-मैं अभी भी सकारात्मक सोच रहा हूं और सभी लोग कहते हैं कि ऐसे ही आगे भी खेलना है। मैं अभी आगे के बारे में ज्यादा नहीं सोच रहा हूं।

● आपके खेल में अभी कहां सुधार की जरूरत है?

-अभी बहुत सुधार की जरूरत है। मुझे अभी बहुत सारी चीजों पर काम करना है। मुझे अपनी बल्लेबाजी और गेंदबाजी दोनों पर काम करना है। उम्मीद है कि मैं अपनी टीम को आगामी मैचों में जीत दिलाने की पूरी कोशिश करूंगा।

● केपीएल में आपकी पारी को लेकर आपको बहुत बधाई मिली होगी, लेकिन सबसे अच्छी और आपका आत्मविश्वास बढ़ाने वाली कौन सी बधाई है?

-राहुल द्रविड़ सर ने मुझे मैसेज किया था जो मुझे बहुत अच्छा लगा। उन्होंने कहा था कि तुम बहुत शानदार खेले।

● भारतीय टीम के बारे में आप क्या सोचते हैं और राष्ट्रीय टीम में जगह बनाने में कौन सी बाधा बीच में आ रही है?

-मैं अभी इतनी दूर की नहीं सोच रहा हूं। मैं अभी केपीएल के बारे में सोच रहा हूं और मेरा ध्यान भी इसी पर है। जब मौका मिलना होगा वो तभी मिलेगा, इसलिए अभी सोचने का कुछ फायदा नहीं है।

● केपीएल, आइपीएल और घरेलू क्रिकेट में प्रदर्शन खिलाड़ी को राष्ट्रीय टीम तक पहुंचता है?

-यह सही है। लेकिन अभी जो चीज चल रही है, मेरा उस पर ही ध्यान है। आप उन चीजों के पीछे मत भागो, बस अपना काम करते रहो। आपके हाथ में सिर्फ इतना है कि आपको प्रदर्शन करना है और यह करते रहो। जो आपके लिए होना है, वह आ जाएगा। मैं अभी यही सोचता हूं।

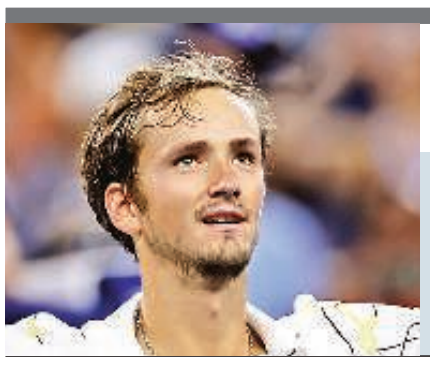

अभद्र व्यवहार पर मेदवेदेव ने जताया खेद

न्यूयॉर्क : रूस के टेनिस खिलाड़ी दानिल मेदवेदेव ने यूएस ओपन के तीसरे दौर के मैच के दौरान दर्शकों की ओर अभद्र इशारा करने पर खेद व्यक्त करते हुए कहा कि वह आगे से अच्छा व्यवहार करने की कोशिश करेंगे। पांचवीं वरीयता प्राप्त इस खिलाड़ी ने यहां के लुइस आर्मस्ट्रॉन्ग स्टेडियम में स्पेन के फेलिसियानो लोपेज के खिलाफ मुकाबले के दौरान बॉल बॉय से गुस्से में तौलिया छीना और फिर अपना रैकेट फेंकते हुए बीच की अंगुली दिखाई, जिसे संहिता का उल्लंघन माना गया।

हम ओलंपिक टेस्ट इवेंट में अपने प्रदर्शन से बेहद खुश थे। एक भी हार नहीं झेलने के कारण हमें बहुत खुशी हुई।
– सविता, भारतीय महिला गोलकीपर

टेनिस डायरी ▶ यूएस ओपन में विश्व नंबर एक खिलाड़ी नोवाक ने कुडला को हराया

जोकोविक और फेडरर पहुंचे चौथे दौर में

रोजर ने सीधे सेटों में इवांस पर जीत दर्ज की, निशिकोरी टूर्नामेंट से बाहर

न्यूयॉर्क, एएफपी : गत चैंपियन नोवाक जोकोविक और रोजर फेडरर ने अपने-अपने मुकाबले जीतकर यूएस ओपन में पुरुष सिंगल्स के चौथे दौर में जगह बनाई, जबकि जापानी खिलाड़ी केई निशिकोरी टूर्नामेंट से बाहर हो गए।

पिछले पांच ग्रैंडस्लैम में से चार अपने नाम करने वाले शीर्ष रैंकिंग के खिलाड़ी जोकोविक को दूसरे दौर में कंधे के दर्द ने काफी परेशान किया था, लेकिन तीसरे दौर के मुकाबले में उन्हें इतनी परेशानी नहीं हुई। उन्होंने 111वीं रैंकिंग के अमेरिकी खिलाड़ी डेनिस कुडला को 6-3, 6-4, 6-2 से मात दी। 16 ग्रैंडस्लैम जीत चुके 32 वर्षीय सर्बियाई खिलाड़ी का सामना अब तीन बार के ग्रैंडस्लैम विजेता स्टेन वावरिंका से होगा। स्विट्जरलैंड के इस 23वीं वरीय खिलाड़ी ने इटली के पाओलो लोरेंजी को 6-4 7-6 7-6 से मात दी। तीन यूएस ओपन की ट्रॉफियां जीत चुके जोकोविक का वावरिंका के खिलाफ जीत का रिकॉर्ड 19-5 है, लेकिन 2016 यूएस ओपन फाइनल के बाद से दोनों के बीच भिड़ंत नहीं हुई, जिसमें वावरिंका ने जोकोविक को मात दी थी।

वहीं, पांच बार के चैंपियन फेडरर ने ब्रिटेन के डान इवांस पर महज 80 मिनट में 6-2, 6-2, 6-1 से आसान जीत दर्ज की। पिछले दो मुकाबलों में उन्होंने अपना पहला सेट गंवाया था, जिससे 20 बार के ग्रैंडस्लैम चैंपियन ने इस मैच में शुरू से मजबूत शुरुआत। फेडरर का सामना अब बेल्जियम के 15वीं वरीय डेविड गोफिन से होगा। जापान के सातवीं वरीय निशिकोरी को ऑस्ट्रेलिया के एलेक्स डि मिनॉर ने 6-2, 6-4, 2-6, 6-3, से हराया और अब उनका सामना बुल्गारिया के ग्रिगोर दिमित्रोव से होगा।

जीत के बाद जश्न मनाते नोवाक जोकोविक। एपी

सेरेना विलयम्स की आसान जीत

न्यूयॉर्क : महिलाओं के वर्ग में सेरेना ने चेक गणराज्य की 44वीं रैंकिंग की खिलाड़ी कैरोलिना मुचोवा को 74 मिनट में 6-3, 6-2 से शिकस्त दी। 24वां करियर ग्रैंडस्लैम खिताब हासिल करके मार्गरेट कोर्ट के रिकॉर्ड की बराबरी की कोशिश में जुटीं सेरेना का सामना अब क्रोएशिया की 22वीं वरीय पेत्रा मार्टिक से होगा। अपने पहले ग्रैंडस्लैम खिताब जीतने का सपना देख रहीं चेक गणराज्य की कैरोलिना प्लिस्कोवा ने ट्यूनीशिया के ओंस जाबेउर को 6-1, 4-6, 6-4 से हराकर प्री-क्वार्टर फाइनल में जगह पक्की की। वहीं, एश्ले बार्टी ने भी अगले दौर में जगह सुनिश्चित की। उन्होंने यूनान की 30वीं वरीय मारिया सकारी को 7-5, 6-3 से शिकस्त दी। क्वार्टर फाइनल में पहुंचने के लिए प्लिस्कोवा का सामना ब्रिटेन की 16वीं वरीयता प्राप्त जोहाना कोंटा से होगा।

बोपन्ना-शापोवालोव दूसरे दौर में, पेस-दुरान की जोड़ी बाहर

न्यूयॉर्क : भारतीय खिलाड़ी रोहन बोपन्ना ने डेनिस शापोवालोव के साथ मिलकर यहां यूएस ओपन के पुरुष डबल्स स्पर्धा के दूसरे दौर में प्रवेश किया तो लिएंडर पेस और गुलीरेमो दुरान को पहले दौर में हार का मुंह देखना पड़ा। बोपन्ना और उनके कनाडाई जोड़ीदार ने पियरे ह्योजेस हर्बर्ट की चौथी वरीयता प्राप्त फ्रांसिसी जोड़ी को 6-3, 6-1, से मात दी। बोपन्ना व शापोवालोव ने दो बार सर्विस गंवाई, लेकिन उन्होंने सात मौकों में छह बार अपने प्रतिद्वंद्वियों की सर्विस तोड़ी।

शशि मुकुंद एटीपी चैलेंजर के फाइनल में पहुंचे

वाओटू (चीन), प्रेट्र : भारतीय टेनिस खिलाड़ी शशि कुमार मुकुंद ने एटीपी चैलेंजर टूर में पहली बार सिंगल्स के फाइनल में प्रवेश किया। मुकुंद को हाल में भारतीय डेविस कप टीम में रिजर्व सदस्य चुना गया है। उन्होंने क्ले कोर्ट टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में टुंग लिन वु को 7-5, 6-3 से शिकस्त दी। उन्होंने इसे और विशेष बनाते हुए रूसी जोड़ीदार तेमुराज गाबाश्विली के साथ मिलकर पुरुष डबल्स फाइनल में भी प्रवेश किया।

भारत-पाक ओलंपिक क्वालीफायर मुकाबले हो सकते हैं यूरोप में

हॉकी डायरी

करांची, प्रेट्र : अंतरराष्ट्रीय हॉकी महासंघ (एफआइएच) की कोशिश है कि 2020 टोक्यो ओलंपिक के लिए क्वालीफाइंग टूर्नामेंट में अगर भारत और पाकिस्तान का आमना-सामना होता है तो वे अपने घरेलू और विदेशी जमीन पर होने वाले मैच यूरोप में खेलें।

एफआइएच ने गुरुवार को ड्रॉ की टीमें जारी कीं, जिसमें भारत और पाकिस्तान को दो अलग-अलग ग्रुपों में रखा गया है और दोनों टीमों का सामना ओलंपिक क्वालीफाइंग टूर्नामेंट में हो सकता है। एफआइएच जल्द ही टोक्यो ओलंपिक के क्वालीफायर्स के लिए ड्रॉ घोषित करेगा और पाकिस्तान हॉकी महासंघ (पीएचएफ) के सूत्र के मुताबिक इसमें भारत-पाकिस्तान का सामना हो सकता है। इस सूत्र ने कहा, 'सितंबर-अक्टूबर में होने वाले क्वालीफायर में शीर्ष टीमों को निचली रैंकिंग वाली टीमों से खेलना होगा। भारत और पाकिस्तान एक-एक क्वालीफाइंग टूर्नामेंट जीत चुके हैं और ड्रॉ में दोनों का सामना हो सकता है।' ओलंपिक में जगह बनाने के लिए और सात टीमों के पास मौका होगा, जिसमें पाकिस्तान, मिस्र, दक्षिण कोरिया, स्पेन, जर्मनी, न्यूजीलैंड, भारत के साथ कुछ अन्य टीमें दावेदारी पेश करेंगी।

भारत सरकार द्वारा जम्मू-कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा देने वाले अनुच्छेद 370 के हटाए जाने के बाद दोनों देशों के रिश्तों में तनाव है। सूत्र ने कहा, 'यह जरूरी नहीं है कि हम ड्रॉ में भारत से खेलें, लेकिन अगर ऐसा होता है तो एफआइएच शायद यह मैच यूरोप में कराएगा, क्योंकि भारत और पाकिस्तान में हालात खेलने के अनुकूल नहीं हैं।' विश्व रैंकिंग में पाकिस्तान 17वें स्थान पर है और पाकिस्तानी टीम रियो ओलंपिक के लिए क्वालीफाई नहीं कर सकी थी।

भारत-पाक की हॉकी टीम। (फाइल)

हॉकी इंडिया ने राष्ट्रीय कोचिंग शिविर के लिए 33 संभावित चुने

नई दिल्ली, प्रेट्र : हॉकी इंडिया ने बेल्जियम दौरे और ओलंपिक क्वालीफायर की तैयारियों के लिए बेंगलुरु में भारतीय खेल प्राधिकरण (साई) में दो सितंबर से लगने वाले सीनियर पुरुष राष्ट्रीय कोचिंग शिविर के लिए शनिवार को 33 सदस्यीय संभावित खिलाड़ियों की सूची जारी की। तीन दिवसीय कैंप कोच ग्राहम रीड द्वारा आयोजित किया जाएगा।

टीम की न्यूजीलैंड के खिलाफ ओलंपिक टेस्ट इवेंट के फाइनल में मिली जीत के बाद लगने वाले इस कैंप में खिलाड़ी अपने प्रदर्शन को निरंतर बनाए रखने पर ध्यान लगाना चाहेंगे। रीड ने कहा, 'हमने पिछले कुछ महीनों में कुछ अच्छी लय हासिल की है। इस कैंप के लिए आने वाले खिलाड़ी सुधार करना चाहते हैं और टीम के प्रदर्शन के सभी पहलू में सुधार करने को तैयार हैं। इस शिविर में और ज्यादा मौके बनाने और हमारी रक्षात्मक काबिलियत में सुधार करने पर ध्यान दिया जाएगा।' उन्होंने साथ ही कहा कि सितंबर में होने वाला बेल्जियम दौरा टीम की एफआइएच ओलंपिक क्वालीफायर की तैयारियों के लिए काफी अहम होगा।

खिलाड़ियों की सूची इस प्रकार है

गोलकीपर : पीआर श्रीजेश, सूरज करकेरा और कृष्ण बहादुर पाठक।

डिफेंडर : हरमनप्रीत सिंह, बीरेंद्र लाकड़ा, सुरेंद्र कुमार, अमित रोहिदास, वरुण कुमार, रुपिंदर पाल सिंह, गुरिंदर सिंह, कोथाजीत सिंह, नीलम संजीप जेस, जर्मनप्रीत सिंह और दिपसन टिर्की।

मिडफील्डर : मनप्रीत सिंह, सुमित, नीलकांत शर्मा, जसकरण सिंह, हार्दिक सिंह, विवेक सागर प्रसाद, आशीष कुमार टोपनो, सैयद नियाज रहीम और राज कुमार पाल। फॉरवर्ड : मंदीप सिंह, आकाशदीप सिंह, शिलानंद लाकड़ा, गुरसाहिबजीत सिंह, सिमरनजीत सिंह, एसवी सुनील, गुरजंत सिंह, रमनदीप सिंह, शमशेर सिंह और ललित कुमार उपाध्याय।

सचिन ने दी श्रीनाथ को जन्मदिन की बधाई

नई दिल्ली, प्रेट्र : दिग्गज सचिन तेंदुलकर ने शनिवार को अपने दोस्त और भारत के पूर्व तेज गेंदबाज जवागल श्रीनाथ को जन्मदिन के मौके पर शुभकामनाएं दीं। भारत के लिए वनडे में तेज गेंदबाज के तौर पर रिकॉर्ड 315 विकेट लेने वाले श्रीनाथ ने शनिवार को अपना 50वां जन्मदिन मनाया। इस मौके पर उन्हें सोशल मीडिया पर उनके फैंस के अलावा कई क्रिकेटरों ने बधाई दी।

सचिन ने श्रीनाथ के साथ अपनी एक पुरानी फोटो पोस्ट करते हुए लिखा कि एक मजबूत प्रतिद्वंद्वी, एक अच्छा दोस्त और एक शानदार गेंदबाज जिनके साथ मैं कई साल तक खेला। आपको जन्मदिन की बहुत बहुत बधाई। इसके अलावा क्रिकेट डॉट कॉम डॉट एयू ने भी ट्विटर पर श्रीनाथ का एक विडियो शेयर किया। विडियो में वाका के मैदान पर वेस्टइंडीज के खिलाफ 1991 में खेले गए वनडे की एक क्लिप है। श्रीनाथ इसमें बल्लेबाज को छकाते हुए बोल्ड करते हैं जिसके बाद टीम सदस्य संजय मांजरेकर, मुहम्मद अजहरुद्दीन और श्रीकांत उन्हें बधाई देते हैं। पूर्व क्रिकेटर आकाश चोपड़ा ने भी श्रीनाथ को जन्मदिन के मौके पर शुभकामनाएं दीं।

जवागल श्रीनाथ। (फाइल)

गुजरात ने बेंगलुरु को 32-23 से दी मात

बेंगलुरु, प्रेट्र : प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) में शनिवार को खेले गए पहले मैच में बेंगलुरु बुल्स को अपने घरेलू मैदान पर हार का सामना करना पड़ा। गुजरात फॉर्च्यूनजायंट्स ने 32-23 से बेंगलुरु बुल्स को मात दी। इस जीत के साथ गुजरात की टीम के 30 अंक हो गए और वह तालिका में छठे नंबर पर पहुंच गई। वहीं, बेंगलुरु अभी भी पांचवें नंबर पर है। गुजरात की टीम ने पहले हाफ से ही मैच पर अपनी बनाए पकड़ रखी। पहले हाफ के आखिर तक दोनों टीमों का स्कोर 18-12 था।

गुजरात के डिफेंस ने दमदार खेल दिखाते हुए बेंगलुरु के रेडर्स को शुरुआत से काबू में रखा। इसका फायदा उन्हें मैच में 14वें मिनट में मिला जब उन्होंने बुल्स को ऑलआउट किया। दूसरा हाफ पूरी तरह से डिफेंडर्स के नाम रहा। बेंगलुरु के डिफेंडर्स ने लगातार वापसी की कोशिश की लेकिन रेडर्स का साथ न मिल पाने कारण उनकी कोशिश नाकाफी रही।

दिव्यांग क्रिकेट संघ ने बीसीसीआइ से मदद की गुहार लगाई

नई दिल्ली, प्रेट्र : इंग्लैंड में हुई दिव्यांग टी-20 विश्व क्रिकेट सीरीज के पहले आयोजन की विजेता बनी भारतीय क्रिकेट टीम के सदस्यों को कोई वित्तीय मदद नहीं मिली जिसके बाद भारतीय दिव्यांग क्रिकेटर संघ (पीसीसीएआइ) के महासचिव रवि चौहान ने बीसीसीआइ के प्रशासकों की समिति (सीओए) से मदद की गुहार लगायी है। बीसीसीआइ के चुनाव के बाद लोढ़ा समिति के मुताबिक, दिव्यांग क्रिकेटर संघ का बीसीसीआइ में विलय हो जाएगा।

चौहान ने कहा कि फिलहाल दिव्यांग क्रिकेटरों को कोई मदद नहीं मिल रही जिससे उनके लिए खेल को जारी रखना काफी मुश्किल है। चौहान ने शनिवार को कहा, '' मैंने सीओए सदस्यों डायना मैडम (इडुल्जी) और विनोद राय से अपने खिलाड़ियों के लिए कुछ वित्तीय मदद देने की मांग की हैं। बीसीसीआइ अगर खिलाड़ियों को कुछ नकद राशि देती है तो इससे खेल को जारी रखने मदद के साथ उनका मनोबल भी बढ़ेगा।'' चौहान ने कहा कि जिस तरह विदर्भ क्रिकेट संघ ने स्थानीय खिलाड़ी और विश्व विजेता टीम के सदस्य गुरुदास राउत का सम्मान किया उससे दूसरे राज्य इकाइयों को भी सीख लेनी चाहिए। उन्होंने कहा, ''विदर्भ क्रिकेट संघ ने लोढ़ा समिति की सिफारिशों को अपना लिया है और उन्होंने गुरूदास को दो लाख रूपये से सम्मानित किया। सभी खिलाड़ियों को उन्ही राज्य संघों से ऐसी मदद की जरूरत है।''

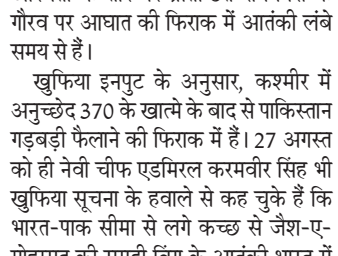

बीसीसीआइ लोगो।

विविध

शादी से मना किया तो पांच टुकड़े कर नहर में फेंका

जासं, नई दिल्ली : फेरी लगाकर कपड़े बेचने वाले अयूब को जीबी रोड के कोठे पर देहव्यापार करने वाली महिला से प्यार हो गया। महिला से शादी करने के लिए उसने अपनी पत्नी और तीन बच्चे तक को छोड़ने का मन बना लिया था। लेकिन महिला अपनी पुरानी जिंदगी छोड़ने को तैयार नहीं हुई। लिहाजा महिला के ठुकराने से नाराज अयूब ने उसकी हत्या की साजिश रची। महिला को सुनसान स्थान पर ले जाकर चापड़ से गला रेतकर उसकी हत्या कर दी। बर्बरता की हद यह कि गुस्से में उसने उसके शव के पांच टुकड़े कर उसे बवाना नहर में फेंक दिया। घटना के दस दिन बाद दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने आरोपित अयूब को तुर्कमान गेट इलाके से गिरफ्तार कर लिया है। उसके पास से घटना के वक्त प्रयुक्त स्कूटी भी बरामद कर ली गई है।

स्पेशल सेल के डीसीपी प्रमोद कुशवाहा ने बताया कि 20 अगस्त को केएन काटजू थाना इलाके में महिला की हत्या की घटना सामने आई थी। सूचना के बाद थाने में मुकदमा दर्ज कर मामले की छानबीन शुरू की गई। छानबीन में पुलिस को पता चला कि वारदात को तुर्कमान गेट निवासी अयूब ने अंजाम दिया है। यही नहीं वह दिल्ली से भागने की जुगत में था। इसकी जानकारी मिलते ही पुलिस ने 30 अगस्त को अयूब को गिरफ्तार कर लिया। उससे पूछताछ के बाद पता चला कि मृतका जीबी रोड की देहव्यापार करने वाली महिला थी। आरोपित ने बताया कि वह फेरी लगाकर कपड़े बेचता है। करीब चार वर्ष पहले उसकी पहचान महिला से हुई थी। दोस्ती बढ़ने पर वह उससे शादी करना चाहता था। इसके लिए उसने अपने परिवार को छोड़ने का मन भी बना लिया था। लेकिन महिला अपने माहौल में खुश थी। वह शादी के लिए तैयार नहीं हुई। उसका शादी से इन्कार वह बर्दाश्त नहीं कर सका और उसकी हत्या करने की ठान ली। इसी सनक में 20 अगस्त को एक जानकार से अयूब ने स्कूटी किराये पर ली और महिला को घुमाने के बहाने रोहिणी इलाके में बवाना नगर के पास ले आया। यहां मौका मिलते ही उसने महिला की हत्या कर दी और शव के पांच टुकड़े कर नहर में फेंक दिया।

दाने-दाने को मोहताज परिवार के मुखिया ने लगाया मौत को गले

जागरण संवाददाता, कासगंज

पांच दिनों से चूल्हे में आग भी नहीं धधकी थी। भूख से बिलखते बच्चों की दुर्दशा देख आस-पड़ोस के लोग जो दे देते, बच्चे उससे ही पेट भर रहे थे। परिवार का मुखिया रक्षाबंधन के बाद मजदूरी करने दिल्ली गया था। उम्मीद थी कि पेट भरने लायक कमा कर जरूर लौटेगा। मगर शुक्रवार को गांव के बाहर पेड़ पर फांसी के फंदे पर झूलने की खबर ने न केवल गरीब परिजनों की उम्मीदें खत्म कर दीं, बल्कि इस घटना ने पूरे प्रशासनिक तंत्र को ही कठघरे में खड़ा कर दिया। उसकी पत्नी और तीन बच्चे अब बेसहारा हो गए हैं। तमाम कल्याणकारी योजनाओं के बीच भी रोटी के लिए तरसता यह अभागा परिवार उप्र के कासगंज जिले के कस्बा बिलराम का है। मुहल्ला मंडी में रहने वाले पूरन प्रजापति के पास खुद का मकान भी नहीं है। छोटे भाई के मकान में पत्नी सुनीता, दो बेटियों गुड़िया, हेमलता और तीन वर्षीय बेटे छत्रपाल के साथ रहती हैं। पूरन दिल्ली में मजदूरी करता था।

रक्षाबंधन पर पूरन घर लौटा, मगर खाली हाथ। तीन दिन बाद वह फिर दिल्ली चला गया। इधर, घर में राशन खत्म हो चुका था। बच्चों के लिए पड़ोसी कुछ खाद्य सामग्री देते रहे। पत्नी सुनीता को उम्मीद थी कि पूरन कुछ कमाकर ही लौटेगा। मगर शुक्रवार शाम को अचानक एक खबर ने उसके जीवन को ही उजाड़ दिया। गांव के बाहर पेड़ पर पूरन फंदे पर लटका था। इस घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस और प्रशासन में खलबली मच गई। ग्रामीणों ने अधिकारियों को पूरन के घर के हालात के बारे में जानकारी दी। इसके बाद एसडीएम और नायब तहसीलदार ने परिवार के लिए खाद्य सामग्री का इंतजाम कराया।

मृतक के परिवार के लिए राशन की व्यवस्था करा दी गई है। एडीएम पूरे मामले की जांच कर रहे हैं। पारिवारिक लाभ योजना से इन्हें जोड़ा जाएगा। मुख्यमंत्री राहत कोष से भी परिवार को मदद दिलाने का प्रयास किया जाएगा।
–चंद्रप्रकाश सिंह, जिलाधिकारी

सोने की लौंग बेचकर भेजा था दिल्ली : गांव में ही रहने वाली कुंती बताती हैं कि काम न चलने के कारण पूरन के पास दिल्ली जाने के लिए पैसे नहीं थे। ऐसे में सुनीता ने अपनी सोने की लौंग बेचकर दिल्ली तक का किराया दिया था। हजार या पांच सौ की यह लौंग ही शायद उसके पास एकमात्र गहना था।

13 वर्ष की गुड़िया बेलने जाती है पूड़ी: पिता दिल्ली चले गए, मां खेतों में मजदूरी कर लेती और 13 वर्षीय गुड़िया ने स्कूल जाना छोड़ दिया। वह हलवाइयों के साथ में पूड़ी बेलने जाती है। इससे जो रुपये मिलते थे उससे ही घर का खर्च चलता था।

सिर्फ राशन और केरोसिन तेल ही मिलता है कार्ड पर : पूरन के पास अंत्योदय और पात्र गृहस्थी कार्ड ही था। इस कार्ड से सस्ती दर पर राशन और मिट्टी का तेल ही मिलता है। मनरेगा का जॉब कार्ड नहीं था। पैसे न होने से परिवार राशन की दुकान से राशन नहीं खरीद पा रहा था।

पांढुर्णा में परंपरा के नाम पर फिर खून बहा, 700 से अधिक घायल

नईदुनिया, छिंदवाड़ा: मध्य प्रदेश में छिंदवाड़ा जिला मुख्यालय से 100 किमी दूर पांढुर्णा में शनिवार को आयोजित 'गोटमार मेले' में पत्थरबाजी रोकने में प्रशासन एक बार फिर नाकाम रहा। परंपरा के नाम पर आयोजित खूनी खेल में पांढुर्णा और सांवरगांव के लोगों के बीच जमकर पथराव हुआ। इसमें 700 से ज्यादा लोग घायल हो गए। तीन लोगों को गंभीर चोंटें आई हैं। उन्हें नागपुर (महाराष्ट्र) ले जाया गया है।

शनिवार को सुबह नौ बजे पांढुर्णा की जाम नदी में गोटमार मेले की शुरुआत चंडिका देवी के पूजन के बाद पलास के पेड़ पर झंडा लगाकर हुई। इसके बाद पांढुर्णा और सांवरगांव के लोगों में नदी में लगे झंडे को तोड़ने के लिए दोनों तरफ से पथराव हुआ। शाम 5.40 बजे पांढुर्णा के लोगों ने झंडा जीत लिया। वहीं, एसपी मनोज राय का कहना है कि स्वास्थ्य केंद्र में 45 घायल पहुंचे हैं, जिनमें से दो की हालत गंभीर है। उन्हें नागपुर भेजा गया है।

लंबे समय से आतंकियों के निशाने पर रही रामनगरी में हाई अलर्ट

रघुवरशरण, अयोध्या : रामनगरी इन दिनों हाई अलर्ट पर यूं ही नहीं है। देश की सांस्कृतिक अस्मिता के तौर पर प्रतिष्ठित रामनगरी के गौरव पर आघात की फिराक में आतंकी लंबे समय से हैं।

खुफिया इनपुट के अनुसार, कश्मीर में अनुच्छेद 370 के खात्मे के बाद से पाकिस्तान गड़बड़ी फैलाने की फिराक में हैं। 27 अगस्त को ही नेवी चीफ एडमिरल करमवीर सिंह भी खुफिया सूचना के हवाले से कह चुके हैं कि भारत-पाक सीमा से लगे कच्छ से जैश-ए-मोहम्मद की समुद्री विंग के आतंकी भारत में प्रवेश कर सकते हैं। समझा जाता है कि उनके निशाने पर राजधानी दिल्ली सहित कुछ प्रमुख राष्ट्रीय प्रतिष्ठानों से लेकर रामनगरी भी हो सकती है। इसी इनपुट के आधार पर रामनगरी हाई अलर्ट पर है।

अधिग्रहीत परिसर तक आ धमके थे आतंकी

सांस्कृतिक अस्मिता को चोट पहुंचाने के लिए रची जाती रही है साजिश

जब ढेर हुआ था लश्कर कमांडर

बात अगस्त 1997 की है। माझा बरहटा से लगा बाईपास गोलियों की तड़तड़ाहट से गूंज उठा था। घाटी में सक्रिय आतंकी संगठन लश्करे तैयबा का एरिया कमांडर इमरान नगर की सीमा तक आ पहुंचा था और उसका पीछा कर रही एसटीएफ ने कड़े मुकाबले में उसे ढेर करने में सफलता पाई।

पांच जुलाई 2005 को फिदायीन दस्ता के पांच आतंकी रामलला को निशाना बनाने की गरज से अधिग्रहीत परिसर तक आ धमके। 2007 में कचहरी में ब्लॉस्ट से भी आतंकियों ने पांच लोगों की जान लेने के साथ रामनगरी को नए सिरे से दहलाने की साजिश को अंजाम दिया।

बरामद हुआ था कुमकुम बम

इसके ठीक एक साल बाद बजरंगबली की प्रधानतम पीठ हनुमानगढ़ी के सामने लावारिस वैन में कुकर बम बरामद किया गया। मार्च 1999 में चैत्र रामनवमी मेला के तीसरे दिन और तत्कालीन मुख्यमंत्री कल्याण सिंह के आगमन के दो दिन पूर्व जांच एजेंसियों ने अयोध्या रेलवे स्टेशन पर जिलेटिन की 27 क्षणों के रूप में भारी मात्रा में विस्फोटक बरामद किया। पुलिस लाइन में यह विस्फोटक निष्क्रिय किए जाने के दौरान बम निरोधक दस्ता के दो जवानों सहित तत्कालीन एसएसपी अनिल अग्रवाल जख्मी भी हो गए थे।

मौसम विशेष

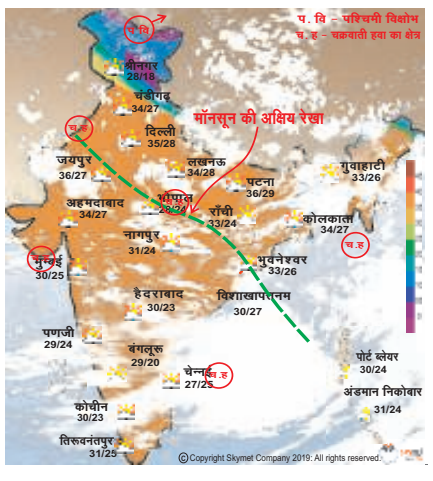

राजस्थान, दिल्ली, पंजाब और हरियाणा में दिन के तापमान में हल्की गिरावट जारी रहेगी। इन राज्यों में कुछ स्थानों पर गरज के साथ हल्की से मध्यम वर्षा होगी। जम्मू-कश्मीर में कुछ स्थानों पर तथा हिमाचल प्रदेश में अनेक स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा जारी रहेगी।

भारत के मुख्य शहरों का तापमान:

शहर		शहर	
मुम्बई	31/26/व	अहमदाबाद	32/25/व
कोलकाता	35/28/व	बड़ोदा	29/25/आंबा
चेन्नई	35/25/व	नागपुर	29/23/आंबा
हैदराबाद	31/23/व	इन्दौर	27/23/सा
बंगलूरू	30/21/व	रांची	32/25/व
त्रिवेन्द्रम	32/26/व	पटना	36/28/व
गुवाहाटी	33/26/व	जमशेदपुर	34/27/आंबा
गंगटोक	18/11/आंबा	पुणे	24/22/व

साप्ताहिक राशिफल

रविवार 1 सितंबर, 2019 से शनिवार 7 सितंबर, 2019 तक

पं. बी. बी. शास्त्री 'देवेश'

मेष (चू,चे,चो,ला,ली,लू,ले,लो,आ)
व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में प्रगति, अर्थ साधन, नए स्थानों में व्यापार योग, पारिवारिक सुख शांति, भौतिक साधनों की पूर्ति, अध्ययन में एकाग्रता, चयन में सफलता, मित्रों से सावधान, यात्रा में सावधानी, अधिकारी से अनबन, वाहन में सावधानी, लोकप्रियता में कमी, शुभ अंक 9।

वृष (इ,ऊ,ए,ओ,पा,वी,वू,वे,वो)
अर्थ साधन में प्रयास करें, कार्य करने वालों से सावधान, पारिवारिक अनबन, सजावट भूमि कार्य में सफलता, चयन में सफलता, शत्रु परास्त, दांपत्य में मधुरता, यात्रा में सावधानी, राजनीति में अपयश, निर्माण की योजना, व्यय अधिक, शुभ अंक 10।

मिथुन (का,की,कू,घ,ड,छ,के,को,हा)
व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में सफलता, अर्थ साधन में देरी, नए स्थानों पर संपर्क, सुख-शांति, साधनों की वृद्धि, संतान से चिंतित, शिक्षा में एकाग्रता, विवादित कार्य से बचें, तीर्थयात्रा योग, जीवन साथी का मिलन, लोकप्रियता में कमी, राजनीतिक अपयश, स्थान परिवर्तन, शुभ अंक 11।

कर्क (ही,हू,हे,हो,डा,डी,डू,डे,डो)
अर्थ साधन में प्रयास करें, पूंजी निवेश में सावधानी, पारिवारिक चिंता, साधन वृद्धि, संतान से अनबन, शिक्षा में व्यवधान, विवादित कार्य से बचें, शत्रु पक्ष प्रभावी, प्रणय में मधुरता, यात्रा से बचें, कार्यों के प्रति सावधानी, राज्य पक्ष में अपयश, शुभ अंक 11।

सिंह (मा,मी,मू,मे,मो,टा,टी,टू,टे)
नौकरी, उद्योग, व्यापार के कार्य में सहयोग से सफलता, सहयोगी जनों से सतर्क, जीवन में खिन्नता, भौतिक साधन वृद्धि, संतान के प्रति योजना, तकनीकी शिक्षा में रुचि, चयन में देरी, आलस्य से बचें, यात्रा से लाभ, अधिकारी जन से सहयोग, लोकप्रियता में कमी, स्थान परिवर्तन, शुभ अंक 1।

कन्या (टो,पा,पी,पू,ष,ण,ठ,पे,पो)
धनागम में सुधार, पूंजी निवेश में सावधानी, जीवन शांतिमय, साधनों की वृद्धि, संतान से अनबन, शिक्षा में रुचि, चयन में सफलता, विवादित कार्य से बचें, क्रोध पर नियंत्रण करें, दांपत्य में अनबन, यात्रा में सावधानी, संपूर्ति का अनुबंध, शुभ अंक 2।

तुला (रा,री,रू,रे,रो,ता,ती,तू,ते)
व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में प्रगति, धनागम में प्रगति, विदेश कार्य में प्रयास सफल, साधन वृद्धि, वाहन योग, संतान की सफलता, चयन में देरी, वाद में विजय, सलाह से किए गए कार्य में प्रगति, जीवन साथी का मिलन, यात्रा से लाभ, रुके कार्य संपन्न, बैंक कार्य में प्रगति, शुभ अंक 3।

वृश्चिक (तो,ना,नी,नू,ने,नो,या,यी,यू)
व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में प्रयास से सफलता, साहस की वृद्धि, विदेश कार्य में प्रयास करें, जीवन में चिंता, संतान से सहयोग, शिक्षा में रुचि, चयन में सफलता, नेत्र एवं त्वचा विकार, दांपत्य में अनबन, यात्रा में सावधानी, वाहन में सावधानी, व्यय अधिक, शुभ अंक 4।

धनु (ये,यो,भा,भी,भू,धा,फा,ढा,भे)
अर्थ साधन में प्रगति, आत्म विश्वास की कमी, कार्य करने वालों से सावधान, भौतिक साधनों की वृद्धि, संतान से चिंतित, चयन में अवरोध, वाद में विजय, दांपत्य में सुख, यात्रा से बचें, राज्यपक्ष से सावधान, स्थान परिवर्तन, व्यय अधिक, शुभ अंक 5।

मकर (भो,जा,ज,खी,खू,खे,खो,गा,गी)
व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में सफलता, धनागम अच्छा, आत्मविश्वास की वृद्धि, महिला से लाभ, जीवन में शांति, भवन भूमि सजावट योग, संतान से सहयोग, शिक्षा में एकाग्रता, मित्रों से सावधान, दांपत्य में अनबन, यात्रा में लाभ, यंत्र स्थापन योग, वाहन में सावधानी, शुभ अंक 6।

कुम्भ (गू,गे,गो,सा,सी,सू,से,सा,दा)
नौकरी, व्यापार, उद्योग के कार्य में सहयोग से सफलता, अर्थ साधन में सुधार, निर्णय सलाह से करें, विदेश कार्य में प्रयास सफल, भूमि योग, संतान के प्रति कार्य, शिक्षा में रुचि, वाद-विवाद से बचें, दांपत्य में सुख, संपूर्ति का अनुबंध, वाहन में सावधानी, व्यय अधिक, शुभ अंक 7।

मीन (दी,दू,थ,झ,ञ,दे,दो,चा,ची)
व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में प्रयास से सफलता, धनागम अच्छा, स्वास्थ्य में सुधार, भौतिक साधनों की वृद्धि, संतान से अनबन, चयन में सफलता, खानपान का ध्यान रखें, दांपत्य में मतभेद, यात्रा में सावधानी, रक्षा साधन कार्य में प्रगति, वाहन में सावधानी, शुभ अंक 8।

राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
आजकल
रविवार 1 सितंबर 2019
16
www.jagran.com

पहली महिला टेलीफोन ऑपरेटर बनीं एमा नट

1878 में आज ही एमा नट दुनिया की पहली महिला टेलीफोन ऑपरेटर बनीं। उन्हें टेलीफोन का आविष्कार करने वाले अलेक्जेंडर ग्राहम बेल ने बोस्टन टेलीफोन डिस्पैच कंपनी में नौकरी पर रखा था। माना जाता उस समय एमा को टेलीफोन डायरेक्टरी के सभी नंबर मुंह जुबानी याद थे।

शनि के पास पहुंचने वाला पहला यान बना पायनियर 11

1979 में आज ही नासा का पायनियर 11 शनि ग्रह के पास पहुंचने वाला पहला अंतरिक्ष यान बना था। 6 अप्रैल,1973 को इसे लांच किया गया था। 24 नवंबर 1995 के बाद इस यान का पृथ्वी से संपर्क टूट गया था।

भारत के प्रथम हिंदी गजल लेखक थे दुष्यंत कुमार

20वीं सदी के सबसे महत्वपूर्ण हिंदुस्तानी कवियों में से एक के रूप में विख्यात दुष्यंत कुमार का जन्म 1933 में आज ही बिजनौर (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। उन्होंने आम लोगों की बोलचाल की भाषा में कविताएं लिखकर तेजी से लोगों के दिल में जगह बना ली। उनकी धरोहरें दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय में सहेजी गई हैं। एक कंठ विषपायी, सूर्य का स्वागत, आवाजों के घेरे, जलते हुए वन का बसंत, छोटे-छोटे सवाल उनकी प्रमुख रचनाएं हैं। 30 दिसंबर, 1975 को उनका देहांत हो गया।

इधर-उधर की

यहां पर जोड़ा तलाशने में ट्रेन कर रही है मदद

बीजिंग, एजेंसी : चीन में 1,000 से ज्यादा युवा पुरुषों और महिलाओं ने एक साथ इस महीने की शुरुआत में एक खास तरह की ट्रेन से यात्रा की। उनकी इस ट्रेन का मकसद परफेक्ट लाइफ पार्टनर तलाशना है। पिछली सदी के सातवें दशक के दौरान अपनाई गई एक बच्चे की नीति की वजह से देश के भीतर एक विशाल लिंग अंतर की स्थिति उत्पन्न हो गई है। इस अंतर की वजह से वहां लोगों को अच्छे जीवनसाथी ढूंढने में दिक्कत हो रही है। 10 डिब्बों वाली लव-परस्यूट ट्रेन को तीन साल पहले देश के 2 करोड़ सिंगल लोगों के लिए रोस्टिंग मैच-मेकिंग सेवा के तौर पर लांच किया गया था। तब से इस ट्रेन में 3,000 से अधिक युवाओं ने यात्रा की है और एक-दूसरे से मिलने के बाद 10 से ज्यादा जोड़ों ने शादी की है।

मलेरिया को फैलने से रोकेगी नई दवा

बड़ी खोज ▶ मलेरिया के परजीवी का पूरी तरह से होगा सफाया, और कारगर होगा इलाज

परजीवी को जीवित रखने वाले प्रोटीन की गतिविधि रोकती है यह दवा

लंदन, प्रेट्र : मलेरिया के इलाज और उसकी रोकथाम के लिए ब्रिटेन के वैज्ञानिकों ने एक नई दवा विकसित की है। वैज्ञानिकों का दावा है कि इस दवा से मलेरिया के परजीवी को उसके जीवनचक्र के किसी भी चरण में मारा जा सकता है। साथ ही यह दवा मलेरिया के इलाज में भी बहुत कारगर साबित होगी।

अंतरराष्ट्रीय शोधकर्ताओं द्वारा किया गया यह शोध साइंस जर्नल में प्रकाशित किया गया है। शोधकर्ताओं की टीम का नेतृत्व ग्लास्गो यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर एंड्रयू टोबिन ने किया है। यह दवा प्लास्मोडियम प्रवाहित करने वाले मच्छरों को मारती है। प्लास्मोडियम प्रोटोजोआ संघ का वह प्राणी है जो मनुष्य में मलेरिया रोग उत्पन्न करता है। यह परजीवी मच्छर के माध्यम से मानव शरीर में लिवर और लाल रुधिर कोशिकाओं में पहुंच जाता है। शोधकर्ताओं ने बताया कि नई दवा मानव शरीर में कहीं भी मौजूद इस परजीवी को मारने में सक्षम है।

प्लास्मोडियम परजीवी लिवर और लाल रुधिर कोशिकाओं में ही बढ़ता है। इस परजीवी की खास विशेषता है कि यह रक्त में मादा और नर में बदल सकता है।

प्रभावित व्यक्ति से यह मच्छरों के माध्यम से ही दूसरे मनुष्य तक पहुंच जाता है। ग्लास्गो यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर टोबिन ने बताया कि शोधकर्ताओं का यह कदम मलेरिया उन्मूलन में प्रमुख भूमिका निभाएगा। उन्होंने बताया कि परजीवी को उसके विकास के विभिन्न चरणों में मारकर हम न केवल मलेरिया का इलाज कर रहे हैं, बल्कि उसे फैलने से भी रोक रहे हैं। यह अध्ययन यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, यूनिवर्सिटी ऑफ लिसेस्टर, फार्मास्यूटिकल कंपनी ग्लैक्सोस्मिथक्लाइन, यूनिवर्सिटी ऑफ ऑक्सफोर्ड आदि के सहयोग से किया गया है।

मलेरिया के लिए प्लास्मोडियम नामक परजीवी होता है जिम्मेदार। प्रतीकात्मक

इस तरह से काम करती है नई दवा

उन्होंने बताया कि नई दवा शरीर में मौजूद पीएफसीएलके-3 नामक प्रोटीन की गतिविधियों को रोकती है। यह प्रोटीन अन्य उन प्रोटीनों का उत्पादन करता है जो परजीवी को जीवित रखने में शामिल होते हैं। इस प्रोटीन की गतिविधि रोककर दवा ज्यादा प्रभावशाली तरीके से परजीवी को मारती है, जो न केवल इसे फैलने से रोकती है, जबकि मनुष्यों में इस बीमारी का इलाज भी करती है।

प्रत्येक साल 20 करोड़ लोग होते हैं प्रभावित

मलेरिया एक मच्छर जनित संक्रामक बीमारी है। प्रतिवर्ष इस बीमारी की चपेट में दुनियाभर में 20 करोड़ लोग आते हैं और प्रत्येक साल कम से कम पांच लाख लोग अपनी जान गंवाते हैं। इनमें ज्यादातर बच्चे होते हैं।

...तो इस वजह से कुछ लोग नहीं उठा पाते संगीत का मजा

वाशिंगटन, एएनआइ : क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं, जिसको संगीत में किसी भी प्रकार की रुचि नहीं है या फिर उसे संगीत में आनंद नहीं आता? यदि हां तो समझिये की उसे म्यूजिक एनहेडोनिया की बीमारी है। एक अध्ययन में बताया गया है कि दुनिया में पूरी आबादी के तीन से पांच फीसद लोग इस बीमारी से ग्रसित हैं।

बर्सिलोना यूनिवर्सिटी, मांट्रियल न्यूरोलॉजिकल इंस्टीट्यूट और हॉस्पिटल ऑफ मैकगिल यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने पता लगया है कि ऐसी स्थिति वाले लोगों के कॉर्टिकल क्षेत्र में कनेक्टिविटी नहीं होती है। मतलब उनके मस्तिष्क के कॉर्टेक्स एक दूसरे से परस्पर संबंध नहीं बना पाते हैं।

इस बीमारी की उत्पत्ति को समझने के लिए वैज्ञानिकों ने एक प्रयोग किया। इसमें 45 स्वस्थ प्रतिभागियों को शामिल किया गया। उनसे प्रश्नोत्तर कर उनकी संगीत के प्रति संवेदनशीलता जांची गई। इसके बाद प्रतिभागियों को संवेदनशीलता के स्तर पर तीन भागों में बांट दिया गया। प्रतिभागियों में संगीत के दौरान उनके मस्तिष्क की गतिविधि मापने के लिए एफएमआरआइ मशीन का उपयोग किया गया। संगीत के दौरान ही प्रतिभागियों से रुपयों की जीत-हार का खेल खेलने को कहा गया। इस दौरान पाया गया कि कुछ लोगों में खेल के दौरान मस्तिष्क के विभिन्न कार्टेक्स में कनेक्टिविटी घट गई। ऐसे लोगों की संगीत के प्रति संवेदनशीलता कम थी। वहीं, कुछ लोग ऐसे थे। जिनकी कनेक्टिविटी बढ़ गई, ऐसे लोगों को उच्च संवेदनशीलता वाला माना गया। इस अध्ययन में पाया गया कि मनुष्य में ध्यान लगाने में कमी, एकाग्रता की कमी भी कॉर्टिकल क्षेत्र में कनेक्टिविटी की कमी से ही होती है। यह अध्ययन 'न्यूरल कोरेलेट्स ऑफ स्पेसिफिक म्यूजिकल एनहेडोनिया' नामक पत्रिका में प्रकाशित किया गया है।

स्पेक्ट्रम

- संगीत को नापसंद करने वाले लोगों को होती है म्यूजिक एनहेडोनिया की बीमारी
- मस्तिष्क के कार्टेक्स का आपस में संबंध बिगड़ने से होती है दिक्कत

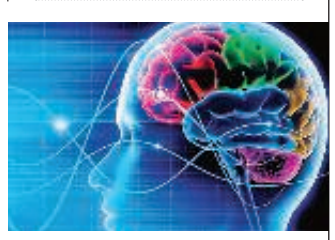

प्रतीकात्मक

शोध अनुसंधान

अल्टरनेट-डे फास्टिंग है वजन घटाने का कारगर तरीका

शोधकर्ताओं ने वजन कम करने का कारगर तरीका खोजा है। एक अध्ययन के मुताबिक, अल्टरनेट-डे फास्टिंग (एडीएफ) इस लिहाज से बेहतर तरीका हो सकता है। एडीएफ के तहत व्यक्ति एक दिन भोजन करता है और दूसरे दिन उपवास रखता है। वैज्ञानिकों ने पाया कि कैलोरी नियंत्रण के अन्य तरीकों की तुलना में एडीएफ ज्यादा कारगर साबित होता है। यहां तक कि यदि उपवास के अगले दिन व्यक्ति सामान्य दिनों से अधिक भोजन करता है, तब भी एडीएफ से वजन कम करने में मदद मिलती है। एडीएफ से सेहत को कई अन्य लाभ भी होते हैं। ऐसे लोगों में कोलेस्ट्रॉल का स्तर भी कम पाया गया। पेट की चर्बी कम करने में भी यह तरीका कारगर है। शोधकर्ता थॉमस पीबर ने कहा, 'एडीएफ की सबसे अच्छी बात यह है कि उन्हें यह नहीं गिनना पड़ता है कितनी बार खाया और कितनी कैलोरी हुई। बस एक दिन खाओ और एक दिन मत खाओ।' -आइएएनएस

हफ्ते में दो दिन खाएं अखरोट बादाम, होगा दिल को फायदा

हफ्ते में कम से कम दो दिन बादाम, अखरोट और पिस्ता आदि के सेवन से दिल की बीमारियों का खतरा कम हो जाता है। हालिया शोध में यह बात सामने आई है। वैज्ञानिकों ने बताया कि इन सूखे मेवे में अनसैचुरेटेड फैट की अच्छी मात्रा होती है। साथ ही, ये प्रोटीन, मिनरल, विटामिन, फाइबर, फाइटोस्टेरोल और पॉलीफिनोल का भी अच्छा स्रोत होते हैं। इन तत्वों से दिल को फायदा होता है। अध्ययन के लिए 35 साल या इससे ज्यादा उम्र के 5,432 लोगों को शामिल किया गया था। इन पर 12 साल तक अध्ययन किया गया था। शोधकर्ताओं ने पाया कि जिन लोगों ने हफ्ते में कम से कम दो दिन बादाम, अखरोट आदि का सेवन किया था, उनमें दिल की बीमारियों का खतरा 17 फीसद कम रहा। उम्र व अन्य आदतों के असर को अलग रखते हुए भी इन सूखे मेवों को खाने का लाभ स्पष्ट रूप से दिखा। -आइएएनएस

ट्विटर के सीईओ जैक डोर्सी का अकाउंट हैक

सैन फ्रांसिस्को, रायटर : ट्विटर के सह-संस्थापक और सीईओ जैक डोर्सी का अकाउंट भी सुरक्षित नहीं रह गया है। उनका अकाउंट शुक्रवार को हैक कर लिया गया था। उनके अकाउंट के जरिये हैकर्स ने कई नस्ली और आपत्तिजनक ट्वीट किए। ये ट्वीट करीब आधे घंटे तक अकाउंट पर दिखते रहे। बाद में अकाउंट को सुरक्षित कर लिया गया। ट्विटर पर डोर्सी के 40 लाख से ज्यादा फॉलोवर्स हैं।

ट्विटर ने एक बयान में कहा, 'किसी हैकर ने फोन नंबर के जरिये कई ट्वीट किए। इस गड़बड़ी को दूर कर लिया गया है।' डोर्सी के हैक किए गए अकाउंट से एक ट्वीट में कहा गया था कि नाजी नेता एडोल्फ हिटलर निर्दोष था। जबकि दूसरे ट्वीट में अश्वेत और यहूदी लोगों के बारे में आपत्तिजनक बातें लिखी गई थीं। एक अन्य ट्वीट में लिखा गया था कि ट्विटर के मुख्यालय में बम है। इस तरह के घृणास्पद ट्वीट को आधे घंटे के अंदर ही हटा दिया गया। 2016 में भी डोर्सी का अकाउंट हैक हुआ था। उस समय एक हैकर्स ग्रुप ने गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई और फेसबुक के सीईओ मार्क जुकरबर्ग के ट्विटर अकाउंट को भी हैक कर लिया था।

जलवायु परिवर्तन से ऑस्ट्रेलिया के ग्रेट बैरियर रीफ की हालत बेहद खराब

सिडनी, एएफपी : ऑस्ट्रेलिया में स्थित दुनिया की सबसे बड़ी मूंगा चट्टानें 'ग्रेट बैरियर रीफ' खराब से अब बेहद खराब श्रेणी में पहुंच गई हैं। इनके प्रबंधन की जिम्मेदार आधिकारिक ऑस्ट्रेलियाई एजेंसी ग्रेट बैरियर रीफ मरीन पार्क अथॉरिटी (जीपीआरएमपीए) ने एक रिपोर्ट में समुद्र के बढ़ते तापमान को इसके लिए जिम्मेदार बताया है। एजेंसी के अनुसार, यदि जल्द से जल्द इसे बचाने के उपाय नहीं हुए तो भविष्य में क्वींसलैंड के कोरल सागर स्थित 2,300 किलोमीटर लंबी मूंगा की इन चट्टानों को संरक्षित रख पाना मुश्किल हो जाएगा। ग्रेट बैरियर रीफ यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र का शैक्षणिक, वैज्ञानिक व सांस्कृतिक संगठन) की वैश्विक धरोहरों की सूची में शामिल है।

जीपीआरएमपीए ने रिपोर्ट में कहा है, 'जलवायु परिवर्तन से समुद्र का लगातार बढ़ता तापमान ग्रेट बैरियर रीफ के लिए सबसे बड़ा खतरा है। इसे बचाने के लिए वैश्विक के साथ ही क्षेत्रिय स्तर पर मजबूत और असरकारक कदम उठाए जाने की सख्त जरूरत है।' एजेंसी ने यह भी कहा कि यह ऑस्ट्रेलिया की मुख्य पहचान है और इसकी स्थित में सुधार लाना जरूरी है। इसके लिए जलवायु परिवर्तन से मुकाबला करने के साथ ही ग्रेट बैरियर रीफ के क्षेत्र में प्रदूषकों के बहाव पर रोक लगाना जरूरी है। जलवायु परिवर्तन से निपटने के कदम उठाने के बजाय कोयले की खदानों और निर्यात उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए ऑस्ट्रेलियाई सरकार हमेशा ही पर्यावरणविदों के निशाने पर रही है। हाल में जारी सरकारी आंकड़ों के मुताबिक बीते चार साल की तरह इस साल के पहले छह माह में भी ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कोई कमी नहीं आई है। सरकार हालांकि अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार ग्रीन हाउस गैसों और कार्बन उत्सर्जन को नियंत्रित करने पर जोर देती रही है। पर्यावरण मंत्री सुजैन ले ने कहा, 'रिपोर्ट में जलवायु परिवर्तन को ग्रेट बैरियर रीफ के लिए सबसे बड़ा खतरा बताया गया है। सरकार इस दिशा में प्रयासरत है।'

2300 किमी लंबी हैं ये मूंगा की चट्टानें। प्रतीकात्मक

- समुद्र का लगातार बढ़ता तापमान दुनिया की सबसे बड़ी मूंगा चट्टानों के लिए खतरा
- ग्रेट बैरियर रीफ के क्षेत्र में प्रदूषकों के बहाव पर रोक लगाना है जरूरी

समय से पहले जन्मे बच्चों में घट जाती है सीखने की क्षमता

वाशिंगटन, एएनआइ : शोधकर्ताओं ने बताया है कि समय से पहले जन्म लेने वाले शिशुओं में मस्तिष्क की कोशिकाएं परिपक्व नहीं होती हैं, जिसकी वजह से मस्तिष्क में ऑक्सीजन का स्तर कम होता है जो हाइपोक्सिया का कारण बनता है। इस बीमारी में व्यक्ति को बहुत ज्यादा चिंता, बेचैनी और डर बना रहता है, जिससे उसे अपने रोजमर्रा के काम करने में दिक्कत आती है।

शोधकर्ताओं ने बताया कि हाइपोक्सिया की 30 मिनट की अवधि भी शिशुओं के मस्तिष्क के हिप्पोकैंपस क्षेत्र की संरचना को प्रभावित करती है। इससे इन शिशुओं की सीखने की क्षमता और याददाश्त बहुत कम होती है। न्यूरोसाइंस जर्नल में इस अध्ययन को प्रकाशित किया गया है। इस अध्ययन के प्रमुख शोधकर्ता स्टीफन बैक ने बताया कि शिशुओं के मस्तिष्क पर पड़ा यह प्रभाव जीवनभर रहता है। उन्होंने बताया कि एक तिहाई से अधिक बच्चे जो समय से पहले जन्म लेते हैं, उनमें कोशिकाओं की क्षति के कारण छोटा मस्तिष्क होने की संभावना रहती है। उनकी तुलना में समय पर पैदा हुए बच्चों का मस्तिष्क ज्यादा बड़ा होता है। शोधकर्ताओं ने बताया कि अस्पतालों में नवजात गहन इकाई में समय पूर्व जन्मे बच्चे प्रत्येक हफ्ते मस्तिष्क में ऑक्सीजन की कमी का लगभग 600 बार अनुभव करते हैं। हालांकि, यह अवधि बहुत छोटी होती है, लेकिन फिर भी यह बहुत प्रभाव डालती है।

द्वितीय विश्व युद्ध के सैनिक ने 96 की उम्र में तोड़ा अपना ही रिकॉर्ड...

मध्य पूर्वी देश साइप्रस के लरनाका शहर के तट पर शनिवार को द्वितीय विश्व युद्ध के जांबाज रे वूली ने अपने जन्मदिन पर स्कूबा डाइविंग में नया विश्व रिकॉर्ड बनाया। 96 वर्ष के पूरे हुए रे वूली ने दुनिया के सबसे अधिक उम्र के एक्टिव स्कूबा डाइवर के रूप में अपना ही रिकॉर्ड तोड़ते हुए उपलब्धि हासिल की। कार्यक्रम की आयोजक लरनाका नगरपालिका ने बताया कि वूली ने 42 .4 मीटर की गहराई में 48 मिनट तक डाइविंग की। इसके पहले का उनका रिकॉर्ड 40 .6 मीटर की गहराई में 44 मिनट तक डाइविंग का था। 47 अन्य डाइवर के साथ इवेंट में हिस्सा लेने वाले वूली ने उम्मीद जताई कि अगले वर्ष उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और वह नया रिकॉर्ड बनाएंगे। एपी

अभिनेत्री नोरा फतेही ने की सफाई :

मुंबई के समुद्र तटों और नदियों के सबसे बड़े सफाई अभियान 'जल्लोष : क्लीन कोस्ट' के अंतर्गत शनिवार को बॉलीवुड की कई जानी-मानी हस्तियां सफाई अभियान में जुटी। माहिम बीच पर अभिनेत्री नोरा फतेही ने सफाई की। सुजैन खान भी इस मौके पर सफाई करती दिखी। नोरा, रेमो डिसूजा की आगामी फिल्म स्ट्रीट डांसर 3 डी में नजर आएंगी। एएनआइ

स्क्रीन शॉट

असली वकीलों के सामने नर्वस हुईं रिचा चड्ढा

फिल्में एक ऐसा माध्यम हैं, जहां कलाकार को वह सब कुछ बनने का मौका मिलता है, जो वास्तविक जीवन में मुमकिन नहीं है। कभी वह वकील बन जाते हैं, कभी शिक्षक तो कभी डॉक्टर। जो भी किरदार वह निभाते हैं उसे वास्तविकता के करीब लाने के लिए उन्हें कई बार उस पेशे से जुड़े लोगों से मिलना भी पड़ता है।

अभिनेत्री रिचा चड्ढा भी अपने किरदारों को लेकर बहुत मेहनत करती हैं। अपनी आगामी फिल्म 'सेक्शन 375- मर्जी या जबरदस्ती?' में सरकारी वकील का किरदार निभा रही रिचा अपने किरदार की तैयारी के लिए लॉ की पढ़ाई करने वाले छात्रों और वकीलों से मिल चुकी हैं। सेट पर भी वास्तविक वकीलों से उनका सामना हुआ था। रिचा बताती हैं कि वह तब नर्वस हो गई थीं, जब फिल्म के कोर्ट रूम वाले सेट पर सुप्रीम कोर्ट से दो वकील आ गए थे। उनके सामने अपनी लाइनें बोलते वक्त कई बार लग रहा था कि कहीं नाटकीय तो नहीं लग रहे हैं। सेट पर सीनियर वकील यह देखने के लिए आते थे कि कोर्ट रूम का ड्रामा वास्तविक लग रहा है या नहीं। वकील और निर्देशक अजय बहल की वजह से रिचा कुछ ज्यादा गंभीर हो गई थीं।

सलमान खान ने खुद को लगाए कोड़े

यूं तो सोशल मीडिया पर रोज कई सेलिब्रिटी अपनी तस्वीरें और वीडियो डालते रहते हैं। लेकिन दबंग सलमान खान का वीडियो छा जाना कोई नई बात नहीं है। सलमान खान ने अपनी आगामी फिल्म 'दबंग 3' के सेट से एक वीडियो साझा किया, जिसमें वह खुद को कोड़े मार रहे हैं। दरअसल, 'दबंग 3' के सेट पर कुछ नौटंकी वाले पहुंचे थे। वे खुद की पीठ पर कोड़े मार रहे थे। उन्हें देखकर सलमान ने भी अपनी पीठ पर कोड़े मारे। इस वीडियो को साझा करते हुए सलमान ने लिखा, 'दर्द को बांटने और महसूस करने में एक अलग आनंद है। आहहह... ।'

सोशल मीडिया पर यूजर को नील ने दिया करारा जवाब

आए दिन सितारे सोशल मीडिया पर आलोचनाओं का शिकार होते रहते हैं। यूजर्स उन्हें टैग करके कुछ भी लिख देते हैं। नील नितिन मुकेश भी एक यूजर के निशाने पर आ गए। लेकिन नील ने अपने जवाब से उस यूजर का मुंह बंद कर दिया। 30 अगस्त को रिलीज हुई 'साहो' फिल्म में नील अहम किरदार में हैं। सोशल मीडिया पर नील को उनके अभिनय के लिए मिल रही तारीफों के बीच एक ऐसा कमेंट भी आया, जिसे पढ़कर नील को गुस्सा आ गया। अंकुर पाठक नामक एक यूजर ने नील को टैग करते हुए लिखा, 'यह 2019 है। अब भी निर्माता नील नितिन मुकेश को फिल्म में काम करने के लिए पैसे दे रहे हैं। मुझे जवाब चाहिए। इसके साथ ही उसने साहो का हैशटैग इस्तेमाल किया है। नील ने इसका करारा जवाब देते हुए लिखा, 'वैसे पाठक जी, आप कौन हैं पता नहीं और जानना भी नहीं चाहता। मगर क्या अपनी ओर ध्यान खींचने का यह आपका तरीका है। मैं आपको एक बात बता दूं, मैं यहां बारह वर्षों से बिना किसी गॉडफादर के टिका हुआ हूं और आगे भी टिका रहूंगा।' नील के इस जवाब को उनके फैंस काफी पसंद कर रहे हैं। उनके इस जवाब को लोगों ने री-ट्वीट भी किया है।

अध्ययन

शोधकर्ताओं ने बताया कि उम्र के किसी भी पड़ाव में एक्सरसाइज करके मांसपेशियों का निर्माण किया जा सकता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपने पूरे जीवन एक्सरसाइज की है या नहीं

एक्सरसाइज करने की कोई उम्र नहीं होती

लंदन, आइएएनएस : अगर आप यह सोचते हैं कि अब आपकी उम्र नहीं कि आप एक्सरसाइज कर सकें तो आप गलत सोचते हैं। शोधकर्ताओं ने बताया है कि एक्सरसाइज करने के मामले में यह कहना कि 'अब देर हो गई' सही नहीं है। उन्होंने बताया कि ऐसे वृद्ध लोग जिन्होंने कभी भी जीवन में किसी भी प्रकार की एक्सरसाइज नहीं की। उनमें भी बड़े एथलीटों की तरह ही मांसपेशियों के निर्माण की क्षमता होती है।

शोधकर्ताओं ने एक अध्ययन कर इस दावे की पुष्टि भी की है। उन्होंने बताया कि एक्सरसाइज केवल युवावस्था में करने वाली चीज नहीं है। इसे उम्र के किसी भी पड़ाव में करके लाभ लिया जा सकता है। इस अध्ययन के प्रमुख शोधकर्ता और बर्मिंघम यूनिवर्सिटी के लेह ब्रिन ने बताया कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपने अपने जीवन में नियमित एक्सरसाजि की है कि नहीं।

आप जब भी इसे शुरू करते हैं इसका लाभ पा सकते हैं। हालांकि, स्पष्ट रूप से अच्छे स्वास्थ्य के लिए लंबे समय तक व्यायाम करना जरूरी है, लेकिन फिर भी आप किसी भी उम्र में इसे शुरू कर उम्र संबंधी परेशानी और मांसपेशियों की कमजोरी से छुटकारा पा सकते हैं।

यह अध्ययन 'फ्रंटियर्स इन फिजियोलॉजी' नामक पत्रिका में प्रकाशित हुआ है। इस अध्ययन के लिए बूढ़े लोगों के दो समूहों के बीच मांसपेशियों के निर्माण की क्षमता की तुलना की गई है। पहले समूह में पिछली सदी के सातवें और आठवें दशक के उच्च श्रेणी के सात एथलीटों को शामिल किया गया। ये ऐसे लोग थे, जिन्होंने अपने पूरे जीवन में एक्सरसाइज की। वहीं, दूसरे समूह में आठ ऐसे लोगों को शामिल किया गया, जिन्होंने अपने जीवन में कभी भी एक्सरसाइज नहीं की थी।

शोधकर्ताओं ने 48 घंटे की अवधि में प्रतिभागियों की जांच की। एक्सरसाइज से पहले और बाद में मांसपेशियों की जांच कर देखा गया कि उनमें किस प्रकार की प्रतिक्रिया हो रही है। शोधकर्ताओं को आशा थी कि मांसपेशी के निर्माण में पहले वाले समूह की प्रतिक्रिया शानदार होगी, क्योंकि उस ग्रुप में एथलीट शामिल थे, लेकिन पाया गया कि दोनो ही समूहों में मांसपेशियों के निर्माण की क्षमता एक जैसी ही थी।

एक्सरसाइज से मांसपेशियों की कमजोरी से छुटकारा पा सकते हैं। प्रतीकात्मक

15 लोगों को दो समूह में विभाजित कर शोधकर्ताओं ने अध्ययन को दिया अंजाम

- 'फ्रंटियर्स इन फिजियोलॉजी' में प्रकाशित हुआ अध्ययन
- ब्रिटेन की बर्मिंघम यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने किया अध्ययन

निक के म्यूजिक कन्सर्ट में दीवानी भीड़ के साथ थिरके प्रियंका व अनुपम

सोशल मीडिया पर प्रियंका आ जाएं और छाए नहीं, ऐसा तो हो नहीं सकता। अब यह अलग बात है कि अपनी पोस्ट वे खुद शेयर करें या निक या फिर अनुपम खेर। अनुपम खेर आजकल अमेरिका में हैं और उन्होंने वहीं से निक जोनस के कन्सर्ट का वीडियो शेयर किया है। यह वीडियो खूब हिट बटोर रहा है। इस वीडियो में अनुपम खेर ने प्रियंका चोपड़ा को धन्यवाद कहा है, क्योंकि प्रियंका ने उन्हें निक जोनस के म्यूजिक कन्सर्ट में बुलाया था। वीडियो में जोनस ब्रदर्स मंच पर परफॉर्म कर रहे

हैं और अनुपम खेर, प्रियंका चोपड़ा और उनकी मम्मी मधु चोपड़ा जोनस ब्रदर्स के गानों पर थिरकते नजर आ रहे हैं। इस वीडियो को साझा करते हुए अनुपम ने लिखा, 'प्रियंका द्वारा अपने पति निक जोनस और उनके भाइयों के कन्सर्ट में बुलाने के लिए धन्यवाद। मुझे बहुत मजा आया।' एक और वीडियो शेयर करते हुए अनुपम खेर ने लिखा है कि मुझे अंग्रेजी संगीत की ज्यादा जानकारी नहीं है लेकिन भीड़ तो दीवानी हो रही है। हर गीत का मजा लूट रही है।